१६ परिसव सोदरपुरक वंश १२३
१७ राजा दुलार सिंहासनर-श्रीनगर शाखा— १२५
१८ खेढुइ-खण्डवला-मूलक वंश १३६
१९ जगीर-माण्डर-मूलक वंश १४२
२० नाहस-ओआल-मूलक वंश १४४
२१ वड़िग्राम नवौली-मूलक वंश— १४४

शुद्धिपत्र

[illegible] दोषसँ वा हमरा प्रमादसँ एहिमे कतोक अक्षर छूटि गेल अछि वा अशुद्ध छपि गेल अछि। दयालु पाठकलोकनि एकरा शुद्ध कए लेथि।" —लेखक

पृष्ठ—	पंक्ति—	अशुद्ध—	शुद्ध—
[illegible]	१६	अथवा	अथच
[illegible]	३	ई एकहि	ई सब एकहि
[illegible] टिप्पणी (१)	२	'जे' व्यर्थ अछि	
[illegible]	२१	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१	मूल-पञ्जी	मूल पञ्जी
[illegible]	[illegible]	श्रीधर	श्रीधर
[illegible]	[illegible]	गढ़	गूढ़
[illegible] टिप्पणी	१— ४	ठाकुरक तु	ठाकुरक हेतु
[illegible] अन्तिम	पंक्ति	मल्ल	[illegible]
[illegible] टिप्पणी	१— ३	विवा	विवाह
[illegible] टिप्पणी	१— २	मधुकर	[illegible]
[illegible] टिप्पणी	१— ३	नरसिंह	[illegible]
[illegible] टिप्पणी	१— २	ओ	ओ
[illegible]	१०	माव	[illegible]
[illegible] टिप्पणी	५	३४	३३
[illegible] टिप्पणी	९	हीरा	[illegible]
[illegible]	२४	राज्य	राज
[illegible] टिप्पणी	१— ९	मातामह	[illegible]

पत्र—	पंक्ति—	अशुद्ध—	शुद्ध—
७१ टिप्पणी २—	३	सुप्रसि	सुप्रसिद्ध
७७ टिप्पणी १—	२	५६—२	५८—१
८०	५	[illegible]	कस्तुरः
८१ टिप्पणी २—	१	[illegible]	ओ
९५	७	[illegible]	हिनक
११०	१७	[illegible]	राज्य
११५	१०	[illegible]	वेणीदत्त
११७	१	[illegible]	पद्मनाथ
११७	२१	हिमे	एहिमे
११८	१६	[illegible]	सदृश
१२३	३	[illegible]	तथा
१२५	६	[illegible]	आतव्य
१२७	६	धरि	धरि
१२७	२२	हनके	हिनक
१३३	१८	भतिज	भातिज
१३७	१९	गङ्गनाथ	गङ्गानाथ
१३६	३	विद्वन्	विद्वान्
१३८	१५	अस्वास्थ्य	अस्वास्थ्य
१४० टिप्पणी १—३		————	द्वितीय विवाह
१५१	२४	क्षत्रिय	क्षत्रियी
१५६	४	[illegible]	नेरि
१६१	२१	विवाहा	विवाहो
१६२	२४	भ	भए
१७२	२२	[illegible]	मौलि
१७२	१४	होइते	होइत

प्राक्कथन

मिथिलाक सर्वाङ्गीन इतिहासक हेतु अन्वेषण करैत किछु दिन भेल जे हमर दृष्टि मिथिलाक अनुपम निधि पञ्जी-साहित्यक दिशि गेल। ओना तँ मिथिलाक पुरातत्त्वक विषयमे अनुसन्धानो की भेल अछि, ताही दिशि दृष्टि देब हमही दिशि सबटा कार्य पकले भेटत, परन्तु एहि पञ्जी-साहित्यक तँ दर्शनो प्रायः थोड़हि महानुभावके भेल छैन्हि ओ एहि आधारपर अनुसन्धान करबाक सुयोग प्रायः सबसँ पूर्व हमरहि भेल अछि। एक तँ, पञ्जीकार लोकनि अपन सर्वस्व बूझि पञ्जीक पोथीके बड़ गुप्त रूपसँ सुरक्षित रखले छथि, दोसर एकर रचना-शैली सेहो किछु एहन रहस्यमय छैक जे बिनु गुरुक बुझओने पोथीसँ किछु बूझि लेब सुगम नहि छैक। अपन प्रभु श्री५मन्मिथिलेशक असीम अनुकम्पासँ पोथी हमरा दुर्लभ नहि रहल; चारि गोट शाखाक ओ चारि गोट मूलक पोथी हम राजकीय पुस्तकालयक हेतु प्राप्त कएल अछि। गुरु सेहो हमरा भाग्यसँ भेटलाह बड़ सुयोग्य, पञ्जीकारक वंशक, एगारह पुरुषक पञ्जीकार, शिवनगर (रसाढ़) क नवयुवक पण्डित श्री मोदानन्द झा। स्वर्गीय म०म० डाक्टर सर गङ्गानाथ झाक तत्त्वावधानमे जे अन्तिम धौत-परीक्षा दड़िभङ्गामे भेल छल ताहिमे पञ्जीशास्त्रमे ई पञ्जीकार अपूर्व सफलतासँ समुत्तीर्ण भए श्रीमन्मिथिलेशक हाथसँ धोतीक सङ्ग सङ्ग दोशाला सेहो पाओल। एहन विद्वान् गुरुक कृपासँ एहि साहित्यक संकेत हमरा हेतु सुगम भए गेल ओ तहिआसँ एहि साहित्यक अनुशीलन करैत हम कतोक नव नव विषय समय-समयपर पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित कराओल अछि ओ कराए रहल छी परन्तु आरम्भहिसँ हमरा मनोरथ अछि जे मिथिलाक सामाजिक इतिहास संकलित कए प्रकाशित करी।

हमरालोकनिक समाजक वर्त्तमान व्यवस्था आइसँ सबा छओ सए वर्ष पूर्व पञ्जी-प्रबन्धक सङ्ग सङ्ग भेल छल जकरा "हरिसिंहदेवी" व्यवस्था कहैत छिऐक । ई व्यवस्था मिथिलाक अन्तिम कर्णाटवंशीय क्षत्रिय महाराज हरिसिंह देवक निर्मापित कहल जाइत अछि परन्तु एकर आरम्भे धरि ओ कराए सकलाह । सम्भव जखन ई भेल ताहिसँ पूर्वहिं महाराज हरिसिंह देवकेँ "दुर्दैवदर्शितमाया" नेपाल-गिरिक आश्रयण करए पड़ल छल परन्तु जेँ ई आरम्भ हुनके कराओल छल तेँ लोक एकरा हुनकहि नामेँ कहल, जाहिसँ उदीयमान किन्तु अकालहिं अस्तमित धर्म-प्राण महाराजक नाम अमर रहओ । तहिआसँ एहि व्यवस्थामे कतेक परिवर्त्तन भेल अछि, कतेक परिवर्धन भेल अछि, कतेक संशोधन भेल अछि, परन्तु एखन पर्यन्त ई अनुवर्त्तमान अछि तथा [illegible]क स्रोतमे पड़ि एहिमे कतबो शिथिलता आबि गेल हो, [illegible] कतबो विस्मृत भए गेल हो, परन्तु एहिमे कोनो सन्देह नहि जे आइ धरि [illegible] अछि । छओ सए वर्षसँ अधिक दिनक कोनो संस्था आदरणीय थीक, ओकर विकास एवं प्रकार अध्येतव्य थीक, ओकर तत्त्व किंवा रहस्य अन्वेष्टव्य थीक; ई तँ हमरालोकनिक अपन समाजक व्यवस्था थीक ओ एहीने हमरालोकनि आइ तेरह चौदह पुस्तिसँ रहैत आएल छी । एकर इतिहास जँ हमरालोकनि स्वयं नहि बुझी ओ संसारकेँ नहि बुझाए सकी तँ हमरालोकनिक स्वाभिमान, स्वदेशप्रेम, स्वजातिगौरवकेँ कलङ्क थीक ।

परन्तु कार्य अछि ई दुरूह । मैथिल ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ दू जातिक पञ्जी आइ धरि सुरक्षित अछि । ताहिमे कायस्थक पञ्जी तँ हम एखन पर्यन्त देखबो नहि कएल अछि, ब्राह्मणहुक पञ्जीक विशालताकेँ स्मरण कए एहन बोध होइत अछि जे एहु पञ्जीक एक क्षुद्र अंश मात्र एखन पर्यन्त हमरा हस्तगत भेल अछि ओ तेँ अनेकानेक सन्देह अछिए । अनुसन्धानक काज चलि रहल अछि ओ सामाजिक इतिहास संकलित करबामे किछु विलम्ब अछि परन्तु ओहिसँ पूर्व मनोरथ भेल जे पंओतीस गोट जे मैथिल

ब्राह्मणक विशिष्ट कुल पञ्जीमे परिगणित अछि ताहिमे "कश्यागार"क कुल जे एमहर आबि केवल विद्याक वैभवसँ वैशिष्ट्यकेँ प्राप्त भेल अछि से मिलाए पैंएतीसो गोट मूलक परिचयात्मक छोट छोट प्रबन्ध लिखी जाहिसँ मैथिल ब्राह्मणक सकल सत्कुलक, ओ तेँ प्रायः समस्त मैथिल-ब्राह्मणक, इतिहासक एक गोट स्थूल रूपरेखा प्रस्तुत भए जाएत ओ ताहि आधारपर सम्पूर्ण समाजक समष्टि रूपसँ विचार कए एक गोट इतिहास लिखब सुगम होएत । ओही बड़ पैघ मनोरथक पूर्ति करबाक क्रमने बानगीक रूपमे "अन्वी" मूलक एक गोट शाखाक ई परिचयात्मक प्रबन्ध प्रस्तुत कएल अछि । समाज एकरा जाहि रूपसँ स्वीकार करत ताहिपर हमर अग्रिम कार्यक्रम अवलम्बित अछि ।

एहि मूलक चिखबाक कए गोट कारण । प्रथम, तँ, अक्षरानुक्रमेँ ई सर्वप्रथम थीक ओ कोन क्रमसँ उठाबी ताहिमे अक्षरानुक्रम बड़ पुरान ओ निर्दुष्ट प्रतीत भेल । दोसर, एहि मूलक विस्तार थोड़ अछि, "माण्डर" मूलमे चौहत्तरि गोट शाखा मंडित अछि, एहि मूलमे पंद्रह गोट मात्र । तेसर, एहि कुलमे एमहर दू सए वर्षसँ राज्यक अधिगमसँ एकरा राजनैतिको महत्त्व भए गेल छैक ओ पैघ पैघ तथा पुरान पुरान राज्यक इतिहास लिखबासँ पूर्व छोट छोट वस्तुपर हाथ बैसाए लेब नीक बुझना गेल ।

चारिम कारण वैयक्तिक अछि । दू वर्ष पूर्व अयाची भवनाथ ओ हुनक शंकरावतार पुत्ररत्न सन्मिश्र शंकरक वंशधर लालगञ्जक श्री भीमनाथ मिश्र, जनिक पिता वर्नलीक स्वर्गीय राजा पद्मानन्द सिंहक कन्यामे विवाह कए सोतिसमाजसँ बहिर्भूत छलाह, अपन असाधारण गुणगरिमासँ सोतिसमाजकेँ प्रभावित कए, ओकरा सपक्ष बनाए, सोतिसमाजक अधिनायक श्री५मन्मिथिलेशसँ अनुग्रह प्राप्त कएल ओ पुनि सोति-समाजमे परिगृहीत भए गेलाह । एहि अनुग्रहक समासादनमे हमर यावच्छक्य सहयोग हुनका प्राप्त छलैन्हि । फलतः एमहर दू वर्षसँ हुन

अतेक कुचेष्टा, अतेक उपहास, कतेक कुकाव्यक भाजन भए गेल छी से सोतिपुरामे लोक वर्णत अछि । एहिमे हमरा किञ्चितो सन्देह नहि अछि जे श्री५मन्मिथिलेशक ओतए हमरालोकनि जे अनुग्रहक हेतु निवेदन कएल से हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक सर्वथा अनुकूल छिया छल ओ ई अनुग्रह उचित-प्राप्त छल, परन्तु अज्ञानतामूलक मिथ्याभिमानसँ जे जन एहि हेतु हमरालोकनिक उपहास कएल तनिकहु हम दोष नहि दैत छिऐन्हि, कारण जे हरिसिंहदेवीक मूलतत्त्व ओ ओकर आदर्शक उत्कर्ष कए गोटए वर्णत छथि तथा कए गोटए वर्णली राजकुलक हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक प्रति कएल गेल सेवा ओ त्यागक महिमाकेँ वर्णत छथि ? अतएव एहि व्यापक अज्ञानान्धकारकेँ दूर करबाक हेतु, हरिसिंहदेवी समाज-व्यवस्थाक मूलतत्त्वकेँ सुस्पष्ट करबाक हेतु, ओकर उच्च आदर्शकेँ स्थापित करबाक हेतु तथा ताहि मापदण्डसँ अद्यावधि-लोकनि सेवा ओ त्यागक मूल्य अंकित कए ओकर उचित प्राप्त सत्ताकेँ निर्धारित करबाक हेतु हमरा एहि वंशक परिचय लिखब वैयक्तिक रूपसँ आओर आवश्यक प्रतीत होअए लागल । तेँ एहि प्रबन्धमे हमर दृष्टिकोणकेँ ब्रएह वैयक्तिक कारण नियमन कएलेँ अछि से कथा हम मुक्तकण्ठसँ आरम्भहिमे कहि दैत छी, कारण जे एकरा पढ़ि ई धारणा भए सकैत अछि जे हम केवल ककरहु पक्षमे साधन एकत्र कए तकर पुष्टि मात्र कए रहलहुँ अछि । हम जे किछु कहल अछि सबटा सत्य ओ सप्रमाण । जतए हम अनुमानतः किछु कहल अछि ततए से स्पष्ट शब्देँ व्यक्त कए देल अछि ।

प्रबन्ध ई एहि प्रकारक प्रथमे थीक । पञ्जीसँ इतिहासकेँ कोना संकलित करब तकर ई बानगीक रूपमे प्रयास मात्र भेल अछि । पूर्णता सँ एहि विषयमे भेटब कठिन ताहुमे एहिमे ताहि हेतु यत्नो नहि कएल गेल अछि । पञ्जीक साहित्य बड़ विशाल छैक, ताहिमे एक गोट क्षुद्र अंश मात्र हमरा उपलब्ध । ताहू परसँ पञ्जीकार जकाँ हमरा सबटा अभ्यास नहि; सर्व ठाम विद्या-"पुस्तकस्था" । परिचय हम सोतिओक

कुल-चित्र (१)

बाड़-याति अलयी-मूलक-बीजी-पुरुष

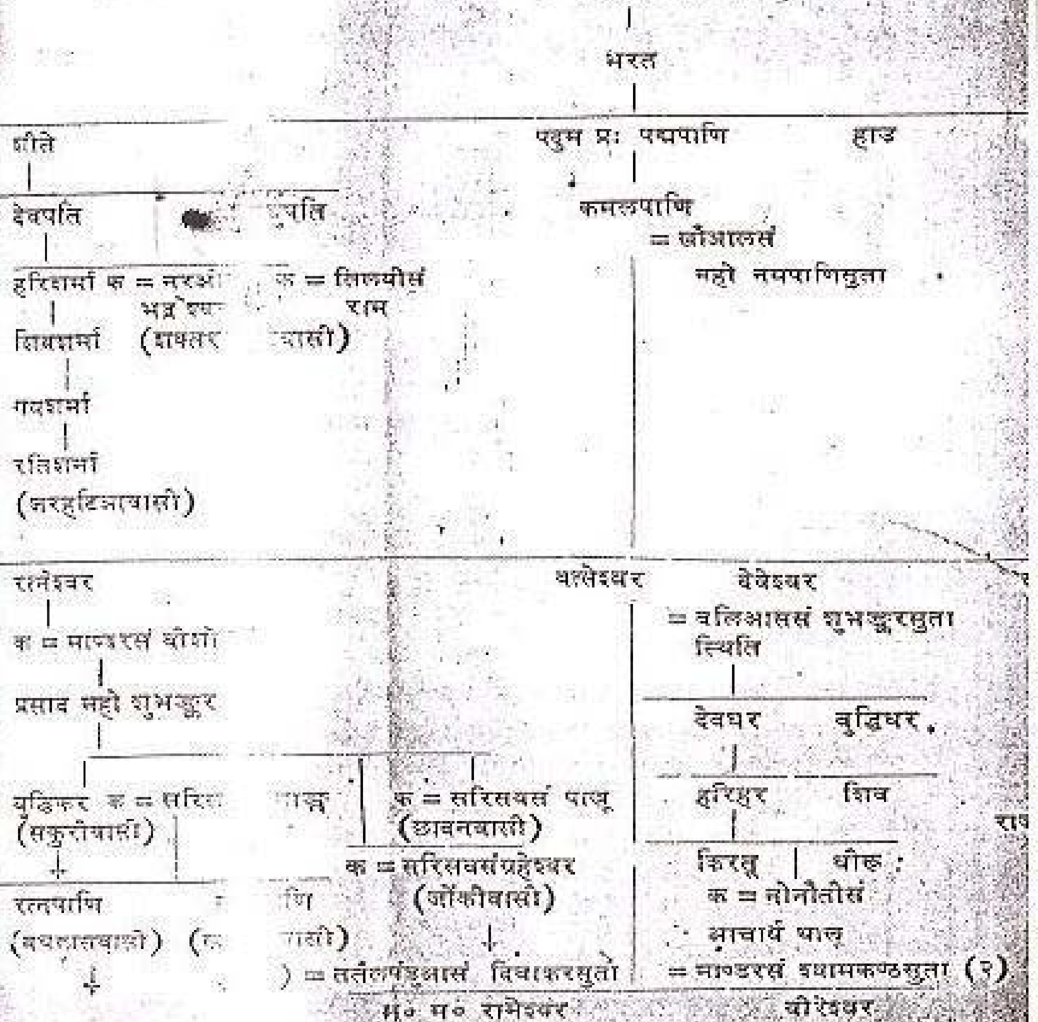

टिप्पणी— एहि चि... = चिन्ह विवाहक थीक अर्थात् जनिका नामक सोझाँमे ई चिन्ह रहए सँ,कन्यांर बुझब । मल... ...मेँ से ई संभूत बुझब तथा खौआलसँक अर्थ भेल खौआलकुल संभूत बुझब । ↓ चिन्ह द्यो... ...रैत अछि जे संतान आगाँ छथि ।

नहि जानी, पञ्चारिचारक तँ कथे कोन तथा जएबारक प्रसङ्ग एखन पर्यन्त अन्धकारहिमे छी । अतएव एहि प्रबन्धमे अनेकानेक त्रुटि भेटत । कतोक तँ स्वयं हमरा अपनहि दृष्टिमे अछि ओ ताहि दिसि सबहिक ध्यान आकृष्ट कए सावधान कँए दैत छी ।

एहि प्रबन्धकेँ अलंकारक सर्वाङ्गीण इतिहास नहि बुझब । से तँ तखन सम्भव होइत जँ हम ओकर प्रत्येक उपशाखाक अद्यपर्यन्तक परिचय दितहुँ । से हमरा अपनहु विदित नहि अछि । अतएव हम साधारणतया उपशाखाक पृथक्त्व देखाए विरत भए गेल छी । एकरा तेँ व्यापक नहि मानि दृष्टान्त स्वरूप बुझब । बनैली राजकुलहुक विवरण अत्यन्त संक्षिप्त अछि ओ बहुत विषय हम नहि दए सकलहुँ । एकरो कारण ओएह । पूर्णता हमर उद्देश्य नहि छल । हम तँ केवल रूपरेखा अंकित कएल अछि ओ एहिमे जतेक अन्वेषण कए नव नव विषयक समावेश कए सकब से सब एहि चित्रमे रङ्ग भरबाक काज करत ।

दोसर, विषयकेँ सकल साधारणक बुद्धिगम्य ओ भाषाकेँ तदनुरूप करबाक निमित्त सचेष्ट रहितहुँ सम्भव थीक जे कतोक विषय सुस्पष्ट नहि भेल हो । टिप्पणी सब ओ वंशावलीक चित्र, जकरा हम उपयुक्त नामक अभावमे कुलचित्र कहल अछि, प्रचुर मात्रामे तँहि देल अछि जकरा मिलाएकेँ विवरण पढ़ला उत्तर विषय सुस्पष्ट भए जाएत, परिचय चित्र जकाँ आंशिक समक्ष अंकित बुझि पड़त । तथापि पञ्जी-साहित्य ओ हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक विषय थीक तेँ एकरा बुझबाक हेतु ताहि सबहिक साधारणो अवगति आवश्यक । कतोक व्यक्ति कहताह जे ई पँजिआड़ीक पोथी थीक । आक्षेप मिथ्या नहि । पञ्जी-साहित्यात्मक प्रबन्ध तँ पँजिआड़िए होएत । मुदा द्रष्टव्य एतबए जे से सुस्पष्ट अछि वा नहि, ओ उपन्यास जकाँ ई मनोरञ्जनक वस्तु तँ थीके नहि, किछु यत्नो कएला उत्तर साधारणो शिक्षित व्यक्तिकेँ ई बुझबाक योग्य होइत अछि वा नहि । एहो कारणेँ एहिमे पुनरुक्ति बड़ भेटत । मुख्य मुख्य

विषय अनेको ठाम आएल अछि ओ हम प्रायः सब ठाम ओकर प्रतिपादन कएल अछि, एक ठाम कए गेलहुँ तँ दोसरा ठाम नहि करी से नीति नहि धएल ।

प्रबन्धकेँ सरल एवं सुबोध बनएबाक हेतु कतोक एहनो विषय हमरा लिखए पड़ल अछि जे अप्रासङ्गिक बूझि पड़त । परन्तु से हमरा निरुपाय भए करए पड़ल । एहि साहित्यक यदि आओर ग्रन्थ विद्यमान रहैत अथवा एहि प्रसङ्ग यदि शिक्षितहु समाज मध्य किछुओ ज्ञान रहैत, ओकरो परिचय साधारणतया *उपलब्ध रहैत, तँ हम अप्रासङ्गिक विषयक प्रतिपादन नहि करितहुँ । आशा तँ इएह अछि जे एहिसँ पाठकगण असन्तुष्ट नहि प्रत्युत सन्तुष्टे होएताह ।

सबटा कथा हम अभ्रान्ते लिखल अछि तकरो अभिमान हम नहि करब । कए गोट परिचय तकबामे हमरा मासो दिन पोथी सब उलटाबए पड़ल अछि ओ अपना जनैत हम सबटा परिचय खूब नीक जकाँ जाँचिकेँ लिखल अछि परन्तु तँओ प्रमादवशात् किंवा अज्ञानतासँ यदि कोनो कथा कतहु अशुद्ध लिखल भए गेल हो तँ से विज्ञजन क्षमा करथि । पञ्जिओहुमे अशुद्धि किंवा भ्रान्ति गारि भए जाइत छैक अतएव ताहि हेतु क्षमा-याचना करैत हम करबद्ध प्रार्थी छी ।

अन्तमे निवेदन जे परिचयक प्रसङ्ग हम जे दृष्टान्त सब देल अछि ताहिसँ केओ हमर भावकेँ अन्यथा कए नहि बुझथि । दृष्टान्त देल जाइत छैक प्रसिद्ध वस्तुक ओ तेँ हम तेहने तेहने व्यक्तिक दृष्टान्त देल अछि जे सर्वजनप्रसिद्ध छथि, पैघ छथि । छोट लोकक दृष्टान्त देलहिँ की फल ? हुनका के चिन्हत ओ यदि हुनका चिन्हलक नहि तँ दृष्टान्तक प्रयोजने सिद्ध नहि भेल । सेहो परिचय हम सब दिशिक नहि देखाए आदर्शमात्रक हेतु गोटेक देखाओल अछि । एक एक गोटाक यावतो परिचय दितहुँ तँ कतेक विस्तार भए जाइत ! तेँ अनेक प्रसिद्धो व्यक्तिक अथवा कुलक चर्चा छूटि गेल अछि । परन्तु तकरहु हम उपेक्षाबुद्धिसँ नहि छोड़ल अछि ।

कतोक ठाम तँ हम गोलमोल लीखि देल अछि जे "बड़ पैघ पैघ लोक" । ताहि ठाम बुझबाक थीक जे एकर प्रसार बड़ विस्तृत छैक ओ तेँ संक्षेपमे हम संकेत मात्र कए देल अछि । यदि ओकर विश्लेषण करए लागब तँ हरिसिंहदेवीक मूर्धन्य भेल जे महापुरुष लोकनि छथि ताहिमे एहने केओ होएताह जे बाँचल रहताह ।

हम जनैत छी जे समाजमे, विशेषतः हमर अपन समाजमे, जे जन संकुचित विचारक छथि से हमर एहि ऐतिहासिक कोन रूपेँ उपहास करताह । कतोक अकारणहुँ द्वेषी, परहितासहिष्णु, निन्दक, दुर्जन एकर की की अर्थ लगाए प्रचार करताह परन्तु हमरा समक्ष हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक तत्त्वान्वेषण प्रश्न अछि ओ सत्य हमरा बल अछि । अपना जनैत हम सब ठाम गुणहिक ग्रहण ओ व्याख्यान कएल अछि, दोषोद्घाटन हमर उद्देश्य नहि अछि । परन्तु सत्यक तेँ हम हिंसा नहि कएल अछि ओ जतए दोषहुक ख्यापन आवश्यक भेल, ततए सेहो करबे कएल अछि । मुदा ताहिमे हमर लक्ष्य रहल अछि केवल सत्यक प्रकाशन, उपहास नहि । आशा अछि जे केओ तँ हमरापर असन्तुष्ट नहि होएताह । समाजकेँ अन्हरजालीमे राखि मिथ्याभिमानसँ लोककेँ फुलब तकरहु तात्कालिक हितकर, प्रेय; बोध होइक परन्तु समाजक श्रेय ताहिसँ सम्पादित नहि भए सकैत अछि । से होएत सत्यक ख्यापनसँ, मूलतत्त्वक विश्लेषणसँ ओ तकर प्रकाशनसँ । बङ्गालहुमे बल्लालसेनक प्रतिष्ठापित कुलीन-व्यवस्था भेल; हमरहु ओहिठाम हरिसिंह-देवक आदेशपर तदनुरूपे व्यवस्था भेल । बङ्गालक व्यवस्था लुप्त भए गेल मुदा हमरालोकनि एखन पर्यन्त एकरा यथाकथञ्चित् मानैत आबि रहल छी । की एहि दिशि विज्ञजनक ध्यान आकृष्ट नहि होएत ? वस्तुतः तेहन सुदृढ़ भित्तिपर एकर प्रसार भेल छैक जे तात्त्विक दृष्टिसँ एकर लोप भए नहि सकैत छैक । एही तत्त्वक यथाकथञ्चिद् एतए दिग्दर्शन कराओल अछि ओ आशा अछि जे नवयुगक

मैथिल मनीषी एकरा सहृदयतासँ, सहानुभूतिसँ, विचारशीलतासँ अवलोकन कए हमर श्रमकेँ सफल करताह ।

अपन वक्तव्य समाप्त करबासँ पूर्व दुइ गोट मान्य पञ्जीकारक प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन आवश्यक अछि । एक तँ हमर पञ्जीगुरु श्री मोदानन्द झा ओ दोसर ककरौड़क पञ्जीकार श्री हरिनन्दन झा । ई लोकनि जँ नहु रहितथि ओ सकल ई हम लिखितहुँ तँ बहुत रास त्रुटिक संशोधन स्वयं भए जाइत । से तँ सम्भव नहि भेल । तथापि पत्रद्वारा हिनका दुहू गोटाकेँ हम जे जिज्ञासा कएल तकर समीचीन उत्तर दए ई दुहू जन हमर बड़ सहायता कएल अछि । वस्तुतः ई ग्रन्थ हुनकहि लोकनिक थिकन्हि, ओ हमर एहि प्रयाससँ जँ ओ लोकनि वर्त्तमान युगक उपयुक्त रचनाशैलीक ग्रहण करथि तँ ओ लोकनि देशक बड़ पैघ उपकार कए सकताह ।

इति

राज लाइब्रेरी
दड़िभङ्गा
कार्त्तिकी पूर्णिमा, १३४८ साल

श्री रमानाथ झा

मूल

तेरहम शक शताब्दक पञ्चम दशक अथवा नवद्वारतमे जखन मिथिलाक समस्त सद्ब्राह्मणक परिचय संगृहीत भेल तखन देखल गेल जे शुक्लयजुर्वेदीय-माध्यन्दिन शाखाक अनुयायी पञ्चप्रवर वात्स्यगोत्रक एक गच्छ सद्ब्राह्मण मिथिलामे छथि जे लोकनि अपन पूर्वजक परिचय दैत दैत सबस लगमे कतोकेन्यात पूर्वजकेँ "अलर्वा" नामक वासी कहल । अतएव ओहि परिचयक आधारपर जखन शाके १२४८ मे "पञ्जी-प्रबन्ध" भेल तखन ओहि ओहि गच्छक "मूल" अलर्वा कहल गेल तथा ओहि मूलक आदिम पुरुष कहि जाहि व्यक्तिक परिचय देल गेल से ओहि मूलक "बीजी पुरुष" कहाओल । अलर्वा मूलक ब्राह्मण "अलेबार" कहबैत छथि ।

ओहू समयमे अलेबार लोकनि अनेक ग्राम धर्मर रहताह । सबहुक शाखा, गोत्र ओ प्रवर एक; सबकेँ इएह जानल जे आदिमे हमरा लोकनि अलर्वाक वासी थिकहुँ; परन्तु अपन अपन जे परिचय ओ लोकनि देल ताहिसँ सब एकहि कुलक सिद्ध नहि होइथि । ने सिद्ध होइतथि तखन जे सब गच्छक बीजी पुरुष कोनो एक व्यक्ति मात्र रहितथि । परन्तु ओ तँ ई सब शाखा कए कुलक छलाह ओ कहिओ एकहि ग्राममे बसैत छलाह अथवा एकहु कुलक छलाह तँ बहुत दिन पूर्वहि शाखा फूटल छल ओ तकर पूर्वपुरुषक परिचय तात्कालीन अलेबार लोकनिमे ककरहु ज्ञात नहि छल । ताहि कारणसँ ही, मूल एक भेलहु कुल एक प्रमाणित नहि भेल ओ जे प्रत्येकक शाखा पृथक् निर्धारित कए देल गेल । से घोषित करबाक हेतु ताहि दिन मूलक नामक सङ्ग-सङ्ग

प्रत्येक शाखाक अर्वाचीन निवास-स्थानक नाम जोड़ि देल गेल। एवं क्रमे पञ्जी-प्रबन्ध-कालहुमे अलयी मूलक गोट अठारहेक शाखा भए गेल यथा (१) वाड़ अलयी † (२) गोधौली-अलयी (३) गड़-अलयी (४) सुर्वला अलयी (५) ईन्दस अलयी (६) बसुआल अलयी (७) दिहिहा अलयी (८) मिथिलाहुड़ अलयी (९) रेफौरा अलयी (१०) महुलीत-अलयी (११) डोटहाल-अलयी (१२) रेहुण्डा-अलयी (१३) पिहुवार अलयी (१४) कुन्दआम-अलयी (१५) सिधौली-अलयी (१६) ननौर-अलयी (१७) पाहुवा-अलयी ओ (१८) भड़िसा-अलयी।

एहिमे प्रथम आठ गोटाक तँ बीजी पुरुषहुक उल्लेख भेटैत अछि, शेषक बीजी पुरुष सभहक एखन पर्यन्त उपलब्ध नहि भेल अछि। की तँ ई सब कालक्रमे लुप्त भए गेल अथवा ततबा प्राचीन भए गेल जे कोनहु गोटक शाखासँ सम्बन्ध नहि रहलैक जाहि कारणसँ एकरा सबहिक वंश-परिचय कोनहुँ पञ्जीक पुस्तकमे संगृहीत नहि होइत अछि। एहुमे प्रथम पाँच गोटक तँ शाखा मात्र जे उपशाखा भेल से हो उल्लिखित भेटैत अछि। "दश-पञ्जी"मे प्रत्येक मूलक शाखा ओ उपशाखा सबहिक, सत्पुरुष शाखा ओ उपशाखाक "बीजी"क नामोल्लेखपूर्वक संकलन अछि तथापि ताहिमे एहि मूलक एही पाँच गोट शाखाक उपशाखाक उल्लेख अछि। अन्यतरक "दरभङ्गा" उपशाखा जाहिमे सम्प्रति कतेको सद्ब्राह्मण अनेक ठाम बसैत छथि एहीमे "सुर्वला-अलयी"क एक गोट उपशाखा थीक।

अलयी मूलक जाहि आठ गोट शाखाक परिचय बीजीसँ अएकेँ भेटैत अछि तकर सबहुँक तीक जकाँ विवेचना कए हम देखल अछि परन्तु ई सब

† वाड़-अलयीक अर्थ भेल "वाड़वाली अलयी मूल"। एहिना अन्यहु जानब। शाखाक सङ्ग मूलक नामक उच्चारणमे शाखाक नाम पूर्व कहल जाइत अछि मूलक पश्चात् ई नियम उपशाखामे सेहो जानब। यथा "वँगिनीवाली अलयी मूल" कहल जाएत "वँगिनी अलयी" "महिसीवाली पाली" कहल जाएत "महिसी-पाली" इत्यादि।

शाखा एकहि कुलक शाखा थीक तकर प्रमाण नहि भेटैत अछि। वैदिक शाखा, गोत्र ओ प्रवरक साम्य भिन्नहु भिन्नहु कुलमे भए सकैत अछि ओ एतबहिक आधारपर ई मानि लेब जे ई एकहि कुलक शाखा थीक असङ्गत होएत। इहो तँ संभव थीक जे एकहि वैदिक शाखाक एकहि गोत्रक एकहि प्रवरक भिन्न भिन्न कुलक सद्ब्राह्मण लोकनि कोनहु समयमे अलयी गाममे बसैत छलाह जनिक सन्तान लोकनि पञ्जीप्रबन्धकालमे भिन्न भिन्न गाममे बसैत अपन पूर्वजक परिचय दैत अपना लोकनिक आदिम ज्ञात निवास-स्थान ओहि गामकेँ कहल। परन्तु इहो संभव थीक जे ई लोकनि एकहि कुलक भिन्न-भिन्न शाखा होथि परन्तु शाखाभेद बहुत दिन पूर्वहिँ भए गेल हो ओ पञ्जी-प्रबन्धकालमे जे उपस्थित लोकनि छलाह से अपन परिचय ततेक दिन पूर्व धरिक नहि जनैत छल होथि जाहि समयमे शाखा-भेद भेल छल हो। ई विषय अनिर्णीत अछि ओ रहत। नामक शब्दसँ यदि कुल एक मानिओ लेल जाए धरि मानहि पड़त जे अलयी गाम बड़ प्राचीन थीक। आगाँ हम एहि कुलक शाखा सबहिक समयहुक किछु विचार करब ओ ई देखाएब जे एहिमे कएक गोट शाखाक बीजी पुरुष पञ्जीक प्रबन्धकालसँ अन्ततः द्वादश सएक वर्ष प्राचीन छलाह। ताहि गाममे हिनका लोकनिक वास ताहूसँ प्राचीन सिद्ध होइत अछि, अलयी गाम तहूसँ प्राचीन भेल। हमरा लेखासँ से सहस्रावधि वर्ष पूर्वक लब्धाधार थीक।

ई अलयी गाम कतए अछि ओ सम्प्रति की कहाए प्रसिद्ध अछि? हमरा ततबा अनुसंधान कएल भेल अछि, मिथिलामे एक गोट गाम अछि जे ई गाम भए सकैत अछि ओ से गाम थीक "अड़ई" †। लडयोरभिदात् "अर्लयार" केँ "अड़ैयार" एखनहुँ कहिअहिँ छैक ओ तेँ पूर्वक अलयी सम्प्रति "अड़ई" भए गेल अछि। ई गाम दरिभङ्गा नगरसँ कोस चारिएक पश्चिम दक्षिणक

† एहि परिचयक हेतु हम आभारी छी अपन परम मित्र अलयी मूलक एक गोट कमल डाक्टर श्री सुभद्र झाक। एहि गामक राखे नम्बर १३७ थिकैक तथा एकर उत्तरमे असौली, सिमरी, विरदीपुर, पश्चिममे

[illegible] मुख्य [illegible] सौराठ [illegible] अवस्थित अछि । गाम ई बेस पैघ अछि औ [illegible] हरिसिंहदेवक समयमे "[illegible]" नाम अछि से बड़ प्रसिद्ध गाम अछि तथा [illegible] बड़ पुरान गाम छल औ नीक कुलक ब्राह्मण [illegible] एतए अछि । अतएव एहि गामक नामपर ब्राह्मणक एक गोट अभिजन मूल अछि । एहि गाममे कोशिक उत्तर-पूर्वमे [illegible] नामक गाम अछि जकर पञ्जीक प्रबन्धकालसँ [illegible] वर्ष पूर्व "सरसोन" मूलक एक गोट शाखाक वास छल जाहिमे हम स्वयं पड़ैत छी ।

मूल औ शाखाक निर्देश-पुरस्सर सकल महाब्राह्मणक परिचय संगृहीत कए एकत्र करब औ तकरा एहन सम्पूर्ण पण्डित ब्राह्मणक हाथमे दए देब जे [illegible] औ एहि परिचय-संग्रहक आधारपर अस्थ-जल-पत्र दैत छथि जे समाजमे विवाह हो—इएह भेल पञ्जी-प्रबन्ध । एकर [illegible] रहल । किन्तु [illegible] समयमे विवाह [illegible] ब्राह्मणेतर जातिक लोक अपनाकेँ ब्राह्मण कहि कहि ब्राह्मणक संग विवाहादि क्रिया करए लागि जाएत—एकरे प्रतीकारक निमित्त एहेन व्यापारसँ पञ्जी-प्रबन्ध कएल गेल । परन्तु तकरो [illegible] गुण औ दोष देखल होमए लागल । ब्राह्मणत्वक [illegible] जाति । जन्मना शुद्ध भेलाहुँ ब्राह्मण, नहि तँ [illegible] अछि । पुनि ब्राह्मणत्वक आधारक निमित्त थीकहि संस्कार, तथा ओकरा सुदृढ़ रखबाक हेतु आचार, जाहि बिनु ब्राह्मणत्व नहि होएत, नहि रहत । औ ब्राह्मणक वृत्ति भेल विद्याक व्यवसाय । [illegible] स्थान [illegible] स्थिर नहि [illegible] सकैत छथि ।

हरपुर [illegible] मुजफ्फरपुर जिला; दक्षिणमे [illegible], समस्तीपुर, औ [illegible] तथा [illegible] । [illegible] मुजफ्फरपुर [illegible] उत्तर-पश्चिम [illegible] अछि ।

अतएव जन्म, आचार (जाहिमें संस्कारक शुद्धता औ दैनन्दिन आचारक पालन दुहू अन्तर्गत अछि) औ विद्याक व्यवसाय इएह तीन भेल ब्राह्मणत्वक माप-दण्ड । भवभूतिक मालतीमाधव नाटकक टीकामे धर्माधिकरणिक-महामहोपाध्याय जगद्धर एक गोट स्मृतिक वचन उद्धृत कएलें छथि जे——

"जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्काराद् द्विज उच्यते ।
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते ।।"

अर्थात् ब्राह्मणक शुद्ध कुलमे विशुद्ध जन्म भेल तँ ब्राह्मण भेल; संस्कार विधिवद् भेलैक तखन औ द्विज भेल; विद्याध्ययन कएलक तँ विप्र भेल; यदि तीनू भेलैक तखन ओ श्रोत्रिय थीक । हमरालोकनिक समाजमे ब्राह्मणक सर्वोच्च श्रेणी जे एही 'श्रोत्रिय' शब्दक ओकर अपभ्रंश रूप "सोति" क नामसँ परिचित छथि से एतन्मूलके बुझबाक चाही ।

एहि सब विषयक स्पष्टीकरण परिचय संगृहीत भेलाक पर स्वयं भए गेल । हम एक गोट मात्र दृष्टान्त देब । सबहुँ जनैत छी जे महाराज हरिसिंहदेवक मन्त्रीलोकनिमे महाकवि विद्यापति ठाकुरक प्रपितामह लोकनि प्रमुख छलाह । [illegible] देवादित्य जे ताहि समयमे जीवित नहिओ छलाह तँ हुनकर बालक लोकनि वीरेश्वर औ गणेश्वर औ धीरेश्वर प्रभृति तथा पौत्रलोकनि चण्डेश्वर, रामदत्त, गोविन्ददत्त प्रभृति अवश्ये पञ्जी-प्रबन्धक अग्रगण्य नेता छल होएताह । आचारक पालन किंवा विद्याक व्यवसायमे ई लोकनि ककरासँ न्यून होइतथि ? मुदा अपन परिचय तँ ई लोकनि किछु नहि जानथि । पञ्जी प्रमाण अछि जे एहि "बिसपी" मूलक श्रीश्री पुरुष देवादित्यक पिता धिराहि कर्मादित्य (१)

(१) हमरा जे पुस्तक अछि ताहिमे तँ नहि परन्तु सुना लागल अछि जे कोनहु कोनहु पुस्तकमे जे [illegible] बिसपी मूलक बीजी; पुनः कर्मादित्य ठाकुरक पितामह विष्णु ठाकुर उल्लिखित छथि; ताहिमे देवादित्यक दोसर विवाह जाहिमे हुनका धीरेश्वर बालक, तकर परिचयमे देवादित्यका सासुरक नाम अछि स्वशुरक नहि । अतएव धीरेश्वर तरंग कोना कएल छल होएताह से

[illegible] विवाह । एहिमे स्पष्ट अछि जे संशोधक सबहिं भाइ अपन [illegible] हि सभक नाम राखथि, नहितें पूर्व परिचय हुनका लोकनिकें [illegible] छल । [illegible] अनुसार सब जे संशोधक वर्णन कैल कएल छल [illegible] विवाह [illegible] निर्णय कैल अर्पण भेल होएत। [illegible] मुख्य एवं [illegible] उत्कर्षमे [illegible] [illegible] [illegible] कारणसँ केवल [illegible] [illegible] भेल छ ।

[illegible] संगृहीत परिचयक [illegible] पञ्जी-प्रबन्धनिरूपणीय जे [illegible] [illegible] एहिमे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सँ [illegible] अनुमान [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । एहिमे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहि भेल गेल अछि, केवल मूलक प्रथम पुरुष [illegible] कहि [illegible] [illegible] । एनहु [illegible] [illegible] एकहि मूलमे सोति, योग्य ओ [illegible] [illegible] समावेश [illegible] तखन सन्देह होइत अछि जे कोनहु मूलकें "[illegible]" [illegible] कहि [illegible] मूलक कोनहु व्यक्तिकें [illegible] कैल कहब ?

[illegible] [illegible] संशोधक जे वर्णन करितहुँ छलाह तथापि प्रमाताम [illegible] [illegible] नहि [illegible] तथा [illegible] [illegible] रहिए गेल ।

[illegible] [illegible] कहल अछि "[illegible]" [illegible] [illegible] भेल [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] ।

[illegible] [illegible] अर्थ [illegible] स्वच्छ, [illegible] रहित । अतएव अव- [illegible] [illegible] ओ [illegible] [illegible] कोनो कलङ्क नहि रहए । [illegible] आगाँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निर्धारित [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहि [illegible] । अत [illegible] [illegible] [illegible] कोनो [illegible] नहि [illegible] । एहि शब्दक पारिभाषिक अर्थ अर्वाचीन थीक ओ एहि पारिभाषिक अर्थमे आब केओ [illegible] [illegible] नहि छथि ।

फलतः ओहि मूलक सब व्यक्तिकें प्रायशः कहए पड़ल जाथरि कोनिहु व्यक्तिक "किछ" [1] नीच नहि देखथ । वस्तुतः पञ्जीमे सोति किवा योग्यक परिचायक किछु संकेतो ता नहि अछि । एकर कारणो स्पष्ट अछि । पञ्जीप्रबन्ध उच्च वा नीचक निर्धारणार्थ तँ भेल नहि छल, ओ तँ छल परिचयक संग्रह । परिचयक वंशावसँ आरम्भमे उच्च वा नीच निर्धारित भेल "मूल" ओ तँ आपाततः मूलमात्रक उच्चता ओ नीचता पाछाँ प्रायः पञ्जीमे उपोद्घातक रूपमे जोड़ि देल गेल । सोति किवा योग्य व्यक्तिगत वैशिष्ट्यसँ हुनत आइल छल । विवाक वैशिष्ट्यसँ केओ सोति भेलाह ओ केओ योग्य परन्तु तें परस्पर विवाहादिमे कोनो प्रतिबन्ध तहिआ नहि छल । पूर्वापरक्रिकाक विवेचनासँ कतोक व्यक्तिकें सोति कहिए सकैत छिऐन्हि, नहि तँ पञ्जीमे ई कहब जे अमुक व्यक्ति सोति छलाह वा नहि, सम्भव नहि छैहि । परन्तु जाहु व्यक्तिकें सोति कहिए लैत छिऐन्हि तनिकाँ सम्बन्ध-परम्परा निश्चय जे सोति नहि छलाह तनिका सङ्ग देखैत छिऐन्हि । अत-एव हम तँ बुझैत छी जे आरम्भमे मूलक विशुद्धि मात्र देखल जाइत छल, कारण, ताहीसँ ब्राह्मणत्व सिद्ध भए जाइत अछि ओ ब्राह्मणक सङ्ग सम्बन्ध करब ब्राह्मणक श्रेष्ठताकें हानि नहि कए सकैत अछि । आवश्यक भेल ब्राह्मणत्व मात्रक निर्धारण ओ से जे निश्चित भए गेल, परिचयसँ केओ तन्मूलक सिद्ध भए गेलाह, तँ व्यक्तित्वें ओ उच्च रहथु वा नीच, वंशसँ पंच व्यक्ति हुनका ब्राह्मण जानि अपन कन्या देथि वा हुनक कन्या ग्रहण करथि । सामाजिक उत्कर्ष किवा अपकर्षक एक मात्र कारण जातिए ता

[1] योग्य तँ कियासँ आचार, संस्कार, वृत्ति, ओ कुटुम्बितिक्रिया, सब बुझबाक थीक परन्तु आन वस्तुक अवधारण एतेक दिन पछाति नहि भए सकैत अछि । केवल विवाह-क्रियाटा पञ्जीमे उल्लिखित भेटैत अछि । अतएव एतए ओ आगहु कियासँ विवाहक क्रिया बुझब अकरा कुटुम्बिताक क्रिया कहैत छिऐक, अपभ्रंशरूप कुटुमैती ।

सँ छल नहि; जाति तँ एक गोट कारण छल। ताहि सङ्ग आचार ओ विद्याक व्यवसाय सेहो तँ व्यक्तिगत उत्कर्षक अथवा अपकर्षक कारण बूझल जाइत छल।

परन्तु ई स्थिति पञ्जी-प्रबन्धकालक कहल अछि। क्रमशः विद्याक उत्कर्ष वा अपकर्षसँ व्यक्तिगत उच्चता वा नीचता विशेषरूपसँ स्पष्ट होमए लागल, कारण, आब तँ प्रत्येकक किया पञ्जीकारक, ओ तद्द्वारा सर्वहि जानल भए जाइत छल। पञ्जीप्रबन्ध-कालहुमे यदि कोनहु महाकुलक कोनहु शाखाक किछु अपकृष्ट सिद्ध भेल तँ ताहि शाखामे मूलक नामक सङ्ग-सङ्ग ओहि शाखाक अर्वाचीन निवास-स्थानक नाम जोड़ि ओ संकेतित कए देल गेल। एहि रूपक शाखाभेद पञ्जीप्रबन्धसँ प्राचीनो अनेक, प्रायः सब, महाकुलमे दृष्ट होइत अछि ओ से वास्तविक काल प्रायः अवर्णहिक सोलन करैत अछि। पञ्जीप्रबन्धक पश्चात् तँ से द्योतित करब नितान्त आवश्यक भए गेल, कारण, मूलेँ, सम्पत्ति अथवा यदि न्यून किया करथि तँ तकर संकेत कोना कएल जाएत ओ यदि से संकेतित नहि भेल तँ एकहि कुलक वंशधरमे उच्च ओ नीच कियाक भेद जौं रहल से लोक से कोना बूझत? अतएव पञ्जीप्रबन्धक सए वर्षक अभ्यन्तरहि, कतहु दू पुरुष, कतहु तीनि पुरुषक पश्चात्, प्रत्येक मूलमे शाखाक विभाजन देखैत छी। मूल ओएह रहल मुदा ताहि सङ्ग-सङ्ग अर्वाचीन निवास-स्थानक नाम आदि जोड़ि ओहि शाखाक परिचय होमए लागल। ई नवीन नाम "ग्राम" अथवा "डेरा" ओ मूलग्राम "मूल" कहबए लागल। फलतः आपन परिचयमे जन हुनकालोकनि जे अपन मूल कहैत छथिन्ह ताहिमे दू गोट — ग्रामक नाम रहैत अछि। पञ्जीप्रबन्धक पश्चात्

— यथा अलयीमूलक बैगनी शाखा। पञ्जीमे ई कहल जाइत "बैगनीशाखि अलयी" अथवा केवल "बैगनी-अलयी" मुदा हुनकालोकनि कहइत छथिन्ह "अलंकार बैगनी"। पञ्जीमे मूलक नाम पश्चात् ... व्यवहारमे मूलक नामक विशेषण रूप परिणति भेल छैक। मात्र मूलक विशेषण भेल महरए ओ पालीमूलक पलिवार। प्रथम अथवा प्रचलित अछि ओ दोसर बारान।

उच्चता वा नीचताक प्रधान निर्धारण एही "डेरा"-भेदसँ भेल छल ओ एखनहुँ कोनहु कुलक वंशिष्ट्य केवल मूलहिटासँ नहि, अपितु ताहि सङ्ग-सङ्ग "डेरा" क अथवा "ग्राम" क नामसँ स्पष्ट होइत अछि। पुनि गोटेक सए किंवा डेढ़ सए वर्षक मध्यमे एकहु डेरामे उच्चता ओ नीचताक प्रदर्शन आवश्यक भए गेल ओ से द्योतित करबाक हेतु "पाँजि" क सृष्टि भेल। परन्तु ई सब विषय हरिसिंहदेवोक इतिहास भेल जाइत अछि ओ प्रस्तुत प्रकरणमे असंलग्न प्रतीत होएत। एतबओ एतए एहि हेतु कहल जे ई डेराक पृथक्करण किंवा पाँजिक सृष्टि पञ्जी-प्रबन्धसँ स्वतन्त्र रहितहुँ ओकर अंश नहि थीक।

पञ्जीमे, डेराक नाम बड़ विरल भेटत; सर्वत्र मूल-मात्र उल्लिखित अछि। डेराक परिगणना ओ परिचयक हेतु एक गोट भिन्ने पञ्जी अछि जकरा "पत्र-पञ्जी" † कहैत छैक। तहिना "पाँजि"। पञ्जीमे "पाँजि"क कोनो चर्चा हा नहि भेटत ओ हरिसिंहदेवोक इतिहासमे सबसँ जटिल ओ रहस्यमय प्रश्न एही पाँजिक अछि। एहि सबसँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे उच्चता किंवा नीचताक अवधारण किंवा प्रदर्शन पञ्जी-प्रबन्धक उद्देश्य नहि छल; ओ तँ पञ्जीप्रबन्धक आनुषङ्गिक परिणाम भेल। पञ्जीप्रबन्धमे लक्ष्य छल "मूल"क विशुद्धि ओ कम कम उच्चता वा नीचताक संकेत समाजकेँ व्यवहारक सौलभ्यार्थ आवश्यक प्रतीत भेल जकर पूर्ति पञ्जीकार लोकनि करैत रहलाह।

† उत्येक मूलमे जाहि व्यक्तिक सन्तान जाहि डेराक निर्धारित भेलाह तनिक नाम ओहि डेराक नामक सङ्ग-सङ्ग पत्रपञ्जीमे उल्लिखित अछि। यथा अलयी मूलक एक गोट शाखाक अठारह गोट डेरा पूर्णरूप गेल तकर पैघ पत्र-पञ्जीमे एहि रूपेँ अछि—"बुद्धिकर सन्तति बैगनी" अर्थात् अलंकार बुद्धिकरक सन्तति बैगनीक बासी छलाह ओ तेँ अलंकार बैगनी कहलेँ बुद्धिकरक सन्तति द्योतित होइत छथि। एहिना जए गोट डेरा अछि ततेक वाक्य ओहिमे सूत्ररूपसँ उल्लिखित अछि।

अस्तु; खलवाँ मूल-पञ्जीमे ओहि थीन गोट मूलमे परिगणित अछि जे सब प्रत्येक मते उत्तम, श्रेष्ठ, मानल गेल अछि । "खण्डुआ"-मूलक [illegible] पञ्जीकार [illegible] छथि जे प्राचीन पञ्जी-[illegible] भेल अछि । अपनासँ पूर्वक पञ्जीक आचार्य [illegible] मञ्जुलधर, [illegible] विद्वनाथ, एहि सब-[illegible] उल्लेख करैत ई कहैत छथि जे—

गङ्गौली च कुजौली च पवौलि खलवाँ तथा ।
बहेराढ़ी संकराढ़ी पाली पञ्चकुलम्बु श्रोत्रियाः ॥

"खलवाँ" हेतु गोट मूलक निर्देश कए [illegible] गोट "करमहा" मूलक नाम एहि तरहें अछि जाहिमे "गंगौली" "कुजौली" "पवौली" "बहेराढ़ी" "सकुराढ़ी" ओ "पाली" क सङ्ग सङ्ग "खलवाँ" क सेहो नाम अछि । तेहिसँ एतय [illegible] केवल कुजौली, पवौलि, संकराढ़ी ओ पाली — इएह करमहा मूलक [illegible] छथि परन्तु [illegible] स्पष्ट अछि जे पञ्जीमे अर्थात् पञ्जीक प्रबन्धकालमे ई सातो मूल श्रोत्रियक मूल निश्चित भेल छल, सर्वोच्च मानल गेल छल, अवदात छल । कारण जे हम एहि मूलक विशिष्ट क्रियाकलापक किछु किछु विवरण करएब तहूसँ स्पष्ट होएत जे मैथिल-ब्राह्मण-समाजमे ताहि दिन एहि मूलक मर्यादा कोन-एकक विशिष्ट छल ।

परन्तु हम पूर्वहिँ कहि आएल छी जे पञ्जीप्रबन्धकालहिसँ एहि मूलक गोट [illegible] शाखा भेल [illegible] खलवाँ मूलक उल्लेख पञ्जीमे सर्वत्र विशेषण-विशिष्ट भेल । तथापि केवल खलवाँ कहलासँ पञ्जीमे प्रायः [illegible] "बाड़-खलवाँ" क बोध होइत अछि, [illegible] "गोधौली-खलवाँ" क । ताहि प्रकरणमे खलवाँ मूलके श्रोत्रिय कहल अछि

— पञ्जीकार [illegible] परिचय ओ हिनका सम्बन्ध प्रसङ्ग हम [illegible] अध्यायमे हिनक विशिष्ट कार्यक [illegible] अवसरपर करब ।

ताहि प्रकरणमे खलवाँ आदि बीसो गोट श्रेष्ठ ओ चौदहो गोट मध्यम मूलक बीजी पुरुषक उल्लेख ओहिना श्लोकबद्ध अछि । ताहिमे खलवाँ मूलक बीजी पुरुष "गङ्गाधर" कहल छथि । खलवाँ मूलक जाहि शाखाक बीजी-पुरुष गङ्गाधर भेल छथि तकरा कहल छिऐक "बाड़ खलवाँ" । पञ्जी-प्रबन्धोत्तरकालमे गोधौली खलवाँक प्रतिष्ठा बाड़-खलवाँसँ न्यून नहि, प्रत्युत कतोक अंशमे बढ़ चढ़ल भेल अछि परन्तु गोधौली-खलवाँक बीजी-पुरुष भिन्नाइ धरणीधर, गङ्गाधर नहि । हम एहो पूर्वहिं कहि आएल छी जे शाखाक अर्वाचीन निवास-स्थानक उल्लेखपुरस्सर जतए कतहु मूलक उल्लेख पञ्जीमे भेल अछि ततए अधिकांश ठाम, पाँच सात गोट पंथ शाखाकेँ छाड़ि प्रायः सर्वत्र, ओहि शाखाक अपकर्ष द्योतित होइत अछि । केवल "खलवाँ" कहलासँ खलवाँमूलक "बाड़" शाखाक बोध होइत अछि, आओर सब शाखामे डेराक नाम जोड़ले रहैत अछि । अतएव एहि सबसँ इएह सिद्ध होइत अछि जे पञ्जीप्रबन्धकालमे "श्रोत्रिय" क श्रेणीमे परिगणित "खलवाँ" मूल, जकर बीजी पुरुष "गङ्गाधर" छलाह, एहि मूलक ओ शाखा थिक जकर उल्लेख पञ्जीमे "बाड़भासी खलवाँ" कहि कएल गेल अछि ।

———:o:———

शाखा

"अलयी" मूलक ई "बाड़-शाखा" जाहिमे शताब्दि बर्षक अभ्यन्तर बड़ रहु गोट जनशाखा नओ ग्राममे विभक्त भेल सो जाहिमे संप्रति सहलो नई ब्राह्मण बुद्धिमान वर्तमान छथि, जाहिमे पञ्जीप्रबन्धकालमे प्रायः दुइ घर मात्र ब्राह्मण भेटलाह। प्रथम छलाह महामहोपाध्याय रामेश्वर उपाध्याय जे अपन संतानेँ यो पितिऔत भाइ लोकनिक सङ्ग प्रायः एकत्र छलाह तथा दोसर घर छल हुनक सपिण्ड रामेश्वरक पितामहक पितिऔत भाइक प्रपौत्र सद-शर्माक। अपना कुलक तँ ई लोकनि छओ पुरुखक नाम कहल परन्तु अपनो × परिचय हिनका लोकनि अपन छओ पुरुखक नहि दए सकलाह। अपना ब्राह्मक पितामहक पितामह धरिक नाम तँ ई लोकनि कहल परन्तु आगाँ परिचय ई लोकनि अपन पितामहक मातिक्रहिक दए धरि कहि सकलाह। निवास-स्थानक प्रसङ्गमे ई लोकनि कहल जे आदिम ज्ञात निवास हमरा लोकनिकेँ "अलयो" जानल गेल। परन्तु ई नहि निश्चय होइत अछि जे अलयी मूलक ई शाखा जाहि "बाड़" गामक नामपर निर्धारित भेल ततए हिनका लोकनिक अपन वास छल किंवा हिनका लोकनिक सबसँ प्राचीन ज्ञात पूर्व पुरुष अर्थात् बीजी पुरुष जे छलथिन्ह तनिक वास छल। सम्भव इएह थीक जे बीजी पुरुषहिक वास ओहि बाड़ गाममे छल, कारण, आगाँ ज्ञात

× आयलो परिचयमे तात्पर्य थीक, कोइहु कुलक परिचय अपनेँ कन्यादान पढ़ैत अछि तेँ ओइहो "छओ" पुरुख "छथि" कहबैत छथि। ओहि कोइहो वायिकक संतान ब्राह्मणकेँ ओहि कन्यासँ ... नहि अछि तेँ विवाहक अधिकार नहि होइत अछि। ई सोइहो कुल थीक "बाप ओ माइक पितामह ओ पितामही तथा मातामह ओ मातामहीक पितामह ओ मातामह।"

जखन डेरा फुटाओल गेल तखन पञ्जीप्रबन्धकाल वा ताहिसँ किछु पूर्व-हुक्क्वचित लोकनिक थाए गोट भिन्न भिन्न डेरा स्थिर भेल। अलयी गाममे वास हिनका लोकनिक बीजी पुरुषहुसँ पूर्वहिँ छल। हिनका लोकनिकेँ केवल परम्पराश्रुत छल जे हमरा लोकनि "अलयी" क वासी थिकहुँ। अलयीमे वास ककर छल से हिनका लोकनिकेँ ज्ञात नहि छल।

ई बाड़ गाम कतए अछि तकर पूर्ण अनुसंधानो कएला उत्तर पता नहि लगैत अछि। एहि रूपमे तँ कोनो गाम कमसँ कम दड़िभङ्गा जिलामे नहिए अछि परन्तु एकर अपभ्रंश रूपमे कोनो गाम संप्रति अछि की नहि जकरा ई गाम सेहो सकी से नहि भेटल अछि।

महामहोपाध्याय रामेश्वर झाक प्रपितामहक पितामह जे एहि कुलक सबसँ प्राचीन पूर्व पुरुष ज्ञात भए सकलाह सएह एहि कुलक बीजी पुरुष भेलाह। पञ्जीमे एहि गङ्गाधरकेँ महामहोपाध्याय * कहल अछि ओ से तँ प्रायः बहुतो श्रेष्ठ कुलक बीजी पुरुष कहल छथि। तकरासँ विशिष्ट जे एकटा उपाधि पञ्जीमे हिनका भेटैत अछि से थीक "पण्डित"। महामहोपाध्याय भेलहिँ पण्डितत्व सिद्ध अछि तखन एहि उपाधिक की आशय? एहिरूपेँ पण्डित-उपाधि पञ्जीमे आओर ठाम अन्यत्रहुँ दृष्ट भेल अछि परन्तु तैओ ई विरल अछि। पञ्जीमे जतए उपाधि सबहिक तात्पर्य स्पष्ट कएल अछि ततए ई नहि देल अछि अतएव ई असाधारण अवश्य अछि ओ से एखन धरि एकर आशय स्पष्ट नहि होइत अछि। पण्डितक अभिधार्थ लए जँ

* पञ्जीमे सबटा उपाधि साभिप्राय अछि तथा पञ्जीकार रघुदेव झा ताहिमे बहुतोक आशय स्पष्ट कए देने छथि। महामहोपाध्याय उपाधि ओहि विद्वानक थीक जे सब दर्शनमे निष्णात छलाह। केवल नैयायिक उपाधि महोपाध्याय थीक, मीमांसकक उपाधि मिश्र थीक, ठाकुर उपाधि भूमि संबलित अधिकारीक छल जकरा एखन जमींदार कहैत छैक। एहिना आओर उपाधिक आशय जतए जे बुझल होएत क्रमशः स्पष्ट करैत जाएब।

आशय [illegible] करी तेँ इएह मानए पड़त जे शास्त्रीय विद्याक सङ्गसङ्ग हिनका घरमे [illegible] लोकहो छल, हिनक गणना "ज्ञानी" मे होइत छल। हिनक समयक [illegible] निश्चय तँ नहि किछु कहि सकैत छी परन्तु पञ्जीक विवेचना कएलासँ [illegible] मोटामोटी एक पुस्त प्रायः पँएतालीस वर्षक मानए पड़त। तेँ महामहोपाध्याय रामेश्वरक जन्म यदि शाके १२०० मे मानि लेल तेँ हुनक [illegible] पितामहक पितामह पण्डित गङ्गाधरक समय साहित्तेँ सबा दू सए [illegible] पूर्व, प्रथम शक शताब्दिक अन्तिम भाग मानए पड़त।

[illegible] एक गोट मात्र बालक, भरत, ओ हुनका चारि गोट बालक। सबसँ जेठ 'शीतै' क सन्तान पञ्जीप्रबन्धकालहुमे विद्यमान छलाह। ओहिमे एक गोट बालक देवपतिक दू गोट कन्याक परिचय भेटैत अछि: एक गोटाक विवाह "नरऔनमूलक" "शङ्करपुर" शाखाक [illegible] जनित सन्तान ओहि शाखाक सब "नरऔनए" थिकाह। [illegible] कन्याक विवाह छल "तिलयी" मूलक रामसँ जनिक प्रपौत्रक पौत्र [illegible] राय जनिक दौहित्र पहसरा एवं सोरिआ राज्यक प्रतिष्ठापक "[illegible]"-मूलक चौधरी सनक राय छलाह। एहि देवपतिक बालकलोकनि पञ्जीप्रबन्धकाल धरि ओ तकर पश्चातहुँ ई लोकनि पौरोहित्य वृत्ति करैत छलाह जकर द्योतन पञ्जीमे हिनकालोकनिक "शर्म्मा" उपाधिसँ होइत अछि। शीतैक पौत्रक पौत्र छलाह गयशर्मा ओ गयशर्मेक बालककेँ [illegible] पञ्जीमे "जरहटिआ" क वासी कहल अछि। पूर्ण रूपेँ प्रमाणित तँ नहि होइत अछि परन्तु प्रायः एहि गयशर्माक एक गोट कन्याक विवाह छल "[illegible]" मूलक श्रीकृष्णसँ, जनिक दौहित्र "करमहा" मूलक श्रीधर [illegible] ओ श्रीधरक दौहित्र छलाह चान ठाकुर ÷ सबहुँ भाइ। जे हो, "[illegible]" क "जरहटिआ" शाखा मात्र शीतैक सन्तान थिकाह।

÷ चान ठाकुर, खड़ौरए, मिथिलाराज्योपार्जक म०म० महेश ठाकुरक पिता छलाह।

एहि शाखामे [illegible] थोड़ लाहू दिन छल; सम्प्रति "अलँवार जरहटिआ" केओ छथि वा नहि से हमरा ज्ञात नहि अछि परन्तु समाजमे ई शाखा [illegible] श्रेणीमे छल।

शीतैक [illegible] छोट भाइ छलाह वर्धमान। हुनका पुत्रपत्य नहि, एक गोट कन्याक उल्लेख भेटैत अछि जनिक विवाह "बलिआस" मूलक "[illegible]" शाखाक बीजी पुरुष धरणीधरक पौत्र हरि शर्मासँ छल। एहि हरि शर्माक जेठ भाइ छलथिन्ह हरिवंश शुक्ल †। हरिवंशक विवाह छल "खण्डबला"-मूलक चक्रेश्वर ठाकुरक कन्यासँ। चक्रेश्वरक प्रपौत्र छलाह ज्ञानपति ठाकुर ओ ई पञ्जीप्रबन्धकालमे विद्यमान छलाह। ज्ञानपति ठाकुरक वृद्ध प्रपौत्र मिथिलाराज्योपार्जक महामहोपाध्याय महेश ठाकुर छलाह। शुक्ल हरिवंशक प्रपौत्रक कन्यासँ "सोदरपुर"-मूलक म० म० [illegible] मिश्रक एक गोट विवाह छल ओ हिनक एहि विवाहक सन्तान "सोदरपुर" मूलक "ज्ञानी" ओ "जगौर" शाखा थीक। शुक्लक छोट भाइ हरि शर्माक बालक जे "अलँवार" वर्धमानक दौहित्र छलाह तनिक पौत्रीसँ "खड़ौरए" ज्ञानपति ठाकुरक विवाह छल ओ ज्ञानपति ठाकुरक सन्तान एहि मूलक "भौर" ओ "बेहट" सन प्रतिष्ठित डेरा थीक। एतावता "अलँवार" वर्धमान ओ "खड़ौरए" चक्रेश्वर—दुहू समानकालीन छलाह, कारण जे दुहुक कन्यासँ "बलिआसए" दू सोदर भाइक विवाह छल। चक्रेश्वर ठाकुरक प्रपितामह छलाह "खण्डबलाग्रामोपार्जक" साओ सङ्कर्षण ठाकुर ओ वर्धमानक पितामह छलाह "अलँवार" क बीजी पुरुष गङ्गाधर। अतएव "अलँवार" क बीजी पुरुष "खण्डबलाग्रामोपार्जक" सङ्कर्षण ठाकुरसँ अन्ततः एक पुरुष नवीन सिद्ध होइत छथि।

† शुक्ल [illegible] मैथिल ब्राह्मणहुक उपाधि छल ओ एकर किछु तात्पर्य अवश्य छल होएतैक किएक तँ कोनो उपाधि बिनु तात्पर्य नहि छैक परन्तु से तात्पर्य आब बुझल नहि होइत अछि। एहिना कांजि से हो मैथिल-ब्राह्मणक उपाधि छल।

कुल चित्र (२)

एकन्या-बलिआस-मूलक बीजीक पौत्र

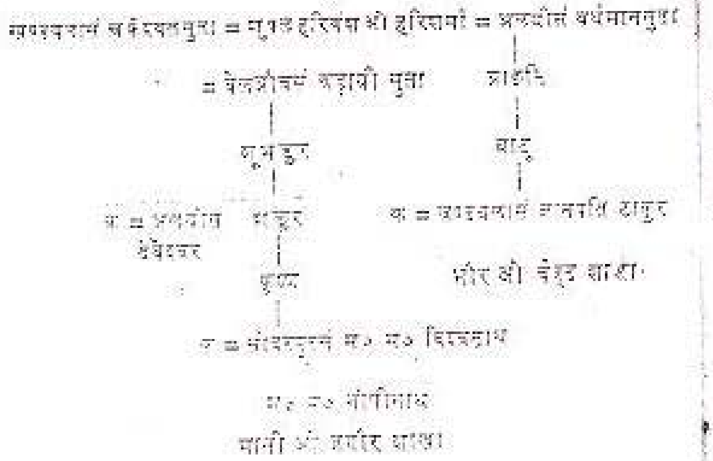

मधवसँ ओझ [illegible] जो मधवँ [illegible] वर्धमानक [illegible] के पुत्र [illegible] [illegible], पद्मुम्न श्री हुज, साहित्ये [illegible] श्रीमद्भु [illegible] उल्लेख [illegible] प्रसिद्ध। [illegible] नाम [illegible] एक मात्र [illegible] छलाह [illegible]। [illegible] विवाह [illegible] 'सोदरपुर' क [illegible], महीराजाव [illegible] नाहिँ [illegible] [illegible] नाहिँ [illegible]। [illegible] [illegible] उल्लेख [illegible] छथि। हिनक विवाह [illegible] "[illegible]" मूलक महोपाध्याय बीजीक। [illegible] नाहिँ "सोदरपुरिए" म० म० विश्व-

कुल-चित्र (४)

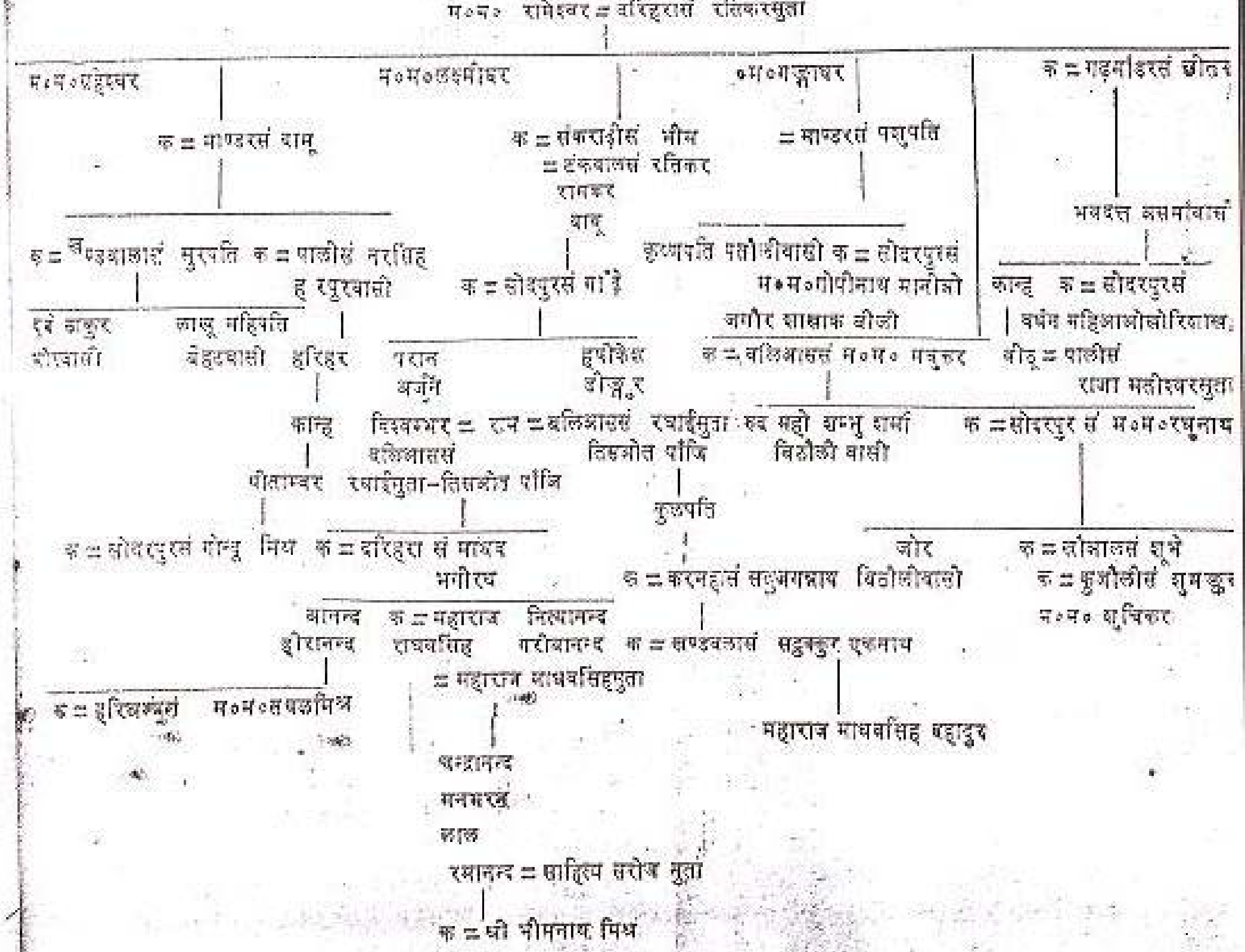

नाथ मिश्रक चर्चा कएल अछि तनिक पौत्र सुप्रसिद्ध धर्माचार्य म० म० भवनाथ (प्रसिद्ध नाम बूबे) मिश्रक मातामह म० म० धटेश्वरक ई बीशो जेठ भाए छलाह तथा हिनक दोसर विवाह छल "पाली"-मूलक "बलाइनि" शाखाक हलधर मिश्रक कन्यामे। एहि हलधर मिश्रक 'प्रपौत्र छलाह म० म० "परमगुरु" वाचस्पति मिश्र जनिका "स्मार्त" किंवा "अभिनव वाचस्पति" कहैत छथिन्हि। एहुसँ परमगुरु वाचस्पतिक प्रपितामह श्री अलंकार रत्नेश्वर समानकालीन छलाह। "अलंकार"क दौहित्र जे बालक बीशोकेँ छलथिन्हि तनिक नाम छल प्रसाद * महोपाध्याय शुभङ्कर तथा पत्र-पञ्जीमे ई "सकुरी"क वासी कहल छथि। प्रसाद महो शुभङ्करक तीनि गोट कन्याक विवाह "सरिसव"-मूलक महाकुलक तीनि गोट महापुरुषसँ छल जनिक सन्तान ओहि मूलक समस्त "खाड़ु" शाखा ओ "जोंकी" "छादन" तथा "बधवास" शाखाक कतिपय अंश थीक।

कमलपाणिक तेसर बालक देवेश्वरकेँ एक गोट मात्र बालक जे छलाह दौहित्र "बलिआस" मूलक "एकम्बा" शाखाक शुक्ल हरिवंशक बालक शुभङ्करक। तीनि पुरुष धरि हिनक सन्तानक परिचय भेटैत अछि परन्तु तकर उपरान्त ई शाखा लुप्त भए जाइत अछि। पत्रपञ्जीमे देवेश्वरक सन्तानक चर्चा नहि अछि अतएव इएह अनुमान होइत अछि जे देवेश्वरक वंश लुप्त भए गेल। केवल हिनक प्रपौत्रक कन्यामे "सोनोली" मूलक आचार्य † बालूक विवाह भेल ओ तनिक सन्तान-परम्परा हो ते जनैछ। एहिसँ अधिक हिनक प्रसङ्ग पञ्जीमे नहि भेटैत अछि।

कमलपाणिक सबसँ छोट बालक महेश्वरक सन्तान पत्रपञ्जीमे "पलवी"क वासी कहल छथि। आगाँ जाएकेँ देखब जे एहि कुलक आओर

* प्रसाद-शङ्कु उपाधिक आशय नहि बुझल होइत अछि मुदा पञ्जीमे कए ठाम देखलामे अबैत अछि।

† आचार्य-शङ्को उपाधि असाधारण अछि तथा किम्मूलक से बुझल नहि होइत अछि।

कए गोट कन्याजाल जेरा "अलवे" भेल अर्थात् जो लोकनि "अलवी" क माली रहि "अर्लवार वर्ग" कहाबथि । जयेश्वरकुल सन्तान "अर्लवार वर्ग" भेलाह । एतनहु मिथिलामे एहि मूलक अनेक सद्ब्राह्मण छथि परन्तु हमरा जहाँ धरि परिचय भेल अछि ताहिमे जयेश्वरक सन्तति नहि छथि । से केओ छथि वा नहि से हमरा ज्ञात नहि अछि । जयेश्वरक सन्तानमे कोनहु विशिष्ट व्यक्तिक परिचय नहि भेटैत अछि ओ दिनानुदिन क्रियाक अप-कर्षे वंशक्षमे अवनत अछि । हिनका एक गोट मात्र बालक ओ तनिक दू बालकमे जेठ, दामोदरक विवाह ओइनिवार राजकुलक प्रतिष्ठापक राजपण्डित कामेश्वर ठाकुरक समर्थ जेठ बालक लक्ष्मीकरक कन्यासँ छल । राज्यक अधिकारी लक्ष्मीकरक छोट वैमात्रेय भाइ लोकनि होइत गेलाह; पञ्जीमे लक्ष्मीकरकेँ केवल "राजवल्लभ" क उपाधि दा देखल छिऐन्हि ।

कमलपाणिक द्वितीय बालक छलाह धर्मेश्वर जे एहि कुलमे सबसँ विशिष्ट हिनके सन्तान छथि, से केवल गुणगौरव एवं प्रतिष्ठितताहि नहि, अपितु संख्यहुसे । वस्तुतः हिनके सन्तान तरौने अलवी मूलक नाम । हिनका दू गोट विवाह छल ; प्रथम "पण्डुआ" मूलक "सतैन" शाखाक दिवाकरक कन्यासँ ओ दिवाकरक विवाह छल "करमहा" मूलक महा-कुलक बीजीपुरुष वंशधरक द्वितीय बालक म० म० हरिकेशक कन्यासँ । एहि हरिकेशक छोट भाए छलाह मिथिलाक सुप्रसिद्ध "गोन्डू झा" जनिक उल्लेख पञ्जीमे अछि "धूर्तराज" महो गोन्डू । एहिसँ स्पष्ट अछि जे "अलवी" मूलक बीजीपुरुषसँ पाँचम धर्मेश्वरक विवाह "करमहा" मूलक बीजी-पुरुषक बालक म० म० हरिकेशक दौहित्रीसँ छल जो से "करमहा" मूलक बीजीपुरुष "अर्लवार"क बीजीपुरुषसँ क्रमसँ कम एक पुरुष अर्वाचीन छथि । एहि स्थितिमे धर्मेश्वरकेँ एक गोट बालक मात्र, म० म० रामेश्वर उपाध्याय । दोसर विवाह धर्मेश्वरकेँ छल "माण्डर" मूलक रत्नाकरक कन्यासँ ओ ताहिसे हिनका एकगोट बालक मात्र, वीरेश्वर । से पञ्जी-प्रबन्धक समयमे जीवित सन्तान जे केओ छलाह — से प्रायः

गयशर्मा छलाह-तनिका तङ्क पदुमक सन्तान छलाह । ताहिमे जे पदुमक पौत्र चारू भाइमे केओ जीवितो छलाह तँ बड़ वृद्ध छल होएताह, पूर्णवयस्क छल होएताह धर्मेश्वरक वृद्ध बालक, म० म० रामेश्वर ओ हुनक वैमात्रेय वीरेश्वर, तथा हुनक पितिऔत देवेश्वर ओ जयेश्वरक बालक ।

वीरेश्वरकेँ दू गोट विवाह छल । प्रथम "पचौली" मूलक महाकुलमे जकर लागि बड़ बड़ पँच कुलसँ । एहिमे हिनक एक गोट कन्याक परिचय भेटल अछि जनिक विवाह "खण्डवला" मूलक "एकन्वा" शाखाक धाक-ठाकुरसँ छल । हिनक सन्तानपरम्परामे † बड़ बड़ पँचलोक वर्तमान छथि । दोसर विवाहमे वीरेश्वरकेँ दू बालक ओ एक गोट कन्याक उल्लेख भेटैत अछि । कन्याक विवाह छल "गङ्गौली विसपी" मूलक महुलक होराओ ठाकुरसँ । पञ्जीमे "महुलक" धनाढ्यक उपाधि भेटल, ओ कन्यत धनाढ्यकेँ "महामहुलक" कहैत अछि । ई धनाढ्य होराओ ठाकुर कविकोकिल विद्यापति ठाकुरक प्रपितामहभ्राता "स्थाना-

---

† सन्तान-परम्पराक वास्तो परिचय देबेमे बड़ विस्तार भए जाएत तेँ से सब ठाम नहि देब । एतए केवल एक गोट परिचय दए एकर दृष्टान्त दए देल छी । वीरेश्वरक कन्याक विवाह एकन्वा खण्डवलामे धाकसँ । तनिक बालक भीम । तनिक कन्याक विवाह दजती मूलक होरेसँ तनिक कन्याक विवाह पचही-अलियाल मूलक मीतूसँ तनिक कन्याक विवाह हरिअम्ब मूलक रामकरसँ तनिक कन्याक विवाह माण्डरपुर मूलक हाटी-शाखाक होरेसँ । हिनक बालक छलाह म० म० गदाधर, हिनक सन्तान बड़ पँच पँच व्यक्ति छलाह जे केओ लोकनि एहि कुलक लागिसँ वञ्चित नहि होएताह । ई एक गोट मात्र परिचय देल अछि । एना कए गोट अछि ओ ताहिमे बड़ बड़ पँच कुल पड़ैत अछि । बहुत दिन धरि ई हाटी शाखा लोकमे छल परन्तु आब लुप्त भए गेल अछि ।

[illegible] "[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महाराज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बालक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छल [illegible] एहिमे [illegible] नहि ।

[illegible] [illegible] बालकमे [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible]" [illegible] बासी [illegible] छथि [illegible] [illegible] "[illegible]" [illegible] । [illegible] [illegible] बालक [illegible] [illegible] "[illegible]"क बासी [illegible] छथि । [illegible] [illegible] "[illegible]" ओ "[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । एहि [illegible] [illegible] बहुत [illegible] बहुत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बहुत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । सम्प्रति एहि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहि [illegible] [illegible] [illegible] हेतु एहि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देल छी ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बालक—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ओ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । ई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ओ [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] "[illegible]" [illegible] [illegible] पद छल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अछि ।

[illegible] ई [illegible] [illegible] [illegible] एहि नामसँ प्रसिद्ध [illegible] [illegible] [illegible] अछि ।

[illegible] [illegible] ई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जिलाक वर्तमान [illegible] [illegible] ।

मॅरेश्वरक जेठ बालक बासुक एक गोट कन्याक विवाह "बेलऔंच" मूलक "कन्हौली" शाखाक डीजी प्रणादित्तसँ छल जनिक बालक छलाह सूचे । हिनका दू कन्या, एक गोटाक विवाह "बहेराड़ी" मूलक त्रिणुसँ ओ तनिक कन्यामे "सोदरपुर" मूलक 'तरिसब' शाखाक म.म. शंकरमिश्रक बालक महोपाध्याय गोविन्द मिश्रक एकटा विवाह छल । दूपेक दोसर कन्याक विवाह छल "सोदरपुर" मूलक "भऔलि" शाखाक राय कान्हूक बालक महन्तसँ । राय कान्हूक जेठ भाए भवेश्वरक कन्यामे महाराज शिवसिंहक एक गोट विवाह छल । महन्तक पौत्र म.म. रामेश्वरक कन्यामे 'करमहा' मूलक "बेहट" शाखाक महोपाध्याय राघव झाक एक गोट विवाह छल जाहि पक्षक पुत्र बालक म.म. हरिहर उपाध्याय "भर्तृहरिनिर्वेदनाटक", "सुभाषितादि" अनेक विलक्षण ग्रन्थक रचयिता सुविख्यात छथि । महन्तक दौहित्र छलाह "हरिअम्ब"-मूलक "शौबा" शाखाक मुड़ाचीन मिश्र ओ तनिक कन्यामे म.म. तन्मिश्र शंकरक पौत्र, ओही गोविन्द मिश्रक सबसँ जेठ बालक महोपाध्याय रघुनन्दन मिश्रक * विवाह छल । ई लोकनि सब बड़का संतति छलाह तथा हिनका लोकनिक सन्तान समस्त सौरिपुरामे भरल अछि ।

अमरिहार बासी मॅरेक प्रपौत्रमे दू भाइक परिचय हम एतए दैत छी । एक गोटए छलाह काशी जनिक दौहित्र छलाह "हरिहरा" मूलक मधू । एहि मधूक दौहित्र छलाह "बासी" मूलक दिघबा शाखाक लक्ष्मु पाठक-तनिक संतानपर अवलम्बित अछि सम्प्रति लोकनिक एक गोट प्रतिष्ठित पाजि पौत्र ।

---

* महो. रघुनन्दन मिश्रक प्रपौत्रक प्रपौत्रक पौत्र [illegible] महोपाध्याय श्री [illegible] मिश्र ओ महोपाध्याय श्री गोपेनूनाथ मिश्र लोकनि सम्प्रति [illegible] लोकनि सबसँ [illegible] [illegible] [illegible] विद्यमान छथि ।

— [illegible] [illegible] कन्यामे सोदरपुरमे [illegible] विवाह, तनिक कन्यामे | माण्डरमे [illegible] विवाह, हिनिक कन्यामे [illegible] [illegible] विवाह, | तनिक कन्यामे [illegible] महांक विवाह, तनिक कन्यामे कुजौलीमे म.म. कुलपतिक विवाह । हिनक पत्नीक भागो भैरव गागा [illegible] सिंहक विवाहक प्रस्ताव [illegible] । एही कुलपतिभाक सन्तति ई पाँजि [illegible] पसरल अछि ।

मतिक दोसर प्रपौत्र छलाह माधव ओ भवादत्त-बालक छलाह गोपी-नाथ । एहि गोपीनाथक कन्याक विवाह छल "सोदरपुर" मूलक "कन्होली" शाखाक गोपीनाथसँ । एहि गोपीनाथक दौहित्र छलाह "बुधवार" मूलक "महिसी" शाखाक लोचन पाठक * । लोचनक कन्यादि "खंडवाल" मूलक भँडार विवाह छल ओ भँडारक दौहित्र छलाह नरौर राजक प्रतिष्ठापक राजा रामलोचन चौधरी ÷ ।

हरिदेश्वरक छोट बालक "बेहुटा-वासी" गोविन्दकेँ एक गोट मात्र बालक विद्यापति । हिनक दौहित्रीपुत्र छलाह "खौराड़ी" मूलक फकन ठाकुर । एहि फकनक कन्यामे "खण्डवला" मूलक "बेहट" शाखाक रूपनाथ ठाकुरक विवाह छल । ई रूपनाथ छलाह मिथिलाराज्यसंस्थापक म.म. महेश-ठाकुरक विमात्र-भ्राता महिपति ठाकुरक † प्रपौत्र । खण्डवलामूलक ई डेरा यद्यपि सोतिसँ बहुत दिन पूर्वहिँ हटि गेल मुदा ओकरहि ई वर्तमान समय धरि बड़ प्रतिष्ठित छल ओ सोतिसँ एकरा सब दिन सम्बन्ध । एही रूपनाथ ठाकुरक प्रपौत्रक प्रपौत्र शम्भू ठाकुरक कन्यामे राजा सदानन्द सिंहक विवाह छल से आगाँ कहब । "सर्वकार" विद्यापतिक एक गोट बालक सोमक कन्यामे "सरिसब"-मूलक "जोँड़ी" शाखाक माधव मिश्रक विवाह छल ओ एही माधव मिश्रक प्रपौत्रक पौत्र छलाह शंकर मिश्र जनिक कन्यामे "भलनी" मूलक महेशक विवाह छल जनिक कन्यामे "कुजौली" मूलक म.म. कुलपतिझाक विवाह छल जनिक कन्यामे वनैलीराज्यक यथार्थ प्रतिष्ठापक राजा दुलार सिंहक दोसर विवाह छल ।

* पञ्जीमे "पाठक" उपाधि पौराणिकक छल अर्थात् जे पुराण बाँचि जीवन-यापन करथि से पाठक कहाबथि ।

÷ राजा रामलोचन चौधरी करमहा मूलक नडुआड़ शाखाक छलाह ओ हिनक प्रपौत्र छलाह स्वर्गीय राजा रघुनाथ चौधरी ।

† महिपति ठाकुर तीनि भाइ छलाह । सबसँ जेठ श्रीपति ठाकुर जनिक प्रसिद्ध नाम दूबे ठाकुर छल भौरक वासी कहल छथि ओ हिनके पौत्र महाराज महेश ठाकुर छलाह । शेष दू भाइ लाखू ठाकुर ओ महिपति ठाकुर बेहटक वासी कहल छथि ।

भवेश्वरक जेठ बालक, म० म० रामेश्वर,——हिनका लोक रामभद्रा कहए——यथार्थतः एक गोट महापुरुष छलाह तथा एहि कुलके वस्तुतः प्रकाशित भए सकल सज्जन-वर्गसँ समस्त मिथिलाकेँ जेना दर्शाइत कए देल । मिथिलामे ब्राह्मणक अनेक सत्कुल अछि मुदा कतिधा हिनक सन्तान-कोटिमे पड़त । जन्मना ई शुद्ध छलाह, अवदात छलाह । विद्याक वैभव हिनक उपाधि सूचित करैत अछि ओ हम नहि बुझइत छी जे पञ्जीमे षड्दर्शनक आचार्यक हेतु "महामहोपाध्याय" प्रयुक्त भेल अछि । हिनक वेदान्तीकनि, सोमजीकनि, हरीवजीकनि अनेक महामहोपाध्याय छलाह ओ सभ एहन सन लगैत अछि जेना सरस्वतीक उपासना ई सभ सन्तानकेँ सन्धालिक रूपमे दए गेल रहथि । ताहू समयमे एहन विशुद्ध सद्ब्राह्मण थोड़ छलाह——दृष्टान्तक हेतु हम केवल दू गोट नाम एतए कहि दैत छियनि यथा श्री, "सोदरपुर" मूलक म.म. विश्वनाथ† मिश्र, ओ "माण्डर" मूलक म.म. वटेश्वर÷ उपाध्याय-जे लोकनि जातिक उत्कर्ष, आचारक यथावत् परिपालन ओ स्वबुद्धिक व्यवसायसँ केवल अपनहि टा ऊपर नहि भए गेलाह अपितु सकल कुलकेँ उत्कृष्ट बनाए देल ओ विद्याक एकान्त उपासनासँ मिथिलाक नाम समस्त भारतवर्षमे आदरणीय बनाए देल । मिथिल

† म.म. विश्वनाथक सन्तानमे सोदरपुरक ई चौदह गोट शाखा अछि—खौआल, सुबेत, अबाडिहा, कटका, पोखरौनावासी मोड़, बिराउँध, मनिगाम, चाँगी, रैआम, सिसौनी, बिदोली, मानी ओ [illegible] । हिनक सबसँ जेठ बालकक प्रपौत्र छलाह दामोदर मिश्र ओ एक गोट पौत्र भवानी [illegible] जनिक शंकरावतार पुत्र [illegible] म.म. शंकर छलाह ।

÷ म.म. वटेश्वरक सन्तानमे माण्डरमूलक ई उन्नैस गोट शाखा अछि—ओंगौ, रजौरा, पलीमा, [illegible], अन्तरवती, करैआ, बनकोर्थ, [illegible], कटका, तिरतँहिआ, सिहौलि, सुखौलि, बड़गाम, बिहुआड़, [illegible] लुबका, कल्याण, कराई, बेहटा । मिथिलाक सुप्रसिद्ध नैयायिक [illegible] उपाध्याय हिनके प्रपौत्र छलाह ।

एही रामेश्वरक ब्राह्मणत्वसँ ई कुल नाहि समयमे सर्वाधिक मान्य परिगणित भेल। परिचयक विशुद्धि, सम्बन्धक उत्कर्ष, एवं वृत्तिक [illegible] तञ्ज-सञ्ज हिनक वर्चस्वित्व नाहि सबक छल जे मैथिल ब्राह्मणक आदर्श हिनका निःश्वित कएबामे ककरहु कोनो विप्रतिपत्ति नहि भेल होएत। अस्तु। मूल श्रोत्रियक मूल थीक एकर अर्थ हमरा इएह लगैत अछि जे म० म० रामेश्वर झा श्रोत्रिय मूलक भेलाह।

हिनका विवाह एक गोट मात्र, "दरिहरा" मूलक "सतलखा" शाखाक रतिकरक कन्यासँ भेल ओ ताहिमे हिनका तीनि गोट बालक ओ कन्याक पाँच-टाक हमरा परिचय उपलब्ध होइत अछि। हिनक बालक लौकिक परिचय पश्चात् देब; पूर्व हिनक कन्यालोकनिक परिचय दैत छी कारण जे ताहीसँ अनुमान भए जाएत जे हिनक समाजमे कोन स्थान छल।

रामेश्वरक एक गोट कन्याक विवाह "माण्डर" मूलक "कर्दआ" शाखाक बीजी पीताम्बरक बालक दामूसँ छल। ई पीताम्बर म.म. [illegible] वंशाधर भए छलाह। एहि पक्षमे दामूशाकें केवल दु गोट कन्या, मेनका ओ देवका। छोटि देवकाक विवाह "पाली" मूलक "हरिपुर" शाखाक बीजी नरसिंहसँ छल जनिक पुनरत्व सँ क्रमशः न्यून कार्य करैत अपकृष्ट कोटिमे परिगणित भए रहल छथि परन्तु सम्प्रति बड़ बड़ पंच लोक छथि, यथा, नरसिंहक प्रपौत्र पीताम्बरक कन्यामे सन्मिश्र शंकरक प्रपौत्र म.म. रघुनन्दन मिश्रक छोट भाए महोपाध्याय गोविन्द मिश्रक एक गोट विवाह छल। दामूक जेठि कन्या, मेनकाक विवाह "खण्डबला" मूलक भानपति ठाकुरक बालक सुरपति ठाकुरसँ छल जनिक बालक छलाह श्रीपति ठाकुर (हिनक प्रसिद्ध नाम दूबे ठाकुर छल) "भौरम" वासी ओ शेष दु बालक लाल्हू ओ महिपति "बेहटक" वासी छलाह। एही दूबे ठाकुरक बालक छलाह चान ठाकुर जनिक सम्पूर्ण नाम चन्द्रपति छल ओ हिनक बालक, सबसँ छोट बालक, मिथिलाराज्योपार्जक म० म० महाराज महेशठाकुर छलाह।

रामेश्वरक दोसर कन्याक विवाह छल "संकराढ़ी" मूलक "करमहिन" शाखाक म.म. हरिहरक पौत्र, म.म. [illegible] बालक [illegible]। [illegible] सम्प्रति न्यून कोटिमे परिगणित होइत छथि, परन्तु [illegible] अपकर्षसँ। ताहि दिन रहि एक गोट विशिष्ट कुल छल ओ [illegible] सन्तान-कोटिक* परम्परामे बड़ बड़ पंच लोक भेल छथि।

रामेश्वरक तेसरि कन्याक विवाह छल "माण्डर" मूलक "[illegible]" शाखाक बीजीपुरुष पशुपति झासँ। पशुपति म.म. [illegible] बालक छलाह तथा बाप वा अन्यान्य भाइ लोकनि महामहोपाध्याय किंवा महोपाध्याय उपाधिसँ तँ नहि, किन्तु एक गोट दोसरहि उपाधिसँ ई विभूषित भेल छथि, सदुपाध्याय†। सदुपाध्याय पशुपति [illegible]

* भौर वा भौरिसरक एक गोट कन्याक विवाह छल [illegible] रतिकरसँ। एहि रतिकरक पौत्र छलाह [illegible] ओ [illegible] कन्यामे विवाह छल सोदरपुरमूलक नड़िआ शाखाक गोविन्द। एहि गोविन्दक दु गोट बालक, विश्वम्भर ओ [illegible] क विवाहक कारणसँ [illegible] एकहि [illegible] सबसँ [illegible] छथि। विश्वम्भरक कन्यामे दरिहरा-हरिहरपुर मूल [illegible] माधवक विवाह छल जनिक पौत्री महाराज राघव सिंहक विवाह छल ओ [illegible] कन्यामे म.म. [illegible] मिश्रक विवाह छल। गोविन्दक दोसर प्रपौत्र [illegible] दरभङ्गामे महोपाध्याय [illegible] विवाह छल जनिक [illegible] महाराज माधव सिंह बहादुर छलाह। ई दृष्टान्तक हेतु किछु विस्तृत भए गेल। एकर विस्तृत वर्णन कएला उत्तर एक गोट पोथीक प्रबन्ध भए जाएत।

† सदुपाध्याय अथवा एकर संक्षिप्त रूप "सदु" पञ्जीमे बड़ प्रसिद्ध उपाधि अछि। एकर [illegible] नहि किन्तु हिनक प्रतिष्ठा समाजमे पूर्ण छल। [illegible] अथवा उपाध्यायक हेतु [illegible] सहिना मिश्रक हेतु ई उपाधि छल "सन्मिश्र" ओ ठाकुरक हेतु "सदुठकुर"।

गोट विवाह छल म.म. विश्वनाथ मिश्रक कन्यासँ, अयाची भवनाथ मिश्रक पिउसिसँ ओ अयाची स्वयं छलाह बटेश्वरक दौहित्र । तेँ पशुपति अयाची मिश्रकेँ पिउसा छलथिन्ह ओ माम (वस्तुतः कक्काम) से हो छलथिन्ह । म.म. विश्वनाथ मिश्रक एक बालक ओ दू कन्याक विवाह म.म. बटेश्वरक एक कन्या ओ दू बालकसँ छल । "सोदरपुरिए"क दौहित्र जे पशुपतिक सन्तान से "माण्डर" मूलक "ओकी" तथा "रजौरा" शाखा छथि ओ "अलंकार"क दौहित्र जे पशुपतिक सन्तानसे ओहि मूलक "पतौना" शाखा छथि । एहि पक्षमे पशुपतिकेँ एक बालक ओ तीनि कन्या । एक गोट कन्याक विवाह म.म. विश्वनाथ मिश्रक जेठ भाइक बालकसँ ओ दोसरक विवाह म.म विश्वनाथ मिश्रक सबसँ छोट बालक म.म. गोपीनाथसँ छल जनिक सन्तान "सोदरपुर" मूलक "मानी" ओ "जगौर" दुहू शाखा सभसँ थीक ।

रामेश्वरक चारिम कन्याक विवाह "बलिआस" मूलक राम शर्माक बालक म.म. मधुकर झासँ छल । हिनका लोक माधू झा सेहो कहए । "बलिआस" मूलक "सिमरी", "लडुका", "माँडर", "बिसाड़ी" ओ "बिठौली" प्रतिष्ठित शाखा सब हिनकेँ सन्तान थीक । एहिमे "बिठौली" शाखा म.म. मधुकरक जे दुहू बालक "अलंकारक" दौहित्र छलाह तनिक सन्तान थीक । म.म. मधुकरकेँ एहि पक्षमे एक गोट कन्याक उल्लेख भेटैत अछि जनिक विवाह "सोदरपुर" मूलक म.म. विश्वनाथ मिश्रक बालक म.म. रघुनाथसँ छल । म.म. रघुनाथक सन्तान 'सोदरपुर' मूलक 'सिसौनी' "बिठौली" ओ "रँआम" तीनू शाखा थीक जाहिमे "बिठौली" शाखा बलिआसएक दौहित्र, "अलंकार"क दौहित्रीपुत्रक सन्तति थिकाह । एहि पक्षमे म.म. रघुनाथकेँ एक कन्या जनिक विवाह 'खौआल' मूलक "सुराज-

म०म० शंकर मिश्रकेँ अधिकांश ठाम महामहो नहि कहि इएह सन्मिश्र कहल अछि ओ महाराज महेश ठाकुर तेँ सर्वत्र राइलकुर रहल छथि ।

पुर" शाखाक शुभंकरसँ छल । ई शुभंकर (प्रसिद्ध नाम सूरे) सन्मिश्र शंकरक मामा छलाह ओ हिनक दौहित्र छलाह "कुजौली" मूलक "भज-रौली" शाखाक म.म. शुचिकर * उपाध्याय ।

रामेश्वरक प्रायः सबसँ छोटि कन्याक विवाह छल "माण्डर" मूलक गङ्गौली शाखाक दोलर ठाकुरसँ जनिका एक गोट मात्र बालक भवदत्त । हिनक सन्तान पचहत्तरिसँ "अलमा"क वासी कहल छथि । भवदत्तक एक गोट कन्याक विवाह 'सोदरपुर' मूलक वर्धनसँ छल जे म.म. विश्वनाथ मिश्रक पितिऔत भाइक बालक छलाह । एही वर्धनकेँ † सन्तान "सोदरपुर" मूलक समस्त "महिषी" ओ "खोरि" शाखा थीक । भवदत्तक एक गोट पौत्र छलाह बेंदू ठाकुर जे तनिक विवाह "पाली" मूलक मतीश्वरक कन्यासँ छल । एहि मतीश्वरकेँ राजाक§ उपाधि छल । आब तँ "माण्डर" मूलक ई "अलमा" शाखा नितान्त न्यून भए गेल अछि परन्तु दुर्ग ई एहि एक गोट प्रतिष्ठित डेरा छल ओ बड़ बड़ लोकसभ एहि डेराक लागि बहुत दिन धरि वैवाहिकमे प्रवृत्त अछि ।

* ई शुचिकर छलाह सुरान झाक पौत्र जनिक कन्यासँ सन्मिश्र शंकरक विवाह छल ओ अपने ई शुचिकर महाराज महेश ठाकुरक विद्यागुरु छलाह । हिनक प्रपौत्र मैथिलीक प्रसिद्ध कवि म.म. गोविन्ददास झा छलाह । शुचिकरके सन्तान एखन कोठिमे जे कुजौलिवार छथि सब थिकाह तथा हिनक प्रपौत्रक प्रपौत्रक प्रपौत्र श्री पेतकर झा पटना कओलेजमे राजनीति शास्त्रक अध्यापक छथि ।

† एहि वर्धनक प्रपौत्र छलाह गोढ़ै जनिक प्रसङ्ग पूर्वहि कहल गेल आएल छी ।

§ ई राजा मतीश्वर ओइनिवार महाराज भोगीश्वर ओ महाराज भवेश्वरक मात्रिक भाए महामहत्तक कुसुमेश्वरक दौहित्र छलाह तथा राजाक उपाधि हिनका की तँ ओइनिवार महाराजक प्रदत्त छल नहि तँ नवाबक । हिनक बालक दौजिमे कुमर कहल छथि ।

म.म. रामेश्वरक कालनिर्णयमे एतए जे परिचय सब हम देल अछि से सब प्रमाण तँ अछिए, ताहि सबसँ विशेष प्रामाणिक एक गोट आओर परिचय अछि। रामेश्वरकेँ जे 'अभिज्ञानए' अनाए एवंविध म.म. मधुकर झा. [illegible] "खनजो" मूलक "गोधीसँ" ग्रामाक एक जन महापुरुष महुपाध्याय गणेश्वरक विवाह छल। हिनक प्रसिद्ध नाम माहू झा छल। गणेश्वरक पितामह भोगीश्वरक दौहित्र छलाह "सुगतिसोपानादि" अनेक सुप्रसिद्ध ग्रन्थक रचयिता "खौआल-वंश-तिलक" महामन्त्री * जे [illegible] सहाए [illegible] समाजमे विशेष आदरक दृष्टिसँ सम्मानित होइत छथि। हिनकहि [illegible] कए महाराज हरिसिंह देवक मन्त्री "बिस्फी" मूलक राजनीति-रत्नाकर-कर्त्ता [illegible] महामहत्तक गणेश्वर अपना नामसँ "सुगतिसोपान" § ओ हुनक पुत्र [illegible] रामदत्त अपना नामसँ "षोड़श-महादान-निर्णय" ‡ रचने छलाह। [illegible] ई जे विश्वास जे पञ्जीप्रबन्धकालमे [illegible] पूर्णरूपसँ विद्यमान छलाह ओ तनिक बहिनीक भाए "[illegible]" मूलक महुपाध्याय गणेश्वर सेहो ताहि समयमे अवश्ये छलाह। गणेश्वरक नाति छलाह "अभिज्ञानए" मधुकर जो तनिक श्वसुर छलाह "[illegible]" म० म० रामेश्वर। अतएव प्रतिकूल म० म० मधुकरो ओ म० म०

* एहि भवनाथेक [illegible] खौआल मूलक [illegible] छथि।

‡ धर्मशास्त्रक विवादमे [illegible] मत [illegible] [illegible] आचार्य [illegible] ओ [illegible] कथा जे नहि कहि [illegible] [illegible] गछि [illegible] [illegible] अछि।

§ [illegible]-सम्पादित राजनीतिरत्नाकर भूमिका पृष्ठ ३०-३१ नोट नं०३

[illegible] (Eggeling) लिखित इण्डिया आफिस [illegible] ग्रन्थ सूची पृष्ठ ५४३-५५०

कुल-चित्र (३)

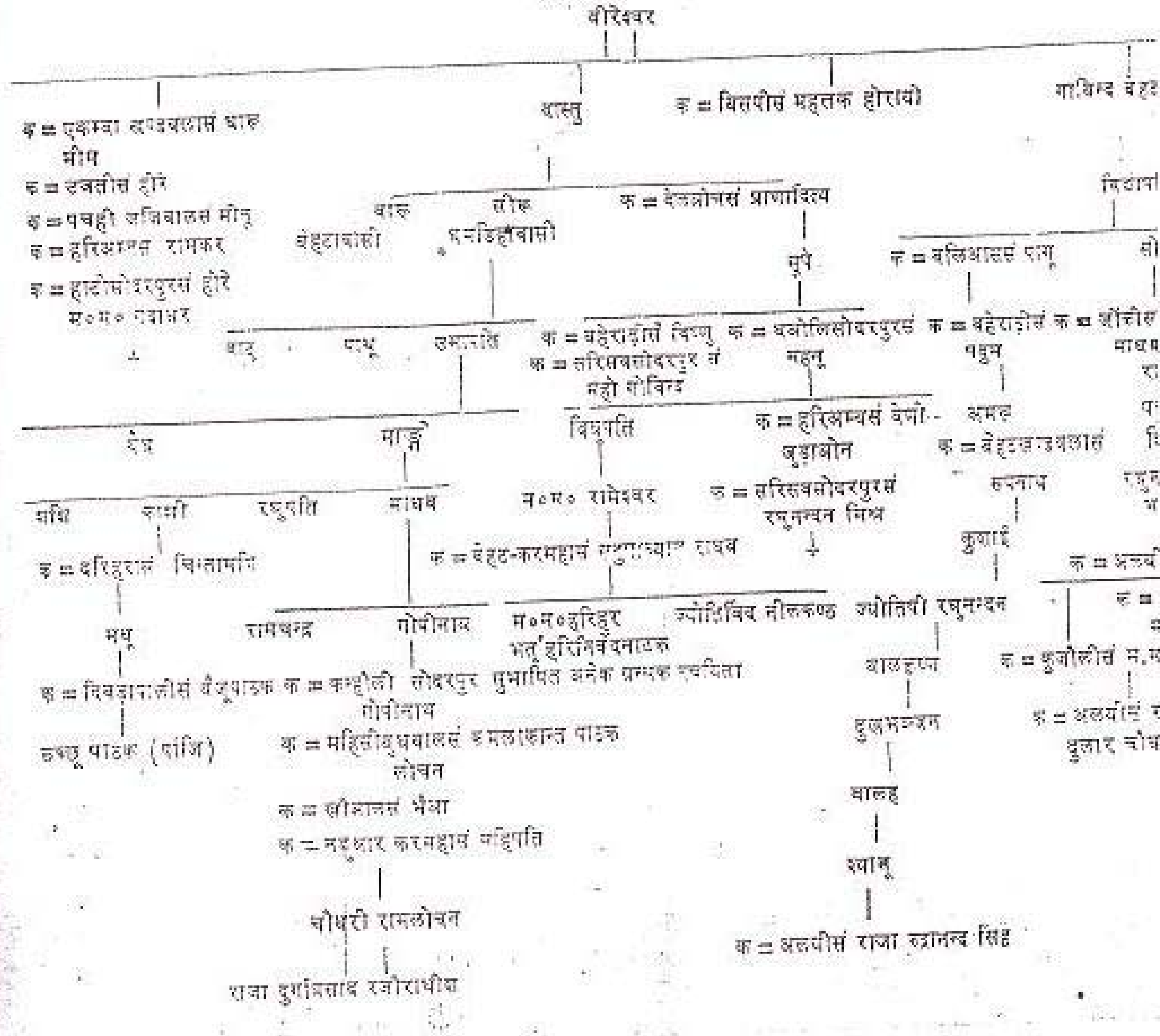

रामेश्वर अवश्य समानकालीन छलाह, एहिमे सन्देहक अवकाश नहि अछि। आगाँ जे परिचय लय कहब ताहुसँ इएह कथा पुष्ट होएत जे एकरो प्रशस्तकालमे म० म० रामेश्वर झा पूर्णवयस्क विद्यमान छलाह ओ तेँ हम हिनक जन्मकाल अनुमानतः शाके १२०० क प्रान्तमे कहल अछि।

कुलवृक्ष (५)

मोधौली अलयीसं भोगीश्वर

छनरौली सम रामेश्वर बलिआलसं रामशर्मा — धर्मेश्वर — कन्या = ओइनावर्सं नरसिंह

कन्या = म० म० मधुकर — कन्या = लडुःगणेश्वर — म० म० भवशर्मा सुगतिसोपानकर्त्ता प्रतिहस्त

* * * *

म.म. रामेश्वरकेँ तीनि गोट बालक ओ तीनू दुर्धर्ष पण्डित। सबसँ जेठ म.म. महेश्वर छलाह। हिनक विवाह "बेलओच" मूलक (एहि मूलक संस्कृत नाम बिल्वनञ्चक अनेक ठाम भेटैत अछि) धराधिपक कन्यासँ छल। एही धराधिपक विलिओत बहिनिक बालक छलाह वामू झा जनिकासँ महेश्वरक सबसँ जेठि बहिनिक विवाह छल। "बेलओचए" धराधिप स्वयं प्रजापति छलाह। हुनका तीनि गोट विवाह, एगारह गोट बालक ओ सम्भवतः चारिगोट कन्या जनिका सबकेँ पंच पंच ठाम विवाह, विशिष्ट विशिष्ट व्यक्तिसँ, ओ सबकेँ प्रचुर सन्तान जाहिमे परम्परया बड़ पंघ पंघ लोक। हिनक एगारहो बालकके सन्तान ओ से प्रचुर। वस्तुतः "बेलओचए" मूलक जे केओ सद्ब्राह्मण छथि सब धराधिपक सन्तान

ओ एहन वंश के [illegible] मिश्र ब्राह्मण छथि सेहो एकधा नहि अनेकधा एहि प्रकारक सन्तानसँ पूर्ण अछि ।

महेश्वरकेँ बालक चारि गोट मुदा कन्या प्रायः हिनका एकोटा नहि छलनि । दुनटा पत्नि हिनक [illegible] परिचय नहि भेटल अछि । हिनक जेठ बालक छलाह म.म. गदाधर जनिका पञ्जीमे "धर्माधिकरणिक" कहल जाइ । हिनका तीनि गोट विवाह छल ओ तीनू पक्षमे सन्तान, बालक ओ कन्या भेल । एक विवाहक हिनक सन्तान पञ्जीमे "उमरौली"क वासी कहल छथि ओ दोसर पक्षक "बैगनी"क वासी छलाह । धर्माधिकरणिक गदाधरक सम्बन्धमे विशेष वर्णन पहिने कएल ।

महेश्वरक दोसर बालक छलाह म.म. रत्नधर । हिनका लोक रातु कहए । पञ्जीमे ई "महापुर"क वासी कहल छथि । हिनका तीनि गोट विवाह छल ओ तीनू पक्षमे हिनका प्रचुर सन्तान जकर सम्बन्ध बड़ बड़ ठाम । वस्तुतः सम्बन्धक सन्दर्भ एहि कुलमे हिनकासँ विशेष यदि प्रारम्भ कएल कहल जाए तँ हिनके गोट 'मड़के' । हिनक पहिल विवाह छल "हरिहरा" मूलक 'गङ्गाम' ओ "मधुकरघट्टी" शाखाक बाबी पुरुष रवि- करक कन्यासँ । मातृक दिशासँ "हरिहर"क महाकुलक एहि शाखाक सन्तति एखनहु [illegible] बड़ आदर होइत गेल अछि परन्तु पूर्वमे एहि शाखाक मर्यादा बड़ [illegible] [illegible] ओ बड़ बड़ वंश कुलकेँ एहिसँ सम्बन्ध छलैक । एहि पक्षमे रातु [illegible] चारि गोट बालक ओ एक गोट कन्या । कन्याक विवाह छल "[illegible]" मूलक, 'राजविवेकादि' अनेक ग्रन्थ कौलिक रचयिता धर्माधिकरणिक [illegible] म.म. चण्डेश्वरक प्रपितामहक सबसँ जेठ भाए हरिमिश्र*

* हिनके मू[illegible] 'एकहरा' ठीक जे 'बेलगोष' मूलक एक गोट शाखा थीक । [illegible] [illegible] मूल 'एकहरा' कहल नहि 'सिमरउआर' कहल गेल छथि । [illegible] [illegible] सर्वहित उपाधि उपाध्याय मुदा हुनका 'पक्षधर' मिश्र कहल जाहि [illegible] होइत अछि जे ई मीमांसक छलाह कारण जे मीमांसक [illegible] [illegible] विद्वान् सदृश मिश्र कहाबथि ।

कुल-चित्र (६)

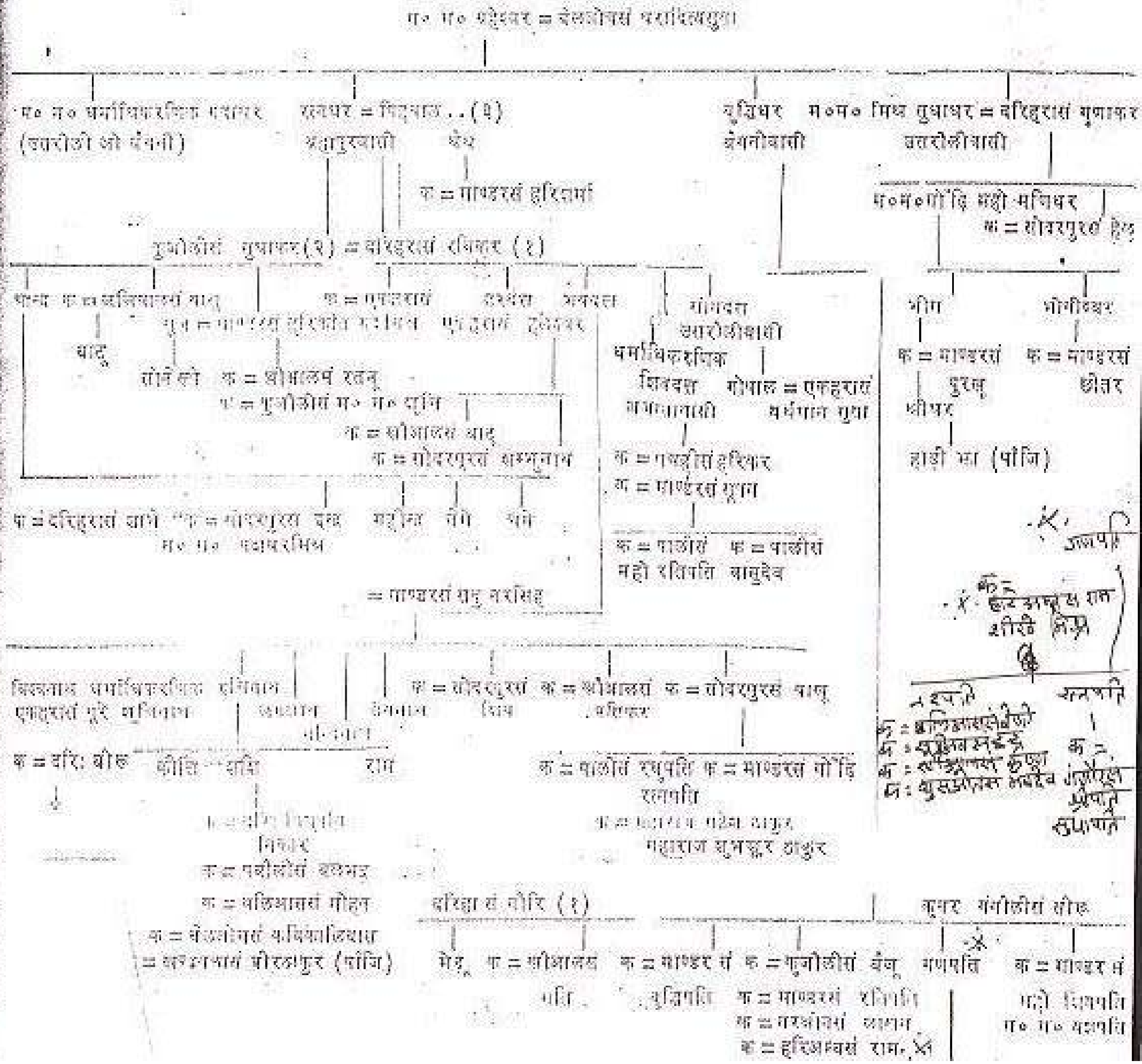

सँ। हिनक सन्तान-कोटिमे बड़ बड़ पंच लोक *।

रत्नधरक चारि बालकमे सबसँ जेठ हरदत्तक बियाह एही वर्त्तमान उपाध्यायक तितिथौलि वहीनिमे, हलेश्वरक कन्यामे छल, जाहिमे हिनका बालक नहि केवल दू गोट कन्या। जेठि कन्याक विवाह छल "सोदरपुर" मूलक "सरिसव" शाखाक उदार्चीस०म० भवनाथ मिश्रक बालक शम्भुनाथ मिश्रसँ। ई सन्मिश्र शंकरक समाश्रेय भाए छलाह तथा हिनक छोट भाए रुद्रनाथ मिश्रक बियाह श्रोत्रियवार महाराज धीरसिंह हृदयनारायणक कन्यासँ छल। शम्भुनाथ ओ रुद्रनाथ एहि दुनू भाइक सन्तति पञ्चपञ्जीमे सोदरपुर मूलक "बाली"† शाखाक कहल अछि। हरदत्तक दोसरि कन्याक बिवाह "खौआल" मूलक "सिम्बरवार" शाखाक बाटू झासँ छल। एहि बाटूक छोट भाए मतिक बियाह हरदत्तक पितिऔति बहीनि, बुद्धिधरक कन्यामे छल। एहि बाटूक बालक, अर्लंबार हरदत्तक दौहित्र, गोन्दू झाक कन्या "सोदरपुर" मूलक "कन्होली" शाखाक मतिकर झासँ बियाहिता छलीह जनिक प्रपौत्रक प्रपौत्रक पौत्र श्री बहुदत्त शर्मा लोकनि

* रुद्रक बालक, अर्लंबार रत्नधरक दौहित्र छलाह बुद्धिकर, तनिक कन्याक बिवाह करमा-हरिअम्ब मूलक महिपतिसँ, तनिक कन्यामे बियाह सागर मूलक वलखम शाखाक सदुपाध्याय काशीसँ, तनिक कन्यामे बियाह सोदरपुर मूलक कन्होली शाखाक माधू झासँ। ई माधू झा मतिकरक बालक, खौआड़ए गोन्दूक दौहित्र छलाह जे गोन्दू स्वयं हरदत्तक दौहित्र छलाह। रत्नधरसँ काशीक कन्या छठि हो परन्तु माधूकेँ से मातृक्रमे पड़ैत तेँ अधिकार भेल। एहि माधूक कन्यामे बियाह छल खेड़ूद-करनहा मूलक सदु राघवक जनिक बालक बलाञ्जि झाक पौत्र सदु जगन्नाथ झा छलाह ओ राघव झाक दौहित्र छलाह सुरहनी-गरओन मूलक सदु हरिनन्दन झा सब भाइ।

† सोदरपुरक बाली शाखा आब बड़ छोट बुझल जाइत अछि परन्तु पूर्वमे ई योग्यक श्रेणीमे छल ओ एतेक न्यून नहि छल। शम्भुनाथक बालक

उजानमे बुद्धिमान वर्तमान छथि ।

रत्नधरक चोसर बालक छलाह भवदत्त । हिनक विवाह "माण्डर" मूलक "शंकरपुर" शाखाक महोपाध्याय "आवनथिक" नरसिंहक बालक लदुपाध्याय नरसिंहक कन्यामे छल । नरसिंहक जेठ भाए छलाह म०म० आवसथिक श्रीदत्त जनिक धर्मशास्त्रविषयक अनेक निबन्ध पछाति मिथिलाक आचार ओ व्यवहारक निर्दर्शन करैत आएल अछि । नरसिंहक बालक, नरहरि महोपाध्याय, "नरपतिजयचर्याविरोध" ग्रन्थक स्वरचित टीकामे अपनाकेँ ओंइनिवार महाराज भैरव सिंहक सभापण्डित कहैत छथि । भवदत्तकेँ छओ गोट बालक ओ तीनि गोट कन्या । एक गोट कन्याक विवाह "सोदरपुर" मूलक "कड़का" शाखाक शिवसँ छल, दोसरिक "खौआल" मूलक "महुआ" शाखाक मतिकरसँ छल ओ तेसरिक "सोदरपुर" क "कुन्दर" शाखाक देवेश्वरक बालक पाखूसँ छल । पाखूक ई गोट कन्याक उल्लेख आवश्यक अछि । हिनक एक गोट कन्याक विवाह छल "माण्डर" मूलक "सिहौलि" शाखाक गोंड़ि झासँ । हिनक पुत्रपौत्र* एखन पर्यन्त सौरिमे छथि । दोसरि कन्याक विवाह छल "पाली" मूलक "हाटी" शाखाक रघुपति झासँ । एहि रघुपतिक बालक, "सोदरपुरिए" नामूक दौहित्र, "अलंकार" भवदत्तक दौहित्रीपुत्र छलाह रत्नपति झा जनिक कन्यामे महाराज महेश ठाकुर एक गोट विवाह कएल जाहि पक्षमे हुनका बालक

भवेश्वर, हुनकहिक दौहित्र मानेक दौहित्र परिवार जगन्नाथ जनिक दौहित्र बलियासए भीमू तनिक दौहित्र पालीमूलक नरउनी शाखाक मोहन झा छलाह जनिक पौत्र रामकृष्ण झा छलाह । हिनक परिचय आगाँ भेटत ।

* गोंड़ि झा म.म. वटेश्वरक प्रपौत्र छलाह । हिनक बालक म.म. चित्रधर पौत्र म.म. अनिरुद्ध केवल पाण्डित्यहिँ नहि, जातिमहुँ बड़ विशिष्ट छलाह । म.म.अनिरुद्धक विवाह बेहट-करमहासँ मदु राघव झाक कन्यासँ छल

तनिह म०म० शुभङ्कर ठाकुर जे पछाति मिथिलेश भेलाह ओ जनिक सन्तान तहियासँ अद्यपर्यन्त मिथिलेश होइत आएल छथि ।

भवदत्तक छओ गोट बालकमे दिनकर, शुचिनाथ, पञ्जीमे "धर्माधिकरणिक" कहल छथि ओ आगाँ शाखा भेँटैत अछि केवल दू गोटाक, सबसँ जेठ विश्वनाथ ओ तेसर रविनाथक । आओर भाइक आगाँ परिचय कोनहु पञ्जीमे संगृहीत नहि भेटैत अछि । एकर दू गोट कारण भए सकैत अछि, जे तँ हिनका लोकनिक वंश लुप्त भए गेल ओ तेँ आगाँ परिचय नहि अछि अथवा ई लोकनि ततवा स्थूल भए गेलाह जे कोनहु सत्कुलसँ हिनका लोकनिकेँ सम्पर्क नहि रहल तेँ कोनहु पञ्जीक पुस्तकमे हिनका लोकनिक उल्लेख नहि भेल । ई कथा हम आगाँ जाए आओर स्पष्ट करब ।

भवदत्तक जेठ बालक विश्वनाथक विवाह "एकहरा" मूलक "आसी" शाखाक हलेश्वरक पौत्रीसँ छल । हलेश्वरक कन्यासँ हिनक पितृ हरदत्तक विवाह छल । हिनका एक गोट कन्या जनिक सन्तान परम्परामे * सम्प्रति सजालक "सोदरपुर" मूलक "कन्हौली" शाखा अछि । तहिना रविनाथक बालक शशिक दौहित्र छलाह "दरिहरए" मिश्रकार, तनिक दौहित्रीमे "बलियासए" मोहनक विवाह छल, तनिक कन्यामे "खेलओथ" मूलक

हल । गोंड़िक सबसँ छोट बालक भवानीक प्रपौत्रक प्रपौत्र हुनर नाथ महोपाध्याय श्री कुमरेश्वर झा सम्प्रति उजानमे बुद्धिमानं वर्तमान छथि ।

* विश्वनाथक कन्याके विवाह दरिहरए बीरुक, तनिक दौहित्र सोदरपुरिए देवपाणि, तनिक कन्यामे विवाह हरिअम्बए विश्वेश्वरक, तनिक पौत्र कितनी मिश्र, तनिक कन्यामे विवाह खौआल मूलक महुनीरा शाखाक रुद्रेश्वरक, तनिक कन्याके विवाह सोदरपुर मूलक कन्हौली शाखाक रामचन्द्र झाक । रामचन्द्रक पौत्र छलाह ठेङ्गो झा जनिक प्रपौत्र श्री मुदत्त झा लोकनि छथि ।

"शुवइ" शाखाक कवि धराणि झाक बालक कवि कालिदास * झाक विवाह छल ।

रत्नधरक तेसर बालक छलाह शिवदत्त । पञ्जीमे हिनक उपाधि "धर्माधिकरणिक" भेटैत अछि तथा पत्र-पञ्जीमे ई "अजला"क बाटें कहल छथि । हिनक दू गोट दौहित्रीपुत्रीमे, "करउर" मूलक सुपनक दू गोट कन्यामे, "परसपुर" ... मिश्रक बालक ... दू गोट बालक, वासुदेव ओ रत्नपतिक विवाह छल । रत्नधरक चारिम बालक सोमदत्तक विवाह ... मिश्रक दौहित्रक कन्यामे छल ओ सोमदत्तक बालक महोपाध्याय गोपालक विवाह "एकहरा" मूलक धर्माधिकरणिक ... कन्यामे छल । सोमदत्त पत्रपञ्जीमे "अमरौली"क बाटें कहल छथि ।

रत्नधरक तेसर विवाह छल "कुजौलिवार" सुधाकरक कन्यासँ । एहि पक्षमे हिनका दू बालक, रतन ओ सूज, ओ एक कन्या जनिक विवाह "जलिवाल" मूलक "उदयनपुर" शाखाक बाबूसँ छल । बाबूक पौत्रीक दौहित्रक कन्यामे ... मूलक कवि वंशमणि झाक विवाह छल जाहिमे हुनका बालक कवि कालिदास झा छलाह ।

---

* कवि कालिदास झाक वंश-परिचय आगाँ आओत । हिनक कन्यामे महिसा-... विवाह छल । ... दौहित्रमे दरिहरामे ... विवाह छल ओ तनिक दौहित्र ... रामकृष्ण झा छलाह । हिनक परिचय आगाँ आओत । कालिदासक कन्यामे खड़ौरए बीर ठाकुरक विवाह छल जे सन्तानिमे बड़का पोथि अछि ।

† कवि वंशमणि झा ... मूलक दुबइ शाखाक कवि रामचन्द्र झाक बालक छलाह । ... छोट भाए बाछनि झाक प्रपौत्रक प्रपौत्र ... भए विवाह । ई वंशमणि झा नेपालक महाराज जगज्ज्योतिर्मल्लक राजपण्डित छलाह तथा हिनक अनेक ग्रन्थ अछि जाहिमे गीत दिगम्बर नामक नाटक सुप्रसिद्ध अछि । हिनक लिखल शाके १५३६ क

चान्दकेँ दू गोट विवाह छल । प्रथम विवाहमे हुनका एक गोट मात्र कन्या जनिक विवाह "दरिहरा" मूलक "राजनपुरा" शाखाक शाभेसँ छल । ई शाभे शचाची भवनाथ मिश्रक दौहित्र, म० म० शंकर मिश्रक भागिन छलाह । शाभेक दौहित्र छलाह "बुधवाल" मूलक "गंगौरा" शाखाक पराने ओ परानक कन्यामे "सोदरपुर" मूलक "मानी" शाखाक हरिहर मिश्रक विवाह छल । एहि हरिहरक सन्तान † बड़का बड़का सोति पड़ैत छथि । वस्तुतः चान्दक एहि कन्याक विवाहसँ लए सब सन्तान सोतिए छलाह । चान्दक दोसर विवाहमे चारि गोट बालक परन्तु ताहिमे ककरो सन्तान पञ्जीमे नहि भेटैत छथि । को तँ ओ शाखा सब लुप्त भए गेल अथवा ओ लोकनि अत्यन्त न्यून भए प्रतिष्ठित कुलतेँ हटि गेलाह । परन्तु चान्दकेँ एहि विवाहमे एक गोट कन्या जनिक विवाह मं धित्तचिह्नचूडामणि म० म० पक्षधर मिश्रसँ छल । "सोदरपुर" मूलक "भौआल" शाखाक जयदेवापर-

---

पोथी नेपालमे विद्यमान अछि । हरप्रसाद शास्त्रीकृत नेपाल दरबार लाइब्रेरीक संस्कृत पोथीक सूची जिल्द प्रथम पत्र १०३–१०९ द्रष्टव्य । हिनक विवाह छल हाटी-पाली मूलक काउर झाक कन्यामे । काउर छलाह महुलौरा-सोआल मूलक श्रीपतिक दौहित्र ओ जनिक विवाह छल उदयनपुर-जलिवाल मूलक बादूक कन्यामे जे अजैबार रत्नधरक दौहित्र छलाह । कवि वंशमणिक बालक कवि कालिदास झा छलाह ।

† सोदरपुर मूलक मानी शाखा सोतिक एक गोट महाकुल थीक ओ एकर प्रसार देखएब असम्भव अछि । एहि हरिहरक एक गोट कन्याक विवाह छल माण्डर मूलक रपौरा शाखाक रामचन्द्र झासँ ओ तनिक कन्यामे महाराज महेश ठाकुरक पौत्र महाराज सुन्दर ठाकुरक विवाह छल । हरिहर मिश्रक एक गोट बालक बाछनि मिश्रक प्रपौत्रक प्रपौत्र पदवाक्यप्रमाणतत्त्वज्ञ पण्डितप्रवर श्री मार्कण्डेय मिश्र सम्प्रति सरिसबमे विद्यमान छथि जनिक वैदुष्यख्याति सर्वविदित अछि । दोसर बालक भवानन्दक प्रपौत्रक प्रपौत्र सम्प्रति भटपुराए ... दीनानाथ मिश्र विद्यमान छथि ।

महामहो म०म० पक्षधर मिश्र, न्यायचिन्तामणिक "आलोक" नामक टीकाक कर्ता. सभक संदुग्य-व्यालिसँ अमर छथि । एहू पक्षधर मिश्रक सन्तान मे अइकामेँ बड़का लोक, एकथा नहि, अनेकथा पड़ैत छथि ।

माण्डक छोट भाए सुजक विवाह छल "माण्डर" मूलक "सकुरी" शाखाक हरिशर्मा बालक हरिकान्तक कन्यामे । ई सेहो हावमणिक महो- पाध्याय नगेश्वरक छोट वैमात्रेय भाए छलाह । नगेश्वरक पांजिमे भवदत्तक विवाह छल ओ नगेश्वरक वैमात्रेय भाए मोनिक पौत्रेमे भवदत्तक छोट भएल भाए सुजक विवाह छल । सुजक पुत्रपत्यक उल्लेख पञ्जीमे नहि भेटैत अछि । हुनक एक गोट कन्याक विवाह छल "सोदाल" मूलक "महनौरा" शाखाक रामशरक बालक रत्नूसँ । एही रत्नूक छोट भाए होरिमे प्रवीस सातिर नाक बालक भवानन्द झाक दौहित्र "सरिसब-सोदरपुर" मूलक छत्रनु मिश्र छलाह । एहि रत्नूक दहिन विवाह फलदूल म० म० गाछश्रलि मिश्रक छोट भाए कान्हु मिश्रक कन्यामे छल । रत्नूक सन्त

अलंबार सूजक दौहित्रीमे "कुजौलिबार" म० म० शुचिकर उपाध्यायक एक गोट विवाह छल ।

रत्नधरक लेसर विवाह छोट छल ओ यद्यपि ओहूने हिनका बालक ओ एक गोट कन्या जनिक विवाह "माण्डर" मूलक "लएरा" शाखाक हरिशर्मासँ छल परन्तु ने हिनक बालकहिक पुत्रपत्य आगाँ देखैत छी ने हिनक कन्यहि पक्षमे कोनो विशेष उल्लेखनीय विषय भेटैत अछि ।

एवं रूपेँ रत्नधरक सन्तान अलंबारक "महुपुर", "अजना" ओ "बलरौली" तीनि गोट शाखा अछि । सम्प्रति एहि शाखा सबहि सभ्य के कतए छथि अथवा केओ छथिओ की नहि से हमरा ज्ञात नहि अछि परन्तु एतबा निश्चय जे क्रमशः अपकृष्ट कार्य करैत करैत ई लोकनि न्यून श्रेणीकेँ प्राप्त भए गेल छथि, पूर्वक सत्ता कथहु नहि रहल ।

महेश्वरक लेसर बालक छलाह सदुपाध्याय बुद्धिकर मुदा हिनक प्रसिद्ध नाम बूधे छल । पञ्जीकोमे ई "बैजनाथ" वाली कहल छथि । हिनका दू गोट विवाह ओ दुहु विवाहमे हिनका बालक, परन्तु हिनक पुत्रपत्य आगाँ नहि बढ़ल, हिनक वंशक जेना लोप भए गेल । केवल हिनक रुद्रपत्य विद्यमान छथि ओ से अनन्त हिनक सन्तेक अछि ओ लेहन लेहुन पंच लोक सब अछि जे बुद्धिकर सम्बन्धे अमर छथि ओ रहताह ।

हिनक पहिल विवाह छल "बरिहुरा" मूलक "डोहु" शाखाक गौरिक कन्यामे । ई गौरि "सोदरपुरिए" म० म० विश्वनाथ मिश्रक दौहित्र * छलाह । एहि पत्नीमे बूधेकेँ एक गोट बालक जनिक आगाँ परिचय नहि भेटैत अछि ओ एक गोट कन्या जनिक विवाह "सोदाल" मूलक "सिम्बर-

* ओना तँ सोदरपुर मूलक सोदाक सभा आब लुप्तप्राय अछि, तेँ ज्ञात नहि अछि. मुदा म०म० पक्षधर मिश्रक एकमात्र बालक महोपाध्याय बालक मिश्रक कन्याक विवाह हरिहना मूलक रतौली शाखाक सुपनी भाक भेल । सुपनीक बालक रामनिक कन्यामे सोदरपुर मूलक महिन्द शाखाक छीतर झाक विवाह छल । छीतरक कन्यामे सोआन मूलक महनौर शाखाक भवानन्द झाक विवाह छल ओ भवानन्द झाक कन्यामे सोदरपुर मूलक सरिसब शाखाक शिवराम मिश्रक विवाह छल । शिवराम मिश्रक बालक छलाह रतनू मिश्र जनिक सन्तान सम्प्रति सोतिपुरामे वर्तमान अछि ओ जनिका प्रपौत्र पौत्र श्रीगङ्गाधरमिश्र एखनहु सरिसबहि मध्य ओहि डीहमे सामिहिमे वर्तैत छथि जनिए आइसँ पचि सए वर्षसँ ऊपर भेल अमात्य म० म० भवनाथ मिश्र वर्तैत छलाह । ई गोत्र समस्त सोतिपुरामे हिनकहि टा छैन्हि ।

* म० म० विश्वनाथ मिश्रकेँ अनेक विवाह छल ओ हुनक जाहि कन्याक बालक ई गौरि छलाह से पक्षधर मिश्रक प्रपितामह रामनाथ मिश्रक सोदर बहीनि, अर्थात् भवनाथ मिश्रक बाप रविनाथ मिश्रक वैमात्रेय बहीनि छलीह ।

धार" शाखाक मनिलालसँ छल । एहि मनिलाल जेठ भाए बाबू लाल ए[illegible] गोट विवाह पूर्वे भाए ठाकुर बालक [illegible] कन्यासँ छल । मनिलाल[illegible] [illegible]" एखन पर्यन्त सौतिसँ छथि ओ [illegible] कोनो सौति नहि छथि [illegible] कलिया हिनक सन्तान-कोटिमे नहि पड़ताह ।

सूर्पेक दोसर विवाह छल "[illegible]" मूलक [illegible] कन्यासँ । [illegible] दोसरि कन्यासँ सूर्पेक जेठ भाए धर्माधिकरणिक म० म० गदाधरक विवाह[illegible] [illegible] ओ [illegible] [illegible] सूर्पे ओ गदाधरक छोट [illegible] महोपाध्याय [illegible] मिश्रक विवाह छल । एहि पत्नीसँ सूर्पेके [illegible] बालक ओ तीनि कन्या [illegible] [illegible] कन्याक विवाह "माण्डर" मूलक "[illegible]" शाखाक श्रोत्रिय-कुल[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बालक महोपाध्याय शिवपति [illegible] अभि[illegible] बालक म० म० भवपति बड़ पैघ पुरुषपुङ्गव छलाह । "तत्त्वचिन्तामणि"[illegible] पर हिनक "प्रभा" नामक टीका सुप्रसिद्ध अछि तथा हिनक [illegible] [illegible] [illegible] "शिरोमणि" अपन "[illegible]" नामक टीकामे [illegible] [illegible] । [illegible] ई [illegible] छलाह ओ हिनक [illegible] [illegible] हिसाबे[illegible] [illegible] जाए सकैत अछि । "अलंकार" सूर्पेक दौहित्र म० म० भवपतिक[illegible] एक गोट वृद्धप्रपौत्र दशरथ झा छलाह जनिक प्रसिद्ध नाम दासे झा छल । [illegible] [illegible] जे ई [illegible] छलाह ओ सौतिसँ प्रायः [illegible] [illegible] [illegible]

* [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बालक [illegible] [illegible] श्री [illegible] झा [illegible] ।

† [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लोकनि [illegible] [illegible] [illegible] छथि तथा [illegible] श्री रमानन्द झा, रामपुरमे ओ [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] सौतिमे [illegible] जे कैओ [illegible] सब हिनके [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] मूलक जे कैओ सद्ब्राह्मण छथि[illegible] सब प्रायः [illegible] अवश्य [illegible] । [illegible] सँ कैओ [illegible] लोक[illegible] हिनक सन्तान-कोटिसँ बाहर नहि होएताह ।

सूर्पेक दोसर कन्याक विवाह छल "कुजौली" मूलक "भखरौली" [illegible] यशोधर झाक बालक वंशूझासँ । यशोधरक छोट भाए सूपन झाक [illegible] सन्मिश्र शंकरक विवाह छल ओ सूपनक पौत्र छलाह महाराज ठाकुरक शिक्षा-गुरु म० म० शुचिकर झा । यशोधरक दोसर छोट [illegible] [illegible] विवाह सूर्पेक सबसँ जेठ भाए धर्माधिकरणिक गदाधरक [illegible] छल ओ सन्मिश्र शंकरक छोट भाए महोपाध्याय महादेव मिश्रक रविकरक कन्यासँ छल । अतएव पिती रविकरक विवाह जेठ भाए [illegible] कन्यासँ ओ भातिज वंशूक विवाह छोट भाए सूर्पेक कन्यासँ छल । [illegible] वंशूक सन्तान कलिथा [illegible] [illegible] अछि [illegible] [illegible] एलए एक [illegible] परिचय देब । वंशूक एक गोट कन्याक विवाह छल "माण्डर" "[illegible]" शाखाक महोपाध्याय रतिपतिसँ । हिनक दौहित्रीमे, [illegible]" [illegible] कन्यासँ, "हरिअम्ब" मूलक "बलिराजपुर" शाखाक [illegible] विवाह छल [illegible] बालक शीर्षे मिश्र छलाह । शीर्षे मिश्रक [illegible] महाराज महेश ठाकुरक कन्यासँ छल ओ सौतिपुरमे आब जे कैओ [illegible]" छथि सब हुनी शीर्षे मिश्रक सन्तान थिकाह । सूर्पेक तेसरि [illegible] विवाह "माण्डर" मूलक म० म० शिवपतिक जेठ भाए एहि मूलक [illegible]" शाखाक श्रोत्रिय-कुल गुणपतिक बालक बुद्धिपतिसँ छल ।

सूर्पेक तीनि बालकमे दू गोटाक वंश नहि [illegible] [illegible] अछि, [illegible] हुनक सबसँ छोट बालक गणपतिक दू गोट बालक नरपति ओ [illegible] [illegible] [illegible] उल्लेख भेटैत अछि । ताहिमे नरपतिक दौहित्रीक दौहित्रीमे [illegible]" मूलक "[illegible]" शाखाक भवदेव ठाकुर*क एक गोट विवाह

* ई भवदेव ठाकुर [illegible] सिद्ध म० म० गोविन्द ठाकुरक वैमात्रेय भाए रुचिकर ठाकुरक बालक छलाह । हिनक विवाह छल [illegible]-[illegible] मूलक कृष्णक कन्यासँ, कृष्णक विवाह छल [illegible] [illegible] कन्यासँ, हुनक विवाह छल [illegible] [illegible] कन्यासँ ओ [illegible]

[illegible] आहि [illegible] हुनक [illegible] एक घर मात्र "घुसओतए" रीतिमे प्रतिष्ठित रहलाह छथि । हिनक, [illegible],* कन्याक विवाह "गंगौर" मूलक [illegible] छल । ओना तँ हिनक कन्याक† सन्तानमे कतेक उल्लेखनीय नाम भेटैत अछि मुदा [illegible] बालक सुधापतिक कन्यामे कविकोकिल विद्यापति ठाकुरक प्रपौत्र [illegible] पीताम्बर ठाकुरक विवाह छल । हिनको सन्तानसँ कतेक [illegible] छथि, कतेक घर प्रतिष्ठित सोतिओ छथि ।

विवाह [illegible] [illegible] [illegible] कन्यासँ छल । भवदेव ठाकुरक प्रपौत्र प्रपौत्रक बालक ओ [illegible] ठाकुर सम्प्रति धर्मपुरमे विद्यमान छथि ।

* गंगौरसँ [illegible] दौहित्र छलाह धरिहरए मुसाइ, जनिक दौहित्रीपुत्र छलाह एकहरए [illegible] पाठक, जनिक कन्यासँ संकराढ़ी मूलक कवीन्द्र रघुनाथक बालक पुरुषोत्तमक एक गोट विवाह छल । पुरुषोत्तमक कन्यामे [illegible] [illegible] महाराज रघुनन्दन मिश्र जनिक प्रपौत्र अच्युत मिश्रक विवाह छल, जनिक कन्यासँ [illegible] करमहा मूलक दाउ झाक विवाह छल ओ जनिक कन्यासँ [illegible] म० म० देव ठाकुरक प्रपौत्र प्रपौत्र [illegible] ठाकुरक विवाह छल ।

† पीताम्बर ठाकुरक बालक गंगौरसँ सुधापतिक दौहित्र छलाह अच्युत ठाकुर । हिनक कन्यासँ विवाह "पनिचोभ" मूलक "बीरपुर" शाखाक [illegible] धनञ्जीवक । एहि [illegible] कन्यामे पञ्जीकार रघुदेव झाक बालक पञ्जीकार मधुदेव झाक विवाह छल । हिनक पौत्र छलाह पञ्जीकार अच्युत झा जनिक एक गोट कन्यासँ कुजौली मूलक म० म० [illegible] झाक बालक [illegible] झाक विवाह छल, हरिपुर, ओ दोसर कन्यासँ पजौली मूलक सोति भैआ झाक विवाह छल जनिक बालक प्यारे झा ओ पञ्जीकार हलधर झा छलाह । [illegible] झा ओ भैआ झा दुहू गोटए [illegible] महीं झाक दौहित्र छलाह ओ तेँ मसियौत छलाह ।

महेश्वरक सबसँ छोट बालक छलाह म० म० सुधाकर । हिनक उपाधि पञ्जीमे "मिश्र" कहल अछि ओ तेँ हिनका मीमांसक बुझबाक चाही । ई पञ्जपञ्जीमे "डसरौली"क वासी कहल छथि । हिनक विवाह "दरिहरा" मूलक "मधुकरपट्टी" शाखाक बीजीपुरुष गुणाकरक कन्यासँ छल । एहि गुणाकरक * बहिनिसँ म० म० सुधाकरक जेठ भाए रत्नधरक पहिल विवाह छल । हिनका दू बालक म० म० गोंढ़िमिश्र ओ महोपाध्याय मणिधर मिश्र तथा एक कन्या । कन्याक विवाह छल "सोदरपुर" मूलक "घओलि" शाखाक महेश्वरक बालक हेलूसँ । हेलूक जेठ बैमात्रेय भाए नरेश्वरक कन्यामे महाराज शिवसिंहक एक गोट विवाह छल । हेलूकेँ सात गोट कन्या जाहिमे सबसँ जेठिक विवाह "करमहा" मूलक "तरौनी" शाखाक श्रीधरक † बालक रतिधरसँ, जनिक अपर विवाहक बालक रमापति पछाति "सन्यासी विष्णुपुरी"क नामसँ बङ्गालक वैष्णव सम्प्रदायमे अमरकीर्ति पाओल ओ "भक्तिरत्नावली"क रचना कए महाप्रभु चैतन्यके भक्तिक उद्घोष कराओल । हेलूक सबसँ छोटि कन्याक कन्यामे "एकहरा" मूलक धर्माधिकरणिक वर्धमान उपाध्यायक बालक धर्माधिकरणिक विद्यापति उपाध्यायक विवाह छल ।

पुमपत्य हिनको क्रमशः लुप्त भए गेल । छोट बालक नैयायिक मणिधरक तँ आगाँ उल्लेखो नहि अछि परन्तु म० म० गोंढ़ि मिश्रक बालक ओ पौत्र धरिक परिचय भेटैत अछि । हिनका तीनि गोट विवाह ओ तँ भूमि सन्तान परन्तु प्रायः विद्याक अपकर्षसँ आगाँ आए सब केओ न्यून भए गेलाह ।

---

* ई गुणाकर छलाह रविकरक बालक । रविकर पञ्जपञ्जीमे बहुगामक वासी कहल छथि ओ गुणाकर मधुकरपट्टीक । रविकरक कन्यासँ रत्नधरक विवाह छल ।

† एहि श्रीधरक दौहित्र छलाह महाराज महेश ठाकुरक चार चन्द्रशि प्रसिद्ध चान ठाकुर तीनू भाइ ।

केवल हिनक एक गोट विवाह जे "जजिवाल" मूलक "अड़गामा" शाखामे छल ताहिमे तीन बालक ओ सबसँ जेठ भीम ओ सबसँ छोट भोगीश्वरक कन्याक विवाह "पण्डुर" मूलक "रजौरा" शाखाक मधुकर झाक* दू बालक पुरलू ओ छीतरसँ छल। एहिमे पुरलूक बालक, सर्वेवार" भीमक दौहित्र, छलाह श्रीधर झा जनिक बालक हाड़ीझाक नामपर सोतिमे एक गोट पाँजि † अछि जे बेश प्रतिष्ठित ओ आब तँ पँथी पाँजि बुझल जाइत अछि।

---

* मधुकर झा छलाह दुपड़ि झाक बालक, महोपाध्याय इन्द्रपति झाक पौत्र ओ इन्द्रपति महो शिवपतिक छोट भाए छलाह। एतावता मधुकर छलाह साक्षात् पितिऔत भाए म० म० गणपति उपाध्यायक। दुपड़ि झाक कन्यामे म० म० सिद्ध गोविन्द ठाकुरक विवाह छल जाहिमे हुनका सात गोट बालक, सातो महामहोपाध्याय जाहिमे कण्टकोद्धारकारक मधुसूदन ओ आगमाचार्य देवनाथक नाम बापहिक नाम जकाँ सुप्रसिद्ध अछि।

† कतरहु नामपर पाँजि छिएक जेना एकर रहस्य तँ बड़ गूढ़ छैक ओ तकर वर्णन हम एहि प्रबन्धमे नहि करब परन्तु एतबा बूझि लेब आवश्यक जे जनिका पाछाँ कोनो गोप समाजमे प्रविष्ट भेल तनिक नाम पर पाँजि प्रवर्तित भेल। आहि व्यक्तिक सन्तान ओहि पाँजिक सब लोक छियाहे परन्तु आनहु पाँजिक लोक हुनक सन्तान भए सकैत छथि जँ हुनका आहिमे छोट पाँजिक सम्पर्क भेल। हाड़ी झाक कन्यामे सोदरपुर मूलक [illegible]मौ शाखाक रमापतिसुत लालाक विवाह भेल। लालाक दौहित्र छलाह संकराढ़ी मूलक लोहना शाखाक कृष्णदास जनिक बालक अमृतनाथक कन्यासबहिक विवाह सोतिमे, तेँ ई पाँजि सोतिमे आएल। अमृतनाथक कन्यामे बुधवाल मूलक गंगौली शाखाक स्पर्शमणि झाक एक गोट विवाह छल ओ अमृतनाथक बालक [illegible] कन्यामे मिथिलेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुरक पहिल विवाह छल।

एहिमे म० म० रामेश्वरक जेठ बालक म०म० महेश्वरक वंशक उत्कर्ष देखल। हिनक बेटा गदाधर धर्माधिकरणिक; पौत्र, रत्नधरक बालक, शिवदत्त धर्माधिकरणिक; प्रपौत्र, रत्नधरक पौत्र, भवदत्तक बालक, शुचिदत्त धर्माधिकरणिक। महामहोपाध्याय हिनक सबसँ जेठ बालक गदाधर ओ सबसँ छोट सुधाधर तथा पौत्र, सुधाधरक बालक ओ छथि। हिनक सन्तानमे सर्वेवार मूलक चारि गोट डेरा। गदाधरक सन्तान सबहु वर्णन तँ आगाँ आओत मुदा हुनक पहिल विवाहक सन्तान "उसरौली"क वासी छलाह तथा शेष दुहु विवाहक सन्तान "बैंगनीक" वासी छलाह से जानि लिअ। एतावता "उसरौली"* मे महेश्वरक जेठ बालक गदाधरक पहिल विवाहक सन्तान, दोसर बालक रत्नधरक सबसँ छोट बालक सोमदत्तक सन्तान ओ सबसँ छोट बालक सुधाधरक सन्तान। "बैंगनी"मे हिनक जेठ बालक गदाधरक आओर दू विवाहक सन्तान ओ तेसर बालक बुद्धिधरक सन्तान। "ब्रह्मपुर"मे हिनक दोसर बालक रत्नधरक पहिल विवाहक एक गोट बालक भवदत्तक ओ दोसर विवाहक सब सन्तान। "अजनल"मे रत्नधरक एक गोट बालक धर्माधिकरणिक शिवदत्तक सन्तान। एहि चारि गाममे महेश्वरक सन्तान, कतो गोट उपशाखामे, शताब्दि वर्षक अभ्यन्तरमे व्याप्त भए गेल।

* * * *

रामेश्वरक दोसर बालक छलाह म०म० लक्ष्मीधर। सरस्वतीक उपासना एहि वंशमे सबसँ विशेष रूपसँ हिनके अपरम्परा करैत आएल छथि ओ हिनक सन्तानक यद्यपि दुइए गोट डेरा अछि तथापि लोक एखन पर्यन्त हिनकहि सन्तानमे सबसँ अधिक अछि। हिनक जेठ भाए महेश्वरक सन्तानमे दू तीनि पुरुष धरि बड़ उत्कर्ष देखल छी परन्तु तकर उपरान्त ह्रासहुक

---

*सर्वेवार उसरौली मूलमे जे केओ "झा" होएताह से सब गदाधर किंवा रत्नधरक सन्तान होएताह परन्तु जे "मिश्र" होएताह से महेश्वरक सबसँ छोट बालक म० म० सुधाधर मिश्रक सन्तान होएताह।

गति वड़ तीव श्रेष्ठ अछि ओ एक गोट शाखाके छोड़ि (जकर उल्लेख पश्चात् करब) हलधरक सन्तानमे केओ नगरमान्य व्यक्ति सम्प्रति दृष्टिमे नहि अबैत छथि। लक्ष्मीधरक सन्तानक प्रसङ्ग से विशेष नहि अछि। अलयो मूलक एक गोट शाखा जे आरम्भसँ लऽके शताब्दि पर्व एतहर धरि शालीय मर्यादाक यथाकथञ्चित् रक्षा करैत आएल छथ ओ योग्यक श्रेणीमे अपन स्थिति दृढ़ रखने छथ से लक्ष्मीधरहिक सन्तान ओ नाहिनं जिनहु शाखामे अनेको प्रतिष्ठित व्यक्ति छथि जे समाजमे सामीय असर्थ नहि तँ व्यक्तिगत वैशिष्ट्यक कारणें समादृत छथि।

म. म. लक्ष्मीधरकें दु बेर विवाह छल। प्रथम विवाह छल हिनक "एकहरा" मूलक दिवाकरक बालक रतिकरक कन्यामे। रतिकरक जेठ भाए सुधाकरक कन्यामे लक्ष्मीधरक बहिनी "बलिआसए" म०म० मधुकरक अपर विवाह छल जाहि पक्षक हुनक सन्तान.* सम्प्रति बलिआस-मूलक सर्वोपरि "थाड़र" शाखा थीक। रतिकरक वंशमाबेस बहिनिके "पलिवार" हलधरक विवाह छल जनिक छोट वैमात्रेय भाए नरसिंह † धर्माधिकरणिक छलाह ओ ओहो "एकहरए" रतिकरक पितिऔति बहिनिसँ विवाहित छलाह। "पलिवार" हलधरक अपर पक्षक बालक छलाह दालू आ जनिक सम्पूर्ण नाम जटाधर छल। हिनक विवाह ओइनि-वार महाराज भोगीश्वरक पौत्र ओ महाराज भवेश्वरक जेठ भाए

* म० म० मधुकरक दुहि पुत्रक प्रपौत्रक पौत्र छलाह म० म० रघुनन्दन जनिका लोक पण्डितराय कहि चिन्हैत अछि।

† धर्माधिकरणिक नरसिंहक बोहिनिमे ओइनिवार महाराज भवेश्वरक बालक महाराज हरसिंहक विवाह छल जनिक पौत्र महाराज भोगसिंह ओ महाराज भैरव सिंह छलाह। नरसिंहक पौत्र हरिपाणिक विवाह अयाची भवनाथ मिश्रक कन्यामे छल ओ हरिपाणिक पौत्र अंधक कन्यामे महाराज महेश ठाकुरक एक गोट विवाह छल।

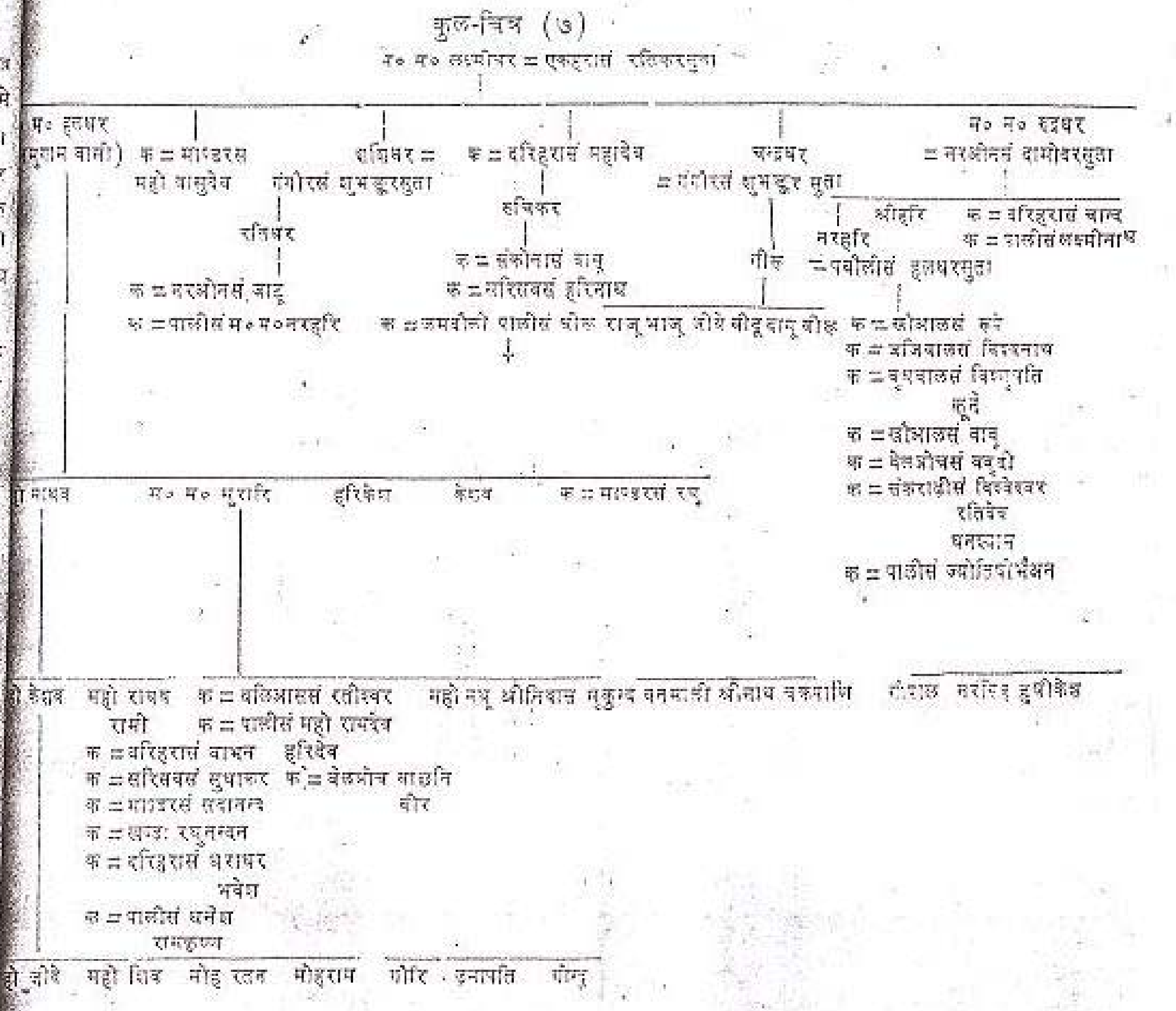

महामहत्तक कुसुमेश्वरक कन्यासँ छल। एहि "एकहरए" क कन्यामे म० म० लक्ष्मीधरकेँ चारि गोट बालक ओ कमसँ कम दू गोट कन्या।

म० म० लक्ष्मीधरक एक गोट कन्याक विवाह छल "सोन्दर" मूलक "भदुआल" शाखाक महोपाध्याय वासुदेवसँ। ई महामहोपाध्याय बटेश्वरक जेठ भाए सदुपाध्याय अमृतक बालक छलाह। वासुदेवक बालक जीवधरक कन्यासँ "पबौली" मूलक धर्माधिकरणिक रुद्रक* पौत्र, गोपाल खाँ † बालक, इन्दु पाठकक विवाह छल। लक्ष्मीधरक दोसर कन्याक विवाह छल "हरिहर" मूलक "जमुगाम" शाखाक बीजी पुरुष शिवक बालक महादेवसँ। एहि महादेवक बालक, अर्थात् लक्ष्मीधरक दौहित्र, रुचिकरक दौहित्रीपुत्रीमे § "पाली" मूलक "जमदोली" शाखाक धीरु झाक विवाह छल जनिक सन्तान-कोटिमे § थोड़ योग्य व्यक्ति होएताह

---

* धर्माधिकरणिक रुद्र ओइनिवार महाराज भवेश्वरक दौहित्र छलाह तथा एहि रुद्रक कन्यामे गुरु म० म० वाचस्पति मिश्रक एक गोट विवाह छल जाहि पत्नीसँ हुनक बालक म० म० नरसिंह मिश्र ओ महा० वेणीनाथ मिश्र छलाह। महाराज भवेश्वरक दोसर कन्यामे म०म० लक्ष्मीधरक विवाह छल से आगाँ कहब।

† खान अथवा खाँ मुसलमान नवाबक देल उपाधि छल।

§ रुचिकरक कन्यामे सकौना मूलक वासुक विवाह छल, तनिक कन्यामे सरिसब मूलक छादन शाखाक हरिनाथक विवाह छल ओ तनिक कन्यामे धीरुक विवाह छल।

§ पलिवारक जमदोली शाखा मिथिलाक बड़ प्रतिष्ठित ओ उच्च डेरा थीक। धीरु झाक बालकसँ लए पाँच पुरुष, अतिवृद्ध प्रपौत्र धरि, बड़ पैघ पैघ ज्योतिषी छलाह ओ धीरु झाक एकटा पौत्र श्रीकृष्ण झाकेँ ज्योतिषि-राजक उपाधि देल गेल छल। धीरुक प्रपौत्रक प्रपौत्रक प्रपौत्री दरिभङ्गा-राजक श्रीमती बड़ी राजमाता साहेबा छलीह।

ओ [illegible] सोतिओ लोकनि छथि । महादेवक दोसर विवाहक बालक वैहरिक [illegible] कन्यामे "पाली" मूलक "सम्मौलि" शाखाक म० म० परमगुरु वाचस्पति मिश्रक बालक, "पबौली" मूलक धर्माधिकरणिक रुद्रक दौहित्र, वेणीनाथ मिश्रक विवाह छल जनिक कन्यामे "संकराढ़ी" मूलक "परहट" शाखाक [illegible] झाक विवाह छल जनिक अपर विवाहक कन्यामे "कुजौलिवार" म० म० शुचिकरक विवाह छल ।

लक्ष्मीधरक जेठ बालक म० म० हलधर "जनुग्राम"क वासी कहल छथि । हिनक पुरुषत्व प्रचुर देखैत छी । हिनका चारि गोट बालक ओ एक गोट कन्या जनिक विवाह "माण्डर" मूलक "ओझरौ" शाखाक महोपाध्याय [illegible] छल । बालकमे सबसँ जेठ महोपाध्याय [illegible] छथि दू [illegible], दू [illegible] । जेठ केशवकेँ दू गोट विवाह ओ सात गोट बालक जाहिमे पाँच गोट [illegible], महोपाध्याय । छोट महोपाध्याय राघवकेँ एक बालक माधव, रामो झा, जनिक सन्तान-कोटिमे * कतेको नीक लोक छथि । हलधरक दोसर बालक म० म० मुरारिकेँ तीनि गोट विवाह ओ [illegible] गोट बालक जाहिमे अनेको महोपाध्याय । एहु सबकेँ प्रचुर सन्तान, पुत्र [illegible] ओ [illegible], ओ ताहि सबसँ हिनक लागि बड़ बड़ कुलसँ [illegible] । एहि [illegible] विवाक व्यवसाय ओ सन्तानक प्राचुर्य एहि जनुग्राम शाखामे

[illegible] रामो झाक कन्यामे दरिहरए यामन झाक विवाह छल, जनिक [illegible] सबानन्दक, जनिक कन्यामे खण्डबला मूलक वेहट शाखाक [illegible] रघुनन्दन ठाकुरक । रघुनन्दनक प्रसङ्ग विशेष परिचय आगाँ [illegible] । [illegible] रघुनन्दन ठाकुरक दौहित्र छलाह दरिहरए मनेश जनिक [illegible] [illegible]-पालीमूलक पञ्जीकार रामकृष्ण झा छलाह । हिनक [illegible] [illegible] अछि ओ आगाँ आओत ।

[illegible] पुत्रानिक एक गोट कन्याक विवाह बलिआसए रतिश्वरसँ छल । हिनक [illegible] छलाह पलिवार हरिदेव झा जनिक कन्यामे बेलऔंच मूलक [illegible] झाक विवाह छल । हिनक विशेष परिचय आगाँ भेटत ।

पूर्ण भेटैत अछि ओर बहुत दिन धरि हिनकालोकनिक क्रिया सेहो उत्कृष्ट जँ नहि कहब तँ समानसँ अवश्य छल । एमहर आबि प्रायः क्रियाक अपकर्षसँ ई शाखा न्यून कोटिमे परिणत भए गेल अछि परन्तु यथार्थ स्थिति की छैक, के एहि शाखामे छथि ओ से कतए, इत्यादि विषय हमरा ज्ञात नहि अछि ।

लक्ष्मीधरक दोसर बालक शशिधर पञ्चपञ्जीमे "झर्ले"क वासी कहल छथि । वस्तुतः जेठ महोपाध्याय हलधरकेँ छोड़ि म० म० लक्ष्मीधरक दू विवाहक सब बालक अलयी शाखाक थिकाह । शशिधरक बालक रतिधरक दौहित्रमे, "नरऔनए" जादूक कन्यामे, परमगुरु वाचस्पति मिश्रक बालक म० म० नरहरि मिश्रक विवाह छल जनिक एक गोट बालक म० म० केशव मिश्र मिथिलाक सुप्रसिद्ध विद्वन्मूर्धन्य छलाह । म० म० नरहरि मिश्रक* सन्तान-कोटिमे केहन केहन पैघ लोक छथि तकर दिग्दर्शनो

---

* म० म० नरहरि मिश्रकेँ पाँच गोट पुत्र जाहिमे दू म० म०, माधव ओ केशव, आओर तीनू महोपाध्याय । म० म० केशव तँ द्वैतपरिशिष्टकर्त्ता सुप्रसिद्ध छथि ओ अनेक ठाम "अस्मत्पितामहचरणाः" ओ "परमगुरवः" कहि वाहि अपन पितामहक मतक उल्लेख कएने छथि । केशवकेँ एक बालक म० म० अर्जुन, हुनिका पाँच बालक । सबसँ जेठ रघुपतिक बालक छलाह भोज मिश्र जे पूर्वमे सोतिक एक गोट प्रसिद्ध पाँजि छल ओ भोजक पौत्रीमे बलिआसए हरपति झाक विवाह छल । जखन हरपति झाक कन्यामे महाराज माधव सिंह विवाह कएल तखन भोज मिश्र पाँजिक नाम बदलिकेँ हरपतिक जेठ बालक रुद्रपति झाक नामपर ओ पाँजि प्रचलित भेल जे एखनहु सोतिक बड़का पाँजि थिक । अर्जुन मिश्रक चारिम बालक पशुपतिक दौहित्र खड़ौरए वीर ठाकुर छलाह जनिक विवाह बेलऔंचए कवि वंशमणिक बालक कवि कालिदासक कन्यामे छल । इहो वीर ठाकुर सोतिमे बड़का पाँजि अछि ओ एही वीर

कराएब कठिन अछि । परन्तु शशिधरक बालक रतिधरक एक गोट कन्या-मात्रक उल्लेख भेटैत अछि, हुनक पुत्रपक्षक लेखा लोप भए गेल । ताहिना शशिधरक छोट भाए चन्द्रधरहुक प्रसङ्ग जानब । हिनक बालक ओ पुनि तनिक बालकक उल्लेख सँ भेटैत अछि मुदा ताहिसँ आगाँ हिनको वंश लेखा लुप्त भए जाए । पञ्जीमे आगाँ ककरो बढ़ाओ नहि अछि तेँ जँ केओ हिनक सन्तान आगाँ बढ़बओ कएलाह तेँ तत्केवलम अपोमे चल गेलाह जँ नीक लोकसँ सम्बन्ध नहि रहल ओ तेँ पञ्जीमे उल्लेख नहि भेल । बाद कालहु "पञ्जीबद्ध" सँ हमरालोकनि सुनैत छी जे "जनिका पाँजि हो" परन्तु ई अर्थ लागैत थीक, लाक्षणिक थीक । पूर्वहि तँ पाँजि छले नहि ओ तेँ ई अर्थ होएत कोना ? पञ्जीबद्धक अभिप्रायसँ लभ्य अर्थ तँ इएह होइत अछि जे "जनिक उल्लेख पञ्जीमे रहए" । पञ्जीमे उल्लेख तनिके रहल जे विशुद्ध वंशज रहलाह ओ नीक लोकसँ जनिका सम्बन्ध रहलन्हि । जइ रहल अनिक कार्य होइत अछि ओ तेँ जनिका नीक कुलसँ कुटुम्बिता नहि रहल त अछि तनिक उल्लेख पञ्जीमे नहि कएल जाइत अछि; पँजिआड़ लोकनि ओकरा छोड़ि दैत छथिन्ह । अतएव जतए जतहु कोनहु शाखाक

डाकुरक दौहित्र थीक, मल्लिमथिलैसक वृद्ध-प्रमातामह भवानीदत्त झा छलाह । म० म० नरहरिक दोसर बालक म० म० माधवक बालक वर्त्तमानक दौहित्र छलाह सन्निकटक सोदरपुरसँ बालकृष्ण । हिनक दौहित्रीमे हरिनन्दन मिश्रक विवाह छल जनिक दौहित्रीमे कन्हौली सोदरपुर मूलक रामचन्द्र झाक विवाह कहि आएल छी—पृष्ठ ३४ टिप्पणी २ । बालकृष्णक पौत्र वनमालीक विवाह पत्तिवार शङ्कर पाठकक कन्यामे छल । वनमालीक दौहित्र मड़रए हरिराम छलाह जनिक कन्यामे खड़ौरए उदसिंह ठाकुरक विवाह छल । वनमालीक दौहित्रीमे, हरेरामक बहीनिमे, सरिसबए भनरक विवाह छल जनिक कन्यामे अनुवार दुी मारु विवाह छल । हिनका लौकिक परिचय आगाँ आओत ।

आगाँ बढ़ाओ नहि देखैत छी तखन इएह बुझैत छी जे की तँ वंश लुप्त भए गेल अथवा ओ शाखा पञ्जीबद्धसँ नीचा खसि पड़ल । तेँ शशिधर ओ चन्द्रधरक सन्तानक प्रसङ्ग इएह कहि सकैत छी जे ओ लोकनि यदि 'छथियो' तँ पञ्जीबद्धसँ न्यून छथि ओ तेँ पुता लागब कठिन अछि ।

म० म० लक्ष्मीधरक एहि पक्षक सबसँ छोट बालक छलाह मिथिलाक एक जन अप्रतिम स्मार्त्त-नैबन्धिक, म० म० रुद्रधर । हिनक रचित 'वर्षकृत्य' ओ 'व्रतपद्धति' सँ अद्यापि मिथिलामे वर्ष भरिक क्रिया-कलाप होइत आएल अछि ओ हिनक रचित "शुद्धिविवेक" ओ "श्राद्धविवेक" एखन पर्यन्त मिथिलामे प्रमाणरूपसँ परिगृहीत होइत अछि । शुद्धिविवेकक अन्तमे अपन परिचय दैत ई कहैत छथि—"महामहोपाध्याय श्री लक्ष्मीधरात्मज महामहोपाध्याय हलधरानुज" । व्रतपद्धतिक आरम्भमे ई अपनाकेँ "भ्रातु-गुरुहलधरोपदेश" कहैत छथि तथा ओकर अन्तमे कहैत छथि "एष श्रीमद्भ्रातृचरणैर्दिता: समयप्रदीपाद्यनुसारी पन्था:" । एहिसँ स्पष्ट अछि जे रुद्रधर अपन भाए हलधरसँ पढ़ने छलाह ओ स्मृतिवचनक आशयक स्फुटीकरणमे म० म० श्रीदत्तक† समयप्रदीप एवं अपना भाइक मतकेँ समादृत करैत छलाह । हिनक श्राद्धविवेकक एक गोट पोथी* "नन्दरामे-हुताशनाङ्कितेऽब्दे सद्ब्रह्मशीलेन सुलिखितम्" अर्थात् ल० सं० ३३६ मे लिखल भेल अछि । अभिनव-जयदेव विद्यापति ठाकुर जे भागवतक पोथी लिखलन्हि ताहिसँ ई समय केवल तीन वर्ष पश्चात् भेल ओ ल० सं०क आरम्भक जे

† धर्मविषयक मतद्वैधमे "प्रतिहर्त्ता"क मतक चर्चा पूर्वहिं कएल अछि । तकर मत एहो अत्यस्पष्टिकर्तव्यहोमनी म० म० "श्रीदत्त"क थीक जे माण्डर-मूलक कोइलख शाखाक छलाह । सोनिपुरामे सोदरपुरिए लोकनि प्रति-हर्त्ताक मत मानैत छथि, आओर लोक श्रीदत्तानुसारी क्रिया करैत छथि ।

* जायसवाल निर्मित मिथिलाहस्तलेखग्रन्थसूची प्रथम खण्ड पृष्ठ ४७५ ग्रन्थ संख्या ४०३ वी द्रष्टव्य ।

समय सर्वसम्मतिसँ एकर मान्य होइत अछि तदनुसार ई १४५८ ईशवीमे भेल । ते रुद्रधरक ई पोथी पञ्चाशत्वर्षक समयमे एक सद् ग्रन्थरूप सँ पाठार्थ लिखल गेल । जनता मानइ ई शवरे छोट बालक छलाह औ अपन भाइसँ पहुने छलाह से समरथ दर्शन हिनक पितामहुके जे हुन पञ्चाशतवर्ष समयमे पूर्णवयस्क कहल अछि से असङ्गत नहि बोध होइछ ।

हिनका दु गोट विवाह छल । अपवादे कोनो सन्तति नहि । दोसर विवाह छल हिनक "नरओन" मूलक "बिसइ" ग्रामक श्रीपुरुष दामोदरका कन्यासँ । दामोदरके† दु गोट विवाह छल; प्रथम पनिचोभ ओइनिवार नरसिंहक* कन्यासँ औ तहि पक्षक दामोदरक एकटं जेठि कन्या, महादेवी'सँ ओइनिवार महाराज भवेशठाकुर बालक महाराज हरसिंहदेवक विवाह छल । महाराज हरसिंहक पहिल विवाहमे बालक छलाह महाराज नरसिंह जनिक बालक महाराज धीरसिंह औ महाराज भैरवसिंह छलाह । दामोदरक दोसर विवाहक दोसरि कन्या "मधुमती' सँ, म० म० रुद्रधरक विवाह छल । हिनका दु बालक औ चारि कन्या परन्तु एक गोट बालकक बहुतो वर्षा नहि भेटैत अछि औ कन्यहुमे केवल एक गोटाक विवाह उल्लेखनीय अछि । हुनक विवाह छल "दरिहरे" मूलक "भौरबालो" ग्रामक मेधक बालक नन्दर्श । मेधक जेठ भाए सोदर कन्दर्प परमगुरु वाचस्पति मिश्रक छोट भाए मन्हु मिश्रक विवाह छल ।

---

† दामोदरक जेठ भाए मुरारिक दौहित्र तरौनी-करमहा मूलक श्रीदत्तक कन्यासँ जेठाएल सुरपति प्रसिद्ध दुबे ठाकुरक विवाह छल जनिक पौत्र म० म० महाराज महेश ठाकुर छलाह ।

* एहि नरसिंहक एक गोट विवाह रुद्रधरक भगिनीसँ छल से कहि जाइत छी । नरसिंहक स्त्री रुद्रधरक मातामहक पितिऔत बहीनि छलीह । नरसिंहक दोसर विवाहक कन्यासँ ओइनिवार हरदत्तक विवाह छल जनिक प्रपौत्रीसँ रुद्रधरक बालकक विवाह छल ।

कुल-चित्र (१२)

महो गङ्गाधर मिश्र अनुमान बार्ता

= कुमर सङ्गालोंस सीत मुवा | = ओइनिबोस रानीगारिक उधय सिंह मुवा

धाक — विरन् — हरि, कम्भु, भीम, अर्जुन

हरि — श्री राम, परशुराम, गोविन्द

श्री राम — रामनन्द गोरियार भवानीनाथ

क = माण्डरसं मौके
क = पबहीसं रघु
क = संकराढीसं शिवपति
क = वहेरवाडीसं बीधू
मधुसूदन
रामचन्द्र
क = बलिआसमसं मिश्र धनराय
क = सोदरपुर सं क = खण्डवलासं ठकुर भवेश
शिरिपति

भीमे — क = माण्डरसं भीमसेन भोर

तन्, कवि, बीरु, गणपति

क = बलिआससं बाढ़ू
क = बुधवालसं श्रीराम

तन् — गोकुल — र

क = संगौरसं महादेव

भवनाथ
क = माण्डरसं नीलकण्ठ-मनी
क = करमहासं रघुनाथ
क = सरिसवसं कमलापति
भवानीश्वर

क = कुजौलीसं धीर
क = सरिसवसं मिथिलेश
क = हरिहरासं रघुनाथ
हृदयनाथ झा (पाँजि)

मन्जत झा पाँजि

क = बलिआससं उमापति
क = पोशीसं विश्वनाथ
भवेश

क = माण्डरसं दामोदर

एहि "वरिहरए" चान्दक कन्यामे, रुद्रधरक दौहित्रीमे, परमगुरुक एक गोट बालक लक्ष्मीनाथ मिश्रक विवाह छल ।

म० म० रुद्रधरक दु बालक, नरहरि ओ श्रीहरि, मे केवल नरहरिक विवाहक उल्लेख अछि । हिनक विवाह छल पबौली मूलक हरदत्तक पौत्र, गोविन्दक बालक, हलधरक कन्यामे । हरदत्तक अपर विवाह ओइनिवार महाराज भवेश्वरक सबसँ छोट कन्यामे छल जाहि पक्षक हुनक बालक धर्माधिकरणिक वटक कन्यामे परमगुरु म० म० वाचस्पति मिश्रक विवाह छल । प्रथम विवाह हरदत्तकेँ पजिआर धर्माधिकरणिक नरसिंहक कन्यामे छल । एही पक्षक बालक गोविन्दक पौत्रीमे रुद्रधरक बालक नरहरिक विवाह छल । हिनक पुत्रपक्षक पड़ाओ नहि भेटैत अछि परन्तु हिनक एक गोट कन्याक सन्तान-परम्पराबे * बड़ बड़ पंच लोक भेटैत छथि । पञ्च-पञ्जीमे मुदा म० म० रुद्रधरक सन्तानक उल्लेख नहि अछि ओ तेँ सम्भव थीक हिनक वंश लुप्त भए गेल हो.परन्तु जँ से अछिओ तँ वर्त्तमानक बलथी शाखक होएत ओ पञ्जीबद्धसँ च्युत भए गेल होएत ।

म० म० लक्ष्मीधरक दोसर विवाह छल ओइनिवार महाराज

---

१ नरहरिक कन्यामे विवाह सोआइए रुपेकेँ; रुपेक कन्यामे विवाह ओलिवालए विश्वनाथकेँ; विश्वनाथक दौहित्र छलाह बुधवारए कूर्नेः तनिक कन्याने नाहस-कोआठ मूलक बाबू झाक विवाह छल, तनिक कन्यामे वेलऔचए दयुरी झाक विवाह छल । बबुदीक झाक कन्यामे हरिश्री-संकराढ़ी मूलक पञ्जीकार विश्वेश्वर झाक विवाह छल ओ तनिक सन्तान सौराठमे अनेक घर अछि । एक गोट सबसँ उत्कृष्ट दृष्टान्त:—विश्वेश्वरक पौत्र, पञ्जीकार रतिदेव झाक बालक, पञ्जीकार घनश्याम झाक कन्यामे जनकौली-शली मूलक ज्योतिषी भँवर झाक विवाह छल ओ तनिक वृद्ध-प्रपौत्री दड़िभङ्गाक श्रीमती बड़ी राजमाता साहेबा छिकीह ।

भवेश्वरक दोसरि † कन्या, "कुमारि सोनो"सँ । ई महाराज देवसिंहक सौतेल बहीनि छलीह, महाराज शिवसिंहक पितिऔत बहिनि । इतिहाससँ पता लगैत अछि जे १३२४ ईस्वीमे गयासुद्दीन तुगलकसँ पराजित भए महाराज हरिसिंहदेव मिथिला छोड़ि पड़एलाह् ओ गयासुद्दीनक भातिज फिरोजशाह १३५१ ई० मे दिल्लीक बादशाह भेलाह । कीर्त्तिलताकार विद्यापति ठाकुर कहैत छथि जे फिरोजशाह "प्रियसखा" कहि महाराज भोगीश्वरक सम्मान कएल । अतएव भोगीश्वरकेँ ताहि समयमे पूर्णवयस्क* मानए पड़त । भोगीश्वरक छोट भाए छलाह भवेश्वर ओ तेँ हुनकहु महाराज हरिसिंह देवहिक समयमे उत्पन्न मानए पड़त । एहि भवेश्वरक कन्यासँ म० म० लक्ष्मीधरक दोसर विवाह छल ओ से सम्भव इएह थीक जे हुनको जन्म महाराज हरिसिंह देवहिक समयमे भए गेल हो । अतएव लक्ष्मीधरक बाप म० म० रामेश्वरकेँ जे हम शाके १२०० क आसपास उत्पन्न कहल अछि से कोनो अनुचित नहि । सम्भव थीक जे एहूसँ पूर्वहिँ हुनक जन्म भए गेल हो, पश्चात् होएबाक तँ कोनो सम्भव नहि । दोसर, महाराज भवेश्वरक दौहित्र एकक कन्यासँ परमगुरु वाचस्पति मिश्रक विवाह छल तेँ लक्ष्मीधरक सबसँ छोट बालक रुद्रधर ओ परमगुरु, दुहु गोटाक समवयस्क भेलक अनुमान कए सकैत छी ओ निश्चय, रुद्रधर ओ वाचस्पति समसामयिक छलाह परन्तु रुद्रधर सम्भवतः पचीस-तीस वर्ष हुनकासँ जेठ छल होइथिन्ह ।

एहि पक्षमे म० म० लक्ष्मीधरकेँ कन्याक पता तँ नहि लागल अछि मुदा बालक तीनि गोट, रघु, राम ओ जटा (पूर्ण नाम प्रायः जटाधर छल)

† भवेश्वरक दोसर विवाहक दोसरि कन्यासँ लक्ष्मीधरक विवाह, पाँचम विवाहक एक मात्र कन्या कुमरि इसराइनिसँ पचौलिवार हरदत्तक विवाह जनिक बालक रुद्रक कन्यासँ परमगुरुक विवाह छल ।

* "प्रियसखा" सँ हम बुझैत छी जे फिरोजशाह ओ महाराज भोगीश्वर समानवयस्क छलाह । फिरोज शाहक जन्म १३०९ ई० मे छल ओ तेँ भोगीश्वरहुक जन्म चौदहम शताब्दक प्रथम दशकमे मानबाक चाही ।

कुल-चित्र (१०)

राम (मनयीवासी)

मधुकर रत्नाकर महो° श्री शुभङ्कर प्रभाकर गुणाकर बुद्धिकर दिवाकर

हरख्नू मकरनाथ शिवनाथ वैद्यनाथ मतिनाथ शुचिनाथ

रात्तू विष्णुनाथ रतनू कृष्ण महोरत्नेश्वरार्य देवशर्मा रघुनन्दन हरिनन्दन भवनन्दन

हरिश्चन्द्र लक्ष्मीकर अमृतकर प्रीतिकर | कृष्णानन्द | चतुर्भुज

क = शिवआससं महो° राघव क = खौआलसं रघुदेव

म० म० जगदीश मिश्र (पाँजि)

कुल-चित्र (११)

जटा (अलयीवासी)

= एकहरासं सोनैसुता

नारायण अनन्त महो श्रीपति = संकराढ़ीसं गणपति सुता

शितिकण्ठ = माण्डरसं बलाधोनसुता क = माण्डरसं हरनू

शुचिकण्ठ = दरिहरासं गोपी

रामचन्द्र मधुसूदन रामभद्र बलभद्र

= खौआलसं रतिदेवसुता = खौआलसं रतिदेवसुता

क = सतलखासं परमानन्द मोहन = नरौर सोदरपुरसं गङ्गाधरसुता
क = सर्सौलिदालीसं इन्द्रपति
क = बिठौलिआठिआससं अनन्त गुणाब्धि = महुआ खौआलसं लक्ष्मणसुता
महादेव झा (पाँजि)

साहेब = खौआलसं भुवनसुता क = माण्डरसं रुद्र

धर्मदत्त = नुवरवेलओअसं सीताराम सुता

हेकरा = करका सोदरपुरसं बस्तीसुता

ज्योतिर्विद् श्री कुञ्जी = दिघवेल ओइशालसं छीतनसुता

डॉक्टर श्री सुन्दर झा = बाभो सोदरपुरसं श्री सीताराम सुता

श्री तारिणीचरण

ई तीनू गोटए "अलयी" क वासी कहल छथि। लक्ष्मीधरक पहिलुक विवा-हक बालकमे केवल सबसँ जेठ म० म० हलधर "लखुगाम" क वासी छलाह, शेष तीनू प्रायः "अलयी" क। अतएव अलयीवासक अलयी शाखा की तँ रामेश्वरक सबसँ छोट पितो धुवेश्वरक सन्तान थिकाह, नहि तँ लक्ष्मी-धरक।

एहि पक्षमे हिनका बड़ सन्तान। सबसँ जेठ म० म० रघुकेँ दू विवाह। प्रथम "नरौर" मूलक शुभङ्करक कन्यामे। शुभङ्करहिक कन्यामे हिनक दू गोट वंशावेय भाए, शशिधर औ चन्द्रधरहुक, विवाह छल। अथवे शुभङ्कर विशिष्ट व्यक्ति छलाह; "पाली" मूलक "महिसी" सदृश सम्पन्न शाखाक बीजी पुरुष दुर्गादित्यक दौहित्र छलाह। एहि पक्षमे म० म० रघुकेँ चारि गोट बालक औ कन्या सेहो तथा दौहित्र सब पण्डित, परन्तु एहि दिशि हिनक शाखाक बढ़ावमे विशेष नहि भेटैत अछि। दोसर विवाह छल हिनक "माण्डर" मूलक "निकासी" शाखाक रामसुत देहरिक कन्यासँ जनित अपर कन्यासँ हिनक वंशावेय म० म० हलधरक पहिल विवाह छल। एहु पक्षमे हिनका चारिगोट बालक महोपाध्याय रतनू, हलनू, म० म० धराउ औ भतिकर। एहिमे सबसँ जेठ औ सबसँ छोटक सन्तानक उल्लेख पञ्जीमे नहि अछि, शेष दुइ भाइक सन्तान पञ्जीबद्ध छथि। हलनूक पौत्र, रत्नाकरक विवाह "सम्हद्दुरसँ पो" मूलक शिवदत्त ठाकुरक† कन्यासँ छल औ रत्नाकरक बालक, मुकुन्दक विवाह "संकराढ़ी"

† एहि शिवदत्त ठाकुरक प्रपौत्र म्याली ठाकुर लएकें सिहवाड़ पाँजि औ भ्याली प्रणेताक पौत्र सम्प्रति चौधरी श्री केदारनाथ ठाकुर सिहवाड़मे वर्तमान छथि। चौधरी उपाधि शिवदत्तक बालक उमापतिकेँ भेटल। शिवदत्तक प्रपितामह, रतिदत्त, ओइनिवार महामहत्तक कुसुमेश्वरक बालक राजरत्नेश्वरक दौहित्र छलाह तथा गणपति ठकुरणिक नाम ठाकुरक पौत्र छलाह।

मूलक पराशक कन्यामे छल । एहि पराशक विवाह छल "तिसऔत" मूलक "कुआ" शाखाक नन्दनक दौहित्रीमे औ एही नन्दनकेँ सन्तानसूत्र "तिसऔत" पाँजि भेल जे सोतिमे एमहर केँ गेल गए सर्वसँ महोच्च पाँजि बुझल जाइत छल । कहबाक अभिप्राय जे रत्नपुक प्रपौत्र, लक्ष्मीधरक अतिवृद्ध प्रपौत्रक विवाह एहन प्रतिष्ठित भेल छल औ तावतेँ एहि शाखाक मर्यादाक अनुमान कए सकैत छी ।

म० म० रघुक तेसर बालक म० म० पशुपतिकेँ पाँच बालक जाहिमे जेठ महोपाध्याय सुरपति औ छोट श्रीकरक सन्तानक उल्लेख नहि अछि आजीर लोनूकेँ पूर्ण सन्तान । हुनक तीसर बालक छलाह म० म० पशुपति औ हुनका पाँच बालक जाहिमे दू गोटाकेँ सन्तान । एक गोटएक, रामकृष्णक सन्तानक प्रसङ्ग विशेष उल्लेखनीय नै नहि किछु भेटैत अछि परन्तु पशुपतिक सबसँ छोट बालक कुमुदानन्दक विवाह बड़ उत्कृष्ट भेटैत अछि औ हिनक सन्तान-परम्परामे बड़ बड़ पैघ लोक । हिनक विवाह छल "सोदरपुर" मूलक "आहिल" शाखाक रत्नपतिक कन्यामे । ई रत्नपति (हिनक प्रसिद्ध नाम जागे झा छल) रुचेक पौत्र छलाह, रत्नपतिक बालक औ रत्नपति छलाह सम्मिश्र शंकरक छोट भाए महोपाध्याय महादेव मिश्रक दौहित्र । रुचेक बड़ीमे सन्मिश्रकेँ सबसँ छोट भाए महोपाध्याय दामोदर मिश्रक विवाह छल । जागे झाक प्रथम विवाह छल "सोदरपुर" मूलक

† संकराढ़ी मूलक पराशक दोसरि कन्याक विवाह छल सोदरपुर मूलक तेतरिहार शाखाक हरिकेशसँ औ हरिकेशक कन्याक विवाह छल धल्लिआसूए शोडर रघाइ झासँ । एही रघाइक कन्यामे सोदरपुरक महिआ शाखाक विश्वम्भर औ राम दू भाइक विवाह भेल औ ताहीसँ तिसऔत पाँजि पसरल । पृष्ठ २५ क प्रथम टिप्पणी द्रष्टव्य ।

"मलिजाम" शाखाक सुप्रसिद्ध नैयायिक म० म० रुचिदत्त† क छोट भाए विरतूक कन्यामे । कुमुदानन्दकेँ पाँच गोट बालक महोपाध्याय परशुराम, महोपाध्याय बंजू, लखाइ, गोवाइ औ भवाइ तथा एक कन्या जनिक विवाह "दरिहरए" रामी झासँ छल औ तनिक कन्यामे "पाली" मूलक "समौलि" शाखाक म० म० नरहरिक प्रपौत्र, म० म० केशव मिश्रक पौत्र, म० म० अर्जुन मिश्रक मझिल बालक पशुपति मिश्रक* विवाह छल जनिक दौहित्र वीर ठाकुर छलाह ।

महोपाध्याय परशुरामक विवाह दरिहरए मुसाइ झा × क कन्यामे छल । हिनक बालकसँ आगाँ शाखा-वृद्धि पञ्जीमे नहि भेटैत अछि परन्तु हिनक जेठ बालक बछाइ झाक कन्याक सन्तानमे ⁘ बड़ लोक अछि औ से

† ई रुचिदत्त, महामहोपाध्याय औ मिथिलाक एक गोट बड़ पैघ नैयायिक, पक्षधरादि नामक म०म० जयदेव मिश्रक शिष्य छलाह औ हिनक रचित कुसुमाञ्जलिप्रकाशमकरन्द, तत्त्वचिन्तामणिप्रकाश प्रभृति अनेक ग्रन्थरत्न हिनका अमर बनओने अछि ।

* हिनक विशेष परिचय पृष्ठ ४७ क टिप्पणीमे द्रष्टव्य ।

× दरिहरए मुसाइक प्रसङ्ग विशेष पृष्ठ ४० क दोसर टिप्पणीमे द्रष्टव्य ।

⁘ बछाइक दौहित्र छलाह खेड़ट-खण्डवला मूलक भोरानाथ, तनिक दौहित्र छलाह नरउन-मल्लिआस मूलक म० म० शीतानिश्र, हिनक कन्यामे तिसऔतए सुबन्धु झाक बालक, जगन्नाथ झाक विवाह छल औ जगन्नाथक बालक गिरिधारीक कन्या तनिक विवाह सोतिमे मथा, भौरक दामोदर सिंह ठाकुर आ म०म० श्रीकृष्ण सिंह ठाकुर ।

सुबन्धु झाक परिचयक हेतु नीचाक टिप्पणी द्रष्टव्य ।

सोति ओ योग्य बुझैत छथि । तहिना लखाइक सन्तान-कोटिमे † सेहो ब[illegible] लोक प्रतिष्ठित छी यद्यपि हिनका दुर्भाग्य महि, दु गोट कन्या मात्रक उल्लेख भेटैत अछि । तदेतरम, गोपाइ मलिक योनिआवक विवाह "सतलखा" मूलक "सतौनो" शाखाक शशीक कन्यामे छल । पूर्वमे एहि सतलखा कुलक बड़ विशिष्ट प्रतिष्ठा* छल ओ एखनहु योग्यता ई प्रतिष्ठित देश छल । गोपाइ झाकें एक गोट बालक वंशीधर झा ओ एक गोट कन्या जनिक विवाह "पचौली" शू[illegible] जीवन झासँ ओ एहि जीवन झाक बालक राम[illegible], वैयाकरण,क दौहित्र मिश्र[illegible] सुबन्धु झा × छलाह जनिक सन्तान सोतिमे प्रतिष्ठित पाँजि अछि ।

† लखाइक दुइ कन्याक विवाह जजिवाल मूलमे । प्रथमाक कविराजसँ जनिक अपर विषायुत दौहित्रीमे म०म० गोकुलनाथ उपाध्याय, [illegible], विवाह छल । कविराजक बालक, अर्थात् लखाइक दौहित्र, लखाइक दौहित्र छलाह कुर्सोलियाड़ म०म० जानकीनाथ झा जनिक दौहित्री-पुत्रीमे दिघवए उदन ठाकुरक विवाह छल । एही उदन ठाकुरक कन्यामे म०म० सचल मिश्रक बालक जगदत्त मिश्र विवाह कएल ।

लखाइक दोसर कन्याक विवाह जजिवालए [illegible] । तनिक बालक [illegible] कन्यामे [illegible] मिश्रक भाए छीतू मिश्र अर्थात्, भवक विवाह। भव मिश्रक दौहित्रीमे सरिसवए बलभद्र झाक विवाह छल जनिक पौत्र जगद्धर झाक चर्चा आगाँ आओत। [illegible] ई सरिसव-एक पर [illegible] बड़ प्रतिष्ठित देश [illegible] आ एतन धरि जातीय मर्यादा रखने छथि ।

* [illegible] एक गोट वृद्धप्रपितामहभ्राता चन्द्रकरक कन्यामे परमगुरु वाचस्पति मिश्रक एक गोट विवाह छल तथा दोसर शङ्करक कन्यामे सन्मिश्र शङ्कर ओ तुलक छोट भाए महो० [illegible] मिश्रक एक एक गोट विवाह छल।

× जाहि नन्दन झाक [illegible] तिसऔत पाँजि सोतिमे चलल जनिक जेठ भाए राम झाक वृद्धप्रपौत्र सुबन्धु झाकें दू विवाह। प्रथम माण्डर मूलक

वंशीधर झाक विवाह "बेलऔंच" मूलक "सुदइ" शाखाक बाछनि झाक पौत्री, वीर झाक कन्यामे छल । एहि बाछनि झाक जेठ भाए छलाह कवि रामचन्द्र झा जनिक बालक नेपाल-राजपण्डित कविवर चक्रपाणि झा छलाह । बाछनि झाक अपर विवाह पक्षक बालक, वीर झाक वैमात्रेय भाए, छलाह कृपाल झा जनिक सन्तान सम्प्रति बेतिआमे छथि । कृपाल झाक प्रपौत्रक प्रपौत्र श्री चन्द्रमोहन झा सम्प्रति एहि कुलक हेतु कमल भेल विकासमा[illegible]थ । वीर झाक विवाह छल "बलिआस" मूलक "मड़लाम" शाखाक म० म० जगदीश मिश्रक† कन्यामे । वंशीधर झाक बालक छलाह मही झा । हिनक विवाह सरिसवए भमर*क कन्यामे छल । हिनका एक गोट बालक दुर्गादत्त झा जनिक वंश प्रायः लुप्त अछि ओ दू गोट कन्याक परिचय हमरा भेटैत अछि । हिनक एक गोट कन्याके "पचौली" मूलक

म०म० हिमकरक कन्यामे जाहिमे एक कन्यामात्र; तनिक विवाह कन्होली सोदरपुर मूलक भवेश झाक बालक मानिक झासँ, गीतगौरीपति प्रभृति अनेक काव्यग्रन्थक रचयिता सुकवि कृष्णदत्त झाक भाएसँ तनिक सन्तान सुबन्धु झा पाँजि छथि । दोसर विवाह हिनक ओहीमानिक झाक बहीनिसँ, जाहिमे बालक जगन्नाथ झा ओ एक कन्या, जनिक विवाह दरिहरए दुखभञ्जन झासँ जनिक कन्यामे श्री५ मन्मिथिलेशक वृद्धप्रमातामह भवानीदत्त झाक विवाह छल। एहि पक्षक हिनक सन्तानकें पाँजि माधव मिश्र। अतएव सुबन्धु झा कें सहजहिं, माधव मिश्र जे पाँजि अछि तकरो अधिकांश लोक, एहि सुबन्धु झाक सन्तान थिकाह। ई दुनू पाँजि सोतिमे पूर्ण प्रतिष्ठित कुलक जाइत अछि।

† जगदीश मिश्रक नाम पर एकटा पाँजि अछि जे सोतिमे बेश पैघ ओ प्रतिष्ठित कुलक जाइत अछि ।

* सरिसवए भमरक चर्चा पूर्वहुँ कएल अछि । पृष्ठ २२ क लेख ओ पृष्ठ ४७ क टिप्पणी द्रष्टव्य ।

"बड़िआम" शाखाक सोति मनसुख झाक विवाह छल जनिक सन्तान सोतिमे जे केओ हेमाङ्गदराय पाँजिक छथि प्रायः सब थिकाह । मही झाक अपर कन्यामे "कुजौली" मूलक "भण्डारीसी" शाखाक म० म० कुलपति झाक* विवाह छल जनिक कन्यासे बनैलीक राजा दुलार सिंहक दोसर विवाह छल जाहि पक्षक हुनक सन्तान तरौनी राजकुलक श्रीनगर शाखा थीक ।

म० म० पराउ झाक तेसर बालक चित्रपतिक सन्तान बहुत दिन धरि जातीय मर्यादाक रक्षा कएल । हुनक बालक चिन्तामणिक विवाह ओहि सीसाड़ए शाखे झाक कन्यासे छल जनिक अपर कन्यासे हुनक पितियौत कुमुदानन्दक विवाह छल । चिन्तामणिक दौहित्रांले सोदरपुरिए मातृपक्षक विवाह छल जनिक सन्तान-परम्परामे कतेक विशिष्ट व्यक्तिकें पूर्वहिं देखाए आएल छी । तहिना म० म० पराउक कनिष्ठ बालक रत्नपाणिक प्रसङ्ग । तीनि चारि पुरुष धरि हिनको सन्तान पञ्जीबद्ध छथि परन्तु विशेष उल्लेखनीय नहि किछु भेटैत अछि ।

एहि रूपें म० म० रघुक सन्तानक जातीय उत्कर्ष स्पष्ट अछि । ओतए नें रामेश्वरक सन्तान-परम्परामे बड़ बड़ विशिष्ट "व्यक्तिकें" हम देखाए आएल छी परन्तु से सब बहुत प्राचीन परिचय अछि । एमहर आबि रामे-

* मनसुख झा अपने ... दौहित्रीपुत्र हेमाङ्गदरायक जे परिचय रात रघुनन्दनक प्रपौत्र, शंकर नायक पौत्र, कमलनयन नायक बालक छलाह । हेमाङ्गदरायक नामपर सोतिमे बड़ पुरान पाँजि अछि ओ से सब प्रायः मनसुख झाकें रहलें अथवा हिनक संपराकें भए जनिक विवाह करलहुँ बुद्धिनाथसें छल ।

* म० म० कुलपति झाक प्रसङ्ग विशेष आगाँ कहब । हिनक प्रपौत्रक पौत्र लोकनि एखन हरिपुरमे श्री इन्द्रानन्द झा प्रभृति वृद्धिमान छथि ।
§ पृष्ठ ४७ क टिप्पणी द्रष्टव्य ।

श्वरक सन्तान अपन जातीय मर्यादाक रक्षा नहि कए सकलाह । म० म० रघुक सन्तान समस्त कर्णवार कुलमे एक गोट मात्र शाखा अछि जे बहुत दिन धरि अपन जातिक रक्षा कएल ओ शीक योग्यतें बराबरि परिगणित होइत रहलाह । तकर कारणो स्पष्ट अछि । रामेश्वरक सन्तान शाखामे तीनि चारि पुरुष धरि तँ सरस्वतीक उपासना देखैत छी परन्तु तकर पश्चात् जेना अन्धकार भए जाए ओ विद्याक उत्कर्षक सङ्गहि सङ्ग जेना जातीय उत्कर्ष सेहो विलाए जाए । एहि शाखामे म० म० रघुक प्रपौत्र धरि, एक नहि, अनेक पण्डित देखैत छी । इएह कारण भेल जे विद्याक अंशवलें ई लोकनि अपन प्राचीन मर्यादा अक्षुण्ण राखल ओ तेहने कुटुम्बिता करैत रहलाह जे अपन स्वरूप छूटि नहि गेलन्हि ।

म० म० रघुक छोट भाए रामकें दू विवाह ओ हुनके प्रचुर सन्तान परन्तु ई लोकनि पञ्जीबद्ध छथि एहिसँ विशेष उल्लेखनीय आओर नहि किछु अछि । हिनक एक गोट बालक छलाह महोपाध्याय सूर्य झा जनिक पौत्र राजू झाक कन्यासे "बलिआस" मूलक "नडुआर" शाखाक महोपाध्याय राघव मिश्रक विवाह छल जनिक बालक म० म० जगदीश मिश्र छलाह जनिका नाम पर सोतिमे एकटा पंथ पाँजि अछि ।

म० म० लक्ष्मीधरक एहि पक्षक सबसँ छोट बालक छलाह जटाधर झा । हिनक विवाह "एकहरा" मूलक ओहि शाखामे छल जाहिमे हिनक पिता म० म० लक्ष्मीधरक पहिल विवाह छल । लक्ष्मीधरक विवाह छल दिवाकरक बालक रतिकरक कन्यासे ओ जटाधरक विवाह छल दिवाकरक छोट भाए रत्निकरक पौत्र सोनेक कन्यासे । एही रुचिकरक कन्यासे "पलि-वार" धर्माधिकरणिक नरसिंहक एक गोट विवाह छल जनिक चर्चा अनेक ठाम कएल अछि । एही रुचिकरक अपर विवाह-पक्षमे दू गोट बालक छलथिन्ह रत्नाकर ओ प्रज्ञाकर । लक्ष्मीकरक बालक छलाह म० म० हरिनाथ जनिक पौत्र सुप्रसिद्ध धर्माधिकरणिक वर्धमान उपाध्याय छलाह

सदा आनन्दकरक सन्तानिमे सम्प्रति एकहरए मूलक "खड़का", "करहौली", "ओड़ा" ओ "एनौलि" नाम प्रतिष्ठित शाखा अछि।

कुल-चित्र (९)

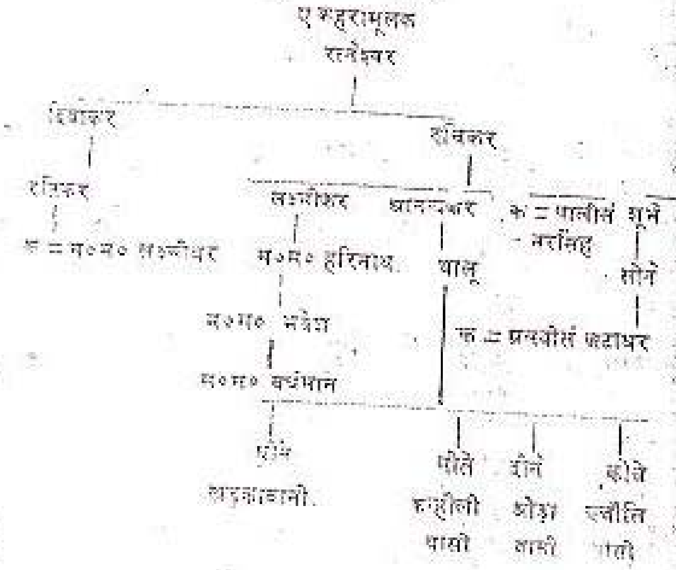

सदाधरकें तीनि बालक, नारायण, अनन्त ओ महोत्सवकृत्य भेलाह। एहिमे पहिल दुहू पीठाक सन्तान पञ्जीमे नहि भेटैत अछि; ओ तीसरि को तें पञ्जीबद्ध नहि रहलाह अथवा हुनक शाखा लुप्त भए गेल परन्तु तान्त्रिक पौराणिक पवीत्र अधिक परिचय पञ्जीमे अछि। पौराणिक पाँच पुत्रिकरुकें चारि बालक, रामचन्द्र, मधुसूदन, रामभद्र ओ भवभद्र। एहिमे मधुसूदन ओ रामभद्र दुहू भाइक विवाह "सोदाल" मूलक 'आहिल'

कुल-चित्र (८)

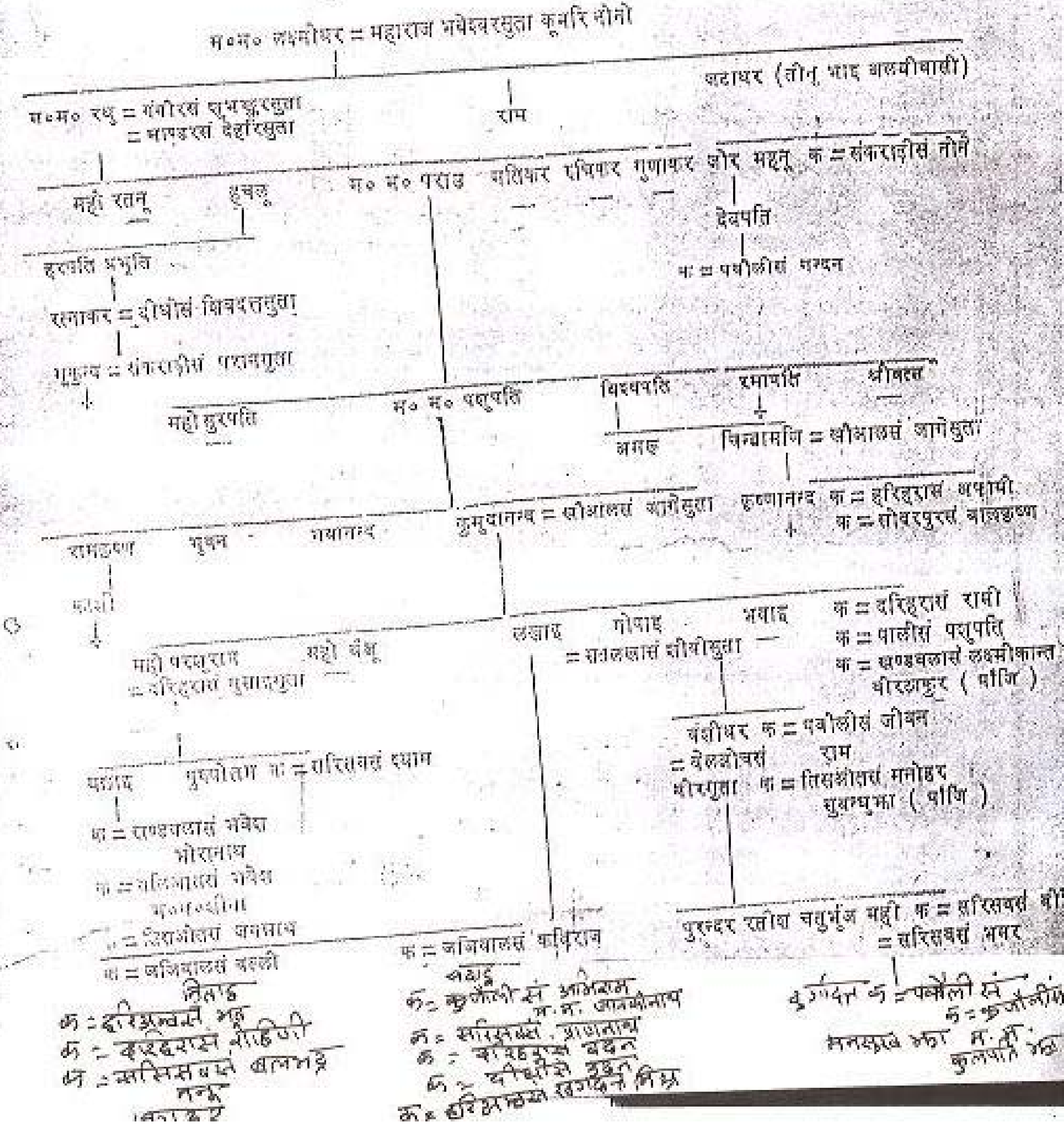

शाखाक रतिदेवकां† कन्यासँ छल । मधुसूदनकेँ एक गोट कन्या मात्रक उल्लेख भेटैत अछि ओ तनिक सन्तान-परम्परामे* आब कतेको घर सोतिओ छथि । रामचन्द्र ओ बलभद्रक शाखा पञ्जीमे उल्लिखित नहि अछि ।

रामभद्रक बालक मोहन ओ तनिक बालक गुनाढ्नि धरिक उल्लेख पञ्जीमे अछि । एतेक दूर धरि हिनक शाखा पञ्जीबद्ध अछि । गुनाढ्निक बालक साहेबक विवाह प्राय: स्थूल छल, कारण, साहेब झाक बालक धर्मदत्त झा अपन मात्रिक हंगा-हरिपुर आबि बसलाह ओ तनिक बालक पन मर्तिक मातृदहने बसलाह अतए हुनका लोकनिक वास अद्यापि छन्हि । एहि धर्मदत्त झाक प्रपौत्र हमर परम मित्र, मैथिलविद्वत्समाजक प्रवीण प्रेमभाजन, उदीयमान, पण्डितप्रवर डाक्टर श्री सुभद्र झा छथि ।

* * *

म० म० रामेश्वरक तेसर बालक महोपाध्याय गङ्गाधर मिश्र छलाह । हिनक ई "मिश्र" उपाधि हिनक वैशिष्ट्य सूचित करैत अछि । नैयायिक भऽओके ई मीमांसाक जेना विशेष अनुशीलन कएने होथि तथा तदृ द्योतित करबाक हेतु प्राय: ई मीमांसकक उपाधि ग्रहण कएल । पत्र-पञ्जीमे ई "जमुथाम"क वासी कहल छथि अतए हिनक भागिन म०म०

---

† रतिदेव अपनें एकहरा मूलक राजपण्डित गेंड्कूक बालक लाखनक दौहित्र छलाह ओ गेंड्कू छलाह म०म० वर्धमान उपाध्यायक छोट भाए । रतिदेवक विवाह छल सम्मौलि-पालीमूलक म०म० वाचस्पति मिश्रक पौत्र, म०म० रघुनाथ मिश्रक बालक रतिदेव मिश्रक कन्यासँ ।

* मधुसूदनक कन्यामे सतलखए परमानन्द झाक विवाह छल, तनिक कन्यासँ सम्मौलि पालीमूलक इन्द्रपति मिश्रक विवाह छल, तनिक कन्यासँ बलिआसए विठौली अनन्त झाक विवाह छल । एही अनन्त झाक बालक छलाह महादेव झा जनिका नामपर पाँजि अछि जे सोतमे बड़ प्रतिष्ठित अछि ओ एमहर वर्ष पचासेकसँ सोतिअहु मध्य परिगृहीत भए गेल अछि ।

हलधरक धाम छल । अतएव "अलंकार'क "जमुगाम" शाखा की ओं गङ्गाधर मिश्रक अपत्य थिकाह ओ से लोकनि "मिश्र" कहबैत होएताह अथवा हलधर झाक अपत्य थिकाह ओ से लोकनि "झा" कहबैत होएताह ।

गङ्गाधरहुकेँ दू गोट विवाह छल । प्रथम विवाह छल हिनक 'गंगौली' मूलक सौरुक कन्यामे, जनिक उदर दू गोट कन्यामे हिनक दू गोट भातिज, हिनक सबसँ जेठ भाए महेश्वरक दू गोट बालक, गदाधर ओ बुद्धिधरक विवाह छल । गदाधरक पहिले विवाह सौरुक कन्यामे, बुद्धिधरक दोसर विवाह सौरुक कन्यामे ओ गङ्गाधरक पहिल विवाह सौरुक कन्यामे । अतएव स्पष्ट अछि जे गदाधर ओ बुद्धिधरक बाप महेश्वर ओ हुनक सबसँ छोट भाए गङ्गाधरक वयसमे पूर्ण अन्तर छल जाहिसँ ओ अपन भातिज सबहिक सार भए सकलाह । एहि विवाहमे गङ्गाधरकेँ एक बालक ओ एक कन्या । एहि कन्याक विवाह "माण्डर" मूलक "मधुपुर" ग्रामक भीखे मिश्रसँ छल । ई भीखे मिश्र गोपालक बालक, शंकरक पौत्र, सूने मिश्रक प्रपौत्र छलाह तथा सूने मिश्र म० म० वर्द्धमानक पिती छलाह, हुनक बापक ओ सातेद भाए । सूने मिश्रक दोसर बालक सूर्य मिश्रक दौहित्री-मे, गोपाल मिश्रक पितिऔत बहिनिक कन्यासँ, महाकवि विद्यापति ठाकुरक एक गोट विवाह छल । एहि भीखे मिश्रक कन्या, अलंकार गङ्गाधरक दौहित्रीक, सन्तान-परम्परामे बड़ बड़ पैघ लोक छथि ।

* भीखेक कन्याक कुजिलबार रघुक विवाह छल, तनिक कन्याक खंगाड़ि मूलक गिरिपतिक विवाह छल, तनिक दौहित्र छलाह खौआड़ि मूलक मधुसूदन, तनिक बालक रामचन्द्रक कन्यासँ बलिआस मूलक महिनाथक जगन्नाथ मिश्रक विवाह छल जे पण्डित-राजक मामाक पितिऔत भाए छलाह । जगन्नाथक कन्यामे खण्डवला मूलक म० म० महाराज महेश ठाकुरक छोट भाए म०म० दामोदर ठाकुरक पौत्र, अग्निहोत्रिक

गङ्गाधर मिश्रक बालक आरु मिश्रक सन्तान बहुत दिन धरि पञ्जी-बद्ध भेटैत छथि परञ्च हिनका लौकिक कोनो क्रिया विशेष उल्लेखक योग्य नहि भेटैत अछि । बालक एक गोट बालक किरतुक कन्याक सन्तान-काहिलेश्वर मलिक पैघ लोकके देखैत छी, नहि तँ, ई लोकनि पञ्जीबद्ध छलाह एतबए कहब पर्याप्त बुझैत छी ।

दोसर विवाह छल गङ्गाधर मिश्रकेँ ओइनिवार राजकुलमे, महाराज भवेशरक प्रथम विवाहक एक मात्र बालक उदयसिंहक कन्यासँ । भवेशरक बालकमे मिथिलेश भेलाह महाराज देवसिंह, हुनक बैमात्रेय उदयसिंह नहि, जेठो सोदर त्रिपुर सिंह नहि । अतएव ई कहब कठिन अछि जे उदय सिंह बापक जेठ बेटा छलाह अथवा नहि । पञ्जीमे हिनका एक गोट असाधारण उपाधि देखैत छी, "पाणिग्राहिक" । एहन "पाणि-ग्राहिक" उपाधि देखैत छी एक ठाम आओर, बिसपी मूलक सान्धि-विग्रहिक धीरेश्वरकेँ जनिक बालक सान्धिविग्रहिक चण्डेश्वर रत्नाकरकर्त्ता सुप्रसिद्ध छथि । पाणिग्राहिक कोनो राजकीय उपाधि अवश्य

मझो विश्वम्भर ठाकुरक बालक, भवेश ठाकुरके विवाह छल । भवेश ठाकुरक प्रपौत्र छलाह म०म० प्रेमनिधि ठाकुर-जनिक दौहित्र छलाह सिद्धौति माण्डर मूलक हृदयदत्त झा जनिक कन्यासँ मिथिलेश महाराज छत्र सिंह बहादुरक प्रथम विवाह छल ओ जनिक प्रपौत्र महावैयाकरण पण्डित श्री दीनबन्धु झा, अपर-पाणिनि, सम्प्रति इसहपुरमे विद्यमान छथि ।

* किरतुक दौहित्रीपुत्र छलाह बुधवारए भवनाथ, तनिक दौहित्र छलाह महरए मनी, तनिक दौहित्रीपुत्र छलाह सरिसवएधरणीधर । हिनक बालक भञ्जन झाक नामपर पानि अछि जे आब सौराठमे प्रति-ष्ठित मुसल माहरा अछि । धरणीधरक दौहित्रीपुत्रीक बालक दरिहरए हृदयनाथ झा छलाह जनिक दौहित्रीपुत्र श्री५ मन्मिथिलेश थिकाह ।

छल ओ से विशेष प्रतिष्ठाक, परन्तु एकर यथार्थ आशय स्पष्ट नहि होइत अछि । "लिखनावली"मे महाकवि विद्यापति ठाकुर पाणिग्राहिकके कोना पत्र लिखल जाए तकर आदर्श देने छथि ओ ताहिसँ ई बोध होइत अछि जे राजकीय पान-सुपारी आदिक अध्यक्षक, जेना ई पद हो । विषय जे होउक, महाराज देवसिंहक वैमात्रेय भाए पाणिग्राहिक जयत सिंहक कन्यामे, महाराज शिवसिंहक पितियौत बहिनिमे, एहि गङ्गाधर मिश्रक दोसर विवाह छल । एहि पक्षमे हिनका एक गोट मात्र बालक जनिक शाखा-वृद्धि पञ्जीमे नहि अछि । की तँ से लुप्त भए गेल अथवा पञ्जी-प्रबन्धसँ पूर्व भए जनि पड़ल । हिनका एक गोट कन्या सेहो, ओ हनिक विवाह ओहो ओतबे जिनक प्रथम विवाहक बालकसँ छल आहि ओतबे मिश्रक दोसर विवाह गङ्गाधर मिश्रक दहिन विवाहक कन्यासँ छल ।

एतहु भरध्वी मूलक बाड़ शाखाक विस्तार भेल । मजो गाममे एहि कुलक अठारह गोट डेरा अछि । सम्प्रति कोन डेरामे के लोक कतए छथि अथवा ई सबहक डेरा अछिए की थोड़हिमे कोनो लुप्तो भए गेल से हमरा ज्ञात नहि । परन्तु एतबा निश्चय जे अड़ शाखाक जे केओ अन्वेषक होएतह एहीमे कोनहु शाखाक अन्तर्भूत होएताह ।

बैंगनी-शाखा

पूर्वक अध्यायमे हम म०म० महेश्वरक जेठ बालक धर्माधिकरणिक गदाधरक प्रसङ्गमे एतबए कहि आएल छी जे हिनका तीनि गोट विवाह छल ओ तीनूमे सन्तान, बालक ओ कन्या । एक विवाहक हिनक सन्तान "उसरौली"क वासी कहल छथि, दोष दू विवाहक "बैंगनी"क । वस्तुतः पञ्जीकारसे ई स्वयं "उसरौली"क वासी कहल छथि ओ हिनक दोसर ओ तेसर विवाहक बालक "बैंगनी"क वासी कहल छथि । तावतेव अनु-मान करैत छी जे हिनक सन्तानमे जे प्रत्यक्ष वासी नहि कहल छथि से वाणिक डेराक रहलाह । गदाधरक छोट भाए बुद्धिधर सेहो "बैंगनी"क वासी कहल छथि । अतएव "अलयी" मूलक "बैंगनी शाखा"क जे केओ एखन वर्त्तमान छथि से लोकनि सबहुँ एही दूहू भाइक ककरो सन्तान थिकाह ।

"अलैवारक" ई "बैंगनी" शाखा एमहर प्रायः डेढ़ सए वर्षसँ मिथिला मे बड़ विशेष प्रतिपत्ति ओ प्रतिष्ठाक भाजन भए गेल अछि, कारण जे वर्त्तमान राजकुल एही शाखाक थीक । अपन जातीय स्वरूप किंवा सामा-जिक प्रतिष्ठा अक्षुण्ण राखि "अलैवार"क "अलयी" शाखा छओ सए वर्षसँ ऊपरसँ मिथिलामे आबृत होइत अएल परन्तु एहि मूलक ई "बैंगनी" शाखाक मिथिलाक पूर्वाञ्चलमे विशाल भूसम्पत्ति अर्जित कए कोन रूपेँ समाजकेँ गौरव प्रदान कएलक अछि ई इतिहासक गवे-षणाक विषय थीक; ओ सङ्गहि-सङ्ग पञ्जी-प्रबन्धोत्तरकालीन श्रेणी-विभागमे पूर्वक न्यूनताकेँ पाबि पुनः ई शाखा सम्बन्धक उत्कर्षसँ कोना गौरवकेँ पओलक अछि सेहो मिथिलाक सामाजिक इतिहासक एक गोट बोड़ रोचक अध्याय नहि अछि । आइ काल्हि जे आक्षेप यत्र तत्र सुनलौमे

वर्तमान अछि जे हरिसिंहदेवी व्यवस्था "मूल" अछि, एहिमे प्राय प्राय नहि एक, मकार [illegible] प्रत्यक्ष रूपसँ एहि [illegible] पूर्वापर समालोचनात्मक भए आइल अछि । से समालोचना तँ हम [illegible] अध्यायमे करब, कारण जे [illegible] कहल सबहक परिचय भए [illegible] तकरहि समालोचनाक अवसर आओत । एहि अध्यायमे हम धर्माधिकरणिक गदाधरक आवश्यक परिचय अध्यायक रूप संगृहीत कए रहल छी । एकर विशेष महत्त्वकेँ दृष्टिमे राखि पूर्वक अध्यायमे उचित [illegible] एहि प्रसङ्ग नहि किछु कहल, आगाँ कहब से प्रतिज्ञा कए छी, तेँ एक गोट स्वतन्त्र अध्याय आरम्भ करैत छी ।

म० म० रामेश्वरक जेठ पौत्र, म०म० गङ्गाधरक जेठ बालक, म०म० गदाधर अवश्ये एक प्रसिद्ध [illegible] महापुरुष छलाह । पञ्जीमे हिनक उपाधि "धर्माधिकारणिक" भेटैत अछि । मिथिलाक शासन-पद्धतिमे धर्माधिकरणिकक पद बड़ महत्त्वपूर्ण छल । स्वतन्त्र मिथिलामे न्याय-शासनक अखिल अधिकार मिथिलेशहिकेँ छल छनि से शासनक भार मिथिलेशक द्वारा जाहि व्यक्तिक अधिकारमे देल रहैत छल से धर्माधिकरणिक कहबैत छलाह । मिथिलामे धर्मक बड़ व्यापक अर्थ छैक ओ समस्त आचार एवं व्यवहार धर्महिक अन्तर्गत अछि । तेँ एहि सब विषयक स्थानीय पण्डित लोकनिक [illegible] निर्णयार्थ उपस्थित कएल जाइत छल परन्तु कतोक विषय विवादास्पद भए भए राजाक ओतए अबैत छल । एहि सब विषयक निर्णय करबाक हेतु राजा धर्माधिकरणिक नियुक्त कएने रहैत छलाह जनिक निर्णय एहि सब विषयमे सर्वमान्य होइत छल । आइ काल्हि जे अधिकार 'चीफ जस्टिस'केँ छैन्हि सएह अधिकार हिनका छल । परन्तु पद हिनके उच्च रहलो तथा एकर प्रतिष्ठा कतबो उत्कृष्ट होइक, छल धरि ई राजसेवा । ब्राह्मणक हेतु सेवा-वृत्ति अधम कहल गेल अछि तेँ धर्माधिकरणिकक सामाजिक प्रतिष्ठा एव

जातीय गौरव नहि रहए पबैत छल । पञ्जीमे जे केओ धर्माधिकरणिक भेटैत छथि, प्रायः सबहिक सन्तानकेँ उत्तरोत्तर न्यून होइत देखैत छी । तँओ, छल धरि ई बड़ विशिष्ट पद ओ एहि हेतु विद्वताक सङ्ग सङ्ग व्यक्तित्वहुक प्रयोजन अवश्ये होइत छल होएत । महेश्वरक सन्ततिमे तीन पुरुष धरि ई प्रतिष्ठा देखैत छी ओ तावतेत निश्चय अछि जे मीमांसा ओ धर्मशास्त्रक व्यवसाय हिनका परिवारमे डेढ़ दू सए वर्ष धरि अविच्छिन्न रूपसँ अनुवर्तमान छल ।

हम पूर्वहुँ सूचित कए आएल छी जे म०म० गदाधरकेँ तीनि गोट विवाह छल । हिनक पहिल विवाह सबसँ पैघ छल, "संगौली" मूलक सोदरपुर-कन्यासँ । एहि लोकक दू गोट आओर कन्या एही परिवारमे विवाहित छलीह, एक गोटए हिनकहि छोट भाए बुद्धिधरसँ ओ दोसर हिनक छोट पित्ती गङ्गाधर मिश्रसँ । एहि विवाहमे हिनका एक बालक वीर ओ एक कन्या । बालकक शाखावृद्धि पञ्जीमे नहि अछि परन्तु से जे पञ्जी-बद्धसँ न्यून भए छलाह तेँ "अर्लवार संसरौली" कहाए, जतएक वासी ई स्वयं पञ्जीमे कहल छथि । एहि पक्षमे जे हिनका एक गोट कन्या तनिक विवाह भेल "कुजौली" मूलक रविकर*सँ । हिनका पुत्र नहि, दू गोट कन्या मात्र, जाहिमे एक गोटाक विवाह सम्मिश्र शंकरक छोट भाए

---

* रविकर छलाह भूतन ओझा छोट भाए, जाहि भूतनक कन्यासँ सम्मिश्र शंकरक प्रथम विवाह छल ओ जनिक पौत्र म०म० रुचिकर झा छलाह, तथा [illegible] जेठ भाए जाहि [illegible] सन्तान हरिपुरक [illegible] लोकनि भिखाड़ । ई सब भाइ महाराज शिवसिंहक साक्षात् भागिनेय भाए छलाह कारण ई लोकनि अर्लवार म० म० रामेश्वरक दौहित्र छलाह । पृष्ठ २७ क नेत ओ प्रथम टिप्पणी द्रष्टव्य ।

महामहोपाध्याय महादेव मिश्रसँ छल जनिक बालक दरभंगाकवि† गणपति झा जे "रसमञ्जरी" प्रभृति अनेक अमर साहित्य-ग्रन्थक रचयिता कविराज म०म० भानुदत्त मिश्र छथाह। दोसरक विवाह छल ओही "सरिसबपुर" मूलक 'हरि' शाखाक रतिसँ। एहि रतिक बालक, "कुवलि-विचार" कविरत्नक दौहित्र "कविभवर" गदाधरक दौहित्रपुत्र, छलाह हिनक जनिक एक गोट विवाह "करमहा" मूलक कैवाढ़वाढ़कार सुप्रसिद्ध म०म० जिनक जिनक जिरुधि छल।

तेसर विवाह धर्माधिकरणिकसँ छल "गंगोर" मूलक हरिहरक कन्यासँ। एहिसँ हिनका दू गोट बालक दिवाकर ओ प्रभाकर तथा एक कन्या। प्रभाकरक प्रसिद्ध नाम शम्भू छल तथा पञ्जपञ्जीमे ई "बैंगनी"क नामसँ कहल छथि। मुदा एहि कुहू भाइमे ककरो शाखा पञ्जीमे उल्लिखित नहि अछि। एहि पत्नीसँ जे हिनका कन्या छलथिन्ह अथिक विवाह "सुरगन" मूलक "भैरव" शाखाक वासुदेवसँ छल जनिक प्रसिद्ध नाम मधुसूदन छल। एही वासुक कन्या छलीह "मिहुपरिहन महादेवी लखिमा" महाराज शिवसिंहक पट्टरानी, जनिक नाम महाकवि विद्यापति ठाकुर अपना कालक हेतु अमर कए देल छथि। वासुके कए गोट विवाह छल से ई निश्चय नहि होइत अछि महादेवी लखिमा एहि धर्मधार धर्माधिकरणिक दौहित्री छलीह अथवा ई वासुदेवक आन विवाहक कन्या छलीह।

---

† दरभंगाकवि विविध उपाधि अछि। एकर पूर्ण आशय स्पष्ट नहि होइत अछि; एतबा स्पष्ट अछि जे ओ कवि छथाह। हिनक कवित्वक सेवह भानुदत्त मिश्रक सगृहीत स्मराविभ्रातके अछि।

* हरिके दोसर विवाह छल तकर चर्चा पृष्ठ १९ क टिप्पणीमे द्रष्टव्य। हरिक दुइ विवाहमे पूर्ण सन्तान ओ से सब सोतिके बहुत दिन धरि प्रतिष्ठित रहलाह यद्यपि आब ई वंश सोतिमे लुप्त अछि।

सम्भव बुझाइ थीक जे ई वासुदेवक पूर्वक विवाहक कन्या छलीह, पहुदेवक कन्यासँ हुनक विवाह पश्चात् भेल। एहू विवाहक सन्तानमे वासुदेवके बड़ पैघ पैघ लोक, हुनक प्रपौत्र ज्यातुर्जुरिक सकल राय सुरगण-कुल-कमल-दिवाकर कर्ता भासमान भए महुसरा एवं सोदिरआ प्रभृति राज्यक प्रतिष्ठापक भेलाह।

म० म० गदाधरक तेसर विवाह सबसँ महत्वपूर्ण छल ओ से छल "कलिगाम" मूलक "भूतहरी" शाखाक सान्धिविग्रहिक गणेश्वरक कन्यासँ। एहि कलिगाम मूलक ताहि-समयक इतिहास बड़ महत्वपूर्ण अछि ओ बड़ रोचक प्रतीत होएत से जानि ओकर किछु वर्णन एतए कऽ रहल छी।

जाहि समयमे मिथिलाक राज्य ओइनिवारक कुलमे आएल अर्थात् पञ्जीप्रबन्धक अव्यवहित उत्तर कालमे एहि कलिगामक कुलमे अनेको महापुरुषक प्रादुर्भाव भेल जे लोकनि तत्कालीन राज-कुलसँ अनेक प्रकारक सम्बन्ध स्थापित कए बड़ अधिकार ओ प्रतिष्ठा पाओल, बड़ विशाल सम्पत्ति एकत्र कएल। ताहि दिन एहि कुलमे एक जन छलाह प्रभाकर। ओना पञ्जीमे हिनक वृद्धप्रपितामह धरिक नाम अछि परन्तु हिनक अपनो मातामहक नाम अथवा जनिक कुलहुक नाम पञ्जीमे नहि अछि। प्रभाकरक विवाह छल "सतवी" मूलक "डीह" शाखाक देवदत्तक कन्यासँ तथा हिनका चारि बालक ओ कए गोट कन्या जाहिमे तीनि बालकक परिचय उल्लेखनीय बूझि पड़ैत अछि। हिनक एक गोट कन्याक विवाह ओइनिवार राजकुलक प्रतिष्ठापक राजपण्डित कामेश्वर ठाकुरक दोसर बालक महामहत्तक कुसुमेश्वरसँ छल जनिक दू गोट बालक छलाह महामहत्तक महेश्वर ओ राजा रत्नेश्वर। पञ्जीमे "महत्तक" सनाइयक उपाधि थीक ओ तेँ "महामहत्तक"क आशय भेल सर्वोच्च पदाइय। प्रभाकरक दोसरि कन्या ओही राजपण्डित कामेश्वर ठाकुरक सबसँ छोट बालक महाराज भवेश्वरसँ विवाहिता छलीह

ओ एहि विवाहमे महाराजके दू बालक कुमर बिदुर सिंह ओ महाराज ईश्वरसिंह "मदनमालमय" ओ एक कन्या कुमरि सोनो तनिक विवाह हर्ल-हार सं०म० लक्ष्मीधरसँ छल । प्रभाकरकेँ एक गोट आओर कन्या ओ तनिक विवाह छल "धुसओत" मूलक गुणाकरमे । गुणाकरक बापक पिति-औत भाए छलाह प्रभाकर जनिक विवाह "बिसवी" मूलक महामहोपाध्याय- मण्डि भवेश्वरक कन्यामे छल । भवेश्वरक प्रपौत्र महाकवि विद्यापति ठाकुर छलाह । "कालिदासमए" प्रभाकरक बालक गोकुलि छलाह, "विश्वास" शर्मकर, जनिक उपाधि "विद्वास" सर्वथा अभिनव बूझि पड़ैत अछि, ओ जिनमूलक छल से बुझल नहि होइत अछि, मधुकर, बीहू तथा सबसँ छोट महामहोपाध्याय आनन्दकर । आनन्दकरक विवाह छल "कुसुम्भवाल" मूलमे, विभाकरक पौत्रीमे, जनिका सन्तानमे एहिना एक गोट अभिनव ओ असाधारण उपाधि "पुष्पदन्त" भेटैत अछि, ओ "खतवी" मूलक "बहुआल" शाखाक लक्ष्मणक दौहित्रीमे । आनन्दकरकेँ चारि बालक जाहिमे सबसँ जेठ गणेश्वर ओ सबसँ छोट भोगीश्वरकेँ पञ्जीमे "सान्धि-विग्रहिक" कहल अछि जकर आशय भेल जे ई दुहु भाइ राजमन्त्री छलाह प्रधान अमात्यक पदपर नियुक्त छलाह तथा तेसर बालक भोगीश्वरकेँ पञ्जीमे "राजा" क उपाधि देल त छी ओ ते प्रायः हिनक शौर्य, वीर्य, औदार्य ओ सम्पत्तिक कारणेँ की तँ बादशाहक प्रदत्त छल अथवा ओइनि-वार महाराजहिक प्रदत्त छल तथा चारिम बालक गुणीश्वरकेँ पञ्जीमे 'राजवल्लभ' कहल अछि जकर आशय भेल जे ओ तत्कालीन ओइनिवार मिथिलेशक प्रियपात्र "दरबारी" छलाह । एहिमे सबसँ जेठ सान्धिवि-ग्रहिक गणेश्वरक विवाह छल ओइनिवार महाराज भोगीश्वरक बालक महाराज गणेश्वरक कन्यामे, महाराज वीरसिंह ओ महाराज कीर्त्ति सिंहक वैमात्रेय बहीनिमे, कुमरि उमासँ । एही कुमरि उमा ओ सान्धिविग्रहिक गणेश्वरक कन्यामे अर्थ वार धर्माधिकरणिक, गदाधरक तेसर विवाह

छल । एहि विवाहमे धर्माधिकरणिकके दू बालक हरिकर ओ पद्मकर, जाहिमे हरिकरक प्रपौत्रक प्रपौत्रक बालक छलाह देवानन्द जे बनौली राजकुलक बीजारोपण कएल । गदाधरकेँ एहि पक्षमे एक गोट कन्या, तनिक विवाह "संकराढी" मूलक "परहट" शाखाक होरे† क बालक सुरपति झासँ छल जनिक सन्तान-परम्परामे* सम्प्रति अनेक विशिष्ट ओ पैघ पैघ लोक छथि ।

---

† होरे झाक छोट भाए छलाह चाण्डी झा जनिक पौत्र रुद्र झाक दौहित्र सं०म० महाराज महेश ठाकुर छलाह । अतएव होरेक बालक सुरपति महाराज महेश ठाकुरक मातामहक साक्षात् पितिऔत भाए छलाह ।

* सुरपतिक बालक, गदाधरक दौहित्र, छलाह कान्ह । तनिक पौत्र छलाह लक्ष्मीपति झा जनिक प्रसिद्ध नाम-लोटाइ झा रहए । तनिक दौहित्र छलाह पतिनाभए भवेश । हिनक विवाह छल पण्डुआ मूलक सुमति पञ्जीकार रघुदेव झाक बालक भगीरथ झाक कन्यामे । एहि भवेशक कन्याके नरसिंहए नन्दन झाक विवाह छल जनिका नामपर बड़ पुरान ओ प्रतिष्ठित पाँजि अछि । जखन मिथिलेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुर अपन दोसर विवाह ओ महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह बहादुर अपन पहिल विवाह एही नन्दन झाक पाँजिमे, नन्दन झाक सन्तानमे, कएल तखन ई पाँजि सांसिअहु मध्य बड़का पाँजि भए गेल । नन्दन झाक दौहित्र छलाह टकवाल मूलक थाऊ, तनिक कन्यासँ विवाह सोदरपुरिए पक्षिधरक, तनिक कन्यामे विवाह पण्डुए बलभद्रक, तनिक कन्यामे विवाह करमहए विश्वनाथक, तनिक दौहित्रीमे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह विवाह कएल ओ ओही टकवाल मूलक बाबुक बहीनिमे विवाह बेलऔंचए विश्वनाथक तनिक कन्यामे विवाह खरौड़ी मूलक कमलपाणिक, तनिक कन्यामे विवाह सरिसब मूलक जमाहिरक, तनिक कन्यामे विवाह सझौरए राजा ठाकुरक ओ तनिक दौहित्रीमे महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह विवाह कएल । पनि-

भागलपुर-दर्पण* नामक पोथीमे कहल गेल अछि जे पण्डित गदाधर झाक अगाध विद्वत्ता तथा साधु स्वभावसँ प्रसन्न भए १३३४ ई० मे [illegible] गयासुद्दीन तुगलक हिनका एक गोट पैघ भूसम्पत्ति देल । [illegible] बात सेहो भागलपुर-दर्पण-कार बंगाली मानने कहने छथि । ई हुनक [illegible] कोनो कोम किंवदन्ती थीक, सर्वथा अलीक । [illegible] मे [illegible], से हम अनेक ठाम कहि आएल छी यथा गयासुद्दीन [illegible] १३२४ ई० मे मिथिला-विजयी कए दिल्ली पहुँचितहिं १३२५ ई० मे [illegible] एक गोट नवनिर्मित कोठा परसँ खसिकेँ प्राण त्यागल । अतएव १३३४ ई० मे ओ जीवितहिं नहि छलाह तँ ओ सम्पत्ति देबाक प्रश्ने [illegible] । ऊपर जे [illegible] हम देखाए आएल छी ताहूसँ स्पष्ट अछि जे [illegible] महाराज गणेश्वरक आर महाराज भोगीश्वरहिकेँ जखन गयासुद्दीनक भातिज फिरोजशाह "प्रिय सखा" कहि सम्मान कएल तखन गयासुद्दीनक कोन कथा, फिरोजशाह सेहो यदि हिनका सत्कार करने होथि तँ कदाच अथवा अन्तिम समयमे, पूर्व नहि । फिरोजशाहक देहान्त १३८८ ई० मे भेल । गदाधरक अगाध विद्वत्ता ओ साधु स्वभावक गाथा बादशाहक कान धरि पहुँचए ताहि हेतु गदाधरकेँ ताहि समयमे वृद्ध नहि तँ पूर्णवयस्क अवश्य मानए पड़त ओ हुनका जेठे सँ गदाधरक जन्म १३५० ई० क प्रान्तमे भेल हो तखन संगत । ओ महाराज शिवसिंह ओ महाकवि विद्यापतिसँ कदाच जेठ छल होथि परन्तु सेहो बेसी नहि । सम्पूर्णे समाव-

---

[illegible] भवेशाहिक दौहित्र छलाह बलिआरक नीलाम्बर मिश्र अनिरुद्ध [illegible] पञ्जि अछि जे आब सोनिबहु मध्य [illegible] सुरक्षित अछि।

* पण्डित [illegible] झा लिखित भागलपुर-दर्पण-प्रथम भाग प्रथम खण्ड पृष्ठ २४५–२४६

† डाक्टर ईश्वरी प्रसाद कृत मध्यकालीन भारतक इतिहास—पृष्ठ २५८

अमरके मानब उचित थीक । ई एक उच्च महापुरुष छलाह ताहिमे कोनो सन्देह नहि; अगाध विद्वत्ताक पुत्रक तँ हिनक उपाधिए सन अछि ओ साधु स्वभाव, से बिनु साधु स्वभावक भेने दु दु गोट राजकुल-पुरुषे पहुमरा ओ गौरिआ तथा पश्चात् बनेली—हिनक सन्तानक हस्तगत भए जाएत तकर कोन सम्भव ?

हम कहि आएल छी जे गदाधरक अपर वृद्ध विवाहक सन्तान अथवा बुद्धिधरक सन्तान पञ्जीमे बेंगनीक बासी कहल छथि परञ्च बुद्धिधरक तँ पौत्र धरिक उल्लेख छथिओ मुदा गदाधरक तँ एकओ गोट बालकक शाखा कोनहु पञ्जीक पोथीमे नहि भेटैत अछि । आगाँ परिचय जे गदाधरहिक बालक लोकनिक भेटैत अछि ने बुद्धिधरक प्रपौत्र लोकनिक । शाखा लुप्त भए गेल से कोना कहब कारण जे एतेक लोक तँ अखबार बेंगनीक शाखामे भेटैत छथि, ओ से सब तँ हिनकहि वृद्ध भाइसँ बकुरी सन्तान होएताह । अतएव इएह कहए पड़ैत अछि जे ओ लोकनि ततबा गोध क्रिया करैत गेलाह जे मौक कुलसँ हुनका लोकनिक सम्पर्क एकदम छूटि गेलन्हि ओ तेँ पञ्जीमे हुनका लोकनिक परिचय देबाक अवसरे नहि आएल । पत्रपञ्जीमे जतए बंगनी शाखाक प्रवर्त्तकक उल्लेख अछि तत्तहु एतबे अछि जे "परभूसुतलति बंगनी"; ई परभू गदाधरक दोसर विवाहक बालक प्रभाकर थिकाह । गदाधरक तेसर विवाहक बालक हरिकर किंवा पद्मकरक तँ नाम समेत पत्रपञ्जीमे नहि अछि । एही हरिकरक सन्तान बनैलीक राजकुल थीक । अतएव स्पष्ट अछि जे हरिकर स्वयं अथवा हुनक सन्तान तँ ताहू दिन अवश्य छलाह परन्तु हुनका अपने क्रिया ताही दिन ततबा न्यून छल, ताहि रूपक हुनक कुटुम्बिताक काज सब भेल छल, जे पत्रपञ्जीमे समेत हुनक उल्लेख करब अनावश्यक बुझल गेल, हुनक डेरा समेत नहि देखाओल गेल ।

प्रसङ्गवशात् एहिठाम पञ्जी-साहित्यक विषयमे किछु परिचय दए

देब आवश्यक प्रतीत होइत अछि कारण जे से नहि कएने एतए बहुतो व्यक्ति नाना प्रकारक भ्रममे पड़ि जएताह। आरम्भमे जे पञ्जीक प्रबन्ध भेल तखन प्रत्येक मूलक पृथक् पञ्जी छल जाहिमे बीजीपुरुषसँ आरम्भ कए ओहि मूलक सब बालक ओ कन्याक नाम, विवाह ओ सन्तानक परिचय लिखल जाइत छल। क्रमशः लोक बढ़ैत गेल, पोथीमे शाखा, उपशाखा, प्रशाखा सब होअए लागल ओ विवाहक अधिकार-निर्णयक क्षेत्रमे कठिनता उपस्थित होअए लागल कारण जे यावत् पर्यन्त सब मूलक पोथी एकत्र नहि होइत तावत् धरि अधिकारक निर्णय कोना होइत। एक गोट पोथीमे [illegible] मातामह ओ मातृमातामह, अइ अधिक तँ एतबए उल्लिखित रहत। अधिकार बुझबाक हेतु एहिसँ बहुत अधिक परिचयक प्रयोजन होइत छैक। अतएव पञ्जीकार लोकनि एकर युक्ति बहार कएलन्हि। ओ एक गोट मूलमे [illegible] ओ बीजी पुरुषसँ ओकर परिचय देब आरम्भ कएलन्हि। [illegible] ओकर कुलक उल्लेख आएल—ओ ओकर कुलक उल्लेख [illegible] ओहि व्यक्तिक विवाह कोनहु ओकरहि कुलमे होइत—, तखने ओ ओहि ओकर कुलक परिचय पुनि बीजी-पुरुषसँ देब आरम्भ करथि। एवं रूपेँ प्रत्येक कुलक परिचय जोड़िते आबि गएल। [illegible] नाम ओ लोकनि "शाखा-पञ्जी" राखल ओ पूर्वक पञ्जीकेँ "मूल-पञ्जी" कहल। शाखा-पञ्जी खण्डवलाक महाकुलसँ आरम्भ होइत अछि ओ तकर कारण हमरा इएह बोध होइत अछि जे जाहि समयमे एकर प्रणयन भेल ताहि समयमे मिथिलाक राज्य खण्डवलाकुलमे आबि गेल छल ओ तेँ मिथिलेशक कुलसँ एकरा आरम्भ करब उचित बुझल गेल। हमरा [illegible] मूलक पञ्जीकार रघुदेव झा ई कार्य कएल।

---

* [illegible] पञ्जीकारक वंश ओक मुदा प्रथम पञ्जी-[illegible] पञ्जीकार हरिश्वर झा। तिनक विवाह [illegible] कन्यासँ छल ओ गङ्गापति छलाह महाकवि विद्या-

कुल चित्र (१३)

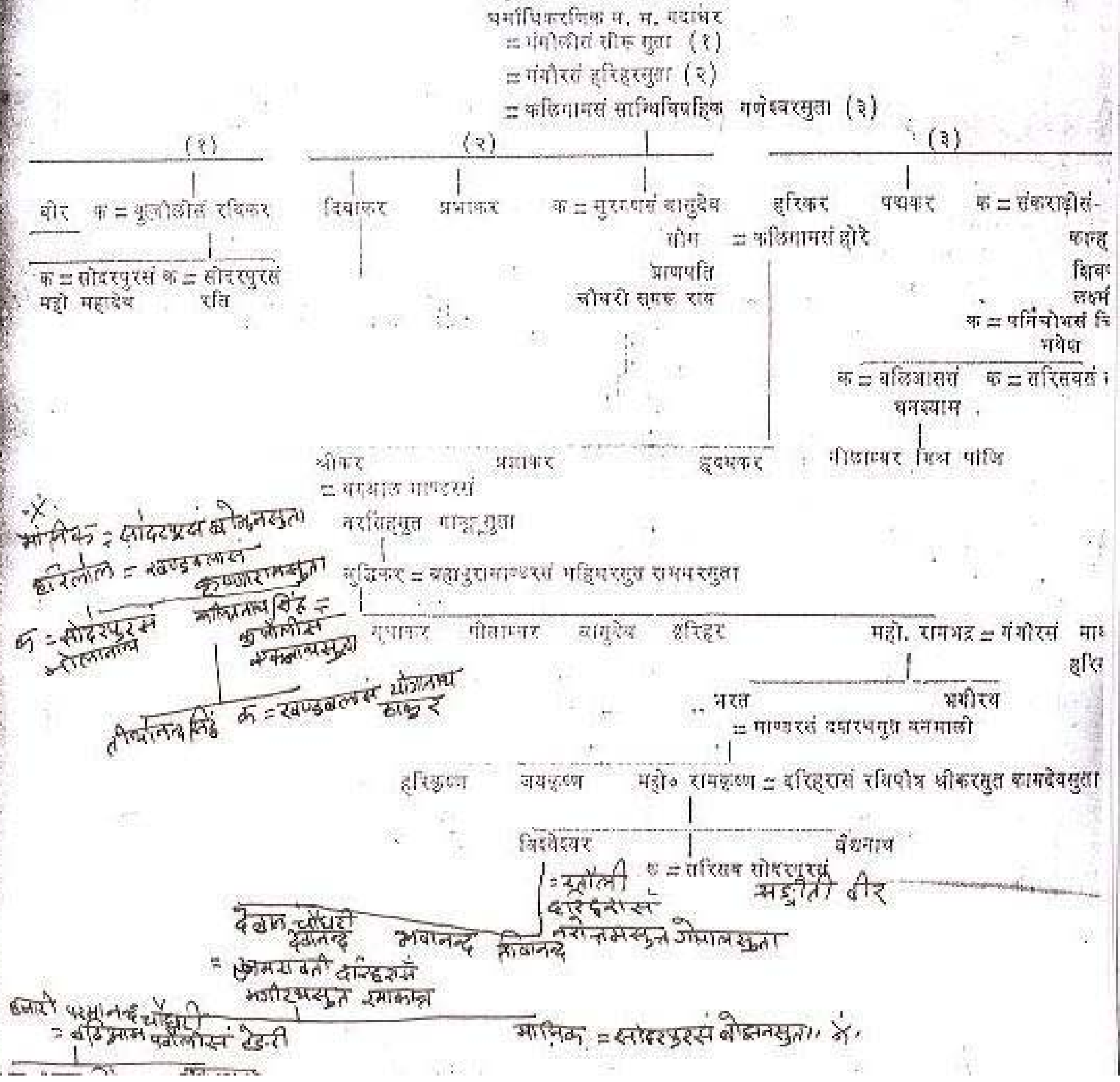

मूल-पञ्जीक काज तँओ जारी रहल । तकर कारण ई जे शाखा-पञ्जीसँ सँ ततबे व्यक्तिक परिचय भाओत जकरा नीक कुलसँ, वंश व्यक्तिसँ, सम्बन्धक लागि रहल । पञ्जीबद्धसँ हुन ततबे व्यक्तिकेँ कुर्सल छो । ताहिसँ न्यूनक विवाहक अधिकार-निर्णय करबाक हेतु सँ पुनि ओही मूल-पञ्जीक प्रयोजन होएत जाहिमे ओहि कुलक सब सन्तानक उल्लेख रहबे करत, ओ सोति रहथु, योग्य रहथु अथवा जएच्छुर रहथु । तथापि एतबा स्वीकार करए पड़त जे मूल-पञ्जीक चालि क्रमशः कम होमए लागल । पठन-पाठनक हेतु शाखा-पञ्जीक प्रचार भेल ओ क्रमशः पञ्जीकार लोकनि समस्त मूलक परिचय संगृहीत नहि कए एकें एक प्रान्तक

पति ठाकुरक दौहित्र । हरिश्वर झाक प्रपौत्र छलाह पञ्जीकार रघुदेव झा । हिनक जेठ बालक पञ्जीकार भगीरथ झाक विवाह कन्हाबार म०म० गोकुलनाथ उपाध्यायक पितिऔत, विद्यानिधि म०म० पीताम्बर उपाध्यायक वैमात्रेय बहीनि, सदुपाध्याय रामभद्रक कन्यासँ छल परन्तु रामभद्रक ई कन्या श्रीकान्त झाक दौहित्री नहि छलीह जनिक नामपर पाँजि अछि । म० म० गोकुलनाथ गढ़वालक राजा फतेहशाहक ओ हुनक परोक्ष भेलाक पर मिथिलेश महाराज राघव सिंहक सभामे छलाह । अतएव हुनक जन्म-काल १६५० ई० क प्रान्तमे मानब उचित ओ तेँ पञ्जीकार रघुदेव झाक जन्म १६०० ई० सँ पूर्वहिँ मानए पड़त । अतएव ई काज ओ सत्रहम शताब्दीक आरम्भमे कएने होएताह । पञ्जीकार भगीरथ झाक प्रपौत्रक प्रपौत्र पञ्जीकार श्री रघुनन्दन झा ककरौढ़क बासी सम्प्रति श्री५ मन्मिथिलेशक पञ्जीकार विद्यमान छथि । पञ्जीकार भगीरथ झाक छोट भाए पञ्जीकार आनन्द झाक बालक पञ्जीकार देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झाक शाके १६४४ क लिखल एक गोट बृहत् शाखा-पञ्जीक पोथी हमरा हाथमे अछि । एहिसँ सए-सवा सए वर्ष पूर्व हिनक पितामह रघुदेव झा शाखा-पञ्जीक प्रणयन कएलेँ छलाह से सर्वथा समीचीन प्रतीत होइत अछि ।

अवश्य ई कहू जे अपन अपन "यजमान" सभक परिचय मूलक रूपमे संग्रह करए लगलाह । सम्प्रति एहए स्थिति अछि । केओ पञ्जीकार आदिसँ लए अद्यपर्यन्तक एको गोट-मूलक सावली परिचय प्रायः नहि दए सकताह । सब पञ्जीकारकेँ अपन अपन प्रान्त छैन्हि, डेरा सब बाँटल छैन्हि ओ ओहि डेराक परिचय प्रायः ओएहटा पञ्जीकार दए सकताह । तेँक प्राचीन ई व्यवस्था भेल. प्रत्येक मूलसँ अनेक शाखा भेल, प्रत्येक शाखामे अनेक लोक भेल जे एकहु मूलक सावली परिचय संगृहीत करब असम्भवप्राय अछि । एहीसँ इहो स्पष्ट अछि जे सम्प्रति जे जन शाखाएल सावर्णिक श्रेणीमे छथि तनिक विवाहक अधिकारक निर्णय केहन दुष्कर कर्म होएत; कतेक कठिनतासँ अएलाक कन्याक सोलहो कुलक परिचय उपलब्ध भए सकत ओ तकर उतेक तलजा छूट अछि जाँचब जे सम्यग्रूपक सतीन नहि होइक, कतेक असाध्य ओ कतहु असम्भव होएत ।

हमरा लगमे दु गोट एहन प्रामाणिक शाखा-पञ्जीक पुस्तक अछि, दुहु शाके १६४४ क लिखल । एक गोट पौत्र ककरौड़मे पञ्जीकार रघुदेव झाक पौत्र पञ्जीकार देवानन्द झाक लिखल ओ दोसर पौत्र मङरौनीमे "मंगरौड़ी" मूलक "हरिड़ी" शाखाक पञ्जीकार रतिनाथ प्रसिद्ध पौत्रू झाक पौत्र पञ्जीकार माधव झाक बालक पञ्जीकार पुरुषोत्तम झाक लिखल । दुहुमे कतहु "अर्गपार-बंगनी" शाखाक उल्लेख नहि अछि । किन्तु एक ठाम मात्र एकर नाम अछि । "सोदरपुर" मूलक "सरिसब" शाखाक परिचय प्रसङ्गमे म०म० सच्चिदा शंकरक छोट भाए महोपाध्याय महादेव मिश्रक प्रपौत्रक प्रपौत्र वीर मिश्रक चर्चा आएल अछि । पञ्जीमे हिनक उपाधि अछि "सङ्गीती" जकर आशय भेल जे ई सङ्गीत-विशारद छलाह । एहि सङ्गीती वीरक विवाह लिखल अछि "बंगनी शाखि अलयी मूलक महो० रामभद्र पौत्र, भरत सुत, महो० रामकृष्ण"क कन्यामे । एहिठाम उचित छल जे जाहि शाखाक सन्तान ई रामभद्र छलाह तकहिसँ आलए अरिक परिचय पोथीमे दए देल गेल अछि तनएक एक ओ

पंक्तिक झाँक दए ओतएसँ रामकृष्ण धरिक सावली परिचय एतए दए देल जाइत । शाखा-पञ्जीक एहए रीति थिकैक । परन्तु तकर कोन कथा, रामकृष्णक विवाहहुक उल्लेख एतए नहि अछि, मातृकक चर्चे कोन । एहिसँ स्पष्ट अछि जे एहि शाखामे शाके १६४४ धरि जे केओ एकोटा नीक काज कएल तँ इएह रामकृष्ण अपन एक गोट कन्याक विवाह सत्कुलमे कराओल । आओर सब काज सब केओ न्यूने करैत गेलाह, सबटा काज क्रमे होइत गेल ।

परन्तु एमहर आबिकेँ गत डेढ़-दू सए वर्षसँ एहि शाखाक पुनरुत्थान भेल अछि । हमरा लगमे शाके १८०६ मे लिखल एक पञ्जीकार श्रोत्रिय हलधर† झाक लिखल शाखापञ्जीक एक गोट पोथी अछि । शाखापञ्जी सर्वथा मूलसँ आरम्भ होइत अछि से हम कहिए आएल छी ओ एहि पोथीमे धड़ोरए रघुवर* ठाकुरक एक गोट विवाह जे बनैलीक राजा लीलानन्द सिंहक कन्यासँ छल, तकर उल्लेख करितहिँ, जे शाखा-पञ्जीक रीति थिकैक, एहि शाखाक आरम्भसँ परिचय दए देल गेल अछि ओ देल गेल अछि हरिकरसँ । हरिकरक नाम तँ सब शाखा-पञ्जीमे अवश्य भेटत कारण जे हिनक सोदर महोमिश्र सन्तानमे "सरिसबए" नन्दन झाक विवाह छल ओ नन्दन झाक सन्तान-सूचक हिनका नामपर प्रतिष्ठित पाँजि अछि से हम पूर्वहिँ कहि आएल छी ।

एतए सन्देह भए सकैत अछि जे पञ्जीमे जखन एहि बंगनी शाखाक

---

† ई पञ्जीकार पचौली मूलक भड़िम्नाम शाखाक उजान गामक वासी मनमुख झाक पौत्र छलाह जनिक परिचयक हेतु पृष्ठ ५६ टिप्पणी २ द्रष्टव्य। ओ पृष्ठ ४० क द्वितीय टिप्पणी देखू ।

* ई रघुवर ठाकुर म०म० दामोदर ठाकुर (महाराज महेश ठाकुरक अनुज) क प्रपौत्रक प्रपौत्रक बालक छलाह—हिनका प्रसङ्ग विशेष आगाँ कहब ।

परिचय संगृहीत छल नहि तखन उत्तरकालीन पञ्जीकार लोकनि पुनि से अन्वेषण नहि कएलन्हि ? परन्तु पञ्जीमे नहि अछि तकर अर्थ बुझबाक थीक जे शाखा-पञ्जीमे नहि अछि । उत्तरकालीन पञ्जीकार लोकनिकेँ जखन प्रयोजन भेलन्हि तखन ओ लोकनि पुछारी कए जाहि पञ्जीकारक कोनहु एहि मूलक बाबतो परिचय छल अथवा एहि शाखाक समस्त परिचय संगृहीत छल, तकरासँ परिचय संग्रह कए लेलनि होएताह । तेँ हरिकरसँ लए एखन धरि कए पुरुष धरिक परिचय जे भेटितहुँ अछि से बड़ थोड़, मूल-पञ्जीक जेहन परिचय होएबाक चाही तेहन, मातामह ओ मातृमातामहक मूल ओ नाम एतबए । ओहि मातामह किंवा मातृमातामहक जे परिचय [illegible] से भेटब कठिन अछि । हरिकरक आठम अथवा नवम कुमर प्रपौत्रक प्रपौत्रक बालक छलाह वैकालय चौधरी जे अंग्रेजी राज-कुलक शिलान्यास कएल ओ तनिक बालक हजारी पद्मानन्द चौधरीले एहि राज्यमे पुनः सुदृढ़ निवास [illegible] देल छी ।

वर्त्तमान राजकुलक अधीनमे बड़ विशाल सम्पत्ति अछि जे पुरैनिया, भागलपुर, मालदह, सन्थाल-परगना, ओ मुङ्गेर पाँच जिलामे पसरल अछि । उत्तर नेपालसँ लए दक्षिणमे वैद्यनाथ-धाम धरि ओ पश्चिममे मुङ्गेर जिलासँ आरम्भ कए पूर्वमे बङ्गालक मालदह जिला धरि एकर विस्तार अछि । मध्य भागमे आनहुक जमीन्दारी अछि अवश्य परन्तु सम्पत्तिक दृष्टिसँ दरिभङ्गाक राज्यकेँ छोड़ि आन कोनो राज्य सम्प्रति बिहारमे एकर तुलना नहि कए सकैत अछि । परन्तु आश्चर्यक विषय थीक जे अद्यापि एको गोट प्रामाणिक विवरण नहि भेटैत अछि जे एहि राज्यक प्रतिष्ठा कोना भेल । भागलपुर-दर्पणमे पण्डित [illegible] जे पुनर्नवीन से लिखने गेलाह ओ सम्प्रति प्रमाणसँ हुनक कथा अधिकांश काल्पनिक भए आइल अछि । मिथिलामिहिरक मिथिलाङ्कमे जे विवरण अछि सेहो प्रायः एही आधारपर अवलम्बित अछि ओ ओहुमे कोनो प्रामा-णिकता नहि बुझि पड़ैत अछि । पुरैनिया जिलाक गजेटियरमे एकर

किछु विवरण अछि परन्तु ओहो किंवदन्तीमूलक सएह कहब । सबसँ प्रामाणिक विवरण हमरा दृष्टिमे बुकननं† साहेबक लिखल पुरैनिया जिलाक रिपोर्टमे देल अछि । एहि रिपोर्टकेँ लिखबाक हेतु ई डाक्टर साहेब १८०६-१० ई० मे पुरैनिया-जिलाक भ्रमण कएल । ताहि समयमे वर्त्तमान राजक प्रथम प्रतिष्ठापक चौधरी दुलार सिंह जीवित छलाह ओ राजाक उपाधि नहि पओने छलाह । अतएव ई रिपोर्ट एहि प्रसङ्ग जे कोनो विवरण उपलब्ध अछि सबसँ प्राचीन थीक ओ तेँ सबसँ विशेष प्रामाणिक अंश होइत अछि । एहि कारणमे हम राजा दुलार सिंह धरिक विवरण मुख्यतः एहीसँ लेल अछि ।

भागलपुर-दर्पणमे म० म० गङ्गाधरक बालक, हरिकरक प्रपौत्र छलाह महोपाध्याय रामभद्र, नैयायिक; तनिक पौत्र, रामकृष्ण, सेहो नैयायिक छलाह, पञ्जीमे हुनकहु महोपाध्याय कहल अछि । महोपाध्याय राम-

---

† बङ्गालक प्रेसिडेन्सीक प्रामाणिक सर्वेक्षण निमित्त १८०७ ई० मे ईस्ट इण्डिआ कम्पनीक गवर्नर-जनरल डाक्टर फ्रान्सिस बुकननकेँ नियुक्त कएल ओ ई डाक्टर सात वर्ष धरि बङ्गालक समस्त भागक भ्रमण कए गङ्गाक दक्षिण मार्गें बिहारक गया जिला धरि पहुँचलाह तथा अपन रिपोर्ट सभ कम्पनीक अधिकारीक सोझाँ विलायत पठाए देल । बुक-ननक मृत्युक नओ वर्ष पश्चात् १८३८ ई० मे कम्पनीक डाइरेक्टर मोन्ट-गोमेरी मार्टिनकेँ भार देल जे एहि रिपोर्टक सारांश छपाबथि तथा सएह तीन जिल्दमे मार्टिनक "पूर्वीय भारत" (Eastern India) नामक ग्रन्थ थीक । बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटीक ध्यानमे भेला उत्तर जेक्सन साहेब इण्डिआ आफिसक लाइब्रेरीसँ मूल रिपोर्टकेँ बहार करबाए सेक्रेटरी आफ स्टेटक अनुमतिसँ ओकरा प्रकाशित करओल । पुरैनियाक रिपोर्ट १८०९-१०क, भागलपुरक १८१०-११ क, पटना ओ गयाक १८११-१२ क ओ शाहाबादक १८१२-१३ क थीक ।

कृष्णक पौत्र [illegible] भाए छलाह, योगी, देवानन्द, भवानन्द ओ शिवानन्द। एहेक दिन [illegible] लोकनि "झा" कहबैत छलाह; बंगनीक वासी छलाह। देवानन्दकेँ [illegible] जीमे "चौधरी" क उपाधि देल छी।

चौधरी उपाधि मुसलमानी अमलदारीक थीक, मुसलमान नबाब अथवा थीक प्रतिनिधिक देल। वस्तुतः ई उपाधि एक गोट विशिष्ट राजकीय पदक सूचक थीक। गाममे मालगुजारी ओसूल करबाक हेतु जेना जेठरैयत, तहिना ताहि दिन परगनाक मालगुजारी ओसूल करबाक भार जकरा देल जाइत छलैक से "चौधरी" कहबैत छल। एक प्रकारसँ ई तहसीलदारक पद भेल तथा ओसूल मालगुजारीसँ अपन दस्तूरी ओ भेटैत छलैन्ह सएह ओकर वेतन छलैक। परन्तु हाकिम दूर रहैत ओ यातायातक सुविधा नहि रहलाक, अतएव ई चौधरी लोकनि एक प्रकारसँ जमिन्दार छलाह ओ परगनाक मालगुजारी ओसूल कए जेना एखन रैयत दाखिल करैत जाइत छैक तहिना निर्धारित अंश राजकीय खजानामे दाखिल कए अपनेँ स्वतन्त्र मालिक भए ऐश्वर्य निरंकुश शासन करथि।

भागलपुरदर्पणकार कहैत छथि जे देवानन्दक बालक परमानन्द "चौधरी" कहाओल गेलाह ओ से अजीमाबाद* सरकारसँ जफराबाद§

---

† ई [illegible] नाम परिभ्रष्ट जिलामे बहेड़ा थानामे एखनहु विद्यमान अछि [illegible] नामक गाम आछि ओहि—[illegible]—क [illegible] अछि। एकर पश्चिममे अछि हावी-भौआल, पूर्वमे अछि [illegible] ओ [illegible], उत्तरमे अछि [illegible] ओ [illegible] तथा दक्षिणमे [illegible] ओ [illegible] अछि।

* [illegible] पटनाक [illegible] नाम थीक।

§ [illegible] आइन अकबरीमे नहि भेटैत अछि; जकरा बादक [illegible] जिलामे आहि परगनामे बंगनी गाम अछि [illegible] ई [illegible]।

परगन्नाक। हुनका मतसँ बंगनीक मालिक ई लोकनि पूर्वहिसँ छलाह। कोनहु कारणसँ अजीमाबादक नबाबक कोपभाजन भए परमानन्द तिरहुत छोड़ि पड़एलाह ओ जाइत जाइत पुर्णियाक उत्तरमे मोरङ्गक कालमे भैरवमल्लिक नामक कायस्थ कानूनगोक आश्रयमे धमीरमे जाएकेँ स्थिर भेलाह। आओरो जे कोनो एहि कुलक विवरण देखल अछि सबमे परमानन्द चौधरीकेँ एहि राज-कुलक प्रतिष्ठापक कहल भेटैत अछि। श्रीनगर-बनैलीक सर्वे-सेटलमेन्ट*क रिपोर्टमे जे एहि कुलक इतिहास अछि ताहूमे सएह अछि। आओर की, श्रीनगरेश साहित्यसरोज राजा कमलानन्द सिंहक अपन लिखल हुनक अपन परिचय† अछि ताहूमे एहि राज्यक प्रतिष्ठापक परमानन्द चौधरी कहल छथि।

परन्तु बुकनन साहेब ⊕ कहैत छथि जे पुर्णियाक§ महाराज रामचन्द्रनारायणक§ देवान छलाह देवानन्द तथा ओएह महाराज अपन देवान, देवानन्दकेँ ११५८ सालमे (फसली) अर्थात् १७५१ ई० मे मोरङ्गक [illegible] ओ [illegible] दू गोट परगन्ना देल। एहिसँ ई धरि तँ स्पष्ट अछि जे पुर्णिया गेलाह देवानन्द, परमानन्द नहि; एहि राजकुलक मूलपात कएल देवानन्द, परमानन्द नहि। भागलपुरदर्पणकारक आओर

---

* श्रीनगर-बनैली-सर्वे ओ सेटलमेन्ट (१८८७–१८९४) रिपोर्ट पृष्ठ २५।

† मिथिलामिहिरक मिथिलांक पृष्ठ १९२।

⊕ बुकनन-लिखित पुर्णिया जिलाक रिपोर्ट पृष्ठ ४९६।

(BUCHANAN-PURNEA REPORT)

BO Research Society 1928

§ [illegible] महाराजकेँ बुकनन साहेब पुर्णियाक राजा सएह कहैत छथि।

§ ई राजा रामचन्द्रनारायण [illegible] अन्तिम [illegible] महाराज [illegible]नारायण रायक पिता छलाह —[illegible] रायक प्रपौत्रक पौत्र छलाह।

[illegible] भए वर्तमान अछि जे देवानन्दहिक प्रसङ्ग हो, तकर फलस्वरूप [illegible] प्रसङ्ग [illegible] । ओहिठाम [illegible] सेहो जे देवानन्दहिकें [illegible] । परन्तु ऐतिहासिक [illegible] प्रमाण होइत अछि । ई [illegible] जे एखनहु ई ग्राम हिनकहि [illegible] अछि जे परम्परानुसार देवानन्द [illegible] हिनकहि [illegible] अछि परन्तु से कहियासँ अछि से ज्ञात नहि होइत अछि । परम्परानुसार [illegible] नवाबसँ राजा [illegible] चौधरी कहलाह से कथा [illegible] अछि [illegible] हुनकहि [illegible] भेल । [illegible] हिनक [illegible] । हुनका ई [illegible] अछि जे [illegible] नवाबसँ राजा [illegible] चौधरी [illegible] नहि [illegible] । परन्तु इहो कोनो [illegible] नहि जे [illegible] जे कथा परम्परानुसार चौधरीक प्रसङ्ग कहल [illegible] हुनका राय देवानन्दहिक [illegible] हो तथा [illegible] परगनाक चौधराइ [illegible] होथि तथा नवाबक [illegible] भए पुरैनियाँ [illegible] उत्तर परगना [illegible] भए गेल हो [illegible] हुनकहि [illegible] हो [illegible] हुनक [illegible] नवाबसँ [illegible] भेल । विश्वास जे होइत एहिमे कोनो सन्देह नहि जे एहि राजकुलक बीज देवान देवानन्दक रोपल थिक ।

पुरैनियाँ जिलाक धर्मपुर परगनाक विवरण दैत [illegible] साहेब तत्कालीन मिथिलेश महाराज राघव सिंहक सङ्ग पुरैनियाँक नवाबक [illegible] वर्णन कएने छथि । ओ कहैत छथि* जे कोनहु कारणसँ नवाब महाराज मिथिलेशपर बड़ असन्तुष्ट भए गेल छलाह परन्तु राजा रामचन्द्र रायक देवान देवानन्दकें नवाबक दरबारमे बड़ प्रतिपत्ति छल तथा

* [illegible] पुरैनियाँ जिलाक रिपोर्ट पृष्ठ ५०८ ।

ओ बीचमे पड़ि नवाबकें प्रसन्न कए मिथिलेशक सङ्ग सन्धि कराए देल जकर पुरस्कार-स्वरूप धर्मपुरपरगनाक पाँच गोट महालसँ दू गोट नाथपुर ओ गोरारी राजा रामचन्द्र रायक बालक राजा इन्द्रनारायण रायकें १७३८ ई० मे देल गेल ।

अतएव बंगाल त्यागि पुरैनियाँ के गेलाह तकर स्पष्ट उल्लेख तँ नहि भेटैत अछि परन्तु अनुमानतः एहन सङ्कट बूझि पड़ैत अछि जे देवानन्द एक जन भाग्यवान् महापुरुष छलाह ओ दैवसँ प्रेरित भए तुलनमे अपन देश त्यागि जीविकार्थ पुरैनियाँ गेलाह । ओतए पहसराक महाराज रामचन्द्रनारायण रायक दरबारमे हिनक प्रवेश भेल । अपन बुद्धिमत्ता, कार्यकौशल एवं स्वामिभक्तिसँ ई अत्यन्त शीघ्र महाराजक प्रिय विश्वास-पात्र भए गेलाह । पुरैनियाँक नवाबक दरबारमे सेहो ई खूब प्रतिपत्ति जमाए लेल । उपलक्षित पदपर अग्रसर होइत होइत ई पहसराधीशक प्रधान अमात्य, देवान, भए गेलाह ओ अपन प्रतिपत्तिसँ मिथिलेश महाराज राघव सिंहकें पुरैनियाँ नवाबक सङ्ग सन्धि सेहो कराए देल । प्रायः हिनक सेवासँ प्रसन्न भए पहसराधीश हिनका मोरङ्गक समीपवर्ती तारा-बरवा ओ छत्रपुर दू गोट परगना देल । तारा बरवा तँ मोरङ्गहिक राजासँ छीनिकें पहसराधीशकें देल गेल छल । तराइक फाटक ई दुहू परगना पुरैनियाँक उत्तर सीमापर छल ओ बराबरि उपद्रवक केन्द्र रहैत छल । तेँ प्रायः ई दुहू परगना देवान देवानन्दकें देल गेल जे ओ एकर शासन सुव्यवस्थित करथि ओ जिलाक शेष भाग सीमापार वाहरक अथवा सीमान्तक उपद्रवसँ निश्चिन्त रहए । हिनक चौधरी उपाधि सेहो प्रायः एहनहुकें छल जे से की महाराज-प्रदत्त छल अथवा नवाब-प्रदत्त से निश्चित नहि होइत अछि । सम्भव थीक जे महाराजसँ परगना-द्वय पुर-स्कारक रूपमे पाबि ओकरा ओ नवाबसँ अनुमोदित कराए सुदृढ़ करबाए लेने होथि ओ ताही प्रसङ्गमे हिनका "चौधरी"क खिलति सेहो नवाबसँ भेटल हो । कहबाक अभिप्राय जे बनैली राजकुलक प्रतिष्ठापक हमारो

परमानन्द चौधरी नहि, हुनक भाइ देवान देवानन्द चौधरी छलाह, जे ओ "चौधरी" [illegible] नहि, [illegible] छलाह । हिनक समय अनुमानतः १६६० सँ १७४० ई० [illegible] सँ १७३८ ई० धरि ई [illegible] बड़ प्रतिष्ठित [illegible] १७२९ ई० मे हिनका मोरङ्ग संग्रामक [illegible] ।

[illegible] इतिहासमे महत्वपूर्ण [illegible] एहि हुनक [illegible] छथि तहुमे हुनक कथाक पुष्टि होइत अछि । हुनका जे परम्परा-श्रुत [illegible] ताहि अनुसार [illegible] मलिना प्रबल भेलाह ओ हुनक [illegible] अथवा निश्चय [illegible] छथि परन्तु [illegible] निर्देशक [illegible] अछि, ओतएक रानी [illegible], प्रायः राजा [illegible] नाइक, निश्चय [illegible] भेलाह । एही [illegible] ऐतिहासिक अधिक [illegible] । [illegible] देवानन्द चौधरीक [illegible] होइत अछि । परन्तु तखन सन्देह रहि जाइत अछि जे देवानन्द चौधरीक [illegible] एक तत्त्व जे हुनका [illegible] ऐतिहासिक की भेल ?

देवान देवानन्द चौधरीक [illegible] दयालु [illegible] कहैत छथि तथा महाराज माधव सिंह बहादुरकेँ [illegible] महाराज नरेन्द्र सिंहक [illegible] रानी [illegible] प्राण [illegible] अपन राज-धानीमे [illegible] आश्रय देबाक समाचार लिखैत छथि । महाराज माधव सिंह बहादुर सन् ११८२ सालमे गद्दी पओलनि ओ देवान देवानन्द चौधरी सन् ११९८ सालमे [illegible] ओ असजा परगना

* [illegible] २८२–२९० [illegible] ३६२

पाबि श्रीमान् भेलाह । अतएव एहि किंवदन्तीमे ऐतिहासिकता असम्भव नहि अछि । महाराज राघव सिंह बहादुरकेँ ई देवान जे उपकार कएल तकर चर्चा डा० बुकनन कएने छथि; महाराज माधव सिंह बहादुरक जे ई प्राणरक्षा कएल तकर उल्लेख म०म० मुकुन्द झा करैत छथि । वस्तुतः एहन पदाधिकारीक लड़ुआ प्रजावत्सलिनी ओ दुःखहारिणी नारीकेँ प्राण-रक्षा सेहो पुत्रवधुसुलभ स्वभावें सम्भव छलैक जकरा ओसद भय किंवा लोभ छुइयो सकितु नहि सकैक ओ देवान देवानन्द चौधरी केवल दूरदर्-शीएटा नहि अपितु अपन स्वामित्वहुँ तादृश व्यक्ति छलाह जनिकर [illegible] पदावली [illegible] नहि कए सकितहि । हुनका [illegible] देवान देवानन्द चौधरीक सेवा साधारण नहि छल ओ एहिसँ देवानन्द केवल नीतिज्ञता ओ हृदयक विशालता मात्र नहि परन्तु [illegible] हुनकर स्वामिभक्ति सेहो पूर्णतया द्योतित होइत अछि ।

धर्मपुर परगनाक [illegible] राजाकेँ उपहारमे देल गेल ई कथा [illegible] किन्तु [illegible] प्रतीत होइत अछि । डा० बुकनन प्रायः एही [illegible] ओ गोंदारी ई महालक रूपमे १७६८ ई० मे राजा इन्द्रनारायण रायकेँ उपहारमे देल गेल लिखैत छथि । गोंदारी ई राजा [illegible] सिंह [illegible] । [illegible] पता नहि लगैत अछि । ई [illegible] महाराज माधव सिंहक द्वारा [illegible] नरेशकेँ [illegible] निर्देशने नहि, किन्तु महाराज राघव सिंहक द्वारा राजा [illegible] राय पुत्र राजा इन्द्रनारायण रायकेँ [illegible] [illegible] देवानक निर्देशमे देल गेल छल सिंह से डा० बुकननक कथाक स्पष्टतः [illegible] होइत अछि । [illegible] राजा लीला-नन्द सिंहक द्वारा महाराज [illegible] सिंह बहादुर [illegible] राज्याधिकारावस्थामे अपना [illegible] बजवाए अपन [illegible] जीवन [illegible] हुनका चरणयुगलपर उपहार

[illegible] सम्प्रति राजा साहेबक कलिकत्ता [illegible] करैत छथि, [illegible] [illegible] नहि कहबाक थाही ।

दिवान देवानन्द चौधरीक ई बालक परमानन्द चौधरी जे पहाति [illegible] "हजारी मनसबदार"क खिताब पओलनि ओ [illegible] [illegible] । सुकन साहेबकें ई नहि कहैत छथि परन्तु [illegible] हुनका छोट [illegible] छथि । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] ओ हुनिकालेल विवाह भइ [illegible] [illegible] कृष्णाराम ठाकुरक* [illegible] । हिनकर बालक [illegible] सिंह ओ एक [illegible] अनिक विवाह "सोहरपुर" [illegible] "बिनसीसा" ग्रामक [illegible] बालक, [illegible] [illegible] दौहित्र, [illegible] । [illegible] विवाह "कुर्सो" मूलक "सतरौली" ग्रामक [illegible] जानकीनाथ [illegible] पौत्री, [illegible] हुनका एक बालक [illegible] सिंह [illegible] अनिक विवाह "खण्डवला" मूलक "भौर"

---

* कृष्णाराम ठाकुरक [illegible] ठाकुरक [illegible] । [illegible] छलाह [illegible] ठाकुर [illegible] अछि । एहि कृष्णाराम ठाकुरक पौत्र [illegible] राजा ठाकुर अनिक दौहित्रीसँ महाराजाधिराज [illegible] सिंह बहादुर अपन पहिल विवाह [illegible] कएल । एहि कृष्णा-राम ठाकुरक [illegible] विवाह [illegible] मूलक [illegible] अनिक [illegible] छलाह [illegible] हेमनाथ झा अनिक कन्यासँ वर्तमानक राजा [illegible] सिंह अपन पहिल विवाह कएल ।

† म० म० [illegible] हरिपुरक [illegible] पृथ्वी म० म० [illegible] छलाह। हिनक परिचय पृष्ठ ५६ क प्रथम टिप्पणीमे द्रष्टव्य ।

शाखाक मंझिल धर्मनाथ ठाकुरक छोट बालक योगनाथ ठाकुर*सँ छल । ई लोकनि सबहुँ अमीर बसैत छलाह । तीर्थानन्द सिंहक की भेल से जात नहि अछि । सम्पति ई शाखा लुप्त अछि ओ हिनक असजा परगना सहित सकल सम्पत्ति सुनैत छी जे पुर्णियाक नजरगञ्जक राजा पृथ्वीचन्द लालक पितामह नकछेद लाल ओ अररिया प्रान्तक बलुआ ग्रामक निवासी छत्रानन्द ठाकुरक पितामह कालूलाल ठाकुरक हस्तान्तरित भए गेल ।

देवान देवानन्दक बालक परमानन्द चौधरीक प्रसंग लुकनन साहेब किछु नहि कहैत छथि मुदा हुनक "हजारी" उपाधि सूचित करैत अछि जे ओ नवाबक द्वारा "मनसबदार" नियुक्त कएल गेल छलाह ओ तें अनुमान करैत छी जे हुनक शारीरिक शौर्य, वीर्य, उत्साह ओ कौशल असाधारण अवश्य छल जाहि सब कारणसँ प्रभावित भए नवाब हुनका एक हजार सेनाक अध्यक्ष बनाओल । देवान देवानन्दकें नवाबक दरबारमे बड़ प्रतिपत्ति छल से तँ डाक्टर लुकनन स्पष्ट शब्दें कहलें छथि ओ हमरा तँ अनुमान होइत अछि जे १७५१ ई० मे असजा ओ तीराखरदा परगना बहुमल्यमौरसी अपन सेवाक पुरस्कारमे पाबि ओकर अनुमोदन नवाबसँ करएबाक काल बृद्ध देवान देवानन्दकें "चौधरी" क ओ हुनक नवयुवक पुत्र परमानन्दकें "हजारी मनसबदार"क खिलति ताहि अवसर भेल ।

---

* योगनाथ ठाकुरकें अनेक विवाह छल, ओ बिकौआ छलाह । एक तेसर विवाह हुनका छल खरौआ ग्रामक राजा रामलोचन चौधरीक कन्यासँ, जनिक राजा शंकनाथ चौधरीक पितामहक बहीनि छथि । योगनाथ ठाकुरक सबसँ पछातिक विवाह जे राजीटोल छल ताहिसँ हुनका बालक छलाह सबसँ धर्मपुरक दुर्गानाथ ठाकुर जे अपन अन्तिम समयमे पुनि श्रोत्रि-समाजमे परिगृहीत भए गेलाह । दुर्गानाथ ठाकुरक बालक लोकनि सम्प्रति विद्य-मान छथि ।

सीमा-रक्षक ओ [illegible] इलाकाक शासनक हेतु ओ सीमाक रक्षाक हेतु हजारी ई परगना [illegible] देल गेल परन्तु ताहि हेतु ओ सेनाक आधिपत्य प्राप्त [illegible] छल । तकरे पुष्टि प्रायः एहि [illegible] भेल । स्वयं सेवान ताहि समयमे युद्ध करथाह ओ [illegible] हिनका अपना हेतु [illegible] नहि छल । [illegible] हिनका [illegible] देल गेल ओ तहिआसँ परमानन्द चौधरी अपना नामसँ [illegible] अपन [illegible] भए गेलाह, "हजारी चौधरी" हुनक उपाधि भाँगे भए गेल ।

[illegible] ओ हिनकहि [illegible] मोरङ्ग [illegible] ओ [illegible] शारीरिक गुण-शक्तिसँ प्रतिष्ठा [illegible] गण्य [illegible] अछि । [illegible] पहसराधीश राजा इन्द्रनारायण रायक प्रश- [illegible] नवाबकें प्रसन्न करय [illegible] [illegible] ओ हिनक [illegible] छलाह राजा इन्द्रनारायण रायक शासक दीवान ओ [illegible] हुनक [illegible] [illegible] अछि । तखन अँगरेजकें [illegible] कमीर [illegible], ओकाए अँगरेज [illegible] [illegible] कायस्थ कानूनगोक आश्रय पाओल तथा अँगरेज [illegible] देहान्त भेलाक पर दिनाजपुर ओ पुर्णियाक कानूनगो [illegible] इत्यादि [illegible] [illegible] देवानन्दहिक गण्य [illegible] अछि । हजारी परमानन्द चौधरी पहसराधीश राजा इन्द्रनारायण रायक दरबारमे [illegible] हाथि-सएह [illegible] मुखा [illegible] ओ [illegible] मालिक वेतनपर नोकर छलाह से [illegible] कारण जे [illegible] परगना ते हिनका [illegible] देल छल । सम्पत्तिक बटवारा हजारी परमानन्द चौधरीक मृत्यु भेलाक पर भेल इहो कथा [illegible] कारण जे डाक्टर बुकनन स्पष्ट लिखैत छथि जे [illegible] परगना [illegible] भेटल ओ से १८०९ ई० मे हुनक बालक हरिलालक भोगमे छल ओ हुनक [illegible] तकर प्रमाण पञ्जी [illegible], [illegible] हरिलालकें ओ हुनक बालक [illegible] 'कमीर [illegible] [illegible]" मूलक [illegible] अछि । परमानन्द सेट्लमेन्टक समयमे राजा

इन्द्रनारायण रायक प्रसिद्ध महाल कुरसाकाँटा हजारी चौधरी स्वयं [illegible] [illegible] भए गेल ओ तेसँ पहसराधीशक ई कोपभाजन भेलाह इहो कथा [illegible] [illegible] छैन्हि । परमानन्द सेटलमेन्टक समयमे ने राजा इन्द्रनारायण राय छलाह, छलथिन्ह हुनक स्त्री रानी इन्द्रावती*, ओ ने हजारी परमानन्द चौधरी छलाह, छलथिन्ह हुनक बालक राजा दुलार चौधरी । [illegible] एहिसँ एतबए बुझि पड़ैत अछि जे कुरसाकाँटा [illegible] जे [illegible] राज्यक एक गोट प्रधान ओ प्रसिद्ध महाल छल से [illegible] राजा दुलार सिंहक अधिकारमे आबि गेल परन्तु से ने [illegible] अनेक महाल [illegible] । [illegible] राज्य [illegible] छिन्न भिन्न भए गेल तखन [illegible] [illegible] सब [illegible] गोटाक अधिकारमे चल गेल ओ राजा दुलार चौधरी [illegible] एक गोट छलाह ।

पुर्णिया-प्रमणक उपक्रममे डाक्टर बुकनन साहेब हजारी परमानन्द चौधरीक [illegible] एक गोट प्रवाद सुनल जकरा ओ राजा दुलार सिंहक वर्णनक प्रसङ्गमे सीखि देल अछि । मोरङ्गक कालमे [illegible] [illegible] हजारी चौधरीक समयसँ कतोक जन एहि हेतु जागीर दए दए बसाओल गेल छल जे सीमाक पारसँ चोर डकैत, [illegible] जङ्गली पशुसँ [illegible] पुर्णिया जिलाक रक्षा करए । प्रवाद ई छल जे जागीरदार तँ [illegible] ते रक्षाक हेतु परन्तु हजारी चौधरी ओकरा सबसँ डकैती करबैत छलाह ओ हुनक श्रीवृद्धि वस्तुतः एही वृत्तिसँ भेल । बुकनन साहेबकें एहि प्रवाद

---

* रानी इन्द्रावतीकें पुर्णियाक गेजेटियर (पृष्ठ २६१) ओ [illegible] प्रायः सर्वत्र दड़िभङ्गानरेश महाराज माधव सिंहक कन्या [illegible] अछि से कियैक से जानि नहि । रानी इन्द्रावती माण्डर मूलक [illegible] [illegible] गोविन्द झाक पौत्री मनबोध झाक कन्या छलीह तथा गोविन्दाक ओ मिथिलेश महाराज शुभंकर ठाकुरक दौहित्र छलाह ।

† बुकननक पुर्णियाक रिपोर्ट पृष्ठ ३०५ को ५००

पर विश्वास नहि भेल परन्तु एहि कथाक तथ्य [illegible] ताहि समयमे ओहि [illegible] प्रस्तुत छल से धरि एहिसँ स्पष्ट अछि ।

एतएव हजारी परमानन्द चौधरीक प्रसङ्ग निश्चित रूपसँ जे ज्ञात होइत अछि से "तिरहुतमे श्री [illegible] परमानन्द चौधरी छलाह धो हजारी मनसबदार नियुक्त भए पुर्णियाक उत्तरी [illegible] रक्षक छलाह । [illegible] हुनक पूर्ण मान छल, [illegible] राजा [illegible] [illegible] दरबारमे हिनका बड़ विशेष सम्मान छल । [illegible] ई बड़ सुन्दर व्यवस्था कएने छलाह जे पूर्ण धन ओ तत्परतासँ कृषिकर्म कए बड़ सम्पत्ति एकत्र कएल । हिनक कालक हजार चौधरी पुर्वमे नेपालसँ [illegible] ओ बहुमूल्य काष्ठक ओ [illegible] हाथीक व्यापार करए लाग-लाह ओ ताहूसँ बड़ धन एकत्र कएल । परन्तु कृषि ओ वाणिज्य द्वारा प्रचुर धन अर्जित कैयोकें हजारी परमानन्द चौधरी भूसम्पत्ति नहि किछु अर्जित कएल । पुर्णियाक गजेटियरसँ स्पष्ट अछि जे १७८३ ई. मे जखन परमानन्द सेट्लमेन्ट भेल तखन हजार चौधरीक मात्र [illegible] परगना मात्र बन्दोबस्त कएल गेल ओ ताहि [illegible] समयमे ७९ [illegible] मात्र छल ।

परन्तु भूसम्पत्ति नहि तँ [illegible] एक गोट सम्पत्ति हजारी परमानन्द चौधरी अर्जन कएल जकर मूल्य थोड़ नहि छैक । ओ सम्पत्ति छल [illegible] [illegible], ओछिक । हिनक विवाह भेल "[illegible]" मूलक "[illegible]" [illegible] देहरी [illegible] कन्यासँ । ई मूल [illegible] [illegible] मूल छैक परन्तु

[illegible] देहरी भाकें स्वयं अथवा हुनक कन्याकें आङ्गिमे हजारी चौधरी [illegible] पाँजि छल [illegible] [illegible] नहि होइत अछि परन्तु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । देहरी भाक [illegible] मुलाइ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गोट [illegible] [illegible] प्रतिष्ठित पाँजि अछि । मुलाइ [illegible] [illegible] छल [illegible] [illegible] मूलक महिसी [illegible] [illegible]

एमहर किछु दिनसँ न्यून [illegible] कारणे हिनका सौकर्मिक सत्ता क्षति [illegible] छल । देहरी [illegible] दिनमहु धरिकतो सत्ता उच्चे छल । परन्तु [illegible] [illegible] पञ्जीबद्ध तँ ई अवश्य छलाह ओ दश पुरुषपर एहन उत्कृष्ट सम्बन्ध स्थापित कए हजारी चौधरी अपन कुलक "अधोगतिकें" रोकि [illegible] [illegible] कएल जे तहिआसँ क्रमशः अनुवर्त्तमान अछि, तहिआसँ पुनि हिनक [illegible] [illegible] कार्यजात उत्कृष्ट होइत आएल अछि । एकरे परिणाम थिक जे स्वर्गीय मिथिलेश महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह बहादुर जखन [illegible] पारक पाँजिक संकलन कए श्रेणी-विभाजन कएल तखन एक गोट पाँजि परमानन्द चौधरीक नामपर प्रचलित भेल ओ तकर स्थान "[illegible] पाठक" सँ उपरहि "पद्युम झा" ओ "श्रीकान्त झा" क श्रेणीमे देल । हजारी परमानन्द चौधरीक सन्तानक कुटुम्बिता-विधानक उत्कर्ष तँ [illegible] देलक परन्तु हुनका सौकर्मिक ई पाँजि सतत स्मरण करबैत रहल जे कुलक जे सामाजिक प्रतिष्ठा कालक ओतमे पड़ि भसिआए गेल छल तकर पुनरुद्धारक एहि कुलमे इएह भेलाह ओ आब जखन ई पाँजि सोति-सह मध्य परिगृहीत भए गेल तखन हरिसिंहदेवी समाज-पद्धतिमे हिनक सन्तान हिनकहि पुण्यक प्रतापसँ सर्वोच्च प्रतिष्ठा प्राप्त कए लेल ।

हजारी परमानन्द चौधरीक जन्म किंवा मृत्युक तिथिक कोनो पता

पाठकक कन्यामे ओ ताहिमे मुलाइ भाक एक गोट बालक छलाह कन्हैआ भा जे राजा कुमार सिंहक मनिऔत भाए भेलथिन्ह । एहि कन्हैआ भाक कन्यामे [illegible] राजा दुर्गाप्रसाद चौधरीक विवाह छल जनिक पौत्र स्वर्गीय राजा टेकनाथ चौधरी छलाह । राजा दुर्गाप्रसाद चौधरीक सन्तानक पाँजि [illegible] पाठक निर्धारित भेल ओ आब तँ ई सोतिनहु मध्य पसरि गेल अछि । पुर्वमे सोति रहि, मध्यमे नीचू कुटुम्बिताक कारणे सोतिसँ बहिष्कृत भए [illegible]-राजकुलक समृद्ध सन्तान लोकनि पुनि सोतिमे परिगृहीत भए गेल छथि ओ अपन प्राचीन सत्ताकें पाओल अछि ।

नहि अछि जे इएह बुझल होइत अछि जे हिनक वास कतए छल । एतबा निश्चय जे ई कतहु ताराजरवामे छल होएतथि जेना हिनक भाए सौ नातिज अमीरसँ छलाह । तखनक प्रसङ्ग एतबए निश्चित जे १७६३ ई० मे हिनक परोक्ष भए गेल छल परन्तु बहुत पूर्व नहि भेल छल कारण जे परमानेन्ट सेटुलमेन्टक समयमे हिनक बालक राजा दुलार चौधरीकेँ केवल तीरा-जरवा परगना छल, अत्योर विशाल सम्पत्ति औ तकर उपरान्त कीनल । हुनका जन्म हिनक सन् १७२० ई० सँ १७८५ ई० धरि मानब उचित होएत ।

दुलारे परमानन्द चौधरीकेँ दू गोट बालक भाग, दुलार चौधरी जे पछाति राजाक उपाधि पाओल औ एकलाल चौधरी । एकलालकेँ कोनो सन्तान नहि, विवाहो भेल वा नहि से बुझल नहि होइत अछि । दुलार चौधरी दुष्कुल हलेली राज-कुलक बराबर अतिशयक विवाह । अपन निवास इएह वर्त्ततो अद्यत धरि मालसँ ई राजकुल सर्वत्र सुप्रसिद्ध अछि । ब्रिटिश सरकारसँ "राजा"क उपाधि इएह पाओल औ राजत्व-सूचक "सिंह"क उपाधि सेहो इएह ग्रहण कएल । अपन बालक देहान्त भेलाक पर धन जे किछु ई पओने होथि परन्तु पूर्णियाँमे केवल कोएह एक गोट परगना पाओल जे हिनक पितामहक अर्जल छल परन्तु ई अंजन देहत्याग कएल तखन वर्त्ततो राज्यमे नाविक कार सात लाख टकाक छल ।

राजा दुलार सिंह कखन जन्म ग्रहण भेल औ ई शरीर-त्याग कहिआ कएल किछु निश्चित रूपसँ ज्ञात नहि अछि । भागलपुरदर्पणकार हिनक जन्म १७२० ई० क प्रारम्भमे कहैत छथि औ अनुमानतः इएह सम्भव बुझि पड़ैत अछि जे १७५०–६० क मध्यहिमे हिनक प्रादुर्भाव भेल हो । १७६३ मे परमानेन्ट सेटुलमेन्टक समयमे ई प्रधान सम्पत्तिक स्वामी भए गेल छलाह । १८१४–१६ क ब्रिटिश-नेपाल युद्धक समयमे ई वर्त्तमान छलाह तथा ब्रिटिश-सरकारक बड़ सहायता कएल जकर पुरस्कार-स्वरूप हिनका

राजाक उपाधि प्रदान कएल गेल । तकर पश्चात् अर्थात् १८२० ई० क प्रान्तमे हिनक परोक्ष भेल होएत । सुनैत छी जे १८२१ ई० मे ई देह-त्याग कएल ।

पुर्णियाँ-जिलाक गजेटियरमे कहल अछि जे परमानेन्ट सेटुल-मेन्टक समयमे शाहि दश गोट जमिन्दारक सङ्ग पुर्णियाँ जिला बन्दो-बस्त कएल गेल ताहिमे दुलार सिंह सबसँ छोट छलाह औ हिनका केवल तीराजरवा परगना छल जकर रकबा ७५ वर्गमील देल अछि । १८०९–१० मे डाक्टर बुकनन साहेब पुर्णियाँ जिलाक भ्रमण कएल औ १८१०–११ मे भागलपुर जिलाक औ शाहि समयमे राजा दुलार सिंहक प्रतिपत्ति औ प्रतिष्ठा चरमोत्कर्षके प्राप्त कएने छल । अपन रिपोर्टमे कतेक ठाम औ हिनक चर्चा कएले छथि ततेक ठाम आन कोनहु व्यक्तिक नहि तथा हिनक प्रशंसा औ जाहि शब्दें कएले छथि ताहि शब्दें आन ककरो नहि; बुधा औ हिनका सर्वत्र दुलार सिंह कहैत छथि, चौधरी कतहु नहि औ राजाक उपाधि सेहो तावत ई ग्रहण नहि कएने छलाह ।

पुर्णियाँ औ भागलपुरमे पेरगनाक कमसँ औ प्रत्येक परगनामे तालुकाक क्रमसँ जमिन्दारीक वर्णनमे राजा दुलार सिंहक उल्लेख बार-बार आएल अछि । एवं क्रमें हिनक उपार्जित सम्पत्तिक विवरण जे औ देल अछि से एहि रूपक:—

(१) परगना कोतवालीक जे अंश कलिभाजनमे पड़ैत अछि जे सरबेक समयमे (१८८७–९२) जिला मालदहमे पड़ल, दिनाजपुरक राजासँ कीनल (पुर्णियाँ रिपोर्ट पृष्ठ ४५८)

(२) साहेबनगर–सुजानगर—सरबेमे मालदहमे पड़ल–दिनाजपुरक राजासँ कीनल (पुर्णियाँ रिपोर्ट पृष्ठ ४६१)

(३) जफराबाद—मालदहमे पड़ल–दिनाजपुरक राजासँ कीनल (पृष्ठ ४६२)

(४) सुजानगर—जिला पुर्णियामे पड़ल–ओहो राजासँ कीनल (पृष्ठ ४८३)

(५) देहटा—जिला पुर्णियामे पड़ल–ओहो राजासँ कीनल (पृष्ठ ४८४)

(६) शाहपुर—जिला पुर्णियामे पड़ल–ओहो राजासँ कीनल (पृष्ठ ४८८)

(७) धपहरक अंश—जिला भागलपुरमे पड़ल–(पृष्ठ ५०३)

(८) भागलपुर जिलाक परगन्ना छइक अंश–(भागलपुर रिपोर्ट पृष्ठ ५०१)

(९) परगन्ना कड़िया—जिला मुङ्गेरमे पड़ल (भागलपुर रिपोर्ट पृष्ठ ५०८)

एहिसँ भिन्न तीरा-खरदा परगन्ना सेहो हिनक पैत्रिक सम्पत्ति छलैन्ह । एहिसँ भिन्न हिनका तिरहुतमे ओ जिला दिनाजपुरमे सेहो भूसम्पत्ति छैन्हि से बुकानन कहैत छथि । एतेक सम्पत्ति ई १७६३ ओ १८१० क मध्यमे [illegible] कीनल । तकर उपरान्त जे सब कीनल से प्रामाणिक रूपसँ स्पष्ट उल्लिखित नहि भेटैत अछि । भागलपुरक वर्णनमे अछि जे भागलपुरमे नथहुर, गोगरी ओ धपहरक आधोर अंश ई कीनल । नेपाल-युद्धक उपरान्त सीमानिर्णयक अवसरपर तीरा-खरदाक सीमा परक [illegible] भूमि, हिनका हाथें बन्दोवस्त भेल से कथा भागलपुरक वर्णनमे अछि । १८८७–१८९४ ई० मे एहि राजक जे भाग [illegible] बर्नली ओ [illegible] बुझल अंश छल अथवा जाहिमे केवल [illegible] अंशे छल, तकर सर्वे भेल छल ओ ताहिमे एहि राज्यक विस्तार† पाँच जिलामे, २४ गोट परगन्नामे, ६६६ गाममे देखाओल गेल अछि । केवल सर्व लोक [illegible] एहिमे नहि अछि अतएव एहिसँ स्पष्ट नहि तँ प्रायः एक आध छाड़ि [illegible] तथ राजा कुमार सिंहक उपार्जन थीक ।

† [illegible]-बर्नली सर्वे ओ सेट्लमेन्ट (१८८७–१८९४) रिपोर्ट पृष्ठ २३८

एहि प्रसङ्गकें हम आओर नहि बढ़ाए, मात्र डाक्टर बुकानन साहेब हिनका प्रसङ्ग जे लिखने छथि तकर सारांश एतए अनुवाद कएकें दैत छी । खरदा परगन्नाक वर्णन करैत ओ लिखैत छथि*–"११५८ सालमे (१७५१ ई०) ई परगन्ना पुर्णियाक अन्तिम राजाक बाप चन्द्रनारायण (हुनका रामचन्द्रनारायण आशय छैन्हि–लेखक) अपन देवान देवानन्दकें देल जे ओहो समयमे तीरा खरदा नामक महाल सेहो मानोल । तकरा [illegible] पड़ल जे सम्पत्ति [illegible] बालक हरलालक भोगमे अछि ।"

तीरा-खरदा परगन्नाक वर्णन करैत ओ लिखैत छथि† —"नदिभारी ओ अररियाक मध्यमे तीराखरदा बड़ सुन्दर महाल अछि । एही मोरङ्गक राजासँ छीनिकें पुर्णियाक राजाकें देल गेल छल तथा पुर्णियाक अन्तिम राजासँ पूर्वक राजा रामचन्द्र ई परगन्ना ओ अलगो अपन देवान देवानन्दकें देल । तकरा देवान-देवानन्द अपन एक बालक [illegible]चन्द्रकें देल ओ तीरा-खरदा अपन दोसर बालक परमानन्दकें देल जे सम्पत्ति हुनक बालक कुमार सिंहक भोगमे अछि । एहि कुमार सिंहक चर्चा हम अनेक ठाम कएल अछि कारण जे ई जगतावाद सरकारमे [illegible] अंश ओ माहीनगर–सुजानगरक, उरम्बर सरकारमे धरमपुर-[illegible], ओ ताजपुर सरकारमे सुजानगर, देहटा ओ शाहपुरक मालिक छथि तथा जहाँ धरि हमरा ज्ञात भेल अछि ई सब हिनक अपन कीनल थीक । धपहरक अंश ई कीनल अछि । तिरहुत, भागलपुर एवं दिनाजपुरमे हिनका भूसम्पत्ति छैन्हि । ई बड़ समृद्ध व्यक्ति छथि, बड़े कार्यकुशल ओ बुद्धिमान् छथि । हिनक सबसँ पैघ बुद्धिमत्ता हम ई बुझैत छी जे हिनक वृद्ध कारण छैन्हि जे मालिकक यथार्थ हित [illegible] न्याय,

* पुर्णिया जिलाक रिपोर्ट पृष्ठ ४९३

† पुर्णियाक रिपोर्ट—पृष्ठ ४९८ सँ ५०१

अछि औ लद्द्‌व्यवहारमे छैक। अपन दरबारीकेँ कम दर पर भूमि देबाक विशेष श्रेयस्कर ई थीक जे श्रमशील रैयतिकेँ अपन श्रमलाभ, विशेषतः जमीन्दारक अत्याचारसँ रक्षा करी। हमरा बुझल भेल अछि जे ई ठीका नहि लगबैत छथि। तखन जे सम्पत्ति ई कोनस अछि से यदि ताहि समयमे ठीका लागल छल औ ठीकाक अवधि नहि पुरल अछि अथवा भूमि बहुत दूरमे अछि से ठीका लागल छैन्हि। मुदा तँ औ ठुलार सिंहक सम्पत्तिक लगमे जमाति रहब जंजालिक पर थीक कारण जे जकर कब्जी उपरोक्त अपन मानसिक शक्तिमे अछि तकरा अजमौरो दखल कए लेबाक हिनक प्रवृत्ति दुर्निवार अछि।"

अमावसी गाउँस आवताक हिनक रीतिक वर्णन कए ई लिखने छथि—"नौराजगतामे सबटा कृषिक योग्य भूमि प्रायः ७६००० बीघा होएत जाहिमे ३०००० बीघा बन्दोबस्त अछि, महालमे अधिक बाँकी एहन दर पर एहन अछि जे रैयतिकेँ कबूर नहि बुझि पड़ल जाहि कारणेँ हिनक रैयति पूर्ण श्रमसँ खेती करैत अछि औ सुखी अछि। शेष नओ हजार बीघामे पाँच हजार बीघा ई अपन खासमे राखने छथि, अढ़ाइ हजार बीघा कमन हुर बढ़ैसँ अपन अहिरा औ अलक हुरा करैत छथि औ अढ़ाइ हजार बीघा अढ़ाइ बनओलेँ छथि। गढ़कबै स्पर्श-कुशल रहबु अनेकि अढ़ाइसे डफल जड़मल पूर्ण भए जैन्हि तुआ गंगो जे ई बढ़ार बनओलेँ छथि तकर कारण ई जे हिनका गाए औ बड़दक बड़ पैघ हेर जेर छैन्हि औ तकर आहारक तँ हिनका प्रबन्ध करए पड़ैत छैन्हि। लाल-जायसँ हिनका बड़ आनन्द छैन्हि। शेष चारि हजार बीघामे १५०० बीघा ई पचास लोककेँ आशीर्वाद देने छथिन्ह जे केवल २५०) वार्षिक मालगुजारी दैत छैन्हि। ई जागीरदार सब बड़ साहसी व्यक्ति अछि औ मोरङ्गक जङ्गली जातिक आक्रमणकेँ रोकबाक हेतु राखल अछि। अहुल कानून अछि जे मोरङ्गक ओर-बसैत अछि तावद् तकरो ई सब रक्षा करैत अछि पुनः "उपाय ई अछि जे एकरा सबहिक उपयोग अबहि प्रकारेँ

करल जाइत अछि, विशेषतः हिनका बाघक समयमे करल जाइत छल।" पाँच सए बीघा भूमि ई अपन बीलगोट पाइकके देने छथि जे हिनक हुनक काज करैत अछि औ पचास बीघा तकरा सबहिक सरदारकेँ। एनाकेँ सेवाक हेतु देल गेल भूमिकेँ बदले चारि हजार बीघासँ जे शेष रहल अर्थात् लगभग तीन सए बीघा भूमि ई अपन बहिनजनमे बाँटि देने छथि।

तालुका सबहिक कोन रूपेँ ई सुव्यवस्था कएलेँ छथि तकर विस्तृत विवरण दए पाछाँ ई लिखने छथि—"एतेक विस्तृत हिनक विवरण देबामे हमर तात्पर्य केवल इएह टा देखाएब अछि जे जमिन्दारीक सुव्यवस्था कोन रूपेँ कएल जाए सकैत अछि।"

दोसर ठाम* आपटर बुकनान लिखैत छथि—"अधिकारी प्राप्तमे ठुलार सिंह किछु जातिकेँ नियुक्त कएने छथि जे मोरङ्गक वनमे बसैत जङ्गली जातिकेँ एहि दिसि आक्रमण करबासँ रोकैत अछि। एहि जागीरदार सबकेँ कम भाड़ पर भूमि देल छैक तथा औ सब सीमा पर बसैत छथि। प्रवाद छैक जे "पूर्व समयमे एकरा सबहिक उपयोग डाकरहि वृत्तिक हेतु कएल जाइत छलैक जाहि वृत्तिसँ एहि परिवारके धन-सञ्चय" औ लोक कहैत अछि जे आब जे मालिक एकरा लोकनिकेँ बरखास्त नहि करैत छथिन्ह औ एकर भूमि नहि छीनि लैत छथिन्ह तकर कारण इएह जे "एकरहि लोकनिक सेवासँ हिनका घरमे श्रीवृद्धि।" सम्भव थीक जे ई प्रवाद सब केवल उपहासात्मक हो कारण जे एहि प्रान्तक लोकके उपहासक रीति बड़ प्रबल प्रवृत्ति छैक। एहि परिवारकेँ पुर्णियाक राजाक राज-कार्य-सञ्चालनक अवसर छल औ लाहौसँ तँ तत्कालीनकेँ धनसञ्चयक पूर्ण सुयोग छल तखन 'दस्यु-वृत्ति' अवलम्बन करबाक तत्कालीनकेँ प्रयोजन कोन छल होएत ?"

* पूर्णिया रिपोर्ट पृष्ठ २०९

भागलपुरक रिपोर्टमेंहु पहड़िया सरदारक विवरणमे कुमार सिंह लिखल अछि—"ई सभ हुनक आयत्त रहल जे केवल कुमार सिंहक अधिकारी पुलिसहि रहथि। हुनक पूर्वहु हिनका आदि कार्यक प्रशंसा कएल गेल छल। ताहिसँ अवश्य पहड़ियामे स्थान छाउनी राजसरक अनुग्रहक आतङ्क ई लोकनिक हृदयमे पड़ल होएत। अधिकारीक पुरस्कार हेतु पुर्णियाँ रिपोर्टमे हिनक प्रशंसा कएल अछि। ...हुनका लिखित कहैत छथि जे अधिकारीलोकनिक ... सम्पूर्ण भाग भइ जाइत।"

ओही रिपोर्टमे अन्यत्र ओ लिखैत छथि—"ओ हिनका पुर्णियाँक दक्षिण भाग, अहिना भागलपुरक मध्य उत्तर ... जङ्गलमे हाथी पकड़ल गेल छल ओ पूर्णियाँहि ... आतङ्क छल। पुर्णियाँक कुमार सिंह चौधरी (... हिनक ... लिखल ...)—हिनका ... प्रशंसा हुनका अनेक बेरि करए पड़ल अछि—जखन एहन अधिकारी लोकनि एहि देखलनि जे ई ते एकदम उत्तम अछि ओ ... जे एहन कार्य निर्भय ... हाथीक आक्रमण ओ ... सकलहु। कुमार सिंहक कुशल ... नहि रहल जे एहन ... पूर्ण गुड़ होएत तुरत एकरो ओ ... नहि करल। हिनका ... हाथी ... जे हाथी पकड़बामे पूर्ण शिक्षित छल। एहि प्रदेशमे ओ सहस्र हाथी पकड़बाओल। ... तकर ... शक्ति ... हेतु सम्भव नहि अछि। एहि ... अनुसरण आनो ... करए लगैत छथि परन्तु हुनका ... कारि देख एहिमे ... होएत। जे ई जीव

---

१ भागलपुर रिपोर्ट पृष्ठ ५१४

२ भागलपुर रिपोर्ट पृष्ठ २९२

सभ पोसल भए सकैत अछि तँ ओकर मूल्यमे ई सन्देह किछु उपरो भए जाइत मुदा हम सुनल अछि जे ओहि जातो हाथीमे एके दा हाथी कुमार सिंहक जिवैत अधवर्तहि।"

बृटिश-नेपाल-युद्धमे ई बृटिश सरकारक बड़ सफलतासँ सहायता कएल ओ सुनैत छी जे बृटिश सेनाक हेतु ई एक लाख मन रसद अपन सञ्चयसँ देल ओ अपन विशाल हाथीक हलकाक द्वारा ताहि रसद पहुँचएबाक सम्पूर्ण भार अपना ऊपर लए लेल। इहो सुनैत छी, एहि पर्वतीय प्रदेशक यातायातमे हिनक सत्तर गोट हाथी बाटहि मरि गेल। एहिसँ अनुमान कए सकैत छी जे कोन हिनका हाथी छल ओ कोन रूपमे आर्थिक साहाय्य ई प्रदान कएल। एकरे पुरस्कारमे पुर्णियाँक उत्तर सीमाक कातक सात कोस भूमि हिनका हाथें बन्दोबस्त कए देल गेल जे पीछाँक हिनक पूर्वक परम्परा लोकलखवा कहि गेल ओ वर्त्तमान राज्यक प्रधान अंश बुझल जाए लागल। इहो कहल जाइत अछि जे "राजा"क उपाधि सेहो एही साहाय्यक पुरस्कारमे हिनका देल गेल छलनि मोन्टगुमरी-मार्टिनक सर्वे सेटुलमेन्टक रिपोर्टमे (पृष्ठ २५) कहल अछि जे निश्चित ई उपाधि हिनक पौत्र राजा लीलानन्द सिंह बहादुरकें सरकारि देल छल, ओएह एहि कुलमे प्रथम राजा भेलाह।

राजा कुमार सिंह "राजा"क उपाधि निश्चयपूर्वक नेपाल-युद्धक उपरान्त अथवा लीलानन्द सिंहक जन्मसँ पाओल किंवा नहि, परन्तु राजवंशक "सिंह"क उपाधि ई १८०६ सँ पूर्वहिँ, अथवा ... लोकनिहुसँ अपनहि, ग्रहण कएल, कारण जे, कुमार साहेब हिनक उल्लेख सर्वत्र सिंह-युक्त करैत छथि। एकरा ई उपाधि ... नहि मुदा हिनका हेतु ई उपाधि सर्वथा स्वभावतः अनुकूल छल। किएक तँ हिनक प्रताप उग्र छल, प्रतिभा असाधारण छल, विपत्तिमे अविचलित अनादि ... छल, संकल्पक दृढ़ता छल, बाहुमे वीर्य छल, हृदयमे शौर्य छल, अन्तःकरण स्फीत छल, निर्भीक छल, ... मृदुतासँ आपूर्यमाण छल। अहिना

[illegible] छोग, तकरा हिनक प्रबल [illegible] छ्लथ्थ छल [illegible] भयसँ सर्वथा [illegible] हिनक [illegible] पराजयक आशङ्का [illegible] जेना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ओ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रतिवर्ष [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राजकुलक वर्ष [illegible] भए गेलाह ।

पहिने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] परिलक्षित [illegible] अछि । [illegible] ई "हरिसिंह देव" [illegible] [illegible] पाबीत । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हरिसिंह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राजा कुमार सिंहकेँ एहि आक्रमणसँ कोनो चिरस्थायी फल लाभ नहि भेल [illegible] [illegible] [illegible] नहि । एक बेर ऐतिहासिकता दृष्टिसँ हमरा [illegible] [illegible] [illegible] जे राजा कुमार सिंह नँ अनेक [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एहिने [illegible] ओ चिरस्थायी [illegible] [illegible] [illegible] । परन्तु [illegible] स्वभावसँ ओ विवश छलाह । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर हुनका आस्था नहि छल; अपन [illegible]

हरने ओ प्रत्यूहक सङ्कटक तृणवत् उपेक्षा करथि । हरिसिंह-देवीक ओ विजय करबाह नहि तँ ओकरा ध्वस्त कए देँकि देबाह, एहि दृढ़ संकल्पसँ ओ सौतिआइक सर्वस्वालकेँ ताकि ताकि अपन साधन-सम्पत्तिसँ सिद्ध करए लागि गेलाह । आदर्श छल हुनका सुरगणक राजकुल जँ बड़ थोड़ कालके सामाजिक न्यूनताकेँ अतिक्रमण कए हरिसिंह-देवक शीर्षस्थानीय भए गेल । दृष्टान्त छल हुनका "कथाधार" रामभद्र उपाध्यायक वंशक जे हरिसिंह-देवीमे अधम स्थानक रहितहुँ, आलोच्य समकर्षक अर्द्ध सहँ, इक्षिणानुलिक प्रसादसँ सरस्वतीकेँ वश्या कए अपन वैदुष्य-वैभवसँ समाजमे से प्रतिष्ठा लाभ करल जे वर्तमान ओझर श्रोत्रिय कुलकेँ एहि ठाम सए वर्ष नहि भेल । परन्तु किछु तँ समयक परिवर्तन, कालक गति, कारण, ओ किछु दुर्योगक प्रभाव कारण । राजा कुमार सिंह वं अधिकक साफल्य लाभ कए ओकेँ हरिसिंह-देवी समाजपद्धतिकेँ ढवाए नहि सकलाह । एहि प्रसङ्ग विशेष विवेचना हम अन्तिम अध्यायमे करब; एतए हम हिनक अपन विवाह ओ हिनक कराओल अपन बालक ओ कन्यासभहिक विवाहक परिचय देल जो जाहि आधारपर ओ विवेचना अवलम्बित रहत ।

राजा कुमार सिंहकेँ दू गोट विवाह छल, पहिल प्रायः श्रावक कराओल ओ दोसर प्रायः अपन करल । प्रथम विवाह छल हिनक कोइलख, "करिसअ" मूलक "खाऊ" शाखाक चतुर्भुज झाक बालक भैअव ठाक कन्यामे । हिनक जेठ सोतिय छल परन्तु पूर्वहिसँ जिनक अपकर्षसँ ई सौतिन पोरबक श्रेणीमे छलाह । भैअन झाक विवाह छल "पाली" मूलक "महिसी" शाखाक भवानीदत्त झाक कन्यामे । भवानीदत्त झा अपने

---

† भवानीदत्त झाक वृद्धप्रपौत्र श्री गङ्गाधर झा सम्प्रति महदोनीमे वर्तमान छथि ओ प्राप्तभिनिवेशक अनुकम्पासँ पुनि अपन वृद्धप्रपितामह जकाँ पैघ सोति भए गेल छथि ।

[illegible] नेष लोक रहथि, यद्यपि सोति, परन्तु "कलाधार"क ओहिठाम विका-[illegible] पनाह ओ निर्णयसँ जे उचित विवेक करैत विवाह करयँ छलाह। एक गोट विवाह हिनका छल सुप्रसिद्ध "तर्कप्रकाशन" म० म० गोकुल-नाथ उपाध्यायक [illegible] भाइक दौहित्रीसँ, "विद्यासिन्धु" "सम्प्रति-[illegible]" "महोदधि[illegible]" [illegible] बालक म०म० ईशानन्द [illegible] दौहित्रीसँ। एहि "कलाधार"क दौहित्रीक दौहित्री, "परिहार" [illegible] झाक दौहित्र, "[illegible]" मे [illegible] झाक कन्यासँ राजा दुलार [illegible] पहिल विवाह छल। एहि कन्याक पाँजि "[illegible]" छल ओ [illegible] दोसरा योग्य नहि रहल, ताहिसँ [illegible]। एहि विवाहसँ राजाकेँ दू बालक कुमर सर्वानन्द सिंह ओ राजा वेदानन्द सिंह ओ दू गोट कन्या।

दोसर विवाह [illegible] राजा दुलार सिंह प्रायः [illegible] ओ प्रायः [illegible] बेहुरा [illegible] कएल, जे एक [illegible] प्रसिद्ध [illegible] मौहिदार, म०म० कुलपति शास्त्री क कन्यासँ, [illegible]दर्पणकार जे [illegible] कहल छथि से नहि, हुनक [illegible]। छहो

[illegible] पृष्ठ ६७ [illegible] एहि पुस्तक परि-चय [illegible] अनेक [illegible] कहल अछि। [illegible] म० म० कुलपति झा। [illegible] पितामह [illegible] दौहित्र छलाह [illegible] एक गोट [illegible] छलाह [illegible] अनेक अमर [illegible] रचयिता [illegible]। दोसर बालक हुनक छलाह [illegible] एक गोट [illegible] छलाह म० म० [illegible] कन्यासँ [illegible] गोट विवाह छल ओ [illegible] कन्यासँ महाराज माधव सिंह बहादुर [illegible] विवाह [illegible] सम्प्रति [illegible] जे पाँजि प्रस्तुत भेल से सम्प्रति सोतिमे सर्वोच्च पाँजि अछि।

[illegible]ा सोतिक डेरा योक ओ हिनक पितामह धरि तँ निश्चय सोति छलाह। म० म० कुलपति झाक विवाह "अलयी" मूलक "अलयी" शाखाक मही[illegible] कन्यासँ छल जनिक पाँजि "लक्ष्मू पाठक" छल जे एखन सोतिमे [illegible] गोट प्रतिष्ठित पाँजि बुझल जाइत अछि। एहि पक्षसँ राजाकेँ एक [illegible] बालक राजा रुद्रानन्द सिंह ओ कमसँ कम चारि गोट कन्या जनिक [illegible] परिचय उपलब्ध भेल अछि।

[illegible] दुलार सिंहक समयमे मिथिलेश छलाह महाराज माधव सिंह बहादुर। [illegible] सिंह देवीक तत्कालीन व्यवस्थासभ महाराज माधव सिंहक राजत्वकालमे [illegible] परिवर्तन भए गेल। एहिसँ पूर्व हरिसिंह-देवीक सदा विचार ओ [illegible] सभाक द्वारा होइत छल जाहिमे प्रायः प्रत्येक कुटुम्बकेँ आह्वान [illegible] छल, अपन मत प्रकट करबाक अधिकार रहैत छल। प्रसङ्ग ई [illegible] सिंह-देवीक इतिहासक योक ओ एकर विस्तृत विवेचना एतए अनु-[illegible] होएत परञ्च एतबा धरि कहब आवश्यक जे ताहि समय धरि [illegible] सिंह-देवीकेँ राजशासनसँ कोनो सम्पर्क नहि छलैक। ओझिनिवार

म० म० कुलपति झाक [illegible] कन्यासँ [illegible] मूलक [illegible] शाखाक [illegible] रामकृष्ण झाक विवाह छल। रामकृष्ण झाक [illegible] धरि सोति [illegible] लाह। रामकृष्ण झाक एक गोट कन्याक विवाह छल [illegible] एकहरा [illegible] शाखाक गङ्गेश मिश्रसँ। एही गङ्गेश [illegible] दौहित्रीसँ महाराज [illegible]श्वर सिंह बहादुरक प्रथम विवाह छल जनिक अकालहिमे देहावसान [illegible] पर महाराज बहादुर गङ्गेश मिश्रक बालक, रामकृष्ण झाक [illegible] इन्द्रनाथ मिश्रक कन्यासँ विवाह कएल जे छलीह कैलासवासिनी [illegible] लक्ष्मीवती साहेबा, जनि अन्तिम समयमे काशीमे अन्नपूर्णा [illegible] [illegible]। इन्द्रनाथ मिश्रक पौत्र सम्प्रति [illegible] श्री [illegible]नाथ मिश्र छथि [illegible] इन्द्रनाथ मिश्रक अपर दू भाइक पौत्र सम्प्रति [illegible] जमिन्दार [illegible] उमानाथ मिश्र ओ श्री [illegible]नाथ मिश्र छथि।

राजकुल ब्राह्मणक वंश छल; दुरभङ्गा राजकुल ब्राह्मणक वंश छल, स्वयं खण्डवला कुलमे महाराज माधव सिंहक प्रपितामहक प्रपिताम मिथिलाराज्योपार्जक महेशठाकुर जी ई सब राजकुल यद्यपि हरिसिंह-देवीक व्यवस्थाकें मानैत, ओकर व्यवस्थाक पालन करैत, तदनुरूप अपन वि वाहादि करैत आयल छलाह। परन्तु शासकेँ स्वमत छोड़ि आओर दोस कोनो अधिकार नहि छलैक जे अपन निर्णय ककरो मान्य करबाबए। जाहि समय श्रोत्रियकेँ मात्र हरिसिंह-देवीय व्यवस्था मान्य छल से एहन अवि कालमे कुलिन मानेवें व्यक्तिकें विस्मृत होइत गेलैक। फलतः हरिसिंह देवीय नियम उल्लङ्घन आचरण होइत लागल औ समाजक नियमक अव हेलना सेहो होएब करए लागल। समाजक ओ संचालकोकनि जाहि दिन रहल आदिमे स्पष्ट प्रतिभासित होमए लागल जे आइ यदि शासनक सुप्रबन्ध नहि करब तँ कौलिन्य नहि बाँचि सकत। इएह सब विचारि महाराज माधव सिंह बहादुर तत्कालीन मिथिलेश ओजनाक सज्जन सौ.लि.कनि हुनक हरिसिंह-देवीय सम्बन्धित काए देल, ओकर सम्बन्ध अधिकार हुनका दए देल। पञ्जीक संग्रह करबाक हेतु जो मिथिलेशकें उचित परामर्श देबाक हेतु सभा होइत रहल---से आइयो होइत अछि---तदनुसार निर्णय करता मिथि लेश करथि। प्रत्येक कुटुम्बकें कन्यादान करबाक अनुमति-पत्र (एकरे नाम परमानगी थिक) मिथिलेशसँ प्राप्त करब आवश्यक कए देल गेल आएल जे कन्याग्रहण करब ओहि कुलसँ मोहित नहि बुझल जाइत छल परन्तु कन्यादान छोट ठाम करब हरिसिंहदेवी-व्यवस्थानुसार गर्हित कर्म छल औ अतएव से यदि करए पड़ैक तँ ककरा समाजक अनुमति लए, सभासँ अनुमोदित कराए करब आवश्यक छल। श्रोत्रियेतर व्यक्ति सँ परमानगी नहि लैथि तें जे केओ सोहि श्रोत्रियेतरक कन्या ग्रहण करथि तँ ताहू हेतु हुनका, अरहिकें, मिथिलेशक परमानगी लेब आवश्यक भए गेल। "कन्या कुलं कुलकुलावति" जे नीतिक वचन एतए अक्षरशः पालित होइत छल नहि पर एकरा प्रतिबन्ध लगाए देल गेल। एहो सङ्ग सङ्ग निषेध

कुमार सर्वानन्द सि
= खण्डवलार्थ उ

राजा पद्मा यो
नन्द सिंह = दे

कुल-चित्र (१४)

राजा दुलार सिंह = खरिसवं [illegible]सुता

कुमार सर्वानन्द सिंह = खण्डवलासं उग्रसिंह सुता

राजा [illegible]नन्द सिंह = खण्डवलासं उग्रसिंह सुता

क = सरिसव सोदरपुरसं कन्हाई मिश्र

क = सिहौलि माण्डरसं रत्न सिंह झा

कलिकर्ण राजा [illegible] सिंह = महिषासोदरपुरसं महेशदत्त सुता निः (१)
= [illegible] हेमनाथसुता रानी पार्वती (२)
= नरौन बलियासवं ईश्वरीदत्त सुता रानी चन्द्रेश्वरी (३)
= [illegible] गोपीनाथ सुता रानी सीतावती (४)

(२) (३) (४)

राजा पद्मानन्द सिंह
योगमाया = दरिहरासं ठीकर
महामाया = खण्डवलासं रघुवर
चन्द्रनाथा = सोदरपुरसं बछरन
नित्यमाया = माण्डरसं मनोहर
आनन्द्या = सोदरपुरसं चण्डीदत्त
राजा कमलानन्द सिंह = खोआलसं [illegible]सुता
राजा कीर्त्यानन्द सिंह = बेलन्नौचसं कुमरसुता
यमुना = नरौनसं शम्भुनाथ
क = संकराडीसं पद्मनाथ — केदारनाथ

क = [illegible] [illegible]
क = [illegible] देवनाथ
क = [illegible] [illegible] सुता [illegible]
क = माण्डरसं [illegible] — श्री राधारमण

= खण्डवलासं योगनाथ सुता निः (१)
= सोदरपुरसं बदरी सुता रानी [illegible] (२)
= बलिआसवं [illegible] सुता (निः) (३)
= सादरपुरसं [illegible] सुता रानी [illegible] सुन्दरी (४)

(२) (४)

[illegible] कुमार [illegible]
= सोदरपुरसं [illegible] [illegible]
[illegible] मिश्र

श्रीभीमनाथ मिश्र   श्री वृद्धिनाथ मिश्र   श्री राजेश्वर मिश्र   क = [illegible] गणानन्द सुता

मेजर श्री कृष्णानन्द झा प्रभृति   क = [illegible] कुमार श्री [illegible]

कुमार रमानन्द सिंह = सोदरपुरसं भैरवसुता निः = खण्डवलासं दुर्गेश्वर सुता — श्री कन्या कुमारी

कुमार श्रीकृष्णानन्द सिंह = खण्डवलासं केवलकृष्ण सुता — पुत्रत्रय

क = दरिहरासं राधारमण झा

क = [illegible] श्री [illegible] झा

क = [illegible] = सोदरपुरसं श्री [illegible]नाथ मिश्र

क = बलिआसवं [illegible] झा

कुमार श्री [illegible]नन्द सिंह = कुआौलीसं दिवाकर सुता

कुमार श्री विमलानन्द सिंह = दरिहरासं गोविन्दनारायण सुता

कुमार श्री तारानन्द सिंह = सोदरपुरसं पद्मदत्त सुता

[illegible] सिंह [illegible] सुता

कुमार श्री [illegible]नन्द सिंह = दीघोसं चौधरी भैरव ठकुर सुता

कुमार श्री [illegible]नन्द सिंह — अविवाहित

क = माण्डरसं श्री गङ्गानाथ झा

क = सोदरपुरसं [illegible]

क = खण्डवलासं बाबू श्री दुर्गानन्द सिंह

= करमहासं श्री विमलानन्द झा

ओ अनुग्रह करबाक अधिकार रहो मिथिलेशकेँ दए देल गेल ।

एतए ई कहि देब आवश्यक प्रतीत होइत अछि जे महाराज माधव सिंह बहादुर राजपुत्र नहि छलाह किन्तु अपन वैमात्रेय भाए महाराज प्रताप सिंहक दत्तकपुत्र भए मिथिलेश भेल छलाह ओ महाराज प्रताप सिंह अपन पितिऔत महाराज नरेन्द्र सिंहक दत्तकपुत्र भए मिथिलेश भेल छलाह । मिथिलाराज्योपार्जक म० म० महाराज महेश ठाकुरक सबसँ छोट बालक म० म० महाराज शुभङ्कर ठाकुरक सन्तान सँ ई तीनू गोटए छलाह परन्तु महाराज नरेन्द्र सिंह छलाह महाराज शुभङ्कर ठाकुरक सबसँ छोट बालक महाराज सुन्दर ठाकुरक प्रपौत्र, महाराज नरपति ठाकुरक पौत्र, महाराज राघव सिंहक बालक, ओ महाराज प्रताप सिंह किंवा महाराज माधव सिंह छलाह महाराज शुभङ्कर ठाकुरक अपर बालक नारायण ठाकुरक वृद्धप्रपौत्र, लाला ठाकुरक प्रपौत्र, गुणानन्द ठाकुरक पौत्र, रघुनन्दन एकनाथक बालक । अतएव महाराज माधव सिंहक बाद मिथिलेश नहि छलथिन्ह ओ स्वयं महाराज माधव सिंह राज्य पदासँ पूर्व एक जन साधारण जिनकर परन्तु जातिएँ पंच सोति छलाह ओ एक गोट बड़ पंच ओ प्रतिष्ठित सोतिक दौहित्र छलाह । सोति भए राज्य पओल अतएव सोतिक प्रति हिनक दयादृष्टि उचिते छल ओ ताहि परसँ जखन सोतिसमाज हिनका समर्पित कए देल गेल तखन सँ ई आओरो तत्परतासँ, घनघोर अधिक मनोयोग दए, सोतिक पालन ओ सोतिसमाजक रक्षा करए लगलाह ।

राजा दुलार सिंह जे कोनो कुटुम्बिताक कार्य अपने कएलन्हि से महाराज माधव सिंहक हाथमे सोतिआइ अएलाक बाद ओ आगाँ जे हम ओहि कार्य सबहिक परिचय देब ताहिसँ स्पष्ट भए जाएत जे तकर प्रतिक्रिया सोतिसमाजक रक्षक सोति मिथिलेश पर ओ तत्कालीन सोति-समाज पर कोन रूपक भेल होएत ।

सबसँ पूर्व अपन विवाह जे राजा दुलार सिंह हरिपुर कएल से

यदि पौराणिक औतिहास तँ योग्यो ओ श्रद्ध पंथ ओ प्रतिष्ठित छलाह ओ जे कथा हम पूर्वहिं कहि आएल छी, हिनक पितामह धरि तँ निश्चय सोतिए छलाह। राजा दुलार सिंहके कन्या दए म० म० कुलपति श्री हरिसिंह-देवांक दृष्टिसँ न्यून भए गेलाह ओ सम्बन्ध यद्यपि सोतिसँ हिनक वंशजकेँ [illegible] (हिनक पौत्र मधुरेश [illegible] सन्तान सोतिमे अनेक छथि ओ नकर दरभङ्गा सए गोट सोतिमे हिनक वंशजकेँ सम्बन्ध) परन्तु एहि विवाहक पश्चात् हिनक डेरा सोतिसँ क्रमशः दूर होइत होइत पोखक श्रेणीमे प्रतिष्ठित भए गेल।

अपन तीनू बालकक विवाह राजा दुलार सिंह मिथिलेशक सपिण्ड, ओतहि [illegible] म० म० महाराज महेश ठाकुरक डीहपर बसल, भँअन ठाकुरक बालक उग्रसिंह ठाकुरक कन्यामे कराओल। महाराज महेश ठाकुरकेँ जे विवाह भेलनि तथसँ पाँच छल ताहिमे हुनक सबसँ जेठ बालक छलाह म० म० गोपाल ठाकुर ओ कनिष्ठ बालक छलाह सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद् महाराज हेमाङ्गद ठाकुर†। बाद मिथिलाक राज्य म० म० गोपाल ठाकुरहिँकेँ भए काशी गेल छलाह ओ ते राज्य कतेक दिन ज्योतिर्विद् महाराज हेमाङ्गद ठाकुर सेहो कएल परन्तु राज्यक भार हिनका लोकनिकेँ ककरहु अधिकार नहि भेल तेँ पश्चात् म० म० महाराज महेश ठाकुरक सबसँ

† महाराज हेमाङ्गद ठाकुरक निर्मित [illegible] 'राहूपरागपञ्जी' अथवा 'ग्रहणमाला' कहाए एखनहु दरिभङ्गा राजकीय पुस्तकालयक एक गोट दर्शनीय रत्न अछि। [illegible] जे [illegible] कहि दए [illegible] हेतुएँ [illegible] ई [illegible] शाहंशाह [illegible] भेलाह [illegible] शाहंशाह हिनका [illegible] विवाह कएल परन्तु [illegible] ई [illegible] नहि कएल।

छोट बालक म०म० महाराज शुभङ्कर ठाकुर ओकरा ग्रहण कए सुव्यवस्थित कएल। एही महाराज हेमाङ्गद ठाकुरक प्रपौत्र छलाह भँअन ठाकुर जनिक बालक छलाह उग्रसिंह ठाकुर। हिनका कए गोट विवाह छल, आरि गोटक परिचय हमरा भेटल अछि, सब छोट छोट, ओ ताहिमे एक गोट छल कुजौलिवार म० म० कुलपति झाक बहिनिक कन्यासँ, "लच्छू पाठक" पाँजिमे, परन्तु अपने ई छलाह "रामदेव मिश्र"क लोक, सङ्गत सोति, ओ सबसँ बेशी तेँ ई जे महाराज महेश ठाकुरक डीहपर बसल छलाह। एही उग्रसिंहक तीनि गोट कन्यामे राजा दुलार सिंह अपन तीनू बालकक विवाह कराओल। ततबे नहि, राजा दुलार सिंहक बालककेँ कन्या दए भँअन ठाकुरक बालक लोकनि मिथिलेशहिक सङ्ग प्रतिस्पर्धाक भाव प्रदर्शित करए लागि गेलाह ओ राजवंशसूचक सिंह उपाधि धारण कए लेल। परिणाम ई भेल जे ओतने जे भँअन ठाकुरक सन्तान छलाह सब सोतिसँ बहिष्कृत भए गेलाह ओ अद्यापि छथिए। केवल उग्रसिंह ठाकुरक पौत्र, जगतसिंह ठाकुरक बालक, म० म० कृष्णसिंह ठाकुर अपन विद्यावैभव ओ नैष्ठिकतासँ समाजकेँ अनुकूल कए स्वर्गीय मिथिलेश महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह बहादुरसँ अनुग्रह पाओल ओ तेँ केवल जगतसिंह ठाकुरक सन्तान सम्प्रति सोतिमे छथि।

अपन कन्या मथुराक विवाह सेहो राजा दुलार सिंह एहिना लाकि लाकि कएल। सबसँ जेठि, राजा वेदानन्द सिंहक सोदराक विवाह, ओ

† एहिमे कुमर सर्वानन्द सिंह ओ राजा वेदानन्द सिंहक विवाह तँ निश्चय कुजौलिवार कुलपति झाक दौहित्र दू गोट दौहित्रीमे भेल छल परन्तु तेसर कुलपति झाक दौहित्र राजा रुद्रानन्द सिंहक विवाह उग्रसिंहक कोनहु आन विवाहक कन्यामे भेल छल। एहि रीतिक असामयिक देहावसानक उपरान्त राजा रुद्रानन्द सिंहक विवाह बेरिआक श्यामू ठाकुरक कन्यासँ भेल।

[illegible]पुर'' मूलक ''हरिसब'' शाखाक म० म० शंकर मिश्रक सन्तान, [illegible] सोति, लालगञ्जक पलिया मिश्रक सबसँ जेठ बालक कन्हाइ मिश्रसँ भएलैन । ई कन्हाइ मिश्रो ''करमहा'' मूलक ''बेहट'' शाखाक [illegible] ''गुभकार'' कवि बेणीदत्त झाक दौहित्र छलाह औ बेणीदत्त झा महाराज माधव सिंह बहादुरक नाम छलाह । जातिमे कन्हाइ मिश्र [illegible] झा'' धाजिक अत्युच्च सोति रहथि ।

[illegible] वेदानन्द सिंहक दोसर सोदराक विवाह ''दाउडर'' मूलक [illegible]हीनि'' शाखाक वीरनाथ सिंह झाक बालक रत्नसिंह भासँ भेल । [illegible] सिंह झा ''मुरुगाए'' पहुआराजक राजा [illegible] नारायण रायक दौहित्र छलाह. राजा रामलक्ष्मनारायण रायक भागिन । वीरनाथ सिंह झाक सबसँ जेठ बालक कुमर सिंह झाक प्रपौत्रलोकनि सम्प्रति पनौरमे श्री [illegible] सिंह झा, श्री यशोदानन्द सिंह झा प्रभृति विद्यमान छथि, दोसर बालक रत्नसिंहक विवाह राजा वेदानन्द सिंहक सोदरामे छल औ तेसर बालक मानिक सिंहक विवाह राजा वेदानन्द सिंहक भातिज, उदसिंह ठाकुरक [illegible] कन्यामे छल ।

[illegible] जे चारि गोट कन्या राजा दुलार सिंहकें म० म० कुलपति [illegible] दौहित्री छलथिन्ह तनिहुमे एक गोटाक विवाह पुनः ''सोदरपुर'' मूलक ''हरिसब'' शाखाक चित्रधर मिश्र[*]क सबसँ जेठ बालक पुण्यधर मिश्रसँ छल । अर्थात् भवनाथ मिश्रक समयमे हिनका लोकनिक बास

† कन्हाइ मिश्रक वंशमे [illegible] भाइ लोकनिक पौत्र [illegible] सोतिमे [illegible] विद्यमान छथि । ई कन्हाइ मिश्र उदसिंह ठाकुरक एक [illegible] वहिनिक पौत्र छलाह । लालगञ्जक एहि [illegible] [illegible] राजवंशक विवाह [illegible] ।

* चित्रधर मिश्र छलाह [illegible] मिश्रक बालक औ । हुनक परिचय [illegible] टिप्पणीद्वारा द्रष्टव्य ।

हरिसब मध्य औ ओहो [illegible] तें नहि मुदा [illegible] छल । सम्प्रत सोतिपुरामे इनक दो घर अछि जे एतेक दिनसँ अपन प्राचीन डीह नहि [illegible] रहि । ई पुण्यधर मिश्र सोतिमे एक गोट विवाह कए सुगौनाक [illegible] राजा गिरिधरनारायणक कन्यामे विवाह कए [illegible] छलाह । तनिकहि राजा दुलार सिंह अपन कन्या देल । दोसर कन्याक विवाह ई कराओल ओहो चित्रधर मिश्रक जेठ भाए [illegible] मिश्रक बालक भूधर मिश्रसँ, अपन पहिल जमाए पुण्यधर मिश्रक [illegible] छोट भाइसँ । हिनकहु पूर्वमे दू गोट विवाह सोतिमे छल, तेसर विवाह [illegible] कन्यासँ कएल । तेसर कन्याक विवाह ई कराओल ''जीवर-पुर'' मूलक ''तेलविहार'' शाखाक मानिक झाक बालक [illegible] झासँ । मानिक झाक भाए [illegible] अन्तिम राजा इन्द्रनारायण रायक रानी, रानी इन्द्रावतीक [illegible] बहीनि छलीह । एहि स्त्रीक प्रायः परोक्ष भए गेलाक पर [illegible] झा आओर दू गोट विवाह कएल, [illegible] गेलाह । अन्तिम कन्याक विवाह ई कराओल [illegible] परिवारमे, राजा [illegible] औ राजा महेन्द्रनारायणक जेठ [illegible] देवनारायणक जेठ बालक रामनारायणजीक सबसँ छोट बालक महिनारायण रायसँ । इहो कन्या राजा दुलार सिंहक प्रायः असमर्थताके कारण भए गेलीह ।

——:०:——

* [illegible] झाक छोट भाए दोसर झाक पौत्र सम्प्रति श्री [illegible] झा [illegible] विद्यमान छथि ।

† रामनारायण रायक छोट भाए रूपनारायणक पौत्र सम्प्रति दुर्गा-गञ्जमे श्री [illegible]नारायण राय औ श्री [illegible]नारायण राय [illegible] पनौरमे श्री लक्ष्मीनारायण राय विद्यमान छथि । एहि महिनारायण [illegible] बहीनिमे [illegible] रघुवर ठाकुरक एक गोट विवाह छल जे अपर विवाह पुनि राजा लीलानन्द सिंहक कन्यामे कएल ।

सम्भवः हिनका कहाँहु नहि आवए । हिनक बालशीलताक गप्प देखाब होन कोनमे पसरल अछि, के नहि जनैत अछि। हम मानैत छी जे एहि हानिसँ सब ज्ञान विवेकक मात्रा पूर्ण नहि भेटत । अर्थोपद्रुकें ई श्रीहिमा धनसँ लादि देथि ओ पछाति तँ लोक से बूझि हिनका ठकबो बड़ करैन्हि परन्तु यदि विवेक-पूर्ण दान ई करैत रहितथि तँ 'कर्ण' तँ नहि कहबितथि । एही बालशीलताक कारणेँ हनिचल धन सबटा व्यय कए अन्तमे ई किछु ऋणो छोड़िकेँ शरीरत्याग कएल । ब्राह्मणोचित आचारक प्रधानत् परिपालन ई आलस्य छोड़िकेँ अन्त धरि करैत रहलाह ओ दुर्दिनहुमेक एकान्त पक्षपाती रहथि । एवम् बाहुल्य हिनका बड़ गौरव दलनिहु तथा किछो यदि हिनका "अवधू पाठक" पाँजिक लोक कहैन्हि तँ एकरातर बड़ प्रसन्न होथि, ओकरा तारि देथि ।

हिनक जन्म १८१६ मे भइल जाइत अछि ओ ते पूर्ण सम्भव थीक जे पितामहक समक्षहि हिनक मातृत्व भए गेल हो । तखन ई पैतृक वर्षक छलाहु तखन हिनक पिताक परोक्ष भेल ओ एही समयमे ई राजाक उपाधि विभिन्न पबोलें होइलाह । हिनक राजा भेलाक पर सम्भवो [illegible] उपद्रवी अत्यन्त अत्याचारी भए गेल ओ हिनका सीढ़िनिमें अपन राजधानी छाड़ए पड़ल । पूर्वमे हिनक पितो राजा रुद्रानन्द सिंहक दु गोट बालक [illegible] भए गेलाथिन्ह ओ हिनकर्हि [illegible] उत्पात विद्रोहि लोकनि [illegible] श्रीरमण घरिन [illegible], यद्यपि राजा साहेबकेँ [illegible] छल मुदा अपन राजधानी राम-नगर छए गेलाहु फलत हिनक समस्त जीवन बितल ।

राजा लीलानन्द सिंहकें चारि गोट विवाह छल जाहि अतिरिक्त [illegible] ओहि परिचयम, जाहिमे प्रथम, जे प्रायः हिनक [illegible] अन्तर्गत छल [illegible] "सोदरपुर" मूलक "तहिया" शाखाक महेश्वर [illegible] कन्यासे, "[illegible]" पाँजिमे । एहि रानीक [illegible] स्वर्ग-वास भए गेलाक पर राजाक दोसर विवाह भेल रानीडीह, "खौआल"

मूलक "महुआ" शाखाक ज्योतिषी ओझो झाक बालक हेमनाथ झाक कन्यासे, "पडुनचल" पाँजिमे । हिनक नाम रानी पार्वती छल । रानी-टोलक खोआड़एक ई कुल बड़ प्रतिष्ठित छल अछि ओ एही ओझा झाक दौहित्र छलाहु तमौलिक "नगवाड़-घुसौतए" परसमणि ठाकुर जनिक कन्यामे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुरक तृतीय विवाह छल । एहि पक्षमे राजाकें एक गोट बालक राजा पद्मानन्द सिंह ओ चारि गोट कन्या । तेसर विवाह सेहो राजा "सलमपुर" कएल, "बलिआस" मूलक "नड़-सम" शाखाक ईश्वरीदत्त मिश्रक कन्यासे, "सिंहवाड़" पाँजिमे । ईश्वरी-दत्त मिश्र छलाहु बालक मणि प्रसिद्ध ललितनाथ मिश्रक जनिक कन्यामे राजाक मामा "लड़ौरए" जगत सिंह ठाकुरक विवाह छल तथा ईश्वरी-दत्त मिश्रक छोट भाए बबे मिश्रक कन्यासे राजा साहेबक जेठ बालक राजा पद्मानन्द सिंहक विवाह छल । मणि प्रसिद्ध ललितनाथ मिश्रक बहीनिमे सोदरपुर मूलक कन्होली शाखाक नन्दीश्वर झाक विवाह छल जनिक बालक मुरली झाक कन्यासे श्रीनगरेश राजा श्रीनन्दन सिंहक विवाह छल । अपन विवाह छल ईश्वरीदत्त मिश्रकें सिंहवाड़, हीरा-ठाकुरक कन्यासे, चौधरी श्री केदारनाथ ठाकुरक प्रपितामहक बहीनिमे । एहि रानी चन्द्रेश्वरीसँ राजा लीलानन्द सिंहकें एक गोट कन्या मात्र, कामाख्या । चारिम विवाह ई कएल "हरिहरा" मूलक "रतौली" शाखाक यदुनाथ झाक सबसँ छोट बालक गोपीनाथ झाक कन्या, रानी सीतारुचासँ, "नरपति झा" पाँजिमे । ई लोकनि सौति छलाह, बीर ठाकुरक लोक, नाक सौति । यदुनाथ झाक सबसँ जेठ बालक अभयनाथ झाक प्रपौत्र श्री कुलानन्द झा एखनहु उजानमे अपन पैत्रिक डीहपर बसैत छथि । मालिक हृदयनाथ झाक दौहित्रीपुत्र श्री४महामिथिलेश विवाह जनिक पाँजिमे अपन मातृमातामहक नामपर "हृदयनाथ झा" निर्धारित कएल गेल छल । सबसँ छोट गोपीनाथ झा रमाइ जाए "एकहरए"क डीहिमाम बिकाएल छलाह, रायबहादुर श्रीनाथ मिश्रक सपिण्ड वनमाली मिश्रक

पिउलि, चंद्रमणि मिश्रक कन्यामे विवाह कएने छलाह ओ से रसाइहिमे चलि गेल छलाह । एही गोपीनाथ झाक कन्यामे राजा लीलानन्द सिंह अपन चारिम विवाह कएल ओ जाहिमे हुनका दू बालक, राजा कलानन्द सिंह ओ राजाबहादुर कीर्त्यानन्द सिंह ओ दू कन्या चन्द्रा ओ एक गोट आओर जनिक नाम ज्ञात नहि भए सकल । एवं हुनक चारि विवाह छलन्हि ओ जाहिमे तीन बालक ओ सात कन्या, जाहिमे सबसँ छोट राजा बहादुर कीर्त्यानन्द सिंहकेँ गर्भहिमे छोड़ि सतहि वर्षक वयसमे कलि-कर्म राजा लीलानन्द सिंह १८८३ ई० मे एहि असार संसारकेँ त्यागि स्वर्ग सिधारल ।

हरिसिंह-देवी व्यवस्थाक एकान्त पक्षपाती राजा लीलानन्द सिंह सोतिक कन्या अपना ओहिठाम लए जएबाक कुलाहस कहियो नहि कएल परन्तु अपन कन्या सबहिक विवाह ई केवल सोतिसँ कराओल, नोकहि ठाम, ओ एही बंध मार्गसँ ओ अपन सन्तानक उपचय कएल । सबसँ जेठि अपन कन्या, योगमायाक विवाह ई कराओल सोतिक सबसँ उच्च ओ उत्कृष्ट डेरामेसँ एक गोट, "दरिहरा" मूलक "रतौली" शाखाक खगनाथ झाक बालक ठोठर झा†सँ । "रामदेव मिश्र"क लोक ई बड़का सोति छलाह । हिनका एक गोट कन्या भेल जनिको विवाह राजा लीलानन्द सिंह सोतिमे कराओल, "पचौली" मूलक "बड़िआम" शाखाक चन्द्रदत्त झाक बालक ललहन झासँ, सतौली गाममे । दोसरि कन्या महामायाक विवाह "जजबला" मूलक "भौर" शाखाक भैया ठाकुरक बालक रघुवर ठाकुर*सँ भेल । इहो बड़का सोति छलाह तथा स्वर्गीय सर गङ्गानाथ

† ठोठर झाक छोट भाए नरेन्द्र झाक पौत्र सम्प्रति श्री गिरीन्दनन्दन झा रहुओलिमे बुद्धिमान वर्त्तमान छथि ।

* रघुवर ठाकुरक परिचयक हेतु पृष्ठ ७७ क दोसर टिप्पणी द्रष्टव्य । हिनक एक गोट विवाह सुरगण मूलक रामनारायण राय्यक कन्यामे, महि-

झाक पिताक साक्षात मसिऔत भाए, "रामदेव मिश्र"क लोक, छलाह । एहि ठाकुरकेँ दू गोट विवाह पूर्वमे [सोतिमे छल ओ तेसर ई राजकन्यासँ कएल जाहिमे हिनका एक गोट कन्या, जनिको विवाह सोतिमे, "नरऔन" मूलक "पूड़े" शाखाक भोलानाथ झा†क सबसँ छोट बालक तेजनाथ झासँ । राजाक तेसर कन्या चन्द्रमायाक विवाह "सोदरपुर" मूलक "दिग-घोन्ध" शाखाक गोसाञि मिश्रक बालक बछरन मिश्रसँ छल । इहो बड़का सोति छलाह, "दामू झा"क लोक । गोसाञि मिश्र* अपने छलाह राजा-नरेन्द्र सिंहक पट्टरानी रानी पद्मावतीक बहिनौत तथा हुनक विवाह म० म० सचल मिश्रक बहिनिक दौहित्रीमे छल । हिनकहु दू गोट विवाह सोतिमे छल जाहिमे एक गोट रत्नकौस्तुभकार गोविन्द झाक पौत्रीमे छल, तेसर विवाह वर्त्तमान राजकन्यासँ भेल जाहिमे हुनका एक गोट कन्या । हिनको विवाह सोतिमे भेल, "बुधवाल" मूलक "पड़िआम" शाखाक बाथोन झाक बालक भाइलाल झासँ । बाथोन झाक कन्यामे फड़किआक राजा विजयगोविन्द सिंहक एक गोट विवाह छल । भाइलाल झाकेँ सोतिमे सेहो विवाह छल ओ ताहि दिशिक सन्तान सोतिमे छथिए । राजा लीलानन्द सिंहक दौहित्रीपुत्री, बछरन मिश्रक दौहित्री ओ भाइलाल झाके कन्या जनिको विवाह सोतिमे, "माण्डर" मूलक "सिहौलि" शाखाक

नारायणक बहिनिमे—पृष्ठ १०९ टिप्पणी २ द्रष्टव्य । दोसर विवाह छल हिनक रत्नकौस्तुभकार गोविन्द झाक प्रपौत्रीमे, दामोदर झाक कन्यामे ।

† भोलानाथ झा हुनक प्रपितामहभ्राता छलाह तथा एही भोलानाथ झाक सबसँ जेठ बालक सुप्रसिद्ध आगमाचार्य बदरीनाथ झाक दौहित्र मधुबनीक बाबू श्री चन्द्रधारी सिंह साहेब ओ बाबू श्री क्षेमधारी सिंह साहेब सबहुँ छिकाह ।

* गोसाञि मिश्रक छोट भाए कन्हाइ मिश्रक वृद्धप्रपौत्र सम्प्रति श्री विकल मिश्र सनकोर्थुमे वर्त्तमान छथि ।

मनू *झासँ जाहिमे हुनका बालक श्री राधारमण झा छथिन्हि। मनू झाकेँ पूर्वहुँ सोतिमे विवाह छल ओ ताहि पक्षमे हिनक तीनि गोट कन्याक सन्तान सम्प्रति सोतिमे वुद्धिमान छथिन्हि। चारिम कन्या निरुपमादाक विवाह "माण्डर" मूलक "निर्हीलि" शालाक जीवधर झाक बालक मनोहर झासँ छल। ई मनोहर झा महाराज माधव सिंह बहादुरक भागिन "हरिअम्बए" दुल्लह मिश्रक दौहित्र छलाह तथा हिनक पितिऔत भाए छुट्टधर झाक दौहित्र छलाह रायबहादुर बाबू धनुनन्दन सिंह साहेब ओ बाबू वृजनन्दन सिंह साहेब।

राजा लीलानन्द सिंहक जे कन्या चलिआसएक दौहित्री छलीह, कामाख्या, तनिक विवाह उजानक "नोन्हरपुर" मूलक "कन्हौली" शालाक ठेङ्गो झाक पौत्र गणेशदत्त झाक बालक, चण्डीदत्त झासँ भेल। राजा दुलार सिंहक जमाए जे "तेलहिहार-सोनरपुर" मूलक धर्मनाथ झा छलाह तनिक बहिनिक ई दौहित्र छलाह तथा पूर्वमे महाराज छत्रसिंह बहादुरक दौहित्र "हरिअम्बए" बाबू लोकनाथ मिश्रक कन्यासँ विवाह कएने छलाह जाहि पक्षक हिनक बालक श्री लेखदत्त झा सम्प्रति वर्त-मान छथि।

राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुरक दू गोट सोदर बहीनिमे एक गोटाक विवाह छल इसहपुर, "वरहट-सकुराढ़ी" मूलक मनमोहन झाक पौत्र पद्मनाथ झासँ। मनमोहन झाक बहिनिक विवाह सुरगण राजा राजेन्द्र-

* मनू झा छलाह हृदयदत्त झाक पौत्र। पृष्ठ ६२ टिप्पणी द्रष्टव्य। मनू झाक जेठ भाइक बालक महावैयाकरण पण्डित श्री दीनबन्धु झा छथि। मनू झाक दौहित्र मैथिलीक सुप्रसिद्ध कवि 'भुवनजी' छलाह।

† एहि दुनूक चर्चा अनेक ठाम आएल अछि। ठेङ्गो झा छलाह मतिकरक प्रसिद्ध पौत्र जनिक परिचय पृष्ठ ३१ क प्रथम टिप्पणीमे द्रष्ट-व्य ओ ३३ पृष्ठक द्वितीय टिप्पणीमे द्रष्टव्य।

नारायण रायसँ छल। एहि पक्षमे पद्मनाथ झाकेँ एक बालक केदारनाथ झा। ओहि स्त्रीक परोक्ष भए गेलाक पर हुनक दोसर विवाह प्रतिष्ठित योग्यमे कराए देल गेल जाहि पक्षक हुनक बालक श्री रघुनाथ झा पटना हाइकोर्टक एडवोकेट विद्यमान छथि। एही मनमोहन झाक सबसँ छोट बालक लोलनाथ झाक विवाह श्रीनगरेश राजा श्रीनन्दन सिंहक कन्यासँ छल। राजा बहादुरक दोसर बहिनि, यमुनाक विवाह छल नरआइ, "नुल्हवी-नरऔन" मूलक कतूरी झाक बालक शम्भुनाथ झासँ। कतूरी झा अपने महाराज छत्रसिंह बहादुरक दौहित्रीपुत्र छलाह तथा हिनक विवाह छल जगमोहन झाक कन्यामे जनिक छोट भाए मनमोहन झाक पौत्र पद्मनाथ झासँ राजा बहादुरक एक गोट बहिनिक विवाह छल। एतावता ई दुनू साढ़ू, पद्मनाथ झा ओ शम्भुनाथ झा, ममिऔत-पिसिऔत रहथि। शम्भुनाथ झाकेँ एक गोट विवाह पूर्वहिँ सोतिमे छल। हिनक बालक राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुरक भागिन शक्तिनाथ झा चम्पा-नगरहि रहैत छथि।

एहि रूपसँ राजा लीलानन्द सिंह अपन कन्या सबहिक विवाह केवल सोतिमे करओल ओ ताकि ताकि नीक नीक घरक पंच पंच सोतिकेँ लए जाए अपन कन्या देल। अपन दौहित्रीक जे विवाह ओ करओल सेहो सबटा सोतिअहिमे, ओहिना विशाल आडम्बरसँ तथा केवल ललहन झाकेँ जे विशाल सम्पत्ति ओ देल ताहीसँ अनुमान कए सकैत छी जे अपन सात गोट कन्याक विवाहक प्रसङ्गमे हुनका कतबा व्यय करए पड़ल होएत। हिमे हुनका एक गोट मात्र उद्देश्य छल, जातीय बलक संग्रह, हरिसिंह देवी समाजमे प्रतिष्ठा ओ गौरवक उन्नय। तेँ द्वितीय वर किंवा तृतीय वर सनेलकेँ कन्या देबामे हुनका कोनो आपत्ति नहि छल यदि वर उच्च कोटिक, पंच कुलक, विशुद्ध लगाओक सोति रहथि। अपन घरि एको गोट विवाह ओ सोतिक कन्यामे नहि कएल, तथा अपन जेठ बालक राजा पद्मानन्द सिंहक जे विवाह ओ करओल सेहो सोतिमे नहि करओल।

ताहिसँ हरिसिंह-देवीक मर्मस्थानमे आघात होइत अछि ओ हरिसिंह देवीक ओ राजा एकान्त पक्षपाती छलाह । हुनका दृष्टिमे हिनक सदृश महापुरुष मैथिल समाजमे बड़ विरल भेल अछि जे अपन गौरवका एहि रूपसँ रक्षा करत । समाजक परिस्थितिकेँ बुझैत, ओहिसँ अपन स्थानक अनुभव करैत, कोनो उपायसँ अपन सत्ताकेँ अक्षुण्ण राखबाक उद्योग करब सर्वथा स्तुत्य थीक । परन्तु अपन सत्तासँ असन्तुष्ट भए समाजक भित्तिकेँ उखाड़िकेँ फेकबाक उपक्रम करब किंवा अपन सत्ताकेँ अवैध मार्गहुँ बढ़एबाक कुचक्र चारब नितान्त अभिमान थीक, ओ समाजक हित-दृष्टिए ओ कदापि नीक नहि कहल जाए सकैत अछि । तेँ राजा लीलानन्द सिंह एक जन आदर्श महापुरुष छलाह, यथार्थ राजा छलाह, मैथिलक मानरक्षक उदाराशय श्रीमान् छलाह ओ हरिसिंह-देवीक मर्यादाक पालक, ओकर संवर्धक, ओकर गौरवसँ अपनाकेँ गौरवान्वित करबाक इच्छुक, सक्रिय, सदाचारनिष्ठ सद्ब्राह्मण छलाह ।

राजा पद्मानन्द सिंहक जन्म १८५५ ई० मे भेल छल ओ बापक परोक्ष भेलाक पर २० वर्षक वयसमे ई गद्दी पाओल । दानशीलता हिनकहु अपन बापहिक सदृश छल ओ व्यय करबाक प्रवृत्ति ओहिना अनियन्त्रित । सदाचारमे निष्ठा, परलोकक भय, ईश्वरमे भक्ति ओ हरिसिंह-देवी-व्यवस्थाक प्रति श्रद्धा—सब कथूमे ई राजा लीलानन्द सिंहक आत्मज जकाँ रामोचित मर्यादाक परिपालन कएल । ई कहब कठिन अछि जे दान करबामे विवेकक मात्रा बापमे कम छल किंवा बेटामे । वस्तुतः ककरा दातव्य थीक, ककरा नहि दातव्य थीक अथवा ककरा की वा कतेक दातव्य थीक तकर विचार ने बापकेँ छल ने बेटाकेँ । तँ ओ हिनक निर्मापित श्री वैद्यनाथक फाटक चिरदिन पर्यन्त हिनक दानशीलताक शुभ्र यशकेँ सुदूर विस्तारित करैत रहत । बापकेँ समस्त राज्य छलैन्हि; सुनैत छी जे मरबाक बेरि ओ चौदह लाख वार्षिक आयक विशाल राज्य छोड़ि गेलाह । तहिना पहिने राजा वेदानन्द सिंहक सञ्चित प्रचुर द्रव्य छलैन्हि,

नगद टाका । तैओ राजा लीलानन्द सिंह अन्तमे ऋण छोड़ि गेलाह । राजा पद्मानन्द सिंहकेँ राज्यक आधासँ कम अंश भेल ओ सञ्चित द्रव्य सेँ नहिए प्राप्त भेल प्रत्युत किछु ऋण दातव्य छल । फलतः ओहि दान-शीलता एवं व्ययप्राचुर्यसँ ई अपन आर्थिक स्थिति दिनानुदिन खसलाहि करैत गेलाह । सुनैत छी जे नित्य पूजोपरान्त ई स्वर्णदान कएकेँ जल-ग्रहण करथि । अन्तिम समयमे एक दिन एहन भेल जे दानक हेतु सुवर्ण नहि उपस्थित भए सकलैन्हि । परन्तु अपन नियम ई नहि त्यागल । यज्ञो-पवीतसँ पवित्री बहार कए ई स्वर्णदानक विधि सम्पन्न कएल । ताहि सङ्ग-सङ्ग ई शिवजीक बड़ भक्त छलाह ओ श्री वैद्यनाथक फाटक जेहि प्रचुर धनव्यय कए बनबाओल से तकर एक गोट दृष्टान्त मात्र थीक । हिनकामे कवित्वहुक प्रतिभा विशेष छल तथा महादेवक वन्दनामे हिनक रचित हिन्दीमे दू गोट कविता देखल अछि ताहिसँ अनुमान करैत छी जे एहि दिशि हिनक सेवा अवश्य स्तुत्य छल होएत यद्यपि खेद अछि जे से सब कविता एकत्र कतहु उपलब्ध नहि होइत अछि ।

परन्तु हिनक समय विशेषतः गृहकलह ओ मोकदमाबाजीमे बितल । राजा लीलानन्द सिंह अपन चरम अवस्थामे जे चारिम विवाह कएल ताही कारणसँ हुनका अपन जेठ बालक राजा पद्मानन्द सिंहसँ मनोमालिन्य भए गेल ओ तकर मात्रा ततेक बढ़ि गेल जे अन्तमे राजा लीलानन्द सिंह अपन ड्योढ़ी रामनगर त्यागि अपन सबसँ छोटि रानी सीतावतीकेँ सङ्ग लए चम्पानगर चल गेलाह; रामनगरमे राजा पद्मानन्द सिंहक आवास स्थिर रहल । अन्तमे राजा लीलानन्द सिंह चारिम पत्नीसे दू कन्या ओ दू बालकमे जेठकेँ केवल तीनि वर्षक ओ छोटकेँ गर्भस्थे छाड़ि शरीर त्याग कएल । तकरा पाँचो वर्ष नहि भेल तावतहिं रानी सीतावती अपन नाबालिग पुत्रद्वयक अभिभाविका भए राजा पद्मानन्द सिंहसँ राज्यक विभाजनक हेतु मामिला उठाओल । कतोक दिन ई मामिला चलल; कतेक अप्रिय प्रसङ्ग एहि कारणसँ

परिवारमे उपस्थित भेल । तावत् परिवारक हिनकी लोकनिक बीच पड़ि गेलासँ मामिला फड़िछाए गेल, अन्तमे सन्धि भए गेल । जे राजा पद्मानन्द सिंहकेँ राज्यक सात आना अंश भेटल, शेष नओ आना छोट कुमार कालिकानन्द सिंहकेँ देल गेल । राज्य विभाजित भए गेल ।

पुनः १६०२ ई० मे हिनक अपने बालक कुमार चन्द्रानन्द सिंह बापक खरचखिला ओ दिनानुदिन परिवर्धमान ऋणभारसँ असन्तुष्ट भए हिनकासँ राज्यक विभाजनक हेतु मामिला उठाओल । इहो मामिला फड़िछाए गेल ओ सात आनाक आधा अंश कुमार चन्द्रानन्द सिंहकेँ दए देल गेल । परन्तु तावत् राजा पद्मानन्द सिंह ऋणक भारसँ बड़ दबि गेलाह ओ तेँ १६०४ ई० मे ओ अपनो अंश कालिकेँ अपन बालककेँ दए देल ओ स्वयं राज्यकार्यसँ निमुक्त भए गेलाह । एहि सात-आना अंशकेँ नाहि समर्पण पश्चात् लागि ऋण छलैक तकरा चम्पानगरेश राजा कलानन्द सिंह छुड़ौलनि, भाइकेँ । अतएव भागलपुरक जिला-जज रिसीवर नियुक्त भेलाह ओ वापस बर्षक हेतु एहि अंशक ठीका चम्पानगरेशकेँ दए देल गेल । पुनि कुमार चन्द्रानन्द सिंहक निवेदन कएलाक पर हुनक अंश कोर्टसँ कानूनक अधीन कए लेल गेल परन्तु राज्यक सञ्चालनक अधिकार बाहर चम्पानगरेशहिकेँ रहल । राजा पद्मानन्द सिंहक देहान्त १६१० ई० मे भेल ।

आबहि अओ राजा पद्मानन्द सिंहकेँ चारि गोट विवाह ओ ताहि हुनि कोनो सन्तान नहि । हिनक पहिल विवाह जे प्रायः हिनक बाल्यहि कालमे भेल छल "भरि-खण्डवला" मूलक नैष्ठिक धर्मनाथ ठाकुरक बालक मीतनाथ ठाकुरक कन्यासँ छल । छलाह ई जन्मना सोति परन्तु पहिल दिनमे छलाह- कपोरमे कलितनाथ सिंहक कन्यामे विवाह कएलें छलाह ओ पश्चाति तँ कए गोट विवाह कएलें । हिनके कोनहु पक्षक कन्या (कोन पक्षक से ज्ञात नहि भए सकल अछि मुदा अधिकांश सम्भव इएह)

† हिनक प्रसङ्ग पृष्ठ ८७ क टिप्पणी द्रष्टव्य ।

छथि पड़ल अछि जे सलमपुरक "नड़साम-बलिआसए" अतिप्रसिद्ध ललितनाथ मिश्रक दौहित्रीनि, दुर्गानाथ ठाकुरक सोदरामे) राजा पद्मानन्द सिंहक प्रथम विवाह भेल । एहि स्त्रीक असन्ततिक स्वर्गवास भए गेलाक पर हिनक दोसर विवाह भेल मङरौनी, "कन्हौली-सोदरपुर" मूलक धिरनेश्वर झाक सबसँ छोट बालक बदन झाक कन्यासँ । एहि बदन झाक पितिऔत भाए मुरली झाक कन्यामे श्रीनगरेश राजा श्रीनन्दन सिंहक विवाह छल ओ बैमात्रेय बहीनिमे "जमदोली-पाली" मूलक कवि रामी झाक विवाह छल जनिक पौत्र छलाह परसमणि झा जनिक कन्यामे महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह बहादुर अपन पहिल विवाह कएल ओ जनिक पौत्र श्री बलभद्र झा ओ श्री दयानाथ झा सम्प्रति दरभङ्गामे बसैत छथि । बदन झाक सोदर बहिनिक विवाह सलमपुरक "नड़साम-बलिआसए" मात्र प्रसिद्ध ललितनाथ मिश्रसँ छल जनिक एक कन्यामे "खड़ौरए" योगनाथ ठाकुरक एकटा विवाह छल ओ दोसर कन्यामे "खड़ौरए" जगतसिंह ठाकुरक विवाह छल । एही मणि मिश्रक बालक ईश्वरीदत्त मिश्रक कन्यामे राजा लीलानन्द सिंहक तेसर विवाह छल ओ ताहिसँ छोट वर्ग मिश्रक कन्यामे राजा पद्मानन्द सिंहक सेहो तेसर विवाह छल । ई तेसर रानी राजा पद्मानन्द सिंहकेँ असन्ततिके शान्त भए गेलथिन्ह । अस्तु, मङरौनीक "सोदरपुरिए" बदन झाक कन्या, रानी पद्मावतीमे राजाकेँ एक बालक कुमार चन्द्रानन्द सिंह ओ दू कन्या ।

कुल-चित्र (१५)

कन्हौली सोदरपुरक

विघ्नेश्वरझा
= वभनिआमसँ साहेबसुता

कन्या = पालीसँ कवि रामी
चेतनाथ
परलमणि

वबुजन
सोनेश्वर

भैरव

क = महाराजाधिराज
रमेश्वर सिंह

तीर्थमणिझा

क = पालीसँ
श्रीगङ्गाधरझा

क = अलयीस
कुमार रत्नानन्द सिंह

श्रीचन्द्रधरझा
= धौसोतस भोटू सुता

क = वलिआससँ
मणिमिश्र

सदन

वदन

क = राजापद्मानन्द सिंह

क = छण्डवलासँ
योगनाथठाकुर

क = खण्डवलासँ
जगतसिंहठाकुर

ईश्वरीदत्तमिश्र

बबे मिश्र

क = राजालीलानन्दसिंह

क = राजापद्मानन्दसिंह

राजा पद्मानन्द सिंहकेँ पारिम विवाह छल सतलखा, "सोदरपुर" मूलक "रंजाम" शाखाक भुवनेश्वरीदत्त मिश्रक कन्यासे, रानी पद्म-

सुन्दरीसँ । एहिमे राजाकेँ एक मात्र बालक, कुमार सूर्यानन्द सिंह परन्तु अत्यन्त बाल्यावस्थहिँ हिनक देहान्त भए गेल । रानी पद्मसुन्दरी देवी एखन पर्यन्त जीविता छथि ओ दान-पुण्य तथा तीर्थाटन व्रतादि करैत जीवन-यापन कए रहलि छथि ।

अपन दुहू कन्याक विवाह सेहो राजा पद्मानन्द सिंह अपन बापहि जकाँ सत्कुलक नीक सोतिसँ करओल । जेठि कन्या, मोतीदाइक विवाह भेल लालगञ्ज, "सोदरपुर" मूलक "सरिसब" शाखाक मनोहर मिश्रक बालक भैवनाथ मिश्रसँ । राजा दुलार सिंहक सबसँ जेठ जमाए जे कन्हाइ

कुल-चित्र (१६)

म० म० सच्चिदानन्द ठाकुरक ठढौनक प्रपौत्र राघव मिश्रक बालक
पखिआ मिश्र = रसकौस्तुभकार कवि वेणीदत्त झा-सुता

कन्हाइ मिश्र
= राजा दुलार सिंह सुता

हेमनाथ मिश्र

मनोहर मिश्र

वीरनाथ मिश्र

गोन्हू मिश्र

श्री मदन मिश्र

श्री विश्वनाथ मिश्र
=
राजा कलानन्द सिंह सुता

भोलाजि मिश्र
= राजा श्रीनन्दन सिंह सुता

भैवनाथ मिश्र
= राजा पद्मानन्द सिंह सुता

श्री भीमनाथ मिश्र

श्री बुद्धिनाथ मिश्र

श्री रावणेश्वर मिश्र क =
पण्डुआसँ गुणानन्द

मेजर श्री कृष्णानन्द झा प्रभृति

मिश्र छलाह तनिके छोट भाए हेमनाथ मिश्रक ई पौत्र छलाह तथा हिनक जेठ भाए गोसाञि मिश्रक विवाह श्रीनगरेश राजा श्रीनन्दन सिंहक कन्यासँ छल । भेषनाथ मिश्रकेँ पूर्वहुँ एक गोट विवाह सौतिने छल ओ ताहि पक्षक हुनक बालक श्री श्रीकृष्ण मिश्र सम्प्रति सौति छथिए । एहि राज-कन्यामे भेषनाथ मिश्रकेँ तीनि बालक श्री भीमनाथ मिश्र, श्री बुद्धिनाथ मिश्र ओ श्री रामेश्वर मिश्र ओ एक कन्या जनिक विवाह ककरौड़क "दड़ुआ" मूलक गुणानन्द झासँ जनिक बालक मेजर श्रीकृष्णानन्द झा, एम०डी० डाक्टर प्रभृति कए भाइ प्रतिष्ठित योग्य छथि ।

राजा पद्मानन्द सिंहक दोसर कन्याक विवाह छल रुपौली, "पवौली" मूलक "बड़िग्राम" शाखाक धर्मानन्द झाक बालक जनार्दन झासँ । हिनकहु एक गोट विवाह पूर्वहिँ सौतिमे छल, बड़का जातिमे, "रामदेव मिश्र" क लोकमे, महाराज कुमार बाबू रमापति सिंहक दौहित्रीमे ओ ताहि पक्षक हिनक बालक श्री भगीरथ झा श्री ऋद्धिनाथ झा बड़का सौति छथिए । एही जनार्दन झाक दौहित्र विवाह श्री मुकुन्द झा जनिका स्वर्गीय महाराजाधिराज रमेश्वर-सिंह बहादुर अपन एक मात्र कन्या देल । परन्तु वर्त्तनोक राजकन्यामे जनार्दन झाकेँ कोनो सन्तान नहि ।

अपन एक मात्र बालक कुमार चन्द्रानन्द सिंहक विवाह राजा कोइ-लख करायोल, "जोआल" मूलक 'नाहस' शाखाक कमल झाक डेरामे, ओहि कमल झाक प्रपौत्र गोसाञि झाक बालक महोपाध्याय ईश्वरदत्त झा तनिक बहिन उगरी झाक कन्यामे । गोसाञि झाक अपर बालक वेणी झाक बालक वंशमणि झाक कन्यामे राजा कलानन्द सिंहक विवाह छल ओ ओही वंशमणि झाक जेठ भाए बबुआ झाक पौत्र वंशनाथ झाक कन्यामे कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह दुहु भाइक विवाह अछि । कुमार चन्द्रा-

---

† कमल झाक नामपर एक गोट गाछि अछिजे आब सोतिमे प्रतिष्ठित ओ दंव गाछि बूझल जाइत अछि ।

नन्द सिंह अपना बापक समक्षहिँ असन्ततिक अकालहिँ कालकवलित भए गेलाह ओ हुनक सकल सम्पत्तिक अधिकारिणी भेलीह हुनक धर्म-पत्नी रानी चन्द्रावती जनिक दानशीलताक यश समस्त देशजनैत अछि । हिनक दान सर्वदा परमार्थमे कएल अछि ओ विवेकसँ पूर्ण । काशीमे श्यामामन्दिर मिथिला ओ मैथिलक गौरव बढ़ाए रहल अछि ओ ताहि स्थानक विद्यालय, दातव्य औषधालय, क्षेत्र ओ सुयोग्य छात्रकेँ प्रचुर वृत्ति प्रभृति निश्चय आकल्पान्त हिनक कीर्त्तिकेँ अमर बनओने रहत । अपन नैहर कोइलखमे एक गोट स्कूल बनवाए ओहिमे निःशुल्क शिक्षाक प्रबन्ध कए अपन जन्मस्थानक प्रति ऋणक परिशोध ई बड़ उत्तम रीतिसँ कएल । भागलपुरक जनाना अस्पतालकेँ एक लाख टाका दान दए ई नारि-जातिक प्रति अपन कर्त्तव्य सम्पन्न कए गेलि छथि जकर फलस्वरूप सर-कारसँ हिनका रानीक उपाधि प्रदत्त भेल । हिनक सासु रानी पद्मावती सेहो काशीमे तारानाथमन्दिरक स्थापना कए श्यामामन्दिरहि जकाँ सब वस्तुक सुविधाक प्रबन्ध कराए गेलि छथि । कहबाक तात्पर्य जे जाहि दानशील-ताक आदर्श राजा लीलानन्द सिंह स्थापित कए गेलाह ओ राजा पद्मा-नन्द सिंह जकरा पालन करैत अपन जन्म निबाहल , तकर परम्पराकेँ रानी पद्मावती ओ हुनक पुत्रवधू रानी चन्द्रावती कतेक दूरदर्शितासँ, कतेक विवेकितासँ, केहन उदार भावनासँ अनुप्राणित भए अक्षुण्ण राखल, चिर-कालक हेतु ओकरा अक्षय बनाए गेलीह ।

१९३६ ई० मे रानी चन्द्रावतीक देहान्त भए गेल ओ तखन न्यायतः हिनक सम्पत्तिक अधिकारी भेलाह हुनक स्वामीक भागिन श्री भीमनाथ मिश्र तौन् भाइ । राजा कीर्त्त्यानन्द सिंह बहादुर अपन वैमात्रेय भाइक सम्पत्तिक हेतु दावा कएल परन्तु हिन्दू धर्मशास्त्रक नवीन संशोधनक अनुसार पित्तीसँ पूर्व बहिनिक ओ बहिनिक बालकक स्वत्वाधिकार निर्णीत कएल गेल छल ओ सम्पत्ति जे कुमार चन्द्रानन्द सिंहक छल तेँ हुनक पित्ती राजा बहादुरसँ पूर्व हुनक भागिन श्री भीमनाथ मिश्र लोकनिकेँ

स्वत्व प्राप्त छल । किछु दिन मामिला चलल परन्तु पुनि लगले सन्धि भए गेल ओ राज्यक अढ़ाइ आना अंश श्री भीमनाथ मिश्र लोकनिकें दए राजा बहादुर डेढ़ आना अंश लए सन्तुष्ट भए गेलाह । रामनगरमे श्री भीमनाथ मिश्र लोकनिक डेउढ़ी स्थिर रहल ।

श्री भीमनाथ मिश्र सरकारी पुलिसक सुपरिन्टेण्डेन्ट छथि तथा अपन विद्यानुराग, सहृदयता एवं उच्च विचारक हेतु समाजमे सुप्रसिद्ध छथि । श्री बुद्धिनाथ मिश्र रामनगरमे रहैत छथि ओ श्री रावणेश्वर मिश्र, पटना हाइकोर्टक एडभोकेट, भागलपुरमे रहैत अपन राज्यक कार्य-सञ्चालन करैत छथि। वस्तुतः ई लोकनि अपन गुणगरिमासँ अखिलसमाजक मानवर्धन कए रहल छथि । श्री भीमनाथ मिश्रक विवाहो भेल अछि सोतिक कन्यामे, "रसौली-दरिहरा" मूलक रमानन्द झाक कन्यामे, श्रीनग-रेश साहित्यसरोज राजा कमलानन्द सिंहक दौहित्रीमे । अपन कुल ओ अपन आतिथ्य हिनका बड़ गौरव छन्हि तथा अपन असाधारण गुण-राशिसँ समस्त सोतिपुराकें मुग्ध कए दू वर्ष भेल ई सोतिलोकनिसँ थोड़ मनमालिन्यक ओलए निवेदन कराए हुनकासँ अनुग्रह प्राप्त कएल अछि तथा पुनि सोति समाजमे परिगृहीत भए अपन नष्ट सत्ताकें उपार्जन कएल अछि । वस्तुतः हजारी परमानन्द चौधरीक वंशमे ई "भगीरथ" भए प्रादुर्भूत भेल छथि जे हरिसिंह-देवी समाज-व्यवस्थामे अपन सत्कुलक उद्धार कएल अछि । हजारी परमानन्द चौधरीक सन्तान ई प्रथमे थिकाह जे सोतिमे परिगृहीत भेल छथि ओ सए वर्षसँ पुरान सोतिश्राद्धक द्वन्द्वकें शान्त कए ई समाजक अनन्य उपकार कएल अछि ।

———o———

राजा लीलानन्द सिंहक चारिम विवाहमे जेठ बालक राजा कला-नन्द सिंहक जन्म १८८० ई० मे भेल छल ओ बापक देहान्तक समयमे केवल तीनि वर्षक शिशु छलाह । पारिवारिक वैमनस्यक कारणें हिनक माए

रानी सीतावती अपन दुहू शिशु पुत्र ओ दू कुमारि कन्याकें लए राम-नगरसँ फराक भए अपन डेउढ़ी चम्पानगर मध्य स्थिर कएल ओ राजा पद्मानन्द सिंहसँ राज्य विभाजित कराए नओ आना अंशक अधिकार प्राप्त कए अपन पुत्रक नाबालिगीमे अत्यन्त चतुरतासँ राज्यक प्रबन्ध कएल ओ प्रचुर धन सञ्चित कए अपन पुत्रद्वयकें देल । अपना जीवनक अन्तिम समय धरि राजा कलानन्द सिंह अपन कनिष्ठ भ्राता राजा कीर्त्या-नन्द सिंह बहादुरक सङ्गहिं अतीव सौहार्दसँ जीवन यापन कएल ओ अपन दुहू भाइक मध्यमे वैमनस्यक गन्धो नहि आबए देल । परन्तु जखन हिनक ज्येष्ठ पुत्र कुमार रमानन्द सिंह वयस्क भेलाह, योग्य भेलाह तखन अपना मध्य कोनहु मनोमालिन्यक कारणें दुहू भाइ पृथक् भए गेलाह । चम्पा-नगरमे राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुरक आवास स्थिर रहल ओ राजा कलानन्द सिंह गढ़बनैली गेलाह । बापक परोक्ष भेलाक पर गढ़ बनैली मध्य ज्येष्ठ भ्राता कुमार रमानन्द सिंह रहलाह ओ कनिष्ठ कुमार श्रीकृष्णा-नन्द सिंह भागलपुर जिलामे सुलतानगञ्ज नामक स्थानमे गङ्गाक तट-पर अपन डेउढ़ी स्थिर कएल । राजा कलानन्द सिंहक देहान्त १९२२ ई० मे भेल । सुनैत छी जे हिनका नाम पर वैदिकक पण्डित त्रिलोचन झा मैथिलीक एक गोट अलंकारक ग्रन्थ "कलानन्द-विनोद" नामक रचने छलाह परन्तु से हमरा दृष्टिपथमे नहि आएल अछि ।

हिनक विवाह छल भराम, "नाहस जीअनि" मूलक श्रोत्रिय कमल झाक प्रतिष्ठित डेरामे जाहिमे कुमार चन्द्रानन्द सिंहक विवाह छल । देव झाक बालक यशमणि झाक कन्यामे, "खुसिआल मिश्र" पञ्जिमे हुनक विवाह छल ओ वेणी झाक छोट भाए महोपाध्याय ईश्वरीदत्त झाक बालक उगरी झाक कन्या रानी चन्द्रावती छथीह । इएह एकटा हिनका विवाह जाहिमे हिनका दू गोट बालक, कुमार रमानन्द सिंह ओ कुमार श्रीकृष्णानन्द सिंह तथा तीनि कन्या । तीनू कन्याक विवाह सोतिमे भेल अछि । एक गोटाक विवाह छल धजानक "रसौली-दरिहरा" मूलक सुप्रसिद्ध

वैयाकरण पण्डित हरिनारायण झाक बालक, बाबू बंशीधारी सिंहक दौहित्र राधारमण झासँ जनिक परोक्ष भए गेल अछि ओ कुमरि असन्ततिका विधवा छथि। दोसरक विवाह भेल महरैल, "पूड़े-नरऔन" मूलक मुकुन्द झाक बालक जयनाथ झासँ†। हिनक बालक लोकनि पूर्ण सुयोग्य भेल छथिन्ह तथा एक गोट कन्याक विवाह हटाढ़क "बलिआसए" लेखपति झाक बालक श्री शिवनाथ झासँ भेल अछि। तेसरि कन्याक विवाह भेल अछि लालगञ्ज, "सोदरपुर" मूलक "सरिसब" ग्रामक गोन्दू मिश्रक पौत्र श्री मदन मिश्रक बालक श्री विश्वनाथ मिश्रसँ। ई गोन्दू मिश्र कन्हाइ मिश्रक भातिज छलाह जनिक विवाह राजा दुलार सिंहक कन्यामे छल ओ मनोहर मिश्रक पितियौत भाए छलाह जनिक एक गोट बालक भैरवनाथ मिश्रक विवाह राजा पद्मानन्द सिंहक कन्यामे छल ओ दोसर बालक गोलोकी मिश्रक विवाह श्रीनगरेश राजा श्रीनन्दन सिंहक कन्यामे छल।

कुमार रमानन्द सिंहक जन्म १९०१ ई० मे भेल ओ देहावसान १९४० ई० मे। राज्य-कार्य-सञ्चालनक हिनकामे अद्भुत क्षमता ओ कौशल छल। १९२१ ई० मे अपन निवास ई गढ़ बनौली लए आए ओतए कृषि ओ वाणिज्यक बड़े उत्साहसँ उन्नति लागि गेलाह। वैज्ञानिक रीतिसँ कृषि हो तदर्थ ई शिक्षाक सुप्रबन्ध सेहो कएल ओ स्वयं से करए लगलाह। अपना लोहियाम संस्कृतक विद्यालय ओ हाइ स्कूल अपना पिताक नामपर स्थापित कए ई ताहि प्रान्तक बड़ पैघ अभावक पूर्ति कराओल। भागलपुरक कलेजकेँ दान, बिहार संस्कृत समितिकेँ तत्कक सर्वोत्तम निबन्धक हेतु प्रतिवर्ष पदक देल जाए तदर्थ दान, मुङ्गेरक

† जयनाथ झा सिहौलि माण्डर मूलक फेकू झाक दौहित्र छलाह जनिक छोट भाए ननू झाक विवाह भाइलाल झाक कन्या, बछटन मिश्रक दौहित्री, राजा लीलानन्द सिंहक दौहित्रीपुत्री मे छल। फेकू झाक बालक श्री गङ्गानाथ झाक विवाह राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुरक कन्यामे छल।

जमालाबाद स्कूलक हेतु दान, अपना माइक नामपर राधानगरमे दातव्य औषधालय तथा पूर्णियाँ-अस्पतालमे रमानन्द-ब्लाक प्रभृति अनेको सार्वजनिक हितक कामनासँ कएल हिनक दान अजर कीर्ति अछि। सङ्गीतक ई बड़ रसिक ओ ज्ञाता छलाह, नाटकक बड़ प्रेमी रहथि तथा अपनहु नाटकक रचना करथि; खेल-व्यायामादिक उन्नतिक हेतु पूर्ण सचेष्ट रहैत छलाह। बड़ अल्पवयमे हिनक देहावसान भए गेल।

हिनका दू विवाह, प्रथम मङरौनी, "करहीओ सोदरपुर" मूलक जिबेश्वर झाक प्रपौत्र भैरव झाक* कन्यामे। ताहिमे कुमारकेँ कोनो सन्तति नहि भेल तेँ दोसर विवाह ई कएल सोतिक कन्यामे, "खड़ौरए" श्री दुर्गेश्वरी ठाकुरक† कन्यामे। एहि पक्षमे कुमार साहेबकेँ एक गोट कन्या छथिन्ह जनिक विवाह अचिरहिं भावी अछि।

कुमार श्री कृष्णानन्द सिंहक जन्म १९०७ ई० मे थीक तथा हिनक विद्याप्रेम ओ सङ्गहि सङ्ग आखेट-प्रियता सर्वविदित अछि। हिनक विवाह सोतिक कन्यामे कराओल गेल जे अद्यावधि वर्ष पूर्व राजा वेदानन्द सिंहक विवाह जकाँ सोतिसमाजमे आन्दोलन कए देलक। ई कन्या एक गोट पैघ खड़ौरएक, "सिसऔत" पाञ्जिक महेश्वर ठाकुरक सबसँ छोट बालक केवलकृष्ण ठाकुरक। खेदक विषय थीक, अत्यन्त खेदक, जे एहन पैघ कुलक, एहन विद्याप्रेमी, एहन सात्त्विक स्वभावक होइतहुँ श्री कुमार साहेब अपन दू गोट कन्याक विवाह एहन कराओल अछि जे हरिसिंह देवोक

* एहि भैरव झाक कन्यामे मङरौनीक पलिवार श्री गङ्गाधर झाक विवाह छल जनिक बालक श्री चन्द्रधर झा थिकाह।

† ई ठाकुर बड़ पैघ कुलक सोति; हिनक बाप सिसऔत छलाह ओ अपना समयक सबसँ पैघ सोति। श्री दुर्गेश्वर ठाकुरक विवाह उजानक नरनाथ झाक कन्यामे अछि जे नरनाथ झा श्रीनगरेश राजा कमलानन्द सिंह ओ राजा कालिकानन्द सिंहक साक्षात् मसिऔत भाए रहथि।

कोन कथा, सनातन धर्म रक्षार्थ सनहक देलमे कतयसँ अनुसन्धान यदि नाहुलँ अनुसंधित नहि भए सकल अछि। अवश्य कहिए कानि एहि विषयमे हम एतहि छोड़ि देल छी परन्तु एतबा यदि हम अवश्य कहब जे एहन पुरुषसँ हिनक पूर्वज के प्रतिष्ठा किवा गौरव लक्षित करैत [illegible] कुमार साहेब पहन एहि विषयसँ हामहि व्यक्त कए देल।

राजा कमलानन्द सिंह बहादुरक अवदान सर्वत्र सर्वविदित अछि। प्रयाग विश्वविद्यालयक ई एक गोट सुयोग्य स्नातक छथाहु तथा हिनक विद्वता सुप्रसिद्ध छल। परन्तु सबहुँ विशेष ख्याति प्राप्त करए ई आलोचक तिनुगनामे। एहि विषयपर हिनक लिखल एक गोट पुस्तकी अछि जे साहित्य-प्रिय समाजदे बड़ आदरसँ देखल जाइत अछि। भागलपुरक कालेजमे दान, पटनाक मेडिकल कालेजमे दान, पटना विश्वविद्यालयमे वर्नलीक नामपर रीडर-शिप-स्थापनार्थ हेतु दान, ओ सबसँ विशेष कलकत्ता विश्वविद्यालयके [illegible] हेतु दान हिनक कीर्तिकें अक्षय कएलें अछि। राजनीतिमे सेहो हिनक योगदान साधारण नहि छल। पूर्वमे बङ्गालक काउन्सिल, ओ पश्चात् बिहारक काउन्सिलक सदस्य भए ई प्रजाक हितक बड़ काज कएल। महात्मा गान्धी जखन चम्पारनमे सत्याग्रह आरम्भ कएल तखन ओतएक रैयतक स्थितिक विचारार्थ बिहार-सरकार जे कमीटी बनाओल तहिमे महात्माजीक सङ्ग इहो एक गोट सदस्य छलाह। अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक भागलपुर अधिवेशनक ई स्वागताध्यक्ष छलाह तथा मुजफ्फरपुरक बिहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनक सभापति छलाह। बिहार-लैण्डहोल्डर्स-एसोसिएशनक ई बहुत दिन धरि मन्त्री रहलाह। अपन कुलक मर्यादाक रक्षा करैत परिवर्तित परिस्थितिमे कोन प्रकारेँ जमिन्दारकेँ रहबाक थीक तकर ई अपूर्व आदर्श छलाह। प्रताप, ऐश्वर्य ओ पाण्डित्य सबहिक अपूर्व सम्मिश्रण हिनकामे छल ओ हिनका विद्या लक्ष्मी ओ सरस्वती दुहूक सामञ्जस्य वस्तुतः

कुल-चित्र (१९)

माण्डरमूलक जगीर शाखाक बीजी पुरुष
महोपाध्याय रघुपतिक वृद्ध प्रपौत्र

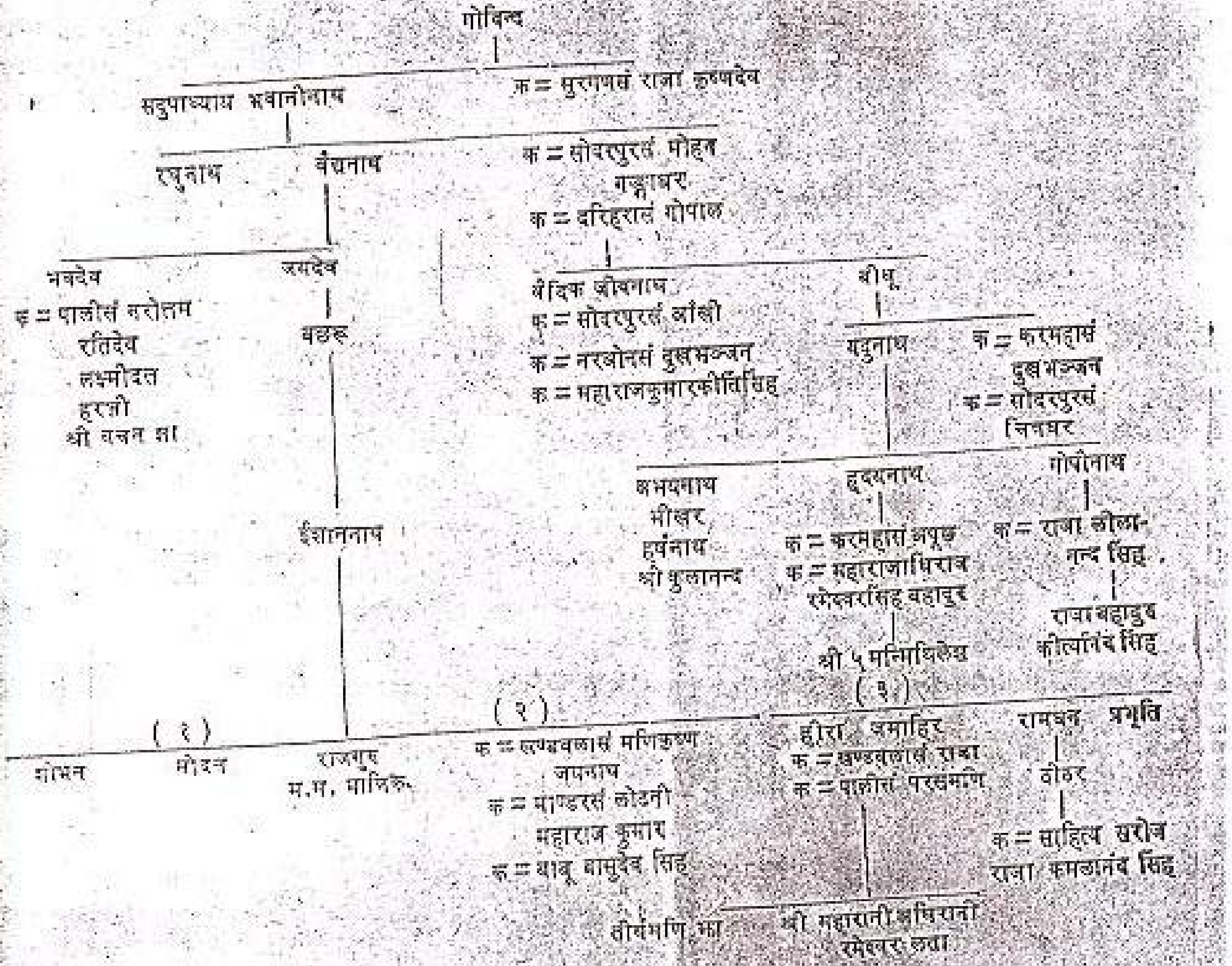

आश्चर्यजनक छल। हिनक सदृश प्रतापी राजा हिनका कुलमे हिनक प्रपितामहे छलाह, दोसर नहि। १९३८ ई० क जनवरीमे हिनका काशीलाभ भेल। वस्तुतः हिनका प्रसङ्गमे कहल जाए सकैत अछि जे ई Last of the Barons छलाह, ओहि श्रेणीक जमिन्दार अन्तिमे छलाह।

हरिसिंह-देवीक प्रति राजा बहादुर जाहि नीतिक अवलम्बन कएल से हिनक बाप किंवा पितामहक नहि छल, प्रत्युत हम तँ कहब जे से हिनक प्रपितामहक छल। हुनका प्रसङ्गमे हम कहि अएलहुँ अछि जे अपन प्रतापक दर्पसे एक गोट राजाकेँ हरिसिंह-देवी-व्यवस्थाक भेदभाव सह्य नहि भए सकैत अछि परन्तु यावत् समाजमे रहबाक अछि तावत् ओकर उपेक्षो करब सम्भव नहि। अतएव अपन प्रपितामहहि जकाँ इहो सौति-समाजक प्रति ओहो आक्रमण-नीतिक अवलम्बन कएल ओ हरिसिंह देवीक मर्मस्थानमे प्रहार करए लगलाह। अपना हिनका एक गोट मात्र विवाह ओ से बेतिया, "बेलओंच" मूलक "सुरह" शाखाक कुमरौशाक कन्यासँ। बेलओंचएक ई महावंश योग्यक बड़ पुरान ओ प्रतिष्ठित डेरा थीक ओ अद्यपर्यन्त एहि महावंशकेँ हरिसिंह-देवीक उच्चसँ उच्च श्रेणीक सङ्ग बड़ घनिष्ठ सम्बन्ध रहि आएल अछि। राजा बहादुरकेँ छओ गोट पुत्र ओ तीनि गोट कन्या। अपन जेठ भातिज कुमार रमानन्द सिंहक पहिल विवाह तँ नहि परन्तु छोट भातिज कुमार श्रीकृष्णानन्द सिंहक विवाहसँ लए अपन तीनि गोट बालकक ओ पुनि जेठ भातिजक दोसर विवाह—ई पाँच गोट विवाह जे ओ अपना समक्षमे करओलन्हि एहि पाँचो विवाहक हेतु पाँच गोट सौतिक कन्या ई अपना ओहिठाम लए गेलाह।

† एहि कुमर झाक पौत्रीमे मिथिलाक वरपुत्र स्वनामधन्य डाक्टर श्री अमरनाथ झाक विवाह छल ओ एही कुमर झाक सुपुत्र श्री चन्द्रमोहन झा सम्प्रति अपन गुण-गरिमासँ मैथिल जातिकेँ गौरव प्रदान कए रहल छथि।

एहिसँ गवर्स पूर्व कुमार श्रीकृष्णानन्द सिंहक विवाहार्थ सर्वसीमाक लड़ौरए केवलकृष्ण ठाकुरक कन्या ओ सबन कुमार रमानन्द सिंहक द्वितीय विवाहक हेतु सोमपुरक लड़ौरए श्री दुर्गेश्वर ठाकुरक कन्या गेलि । ई दुहू दम्पति "द्विरागमन" धरिक अंगुक्ष सौभिक बालक छलाह श्री महाकुलक छलाह । हिनका बालक मध्य सबसँ जेठ कुमार श्री श्यामानन्द सिंहक विवाह सरिसबक "भवरौली-कुजौली" मूलक दिवाकर झाक कन्यासँ, दोसर कुमार श्री विमलानन्द सिंहक उजानक "रतौली-बरिहरा" मूलक गोविन्दनारायण झाक कन्यासँ, ओ तेसर कुमार श्री तारानन्द सिंहक विवाह उजानक "कन्हौली सोदरपुर" मूलक पद्मदत्त झाक कन्यासँ भेल । एमहर जे ई भाइक विवाह भेल छैन्हि से धनटक श्रीहिराम, चारिम कुमार श्री दुर्गानन्द सिंहक पलाम् "खड़िग्राम-दर्वली" मूलक कीर्तिकानन्द झाक कन्यासँ ओ पाँचम कुमार श्री जयानन्द सिंहक सिहबाड़ "सम्महुर-दीघी" मूलक चौधरी भैरव ठाकुरक कन्यासँ । छठम, सबसँ छोट कुमार श्री आद्यानन्द सिंह अविवाहिते छथि । तीनू कन्याक विवाह सेहो राजाबहादुर तोतिमे कराओल । एक गोटाक इसहपुर "सिहौलि-माण्डर" मूलक फेकू झाक बालक श्री गङ्गानाथ झासँ । हिनक पित्ती मधू झाक विवाह राजा लीलानन्द सिंहक दौहित्रीपुत्री "सुखारए" आहलाल झाक कन्यासँ छल ओ हिनक भागिन जदनाथ झाक विवाह राजा कलानन्द सिंहक कन्यासँ छल से पूर्वहिं कहि आएल छी । श्री गङ्गानाथ झाकेँ कोनो सन्तान नहि ओ हिनक स्त्री राजकुमारी सेहो स्वर्गीया भए गेलीह । दोसर कन्याक विवाह उजानक "कन्हौली सोदरपुर" मूलक श्री केशवदत्त झासँ । हिनक पित्ती पद्मदत्त झाक कन्यासँ हिनक सार कुमार श्री तारानन्द सिंहक विवाह छन्हि । एहू राजकुमारीकेँ कोनो सन्तति नहि । तेसर राजकुमारीक विवाह मधेपुरक "लड़ौरए" बाबू श्री गणपति सिंह साहेबक जेठ बालक बाबू श्री दुर्गानन्दन सिंहसँ । हिनका बालको छथिन्ह तथा हिनक एक गोट कन्याक विवाह तोतिमे लखनौरक "झंझार-

पुर-करमहा" मूलक टेकानन्द झाक बालक श्री विश्वानन्द झासँ भेल अछि ।

राजा बहादुरक सब बालक सरस्वतीक उपासक, विद्वान् ओ गुणवान् । कुमार श्री श्यामानन्द सिंह सङ्गीत-विद्या-विशारद छथि । कुमार श्री विमलानन्द सिंह मोटर ओ विद्युत् विषयक विशेषज्ञ छथि । कुमार श्री तारानन्द सिंह बी० ए० बिहार व्यवस्थापिका सभामे जमिन्दारक निर्वाचित सदस्य छथि ओ बड़ तत्परतासँ राजनीतिमे योगदान कए रहल छथि । कुमार श्री दुर्गानन्द सिंह पाश्चात्य दर्शनक बड़ उत्कृष्ट विद्वान् छथि ओ पटना विश्वविद्यालयसँ एम० ए० क उपाधि प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भए प्राप्त कए विलायत जाए ओतहुक केम्ब्रिज विश्वविद्यालयमे मनोविज्ञान-विषयक विशेषज्ञता प्राप्त कए एम० एसी० क उपाधि प्रतिष्ठाक सङ्ग पाबि देश आएल छथि ओ सम्प्रति पटना विश्वविद्यालयमे रिसर्च करैत छथि । आओर ई कुमार एखन छात्र छथि ।

—:०:—

एतेक दूर धरि हम राजा दुलार सिंहक प्रथम विवाहक ज्येष्ठ पुत्र राजा वेदानन्द सिंहक वृहत् वंशवंशक परिचय देल अछि । ई लोकनि बनैली शाखाक कहबैत छथि यद्यपि बनैलीमे आब केओ नहि रहैत छथि, बनैली उजड़ि गेल अछि तथा हिनकालोकनिक निवास अनेक ठाम अछि यथा रामनगर, गढ़बनैली, सुल्तानगञ्ज ओ चम्पानगर । राजा दुलार सिंहक अपर विवाहक कनिष्ठ बालक राजा रुद्रानन्द सिंहक सन्तान श्रीनगर शाखाक कहबैत छथि । ओना तँ बनैली राजा दुलार सिंहक प्रतिष्ठापित ओ हुनक सन्तान तँ सब केओ, दुहू शाखा, समाने । तँओ एमहर आबि सम्पत्तिक विस्तार मध्य विशेष भेद भए गेलासँ राजा दुलार सिंहक ज्येष्ठ बालकक सन्तान अपनाकेँ बनैली राजवंशक कहैत रहलाह ओ छोट

राजा रुद्रानन्द सिंहक अपरवंशमे ओही वंशक एक गोट बालकक रूपमे श्रीनगरेश कहाओल ।

———:•:———

राजा रुद्रानन्द सिंहक प्रसङ्गमे अनेक विषय पूर्वहिँ कहि आएल छी । बालक परोक्ष होइतहिँ ई अपन जेठ वैमात्रेय भाए राजा वेदानन्द सिंहसँ पृथक् भए गेलाह । भागलपुरदर्पणकारक कथन छन्हि जे तदुपरान्त ई अपन आवास बनैलीसँ श्रीनगर लए आनल परन्तु से भ्रान्ति थीक । श्रीनगरक स्थापना हिनक देहावसानक पश्चात् भेल अछि जकर सबसँ दृढ प्रमाण ओकर नामे थीक जे हिनक बालकक नामपर अछि । अपने ई भाइसँ पृथक् भेलोँ अपन जन्मस्थान बनैली नहि त्यागल. यावज्जीव ओतहि रहलाह । सुनल छी जे राज्यविभाजनोपरान्त हिनका साढ़े तीनि लाख वार्षिक आयक राज्यांश भेटल परन्तु १८८२ ई० मे जखन हिनक बालक राजा श्रीनन्दन सिंहक देहान्त भेलाक पर श्रीनगरक स्टेट कोर्ट आफ वार्डस् क अधीन कएल गेल तखन एकर आय* दू लाख अठसठि हजार मात्र छल । अतएव स्पष्ट अछि जे जाहि रूपसँ बनैली राजक दिनानुदिन उन्नति होइत गेल ताहि रूपेँ श्रीनगरक नहि भेल, प्रत्युत आदिअहिसँ एकर क्रमिक ह्रासे होइत गेल । परन्तु कुलक आदिम निवास स्थान धँगनी ग्राम बेलवारामे बनैली एवं श्रीनगर दुहू अंशमे पड़ल ओ अद्यावधि ओ हिनकहि लोकनिक अधिकारमे अछि ।

अत्यन्त खेदक विषय थीक जे श्रीनगरेश राजा रुद्रानन्द सिंह किंवा राजा श्रीनन्दन सिंहक जीवन-वृत्तान्तक प्रसङ्ग अइ अल्प बुझल होइत अछि । अनुमानतः इएह स्थिर होइत अछि जे राजा रुद्रानन्द सिंहक जन्म अपन जेठ वैमात्रेय भाए राजा वेदानन्द सिंहसँ दश-बारह वर्ष पश्चात् भेल हो कारण जे राजा दुलार सिंह प्रायः प्रथम स्त्रीक देहावसानोत्तर

* श्रीनगर-बनैली सर्वेसेटलमेण्ट रिपोर्ट पृष्ठ २६

कुल-चित्र (१७)

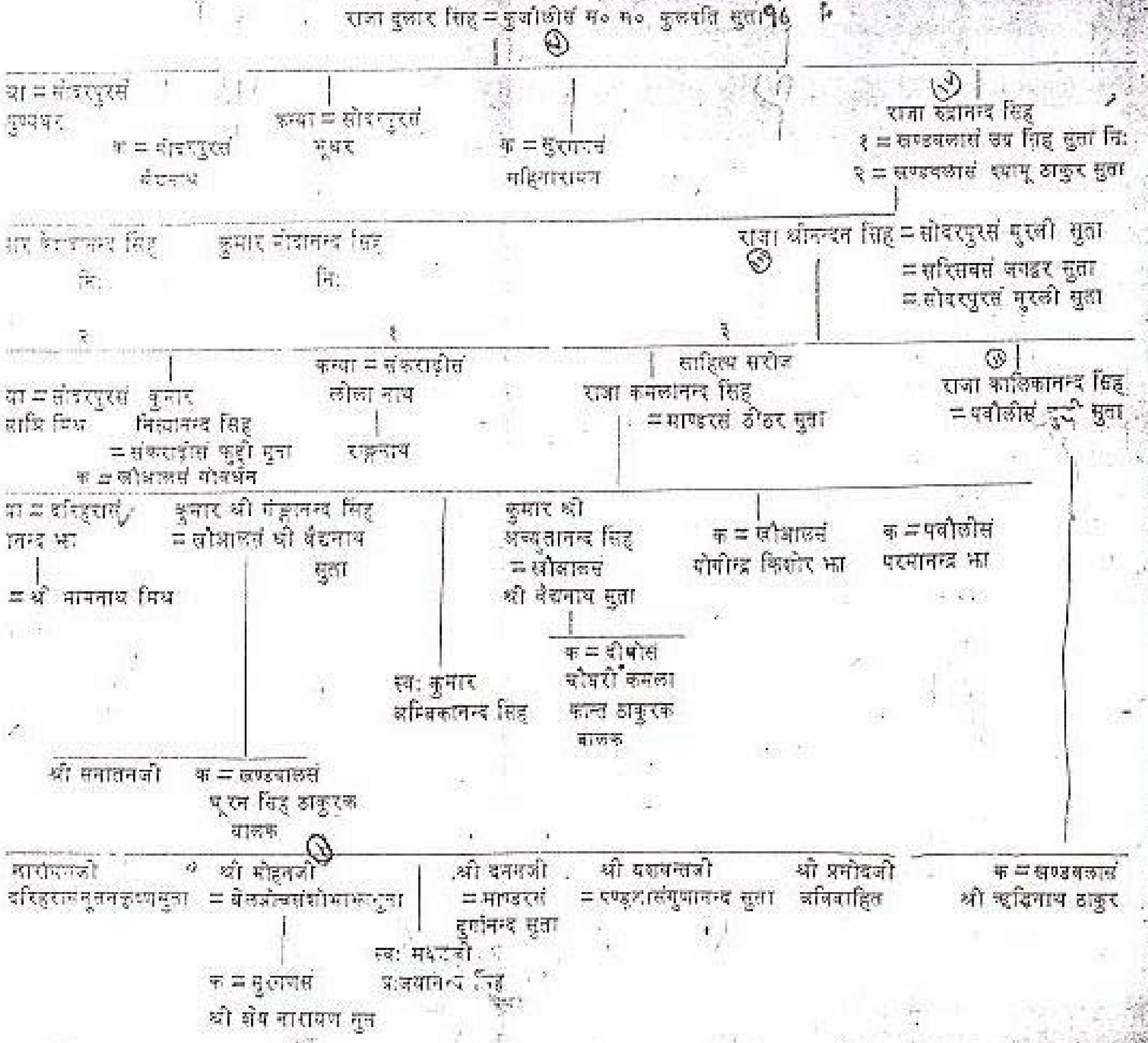

बीसर विवाह कएल श्री ताहिमे हुनका एक गोट मात्र बालक राजा रुद्रानन्द सिंह श्री चारि गोट कन्या जाहिमे प्राय: दु गोटए तँ निश्चय राजासँ जेठि छलीह । अतएव राजा रुद्रानन्द सिंहक जन्म समय प्राय: १७६० ई० क पश्चातहिँ होएत, पूर्व नहि, १८२१ ई० मे वापक देहावसानक समयमे ई २५–३० वर्षक छल होएताह श्री तकर दश-पन्द्रह वर्षक मध्यहिँ, सम्भवत: १८४० ई० क पूर्वहिँ ई देहत्याग कएल ।

हिनक एक गोट विवाह जे हिनक दाम्पहिक समयमे भेल से भौरक उग्रसिंह ठाकुरक कन्यामे, कोन विवाहक कन्यामे से कहि नहि परन्तु श्री राजा लीलानन्द सिंहक माइक सोदरा नहि छलीह । एहि रानीक अलन्त्लिक स्वर्गवास भेलाक पर ई बीसर विवाह कएल, बेतिआ, "खण्डवला" मूलक "बेहटा" शाखाक श्याम ठाकुरक कन्यामे, "महादेव झा" पाँजिमे । अहि ठाकुरक प्रपौत्रक पौत्र ज्योतिषी रघुनन्दन ठाकुर*क परिचय पूर्वहु अनेक ठाम आएल अछि । ई पैघ योग्य छलाह श्री हिनक सन्तान-कोटिमे दु गोट पाँजिक लोक, "नवरकोट" श्री "महादेव झा" क, अनेकानेक पड़ैत छथि । हिनके वृद्धप्रपौत्र छलाह श्यामू ठाकुर । हिनक विवाह बेतिआक "सुवइ-बेलऊँच" मूलक

---

‡ पृष्ठ २२ क ऊपर श्री अन्तिम टिप्पणी द्रष्टव्य ।

* एहि ज्योतिषी रघुनन्दनक चर्चा पृष्ठ ४६ क प्रथम टिप्पणीमे द्रष्टव्य । हिनक दौहित्रक दौहित्र पञ्जिकार रामकृष्ण झा छलाह जनिक परिचय पृष्ठ १०२ क टिप्पणीमे द्रष्टव्य । रघुनन्दन ठाकुरक दौहित्रीमे फलावार म० म० गोकुलनाथ झाक तिनिऔत भाए म० म० पुर्णीश्वरक विवाह छल । हिनक एक गोट बालक हरिकृष्णक दौहित्रीपुत्र छलाह युवचारए लक्ष्मीदत्त झा जनिक विवाहक कागतमे नवरकोट पाँजि पसरल अछि । लक्ष्मीदत्त झाक दौहित्रीमे नइआर-करनहा मूलक जलधर झाक विवाह छल श्री जलधर झाक दौहित्रीमे सर्वसमाक खजौरए श्रीकृष्ण ठाकुर

रमण झाक कन्यासँ छल। रमण झाक अनुज श्री रमण झाक जेठ भाए पाणि ग्रहण कुरु भाइक विवाह "[illegible]" मूलक महादेव झाक [illegible]मे छल ओ तेँ एहा महादेव झाक नाम परक पाँजि हिनका [illegible] भेल। [illegible] पाँजि श्रीनन्दक सन्तानकेँ [illegible] अछि कारण जे सोतिमे यद्यपि महादेव झा पाँजि बहुत दिन [illegible] भए गेल अछि तेँ सोतिमे एकर सत्ता उद्धव अछि परन्तु [illegible] [illegible] जे [illegible] निर्धारित [illegible] एखन [illegible] अछि आहिमे महादेव झाक सत्ता परमानन्द चौधरीसँ स्थूल अछि ओ तेँ राजा रुद्रानन्द सिंहक बालक राजा श्रीनन्दन सिंहकेँ बापक उच्च पाँजि "परमानन्द चौधरी" नहि, माइक गोत्र पाँजि "महादेव झा" नामेँ ख्यात भेल।

राजा रुद्रानन्द सिंहकेँ तीनि गोट बालक मात्र, कन्या नहि। एहिमे जेठ दुइ कुमार कैलाशानन्द सिंह ओ कुमार मोदानन्द सिंह नेनहिमे काल-कवलित भए गेलाह। एही मध्ये बनैली फौजदारीक उपद्रवसँ आक्रान्त भए गेल छल, ओ एक जलवायु [illegible] दूषित भए अस्वास्थ्यकर छल। राजा रुद्रानन्द सिंहक वंशक रक्षक एक मात्र कुमार श्रीनन्दन सिंह, सेहो [illegible] पराभूत [illegible] [illegible] छलाह। अतएव राजाक कहैत लोकनि,

---

श्री बालकृष्ण ठाकुर दु भाइक विवाह छल तथा जलधर झाक पौत्रीसँ [illegible] बजनाथ मिश्रक विवाह छल जनिक बालक श्री लक्ष्मीनाथ मिश्र छथि। ज्योतिषी रघुनन्दन ठाकुरक दोसर बालक बालकृष्णक दौहित्र छलाह वृषभानु नरपति ओ नरपतिक पौत्र कृष्णपतिक कन्यासँ बेलऔंचक [illegible] भूपण झाक विवाह छल जनिक बालक कुमर झा छलाह। एही बालकृष्ण ठाकुरक प्रपौत्र श्यामू ठाकुर छलाह।

* एही झाक बालक छलाह भूपण झा जनिक बालक कुमर झाक चर्चा कए ठाम आबि गेल अछि।

कुल-चित्र (१८)

खण्डवला मूलक बेहट शाखाक बीजी पुरुष
(महामहोपाध्याय महाराज महेश ठाकुरक पितामह भ्राता)
महिपति ठाकुरक प्रपौत्रक पौत्र

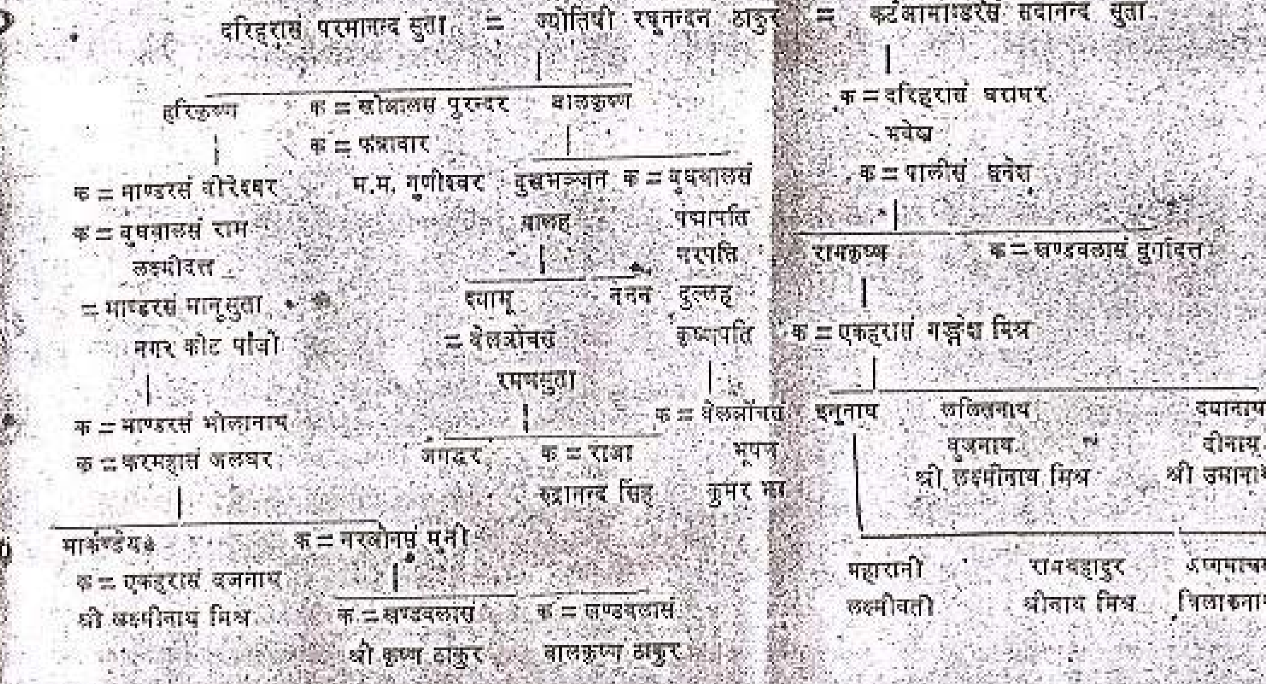

विधवा, जे हुनकहि आश्रममे रहैत छलीह, वंशरक्षाक उद्देश्यसँ, अपन दत्तक भागिनकेँ लए, बनैली त्यागि, सौरानदी पार कए कोसीक पश्चिम आबि डेवढ़ी स्थिर कएल जे कुमरक नामपर श्रीनगर कहाओल ओ अद्यापि हुनकालोकनिक आवास ओतहि अछि। राजा लीलानन्द सिंह सेहो एही मध्यमे बनैली त्यागि रामनगर गेल होथि से सम्भव ओ राजा लीलानन्द सिंह १८५१ मे गद्दीपर बैसलाह तेँ १८५५ क प्रान्त हुनक बनैली त्यागबाक समय मानि ली। कुमार श्रीनन्दन सिंह एहिसँ किछु पूर्व त्यागने छल होथि ओ ताहि समय हुनक वयस छओ वर्ष मात्र छल। एहि अनुमानसँ राजा श्रीनन्दन सिंहक जन्म-समय प्रायः १८४५–४६ स्थिर होइत अछि। शरीरत्याग कएल ई १८८० ई० मे ओ हुनक सबसँ जेठ बालक कुमार नित्यानन्द सिंहक जन्म १८७० ई० मे भेल छल। ताहू विचारसँ राजा श्रीनन्दन सिंहक जन्म-समयक जे अनुमान एतए लगाओल अछि से समीचीन बुझना जाइत अछि।

अठारहम शताब्दक मध्यसँ गोटेक सए वर्ष धरि पुरनिआ जिलाक रसाइ प्रान्त सोतिलोकनिक एक गोट मुख्य केन्द्र छल। तेँहि तँ बुकानन साहेब अपन पुरनिआक रिपोर्ट*मे सोति-समाजक एक गोट एहन विलक्षण चित्र लिचलेँ छथि जे वस्तुतः प्रशंसनीय अछि। वस्तुतः मिथिलाक सोतिपुरामे नानारङ्गक गोल-गोलैशीसँ मुक्ति पएबाक हेतु बहुतो सात्त्विक प्रकृतिक सोति कौशिकीकेँ पार कए ओहि दिशि पड़ाए गेल छलाह। पूर्वमे पहसराक ओ ओकरे शाखा सौरिआक राजा लोकनि ओ मध्यमे किछु दिन फङ्डिस्आक राजा विजयगोविन्द सिंह सोति छलाह, सोतिसँ सम्बन्ध करथि, सोतिक विशेष आदर ओ सत्कार करथि। संस्कार करथि सोतिक बनैली-नरेश लोकनि सेहो किन्तु बनैलीक प्रतापसँ बहुतो सोति भयभीत रहथि ओ तेँ सबहिक ओतए प्रवेश नहि रहए। श्रीनगरक से

---

* रिपोर्टक पृष्ठ २०४–२०५ द्रष्टव्य

हास नहि छल । पहसरा एवं सौरिआक राज्य लुप्त भए गेलाक पर कड़-किआ छल परन्तु राजा विजयगोविन्द सिंहक राज्य लुप्त भए गेलाक पर सोतिलोकनिक एक मात्र आश्रय श्रीनगरेश रहलाह । हिनका धर्मलो-नरेश जकाँ प्रतापक दर्प नहि छल ओ ने अपना विषय सामाजिक सत्ताक न्यूनताक असहिष्णुता । हरिसिंह-देवीक पालन ओ रक्षण करैत राजा श्रीनन्दन सिंह हरिसिंह-देवीक मूर्धन्य सोतिसमाजक बड़ विनयसँ सम्मान करथि, अपना विषय मिथ्याभिमान कए स्पर्द्धा प्रतिस्पर्धाक भाव नहि राखथि । वस्तुतः श्रीनगरसँ सोतिआइक विरुद्ध कोनो आचरण नहि भेल अछि ओ सब दिन श्रीनगरेशलोकनि आत्मपरिचयपुरस्सर वैधहिया उपायसँ अपन सत्ताक, समाजमे अपन स्वत्वक, संवर्धनेच्छु रहैत आएल छथि ।

राजा श्रीनन्दन सिंहक प्रधान कार्यकर्ता हरिपुरक बबुरैआ झा छलाह जे हिनक बापक समिश्रीत भाए छलाह तथा हिनकाहि उद्योगसँ श्रीनगरक हेतु कोइलख गाम कीनल गेल जे अद्यावधि श्रीनगरहिक अधि-कारमे अछि । कड़किआक राजा विजयगोविन्द सिंहहुसँ राजा श्रीनन्दन सिंहकेँ पूर्ण मैत्री छल।

राजा श्रीनन्दन सिंहकेँ तीनि गोट विवाह छल । द्वितीय विवाह हुनका छल नाहर, सरिसबए पञ्जीकार नन्दू झाक बालक पञ्जीकार जगद्दर झा*क कन्यामे, "गोन्दू मिश्र" पाँजिमे । इहो योग्यक बड़ प्रति-ष्ठित डेरा थीक ओ बहुत दिनसँ एहि घरकेँ सोतिसँ सम्बन्ध । एहि पक्षमे राजाकेँ एक बालक कुमार नित्यानन्द सिंह ओ एक कन्या जाहिमे प्रायः कन्या जेठि ओ हिनक विवाह भेल लालगञ्जक "सोदरपुरिए" गोसाञि मिश्रसँ । गोसाञि मिश्रक छोट भाए भोलनाथ मिश्रक विवाह राजा पद्मा-नन्द सिंहक कन्यामे छल । गोसाञि मिश्रकेँ एकटा विवाह पूर्व सोतिअहु

* हिनक परिचय पृष्ठ ५६ क प्रथम टिप्पणीमे द्रष्टव्य

मध्य छल परञ्च सन्तान हिनका एहि पक्षमे नहि । प्रथम विवाह राजा मङरौनी कएल, "करहोली-सोदरपुर" मूलक नन्दीश्वर झाक छोट बालक मुरली झा*क कन्यामे, "नरउलि" झा पाँजिमे । एहि स्त्रीमे राजा साहेबकाँ एक मात्र कन्या ओ तनिक विवाह भेल इसहपुर, "दरहट-सकराढ़ी" मूलक मनमोहन झाक सबसँ छोट बालक लीलानाथ झासँ । एहि लीला-नाथ झाक सबसँ जेठ भाए दामोदर झाक बालक पद्मनाथ झामे राजा लीलानन्द सिंहक छोटि कन्या, राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुरक सोदर बहिनिक, विवाह छल से पूर्वहिं कहि आएल छी । लीलानाथ झाक बालक छलाह रघुनाथ झा । प्रथम स्त्रीक अकाल देहावसान भए गेलाक पर राजा श्रीनन्दन सिंह एक गोट विवाह कएल मात्र लोकनिक अनुरोधसँ नाहर परन्तु अपना रुचिक लगले पुनि तेसरो विवाह कएल, ओहो, मङरौनी, मुरली झाक अपर कन्यामे ओ एहि पक्षमे राजा साहेबकाँ दू पुत्र, राजा कमलानन्द सिंह ओ राजा कालिकानन्द सिंह ओ जेठ राजा कमलानन्द सिंह पाँच वर्ष मात्रक छलाह तखनहि १८८० ई० क १७ दिसम्बरकेँ राजा श्रीनन्दन सिंह तीन गोट कुमार बालक ओ प्रायः एक गोट कन्याकेँ अविवाहित छोड़ि स्वर्ग स्मरणीय भए गेलाह ।

राजा श्रीनन्दन सिंह जखन स्वर्गीय भेलाह तखन हुनक एको गोट

* नन्दीश्वर झाक जेठ भाए विघ्नेश्वर झाक बालक वदन झाक कन्यामे राजा पद्मानन्द सिंहक विवाह छल । नन्दीश्वर झाक विवाह छल सलमपुरक बलिआसए मणि प्रसिद्ध ललितनाथ मिश्रक बहिनिमे ओ मणि मिश्रक विवाह छल विघ्नेश्वर झाक कन्यामे । वस्तुतः सलमपुरक बलिआसएक डेरा ओ मङरौनीक सोदरपुरिएक ई डेरा–दुहूमे परस्पर ओ दुहूकेँ अलँवार हजारी परमानन्द चौधरीक डेरासँ सम्बन्ध-परम्परा बड़ घनिष्ठ ओ बड़ पुरान थीक । मुरली झाक पौत्र छलाह जयनन्दन झा जनिक बालक लोकनि सम्प्रति बुद्धिमान वर्तमान छथिन्ह ।

बालक राज्यक भार वहन करबाक योग्य नहि छलाह, सब केओ नाबालिग छलाह, अतएव राज्यक भार पुर्णियाक जिला-जज लेल परन्तु दुहू रानीक मध्यमे सौमनस्यक अभावतेँ राज्य कोर्ट आफ वार्ड्सक अधीन कए देल गेल । ताहि समयमे एहि राज्यक वार्षिक आय दू लाख अठसठि हजार छल । कुमार नित्यानन्द सिंहक वयस्क भेलाक पर राज्यकेँ पुनि ओ अपना हाथकेँ लेल परञ्च तकर पश्चात्‌हु हुनका अपना दुहू वैमात्रेय भाएमे सौमनस्यक अभाव रहबे करल । फलतः राज्यक विभाजन भए गेल । एवं रूपसँ राज्यक विभाजन ओ तदर्थ अपना मध्य मनोमालिन्यतेँ राज्यक क्रमिक ह्रासे होइत गेल, वृद्धि नहि होयए पाओल ।

कुमार नित्यानन्द सिंहक जन्म १८७० ई० मे ओ परोक्ष १९१६ ई० मे भेल । हिनक विवाह छल उजान, "पचहुट-तंकराढी" मूलक वैदिक चन्द्रदत्त झाक बालक फुद्दी झाक† कन्यामे । कुमार नित्यानन्द सिंहकेँ एक गोट कन्या मात्र जनिक विवाह बनाबक "सिम्बरवार-खौआड़ए" गोवर्धन झा*सँ छल ओ असन्ततिका विधवा छथि । श्रीनगरसँ पृथक् भए अपन आवास तारानगर मध्य राखि पश्चात् ई काशीवास करैत ओतहि शरीर त्याग कएल । हिनका तन्त्रमे बड़ भक्ति ओ अनुरक्ति छल ओ तान्त्रिक साधना करैत हिनक समय व्यतीत हो ।

राजा कमलानन्द सिंह "साहित्यसरोज" कहाए विद्वन्मण्डलीमे अमर छथि ओ यावत् पर्यन्त देशमे साहित्य-चर्चा होइत रहत, तावत् धरि कवि-

† एहि फुद्दी झाक बालक छलाह पंगतपोलव्य-सकलविद्य सत्यनारायण झा जनिक पौत्रीमे राजनगरेश श्रीमान् राजा बहादुर अपन द्वितीय विवाह करल ।

* ई गोवर्धन झा गौरीनाथ झाक बालक मोदनाथ झाक पौत्र, भैंआ झाक प्रपौत्र, गोकुल झाक वृद्धप्रपौत्र छलाह, चरितबक खौआड़ए लोकनिक सपिण्ड ।

कुलक पोषक एहि राजवंशक कीर्ति अवश्य अमर रहत । भाग्यसँ हिनका प्रसङ्ग बहुत किछु लिखल उपलब्ध अछि । अपन नोट-बुकमे राजा साहेब स्वयं अपन जीवन-वृत्तान्त लिखलेँ छलाह जे मिथिला-मिहिरक मिथिलाङ्कमे* श्री भिन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह द्वारा पूर्ण ओ परिपुष्ट कए प्रकाशित अछि । हिनक आश्रित कवि-वर श्री जनार्दन झाजी जनसीदन सेहो हिनका प्रसङ्ग एक गोट निबन्ध श्री नगेन्द्रकुमार द्वारा सम्पादित ओ प्रकाशित पुर्णिया जिलाक डाइरेक्टरीमे† लिखलेँ छथि ।

राजा साहेब "कवि" छलाह ओ हिनक काव्य-गुरु छलाह पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जे पूर्वमे भागलपुर जिला स्कूलमे हिनक हेड-पण्डित छलाह । परन्तु ताहिसँ कतबड़ महत्वक विषय तँ ई थीक जे ई हिन्दी-साहित्यक हितैषी एवं हिन्दीक कविगण लोकनिक बड़का पोषक छलाह । वस्तुतः राजा साहेब कविक कल्पतरु छलाह । श्रीकान्त मिश्र नामक एक जन संस्कृतक पण्डित कवि हिनक ओ हिनक वंशक वर्णनमे संस्कृत काव्यक रीतिसँ "श्रीसाम्बकमलानन्द-कुलरत्न" नामक ग्रन्थ रचलैन्हि । ओहिमे एक हजार श्लोक छल । राजा साहेब प्रति श्लोक तीनि रुपैआक दरसँ तीनि हजार रुपैआ पण्डितजीकेँ पुरस्कार देल । पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ओ कविवर लछीरामकेँ ई गजदान दए पुरस्कृत कएलेँ छलाह । हिन्दी साहित्यक लेखक, प्रकाशक ओ विद्यार्थी, नागरी प्रचारिणी सभाक सदृश संस्था ओ सरस्वतीक सदृश पत्र पत्रिकाकेँ ई बराबरि आर्थिक सहायता प्रदान करैत रहलाह । जयगोविन्द महाराज, मशरांजे, पण्डित श्री जनार्दन झाजी जनसीदन, सीतला प्रसाद, रामनारायण मिश्र प्रभृति अनेको कविगण वैतनिक रूपसँ हिनक आश्रित छलाह । नियमित रूपसँ सन्ध्याकालकेँ सातसँ दश बजैत धरि हिनका दरबारमे साहित्यचर्चा

* मिथिलाङ्क पृष्ठ १५९–१६०

† पुर्णियाक डाइरेक्टरी पृष्ठ ९३–९४

होइत रहए । तत्कालीन कवि-समाज हिनका "द्वितीय भोज", भारत-धर्ममहामण्डल हिनका "कवि-कुल-चन्द्र" ओ कानपुरक रसिक-कवि-समा हिनका "साहित्य-सरोज"क उपाधिसँ विभूषित कएने छल । ओहि समयमे आधुनिक हिन्दी साहित्य शैशवावस्थामे छल । बिहारमे प्रायः एकर चर्चो एहिना ठाम ठाम होइत छल । अतएव एकर कर्मनिर्माणमे, बिहारमे हिन्दीक प्रचारक कार्यमे, प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष रूपसँ राजा साहेबक पूर्ण हाथ छल । आधुनिक दृष्टिसँ राजा साहेबक सबसँ महत्वक काज भेल हिन्दी ओ बङ्गला साहित्यमे परस्पर विचार-विनिमय कराएब । विश्वकवि रवीन्द्रनाथसँ हिनका पूर्ण मैत्री छल ओ हुनक काव्यधाराकेँ ई हिन्दी संसारकेँ परिचित करबैत रहैत छलाह । कविगुरुओ हिनका द्वारा मिथिलाक संस्कृतिसँ अवगत भेल करथि । बङ्गलाक कतेको ग्रन्थक ई हिन्दीमे अनुवाद कएने छलाह । अत्यन्त खेदक विषय थीक जे केवल बत्तीस वर्षक वयसमे हिनक देहान्त भए गेल परन्तु एतबहि दिनमे ई जतबा निर्मल यश अर्जित कए लेल जे कतेको चर्चित दीर्घायु पार्थिवोकेँ नहि लब्धित कए सकैत छथि । सबसँ विशेष हिनक सौभाग्य बुझबाक थीक हिनक पुत्ररत्नमे तथा हिनक आत्मज स्वनामधन्य कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह साहेब हिनक रचित समस्त ग्रन्थ, कविता ओ निबन्धादिक संग्रह कए प्रकाशित कराए रहलाह अछि जाहिसँ हिनक कीर्ति स्थायक रूपसँ प्रसृत भए जाएत ।

राजा साहेबकेँ एक गोट मात्र विवाह, ककरौड़, "माण्डर" मूलक "अगार" शाखाक ढौंढर झाक कन्यामे, "भैञ्जन झा" पाँजिमे । माण्डर-मूलक ई अगार शाखा सोतिक डेरा थीक ओ मात्र यद्यपि सोतिसँ ई डेरा लुप्त भए गेल अछि मुदा एम्हरहु * एहि डेरासँ सोतिकेँ बड़ घनिष्ठ

* म० म० वटेश्वरक दोसर बालक महोपाध्याय रघुपतिक सन्तान जगदेव बाबी छथि । रघुपतिक प्रपौत्रक पौत्र छलाह सदु भवानीनाथ झा । हिनका बहिनिमे पहसरा राज्यक प्रतिष्ठापक रामरु राज्यक बालक

सम्बन्ध । हिनका तीनि बालक कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह साहेब, कुमार अम्बिकानन्द सिंह ओ कुमार श्री अच्युतानन्द सिंह जाहिमे मध्यम अविवाहित स्वर्गीय भए गेलाह ओ तीनि कन्या । सबसँ जेठि कन्याक विवाह अछि लोहना, "रतौली-दरिहरा" मूलक महाकुलक रमानन्द झासँ †

राजा कृष्णदेव रायक विवाह छल । राजा कृष्णदेवक वृद्धप्रपौत्र छलाह पहसराधीश राजा रामचन्द्रनारायण । भवानीनाथक दौहित्र छलाह हेमौली-खाँदरपुर मूलक गङ्गाधर झा जनिक दौहित्र छलाह रतौली-दरिहरा मूलक वैदिक जीवनाथ झा ओ बोधू झा । जीवनाथ झाक नाम पर सोतिमे बड़का पाँजि अछि ओ हिनक दौहित्रीपुत्रमे महाराज माधव सिंहक बालक बाबू कीर्ति सिंहक विवाह छल । बोधू झाक पौत्र हृदयनाथ झा ओ गोपीनाथ झाक परिचय दए आएल छी । भवानीनाथक एक गोट पौत्र भवदेवक दौहित्र छलाह महिसी-पाली मूलक रतिदेव झा जनिक प्रपौत्र श्री धवन झा सोति एखनहु विद्यमान छथि । भवानीनाथक दोसर पौत्र जयदेवक पौत्र छलाह ईशाननाथ । हिनका एक गोट विवाहमे बालक म० म० मानिक जनिका पञ्जीमे 'राजगुरु' कहल अछि । कोन राजाक ई गुरु छलाह से जानि नहि । मानिकक बहिनिक विवाह छलाह वीर ठाकुर (हिनका नाम पर पाँजि अछि) तनिक पौत्र मणिकृष्ण ठाकुरसँ ओ तनिक पौत्रीमे मड़रए जोटनी झा सोतिक विवाह छल । एही ईशाननाथ झाकेँ तेसर विवाहमे पाँच गोट पुत्र छलाह जाहिमे दोसर जनार्दन झाक कन्यामे नाहरक राजा ठाकुरक विवाह छल ओ तनिक दौहित्री दड़िभङ्गाक श्रीमती बड़ी राजमाता साहेबा थिकीह ओ तेसर बालक रामधन झाक बालक ढोंढर झा क दौहित्र कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह साहेब थिकाह ।

† रमानन्द झाक प्रपितामह चन्द्रानन्द झा महाराज माधव सिंह बहादुरक दौहित्र छलाह । रमानन्द झाक बाप लाल झा ओ पितृक कनेश-

श्री एहो रमानन्द झाक कन्यामे, साहित्य-सरोज राजा कमलानन्द सिंहक दौहित्रीमे, लालगञ्जक मेघनाथ मिश्रक बालक, राजा पद्मानन्द सिंहक दौहित्र, श्री भोलनाथ मिश्रक विवाह* छन्हि । राजा साहेबक आओर दुई कन्याक विवाह धोंघमे भेल अछि, एक गोट बेतिया,"लौआढ़ए" योगीन्द्रकिशोर शर्मा ओ दोसर चकजरी, "चर्चानिवार" परमानन्द शर्मा ।

कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह साहेबक जन्म १८९८ मे भेल तथा ई कलकत्ता विश्वविद्यालयक एम० ए० छथि, भारतक प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विषयक आचार्य छथि । पूर्वमे केन्द्रीय एसेम्बलीक स्वराज-पार्टीक टिकिटें निर्वाचित सदस्य रहि एमहर अनेको वर्षसँ ई विहारक व्यवस्थापिका काउन्सिलक सदस्य छथि तथा वर्त्त श्रीसेकर्त श्रीरमेश्वरसिंहक प्राइवेट सेक्रेटरीक पदकें अलंकृत कए रहल छथि । राजनीतिमे जे हिनक प्रवेश भेल ताहिसँ भारतीय विद्या एवं साहित्यजगतक बड़ हानि भेल परन्तु सन्तोष एतबे अछि जे नाना कार्यमे व्यापृत रहलहुँ हिनक साहित्यक प्रति सहजात स्नेह कम नहि भेल अछि तथा जएह किछु ई लिखैत छथि सएह साहित्यक एक गोट स्थायी सम्पत्ति भए जाइत अछि । हिन्दी ओ मैथिली दुहूक साहित्य हिनक कृतिसँ धनिक अछि ओ मैथिलीमे

दत्त झा सबहुँ भाइ सत्वाते भक्तिशील भाए छलाह तथा गणेशदत्त झाक बालक श्री मुकुन्द झा बृद्धिमान वर्त्तमान छथि ।

* ओना तँ रमानन्द झाक कन्या, अपना माइक पितामह राजा श्रीनन्दन सिंहक पितामह, राजा दुलार सिंहनें छथि हो तँ राजा दुलार सिंहक सन्तानकें हुनकासँ विवाहक अधिकार नहि छो परन्तु श्री भोलनाथ मिश्र अपना मातृपक्षें राजा दुलार सिंहक सन्तान थिकाह ओ मातृपक्षमे पाँचे ठाम वर्जित अछि, छठमा ठाम विवाह भए जाए। राजा दुलार सिंहक सन्तानमे परस्पर विवाहक ई प्रथमे अधिकार प्राप्त भेल छल ।

कुल-चित्र (२०)

सोदरपुर मूलक शाहुस शाखाक

कमल झा (पाँजि)

गुणाकर

ब्रह्मदत्त

गोसाञि झा

दुर्गा हृदयदत्त | वेणी | कान्हू | महो ईश्वरदत्त, बगरी, रानी चन्द्रावती | परिराम | नेनमणि | क = सरिसवसं गणेश, क = माण्डरसं बाचा → एवं प्रभृति सोतिमे कमल भाक लोक

बबुआ धन्यकीनाथ ओ ईशनाथ | चन्द्रमणि — क = राजा कमलानन्द सिंह | क = सरिसवसं आदिनाथ, क = करमहासं धोनू (सोति)

क = कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह | क = कुमार श्री अच्युतानन्द सिंह | क = धनश्यलाल श्री नरेशमोहन ठाकुर

कुल-चित्र (२१)

पवोली मूलक चड़िआम शाखा

महिसीपालीसं योग्येशः अच्युत सुता = चन्द्रपति = परिहारसं कवि भोलनाथ सुता

राजेश्वर — क = माण्डरसं दासे झा

चन्द्रदत्त भैया, राजा विश्वगोविन्द सिंह — क = माण्डरसं मनबोध, रानी इन्द्रावती

कलाधर

क = पलिमाससं नीलाम्बर मिश्र, पाँजि | छबल, नाथा, बुद्धी झा, क = राजा कालिकानन्द सिंह

"अगिलही" नामक उपन्यास, यद्यपि ई अपूर्ण अछि, हिनक कीर्तिकें चिरदिन पर्यन्त अमर बनओने रहत । श्री कुमार साहेबक विवाह थीक कोइलख, "लौआम" मूलक "माहुर" शाखाक ओहीँ* डेरामे जाहिमे राजा कलानन्द सिंहक ओ कुमार चन्द्रानन्द सिंहक विवाह छल, श्री वैद्यनाथ झाक कन्यामे, ओ हिनका एक गोट बालक श्री सनातनजी जनिक विवाह सरिसबक "कुलीनिवार" पिनाकर झाक कन्यामे, स्वर्गीय कुमार श्री श्यामानन्दन सिंहक सारिमे भेल अछि ओ एक कन्या जनिक विवाह भौरक "खड़ौरए" घुरन सिंह ठाकुरक बालकसँ भेल अछि ।

कुमार श्री अच्युतानन्द सिंह बी० ए० दरिभङ्गा राजक मनेजर छथि । हिनको विवाह कोइलखहिँ, ओहो श्री वैद्यनाथ झाक कन्यामे अछि । हिनक एक गोट कन्याक विवाह सिहवाड़क "सम्हपुर-डीघो" मूलक चौधरी कमलाकान्त ठाकुरक बालकसँ भेल अछि ।

राजा कालिकानन्द सिंहक देहान्त १९६० ई० मे भेल । ई बराबरि अपन जेठ सोदर साहित्यसरोज राजा कमलानन्द सिंहक सङ्गहिँ रहलाह ओ भाइक परोक्ष भए गेलाक पर अपन भातिज लोकनिक रक्षण-निरीक्षण, शिक्षा-दीक्षा सब कथूक भार बापहि जकाँ प्रेम ओ तत्परतासँ वहन कएल । ई बड़ उदाराशयक विद्याप्रेमी मनीषी छलाह तथा मातृभाषा मैथिलीक बड़-प्रसिद्ध हितैषी । कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु स्वर्गीय राजा टंकनाथ चौधरीक सङ्ग सङ्ग हिनका

---

* जनिका नाम पर पाँजि अछि नाहि कमल झाक प्रपौत्र गोसाञि झाक दोसर बालक वेणी झाक सबसँ जेठ बालक बबुआ झाक प्रपौत्री जनकी नाम झाक पौत्री श्री वैद्यनाथ झाक कन्यामे कुमार श्री गङ्गानन्द सिंहक विवाह अछि, वेणी झाक पौत्री रघुनाथ झाक कन्यामे राजा कलानन्द सिंहक विवाह छल ओ गोसाञि झाक चारिम बालक महो ईश्वरदत्त झाक पौत्री उगरी झाक कन्या रानी चन्द्रावती छलीह ।

बड़ [illegible] श्री आधाय लागल । मैथिलीमे ग्रन्थ प्रकाशन हो सर्व प्रसुवली- के मैथिल [illegible] सर्व नामक प्रेम स्वर्गीय रमानन्द ठाकुरक तरफा- करामवे हिनकहि प्रसुताक [illegible] छल । मैथिल महासभाक ई उपलक्षा- वलि छलाह । [illegible] हिनका बड़ प्रेम छल आ काल-काठाक आवेश । पूर्णिमाशी मोदकाड़ी सवर्ग पूर्व इएह अतल आ [illegible] आहिकाल [illegible] कारखाना [illegible] खोलबाए कतेक लोककेँ ई ड्राइवरीक शिक्षा देआओल । घोड़ाक सेहो हिनका बेहुत प्रेम छल तथा ओतनासँ पुरैनिआ जाइह ओलक दूरी ई पैदलाकीम [illegible] घोड़ापर चले जाथि ।

हिनक विवाह छल कोइलख, "पचौली" मूलक "अड़िकाम" शाखाक बुर्ही झाक कन्यामे, "बड़ुक महादेव झा" पाँजिमे । इहो सोतिक बड़ प्रति- [illegible] घरक ओ बुढ़ी झाक वृद्ध प्रपितामह चन्द्रपति झा धरि सबका [illegible] छलाह । एहि चन्द्रपति झाकेँ एक गोट विवाह छल "हरिहरा" [illegible] मूलक "अमरावती" शाखाक "कवि" श्रीरानाथक कन्यामे । कवि श्रीरा- नाथक काव्य तँ नहि उपलब्ध अछि परन्तु हिनक नाम पहिर कवीश्वर चन्दा झा अपन रामायणक अन्तमे मैथिल कविक सूचीमे दए गेल छथि । एही हरिहरए कविक दौहित्र, चन्द्रपतिक बालक, छलाह कलाधर झा जे स्नून [illegible] सइआ सोतिक श्रेणीसँ योगक श्रेणीमे चल आएलाह ।

* [illegible] छल । प्रथम विवाह हिनक छल [illegible] । [illegible] प्रपौत्र [illegible] छलाह । एहि पत्नीसँ चन्द्रनाथिक बालक [illegible] झा ओ एक कन्या । कन्याक विवाह छल [illegible] झा अवसान छलाह. हुनका [illegible] नहि छल, [illegible] छलाह राजा [illegible] सिंह ओ [illegible] छलाह [illegible] कालि इन्द्रावती ।

कलाधरक कन्यामे "नड़साम खलिस्रालए" मूलक पीताम्बर मिश्रक† विवाह जनिका नाम परक पाँजि प्रात्र सोतिसहु मध्य प्रतिष्ठित कुशल जाइत अछि । एही कलाधर झाक प्रपौत्र छलाह बुद्धी झा जनिक कन्यामे राजा कालिकानन्द सिंहक विवाह छल ।

हिनका छओ गोट बालक, जाहिमे तेसर अविवाहिते स्वर्गीय भए गेलाह ओ एक गोट कन्या । कन्याक विवाह अछि धर्मपुरक "खड़ौरए" रमानाथ ठाकुरक* बालक श्री ऋद्धिनाथ ठाकुरसँ । बालकमे सबसँ जेठ श्रीनारायणजी (कुमार श्री अभयानन्द सिंह) प्रथम मैथिल थिकाह जे शिक्षाक हेतु विलायत गेलाह ओ किछु दिन बड़िअक्ला राजक मनेजर रहि सम्प्रति अपन राजकार्य देखैत छथि । हिनक विवाह छन्हि रती- पुर (वेतिया) "रतौली-दरिहरा" मूलक नूतनकृष्ण झाक कन्यामे । द्वितीय, श्री मोहनजी (कुमार श्री विजयानन्द सिंह) बहुत दिन धरि श्रीमन्मिथिलेशक "पर्सनल स्टाफ" मे रहि आब भीनगरहि रहैत छथि । हिनक विवाह अछि कोइलख, "बेलओंच" मूलक "काको" शाखाक शोभा झाक कन्यामे ओ हिनक एक गोट कन्याक विवाह दुर्गानन्दक सुरगाए श्री शोभनारायण रायक जेठ बालकसँ भेल अछि । तृतीय, श्री रमनजी (कुमार श्री घनानन्द सिंह) बड़िअक्ला राजक मनेजर छथि । हिनक विवाह छन्हि ककरौड़, कुमार श्री गङ्गानन्द सिंहक बालक श्री

† पीताम्बर मिश्रक मातृकक [illegible] पृष्ठ [illegible] टिप्पणी [illegible] । वस्तुतः पीताम्बर मिश्र ओ नन्दन झा दुहू पाँजि [illegible] पञ्चाधिकारक, पाँजिक श्रेणी-विभाजनमे दुहू एकहि [illegible] अछि मुद्रा [illegible] अछि पीताम्बर मिश्र ओ नन्दन झा ओहिमे रहैत अछि ।

* ई रमानाथ ठाकुर मैथिलक धर्मनाथ ठाकुरक प्रपौत्र छलाह ओ धर्मनाथक अपर बालक योगनाथ ठाकुरक चर्चा पूर्वहि कए आएल अछि । पृष्ठ ८७ क टिप्पणी ओ पृष्ठ १२० क लेख द्रष्टव्य ।

दुर्गानन्द झाक कन्यामे । चारिम श्री यशामल्लजी (कुमार श्री दिव्यानन्द सिंह) छात्र छथि श्री हिनक विवाह भेल अछि ककरौड़ सुधानन्द झाक कन्यासँ, भैयनाथ मिश्रक दौहित्रीमे, राजा पद्मानन्द सिंहक दौहित्री-पुत्रीसँ । पाँचम, श्री प्रमोदजी छात्र छथि ओ एखन अविवाहिते छथि ।

———o———

बंगनौ शाखाक अलंकार ब्राह्मण एहिसँ किछो अनेक होएताह । देवान देवानन्दहिकेँ आओर तीनि पौत्र भाए छलथिन्ह । सबसँ जेठ पौत्रीक प्रपौत्र प्रपौत्र शशिनाथ ओ गंगानाथ तथा अपर प्रपौत्रक पौत्र रामेश्वर एखनहु बनैली मध्य छथि तथा "चौधरी" नहि "झा" कहबैत छथि । ताहिमे पूर्वहुँ हिनका वंशमे बड़ लोक छल । पुनि गदाधरक अन्यान्य बालकक सन्तान भए सकैत अछि ओ बुद्धिमत्ताक सन्तान कतहु भए सकैत छथि । एहि मध्यमे कतोकक सन्तान देशमे होएताह । परन्तु हमरा नें तकर पता अछि नें पता लगबाक साधन अछि । कारण स्पष्ट अछि । जएह स्थिति देवान देवानन्दसँ पूर्व एहि उप-शाखाक छल सएह स्थिति तें ओहि सब उप-शाखाक होएत । कहबाक अभिप्राय जे पञ्जीप्रबन्धक उत्तर कालहि मध्य ई शाखा न्यून कियाक प्रादुर्भावसँ ओ अधिक विवाहक ह्राससँ समाजमे न्यूनताकेँ प्राप्त ओ ते न्यूनता-रूप कलंक देवान देवानन्दक सन्तान अपन कियाक उत्तरोत्तर उत्कर्षसँ दूर कएल परन्तु अन्यान्य उप-शाखा मध्य ओ ओहिना रहल, प्रत्युत कालक गतिकेँ पाबि आओर बढ़िलहिं गेल ।

———o———

* श्री यशामल्लजी राजा दुलार सिंहक सन्तान थिकाह ओ राजा दुलार सिंहक सन्तान कन्या नेहो परन्तु राजा दुलार सिंहसँ ई कन्या तालम ठाम पड़ैत अछि तथा स्वातन्त्र्य छड़इहु ठाम धरि रहैत अछि तें अनेक ठाम कहल अछि तें ई अधिकार ।

जएह भेल बनैली मूलक संक्षिप्त परिचय, ओकर विकासक स्थूल रूप-रेखा । एहिमे मूलक उत्कर्ष हमरालोकनि देखल । आब विचारणीय अछि जे हरिसिंह-देवी समाज-पद्धतिमे एहि मूलक की स्थान अछि ओ ताहि मध्य एहि बंगनौ-शाखाक पूर्व पतन ओ पुनि उत्थानक की रहस्य अछि । ताहू मध्य हजारी परमानन्द चौधरीक डेराकेँ अपन सम्बन्धक उत्कर्षसँ कोन सत्ता उचित प्राप्त भेलैक । एकर विवेचना अन्तिम ओ अन्तिम अध्यायमे करैत छी ।

———o———

उपसंहार

मिथिलामे प्रचलित पञ्जीक प्रबन्ध ओ ताहि पञ्जीक आधारपर व्यवस्थित समाजक नियमन महाराज हरिसिंह देवक नामसँ प्रसिद्ध अछि परन्तु इतिहासक जे केओ वेत्ता छथि किंवा ब्राह्मणक सामाजिक जीवनक जे केओ नियमपूर्वक अध्ययन कएलें छथि से लोकनि कहताह जे महाराज हरिसिंह देवक नामपर एहि प्रसङ्ग बहुत किछु संशोधन, ओ प्रबन्धन-नियमन अवश्य कएल गेल परन्तु अत्यन्त मूल एहिमे किछु नहि भेल । वस्तु ई बड़ प्राचीन थीक ओ सनातन। जे हिन्दू धर्म थिक से तँ कहब जे ई अनादि थीक । आर्यजातिक शिरोमुकुट ब्राह्मणकें विवाह एक गोट प्रधान संस्कार थिकैक; बिनु विवाहें सृष्टिक प्रक्रिया चलिए नहि सकैत अछि । विवाहक हेतु कोना तँ सब समाजमे नियम अछि, यत्रतत्र विवाह करबाक प्रतिषेध अछि; कन्याक निर्णय करबामे प्रतिबन्ध अछि, नियम परन्तु हिन्दू आर्यजातिक एहि प्रसङ्ग जेहन कठोर प्रतिबन्ध अछि, व्यवहार अछि तेहन प्राय: अन्य दोसर कोनहु जातिक नहि । कन्या एक गोत्रक नहि हो, माइक सपिण्ड नहि हो, पितृकुलक कोनहु पूर्वजसँ छठमा ठामसँ दूर हो ओ मातृकुलक कोनहु पूर्वजसँ पचमा ठाम धरि नहि पड़ए, पितामह ओ मातामहक सन्तान नहि हो—इत्यादि अनेक नियम अछि ओ एहिमे पड़लासँ कन्या "स्वजना" भेलि ओ स्वजनासँ विवाह कएलें ओकर गणना "चाण्डाल" मे होइत अछि । परन्तु एहि सबहिक विचार कए निर्णय करब जे कोनहु कन्यासँ विवाह करबाक अधिकार हो वा नहि तावत् कोना सम्भव होएत यावत् वर ओ कन्या दुहुक पावली परिचय उपलब्ध नहि होएत । तँहि तँ जएवारक विवाहमे अरिआतीकें

एखनहु धरि परिचय पुछबाक चालि अछि कारण जे पञ्जीप्रबन्ध भेलहु उत्तर साधारण जएवारक पावली परिचय पञ्जीमे नहि भेटि सकैत अछि । तथापि नीक लोकक विवाहक अधिकार-निर्णय एमहर जहिआसँ पञ्जी-प्रबन्ध भेल अछि तहिआसँ पञ्जीकार-लोकनि अपन पञ्जीक लेखानुसार करैत छथि ओ हुनकहिँ "अस्वजन-पत्र" लिखाए विवाहक स्थिरता होइत अछि जकरा "सिद्धान्त" कहैत छिऐक । पञ्जी तँ नवीन वस्तु थीक; सबा छओ सए वर्षसँ ई अछि परन्तु नियम तँ ई बहुत पुरान थीक, हम तँ कहब जे अनादि थीक, ओ पञ्जी प्रबन्धसँ पूर्व अधिकार कोना जाँचल जाइत छल ?

ब्राह्मणत्वक निर्णय बिनु ओकर विशुद्ध जन्मक निर्णयसँ कोना होएत ओ जन्मक विशुद्धि कोना बुझब एहि प्रसङ्गमे मीमांसा-दर्शनक सुप्रसिद्ध तात्त्विक ग्रन्थ "तन्त्रवार्त्तिक" मे "कुमारिलभट्ट" लिखैत छथि—

> विशिष्टैरेव हि प्रयत्नेन महाकुलीनाः परिरक्षन्ति आत्मानम् ।
> अनेनैव हि हेतुना राजभिर्ब्राह्मणैश्च स्वपितृपितामहादिपारम्पर्य-
> विस्मरणार्थं समूहलेख्यानि प्रवर्त्तितानि तथाच प्रतिकुलं
> गुणदोषस्मरणात्तदनुरूपाः प्रवृत्तिनिवृत्तयो दृश्यन्ते । (अध्याय १ पाद २
> सूत्र २)

अर्थात् महाकुलप्रसूत लोकनि अपन (जातिक) रक्षाक हेतु बड़ विशेष प्रयत्न करए पड़ैत छन्हि । तँहि तँ क्षत्रियलोकनि ओ ब्राह्मण-लोकनि अपन बाप पितामह प्रभृति पूर्वजक नाम बिसरि नहि जाए तेँ "समूह-लेख्य" रखैत छथि ओ प्रत्येक कुलमे गुण ओ दोषकेँ देखि तदनुसार सम्बन्ध करबामे प्रवृत्त होइत छथि अथवा निवृत्त होइत छथि ।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे कुमारिल भट्टक समयमे केवल ब्राह्मणे टा नहि, क्षत्रिय लोकनि अपन पावली परिचय स्वयं रखैत छलाह ओ विवाहक घटना भेलाक पर वर ओ कन्या दुहु पक्षक परिचय एकत्र कए विवाहक अधिकारक निर्णय करैत छल होएताह । ओही परिचयक आधारपर

छोट ओ पैघक निर्णय होइत छल ओ छोट कुलमे सम्बन्ध करब दोषावह बुझल जाइत छल, पैघ कुलसँ सम्बन्ध कएलें कुलक प्रतिष्ठा बढ़ैत छल। स्मरण रहए जे तन्त्रवार्त्तिकक रचना सातम शताब्दक थीक, हरिसिंहदेवसँ ततबे पूर्व कतबा पूर्व आइसँ हरिसिंह देव भए गेल छथि। ब्राह्मण लोकनि अपन संगृहीत परिचयक आधारपर वैवाहिक सम्बन्ध करैत छलाह ओ अतिक गौरव-रक्षार्थ ताहि ठाम सम्बन्ध करैत छलाह जनए परिचयसँ विशुद्धि स्पष्ट होइत छल—ई जे हरिसिंह-देवीय व्यवस्था यद्यपि अनुवर्त्तमान अछि से हरिसिंहदेवक समानकालीन नहि थीक, सातम शताब्दक कुमारिल सेहो एकरा सिद्धवत् मानि गेल छथि ओ तार्किक सुधीकेँ अनुमान कए सकैत छथि जे ई व्यवस्था कतेक प्राचीन थीक ओ तेँहि तेँ हम कहल अछि जे ई रीति सनातन थीक, अनादि कालसँ ई कोनहु ने कोनहु रूपमे अद्यपर्यन्त चालि रहल अछि।

मुदा तखन प्रश्न उठैत अछि जे हरिसिंहदेव तखन एहिमे कएल की जे ई व्यवस्था हुनक नामपर कहओलक ? कुमारिल एकरा समूह-लेख्य कहैत छथि से मूलग्रन्थी जाहि रूपसँ राखल जाइत अछि (जाहिमे बालक ओ कन्या सबहिक परिचय रहैत अछि) ताहि रूपक उतेड़ जकाँ होइत छल होएत ओ प्रत्येक वैवाहिक सम्बन्ध भेला उत्तर से ओहि पर टीपि लेल जाइत छल होएत। ई लोक स्वयं करैत छल ओ एक परिवारमे एक गोट रहैत छल होएत जाहि कारणें एकर नाम भेल "समूह-लेख्य"। परन्तु महाराज हरिसिंहदेवक समयमे आबि देखल गेल जे कतोक लोको व्यक्ति एहि रूपक अपन परिचय नहि रखैत छथि ओ तखन तेँ सन्देह होअए लागल जे विवाहसँ पूर्व ई लोकनि "अस्वाजन्य"क निर्णय कोना करैत होएताह। एही मध्यमे प्रायः सरिसबिमे ग्राममे मिथिलाक पाण्डित्य-प्रकर्षक प्रतीक स्वरूप "हरिनाथ" नामक एक जन महामहोपाध्याय छलाह (जनिक मूल पञ्जीप्रबन्धोत्तर गंगौर निर्धारित भेल)। प्रायः एही म० म० हरिनाथक रचित "स्मृतिसार" नामक धर्मशास्त्रक ग्रन्थ

यद्यपि देशमे आदरसँ देखल जाइत अछि। ई जाहि कन्या (मदिहानी मूलक तारापतिक कन्या) सँ विवाह कएल से हिनक साक्षात पितियौत भाइक दौहित्री छलि। एकर नाप तँ नाना रूपसँ अनेक ठाम लेखहु मध्य अछि ओ तथ्य कथा की से नहि कहि, परन्तु एतबा धरि निस्सन्देह जे हुनक विवाह "दुष्टि-वर्जित" कोन कथा, अपन "पितामहहिक सन्तान" मे भए गेल। जखन ई विषय ज्ञात भेल होएत तखन समाजमे जे आन्दोलन भेल होएत से एखनहु अनुमान कए सकैत छी। हरिनाथ उपाध्यायक सदृश व्यक्ति जखन अपन परिचय नहि रखैत छथि ओ अनधिकारमे विवाह कए लेलन्हि अछि तखन देशमे कतेक गोटए ई नियमपूर्वक रखैत होएताह ओ जखन अनधिकारमे विवाह होअए लागल अछि तखन जाति कोना बाँचत ? जातिए नहि, तखन धर्म कोन आधारपर ? धर्मप्राण मिथिलाकेँ से कोना सह्य होइक ओ तेँ महाराज हरिसिंहदेवक आज्ञा भेल जे समस्त ब्राह्मणकेँ पूछि पूछि जहाँ धरि जे उपलब्ध भए सकए सबहिक परिचय संगृहीत कए कतोक जन पण्डित सत्कुलीन ब्राह्मणकेँ दए दिऔन्हु जे ओकर रक्षा करताह, सबटा नव सम्बन्ध टिपने जएताह ओ विवाहक कथा स्थिर भेलाक पर अधिकार जाँचिके कहि देताह जे कन्या स्वजनक कोटिमे नहि पड़ैत अछि। जे परिचय पूर्वमे सब स्वयं रखैत छल परन्तु आलस्यवशात् ताहि समयमे जे बहुतो लोको व्यक्ति नहि राखथि से राजाधीन कए देल गेल। जकरा कुमारिल "समूह-लेख्य" कहैत छथि सएह समस्त ब्राह्मणक एकत्र संगृहीत भए "पञ्जी" कहाओल ओ ओकर रक्षक "पञ्जीकार"। एहि परिचय सबहिक आधार-पर एक एक कुलक एक एक टा नाम दए देल गेल जे नाम ओहि कुलक पूर्वजक आदिम ज्ञात निवास-स्थान ग्रामक नामपर भेल ओ सएह ओहि कुलक "मूल" कहाओल। परिचयसँ प्रत्येक कुलक दोष ओ गुण तँ कुमारिल-हुक समयमे विवेचित होइत छल परन्तु से लोक स्वयं करैत छल। आब संगृहीत परिचयक आधारपर कुल सबहिक गुण ओ दोषक विवेचना

सर्वजनसुलभ भए गेल ओ सर्वसम्मतिसँ कतोक कुल उत्तम, कतोक मध्यम ओ कतोक अधम कहाओल ।

कुल सबहिक एहि रूपेँ उच्चता किंवा नीचताक अवधारण प्राचीन स्मृतिक अनुसारहिँ भेल । बङ्गालमे जे कुलीनक प्रथा छल से छल शुद्धके जातिमूलक ओ अकुलीनक सम्पर्क होइतहिँ कुलीन अपन कुलीनत्वसँ पतित भए जाइत छल । हमरा सोहिंगान से विषय एखनहु नहि अछि, पूर्वहु नेँ नहिए छल । मनु कहैत छथि ।-

कुविवाहैः क्रियालोपैर्वेदानध्ययनेन च ।
कुलान्यकुलतां यान्ति ब्राह्मणातिक्रमेण च ॥ ३।६३

अर्थात्-अधलाह विवाह कएलासँ, (जातकर्मादि संस्कार) क्रियाक लोपसँ, वेद नहि पढ़लासँ तथा ब्राह्मणक सत्कार नहि करलासँ पैघो कुल छोट भए जाइत अछि । एही अर्थकेँ बौधायन आओर स्पष्ट शब्दमे दृढ़ कएलेँ छथि (१-५-८२)

पुनः मनु कहैत छथि, उत्तमैरुत्तमैर्नित्यं सम्बन्धानाचरेत्सह ।
निनीषुः कुलमुत्कर्षमधमानधमांस्त्यजेत् ॥ ४-२४४

अर्थात्-जनिका इच्छा हो जे कुल उत्कृष्ट हो से कन्यादानादि सम्बन्ध विद्या, आचार, जाति एहि सबसँ उत्कृष्ट जे व्यक्ति छथि तनिकहि सङ्ग करथि, अपकृष्टसँ नहिए करथि, उत्कृष्ट नहि होइन्हु तँ बेस समानमे करथि ।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे जातिक उत्कर्ष किंवा अपकर्ष वैवाहिक सम्बन्धसँ अवश्य नियमित होइत छल परन्तु केवल जन्मक शुद्धिमात्र एकर नियामक नहि छल । "कुविवाह" एक मोट कारण थीक मुदा तहि सङ्ग सङ्ग "क्रियालोप" ओ "वेदानध्यन" सेहो तँ कहल अछि । मनुक समयमे कुविवाहसँ असवर्ण विवाह किंवा आसुरादि अप्रशस्त विवाह बुझल जाइत छल । हरिसिंहदेवक समयमे एकर अर्थ भए गेल "छोट विवाह" "जन्मक दोषसँ युक्त कन्यासँ विवाह ।" तहिना मनु वेदक अनध्ययनकेँ कुलक अपकर्षक

हेतु कहल अछि परन्तु बौद्धयुगमे वेदाध्ययनक ह्रास भए गेल छल तेँ पञ्जी-प्रबन्धक समयमे वेदसँ साधारण विद्या बुझल जाए लागल । एही अर्थक पुष्टि तेँ म०म० जगद्धर अपन मालती-माधवक टीकामे स्मृतिवचनसँ कएलेँ छथि जकरा हम प्रथमहि अध्यायमे उद्धृत कएल अछि ओ जाहिसँ ब्राह्मण, द्विज ओ विप्रक अर्थ कए श्रोत्रिय शब्दक लक्षण करल अछि । एही अर्थक पुष्टि पाणिनीय-वृत्तिकार-परिगृहीत आगमोक्त लक्षणसँ होइत अछि जे--

त्रीणि यस्यावदातानि विद्या योनिश्च कर्म च ।
एतच्छिवं विजानीयाद् ब्राह्मणस्याग्र्यलक्षणम् ॥

अर्थात्-जकर ई तीनि विषय शुद्ध रहैक, विद्या, जन्म ओ कर्म, तकरहु ब्राह्मणक प्रधान लक्षण बुझबाक थीक ।

एहि सबसँ स्पष्ट अछि जे "जन्मक विशुद्धि" अर्थात् "जाति"क सङ्ग सङ्ग "विद्या" तथा संस्कार ओ आचार प्रभृति "कर्म"केँ समाने प्रधानता एतए देल गेल ।

जातिक उत्कर्ष एवं अपकर्षक प्रकार याज्ञवल्क्य बड़ सुन्दर जकाँ देखाए गेल छथि ओ तन्त्रवार्तिकमे एहि प्रसङ्ग विशद विचार अछि ।

जात्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः सप्तमे पञ्चमेऽपि वा । १-९६

अर्थात् सातमा ठाम, छठमा ठाम किंवा पचमा ठाम जाएकेँ जातिक उत्कर्ष स्थिर होइत अछि ।

ई वचन असवर्ण विवाहक प्रसङ्गमे कहल अछि । एकर आशय ई जे क्षत्रियामे उत्पन्न ब्राह्मणक सन्तान आगाँ ब्राह्मणहिसँ सम्बन्ध करैत करैत पचमा ठाम जाएकेँ ब्राह्मणत्व प्राप्त करत, चारि पुरुष ब्राह्मणसँ मूले रहत । तहिना वैश्यामे उत्पन्न छठमा ठाम ओ शूद्रामे उत्पन्न सतमा ठाम । तेँ ई विकल्प व्यवस्थित बुझबाक चाही । हरिसिंहदेवी व्यवस्थामे ई वचन सामान्य जाति परक भए गेल ओ हरिसिंहदेवीक श्रेणीकेँ भिन्न भिन्न वर्ण मानि एहि वचनक प्रयोग लाक्षणिक रूपसँ होमए लागल । केओ

गेल छोट अथवा दोषपूर्ण विवाह कएलें सुदा हुनक सन्तान जँ ... तें समानो सम्बन्ध आगाँ करैत गेल तें छठमा ठाम जाएकें ओकरा ... ओकर पूर्वजक छोट अथवा दुष्ट विवाह जनित दोष क्षालित भए ... छैक, दोष नहि रहैत छैक। एक बेरि पाएर चुकलाक पर छओ ... रि ओकर दोष सोहाइल छैक जँ छओ पुरुष धरि कुटुम्बक अपमान ... च किंवा समान सम्बन्ध करैत जाइ। जँ नहि भेल, तखन तें ओहि ... पात भए जाइत अछि। जतेक पाँजि अछि सबमे एहि याज्ञवल्क्यक ... चरितार्थता देखैत छी। जतेक पाँजि अछि सब कोनहु ने कोनहु ... हिक कारणें जो से दोष थीक जातिक, आत्मक विशुद्धिक। जनए अछि तखनसँ जनिका नामपर पाँजि चलल, ओ पाँजि सर्वत्र पंचहि ... नामपर चलल अछि, केओ छओ ठामसँ समीप नहि भेटलाह, प्रत्युत ... लाह। एहिना छोटहु कुलक लोक एहिरूपसँ छओ पुरुष धरि उत्तम ... करैत करैत अपन कुलकें उत्कृष्ट बनाए लैत अछि। पञ्जी- ... मे एहि नियम सबहिक एक नहि अनेको ज्वलन्त दृष्टान्त अछि।

... तेक दूर धरि एहि अध्यायमे हम जे कहि गेलहुँ अछि से कदाचित् ... विषयसँ असम्बद्ध, असंलग्न, प्रतीत हो। वस्तुतः ई विषय हरि- ... देवीक इतिहासक थीक तें हम सूत्ररूपहिं एकर एतए दिग्दर्शन मात्र ... देल अछि, विशद आलोचना कएलें ई विषय प्रस्तुत विषयसँ बहुत ... ड़ जाएत। परन्तु थिकैक हरिसिंहदेवीक "तत्व" इएह, एही स्मृति- ... क आधारपर हरिसिंहदेवीक ई विशाल अट्टालिका ठाढ़ कएल ... एही तत्वपर हरिसिंहदेवीक व्यवस्था भेल छैक तथा एही तत्व- ... र सन्धानन भेलासँ हरिसिंहदेवीक यथार्थ रक्षा भए सकैत छैक। ... ो आचारकें गौण मानि केवल जन्मक उत्कर्षकें प्रधानता दए ... ा हमरालोकनि सामाजिक नियमन आरम्भ कएल तहिआसँ ... अनेकानेक दोष प्रविष्ट होमए लागल। परन्तु जन्महुक विशुद्धिकें ... ान्य हमरालोकनि एतबहु कहाँ देल छी जे बङ्गालक कुलीन लोकनि

देल छलाह? योग्यक सम्बन्ध कतेक लोकिकें बाँचल छन्हि? प्रचलित जे पाँजि अछि ताहिमे अधिकांश तें योग्यहिक पाँजि थीक। योग्यक अपेक्षा न्यून पञ्जीबद्धहुक परिग्रहण लोकिसमाज कँए लेलक अछि। कोनहु मौलिक उतेढ़ देखू तें थोड़ दूरपर किंवा बेशी दूर पर जरुनारहुक सम्पर्क स्पष्ट भए जाएत। पाँजिसँ शून्य तें केओ लोकि एहि ४६ बहु सए वर्षसँ छथिए नहि जो पाँजिक रहस्य कतेक लोकाकें बूझल अछि? यथार्थतः प्रत्येक पाँजि, कलश्री पँच सौ रहीक, कलंक थीक, कुलमे जे दोष आएल तकर संकेत थीक; दुष्टताक बीज थीक। तथापि पाँजिक जे गौरव करैत छी से अज्ञानता छोड़ि आओर की कहाओत, मिथ्याभिमान नहि थीक तें की भए सकैत अछि? पुनि दोषक जे ग्रहण कएल अछि से तें याज्ञवल्क्य- हिक वचनकें मानि कें, जे छठमा ठाम जातिक उत्कर्ष भए जाइत अछि। एही सनातन नियमक पालन करैत हरिसिंह देवी अद्यापि जीवित अछि ओ उच्चता किंवा नीचताक अवधारणमे ओही नियमक पालन एतबहु होएबाक चाही, ओ हम तें कहब जे होइतहिं आएल अछि ओ जँ होइत रहत तें हरिसिंहदेवीक लोप नहि भए सकैत अछि। केओ ओकरा बूझिकें करैत छथि, बहुत जन बिनु बुझलहिं करैत छथि ओ तहि प्रसङ्गमे हम कहब जे एकरा बूझिकें, उचित विचार पूर्वक, यदि ई कएल जाए तें ताहिमे समाजक श्रेय अछि कारण जे तखन पक्षपातक अवकाश नहि रहत।

अलबी मूलक उत्कर्ष हमरालोकनि आरम्भहिमे देखि आएल छी। एहि मूलकें छोट कहब पञ्जीप्रबन्धक प्रसङ्ग अपन अज्ञानताक द्योतन मात्र होएत। हरिसिंहदेवक समयमे जे पण्डितलोकनि एहि कुलमे छलाह ताहिमे सबसँ प्रमुख छलाह म० म० रत्नेश्वर झा। अपन परिचय ओ छओ पुरुषक देल ओ तें जन्मक विशुद्धि हुनक स्पष्ट छल। विद्याक व्यवसाय हिनका कुलमे कोन रूपक छल से देखल। आचारक नैष्ठिकता किंवा संस्कारादिक यथावत् परिपालन एतेक दिनपर बुझल नहि भए

सकैत अछि परन्तु म०म० रामेश्वरक पौत्र, प्रपौत्र ओ वृद्धप्रपौत्र "धर्माधिकरणिक" छलाह ओ म० म० रुद्रधरकें प्रमाण मानि आइ धरि हमरा लोकनिक आचार नियन्त्रित अछि एतावतैव हिनक कुलक उत्कर्ष स्पष्ट अछि। वैवाहिक क्रिया हुनक सबटा पंचे छल। तें पञ्जीकार रघुदेव झा खलवी मूलकें जे उत्तम कुलमे गनाओल से कोनो आश्चर्य नहि ओ तें ई निश्चय जे एहि कुलक मूलमे कोनो दोष नहि छल। पञ्जीकें जे मानैत छी ओ हरिसिंहदेवी व्यवस्थाकें जे स्वीकार करैत छी तनिका एहि कुलकें "उत्तम" कहए पड़त।

परन्तु ताही सङ्ग इहो मानहि पड़त जे एमहर आबि खलवी कुलक बड़ अपकर्ष भए गेल ओ हमरा तँ पूर्ण सन्देह अछि जे खलवीकें सोतिक मूल जे हम कहल अछि से देखि बहुतो जन हँसताह। तकर हमरा भय नहि अछि कारण जे ऐतिहासिक विवेचना एकर कए गोटे कएलें छथि अथवा कए सकैत छथि ? तखन सब तँ वर्तमान जे परिस्थिति छैक ताहीसँ एकर उच्चता किंवा नीचताक अवधारण कए सकताह ओ से परिस्थिति खलवी कुल मात्रक नीक नहि रहल। एक गोट मात्र शाखा तँ एकर यथाकथञ्चिद् योग्यमे रहल परन्तु आब सेहो लुप्त भए गेल ओ शेष अनेक प्रशाखा भेल ताहिमे ककरहु स्वकर-रक्षाक कोन कथा, सामान्य पञ्जीबद्धकुल श्रेणीमे स्थान नहि रहल। ई स्थिति केवल एही मूलक भेल अछि से नहि, गंगौली ओ बहेराड़ि एहु दुइ मूलकें देखू। आओरो अनेक मूल अछि जाहिमे गोटेक शाखा स्वकरक रक्षा कए सकल अछि, शेष शाखामे गोटेक उपशाखा, गोटेक डेरा मात्र। क्रमिक ह्रास स्वाभाविक थिकैक* परन्तु खलवी मूलक अधःपतन आइ आश्चर्यजनक

* मुदा उपरिओ तँ कतेक मूल कएलक अछि जे साधारण श्रेणी, अधम श्रेणीसँ अपन विद्याक वैभवसँ ऊपर उठैत, उत्तम सम्बन्ध करैत, समाजक मूर्धन्य भए गेल अछि।

प्रतीत होइत अछि ओ जाहि हीन-दृष्टिसँ समाज एहि मूलकें देखैत अछि ततेक आन कोनकें। एकर रहस्य की ?

ओना तँ एकर विचार बड़ गहन छैक ओ निश्चित रूपसँ किछु कहब सम्भव नहि अछि। ततेक दिन पूर्वक ई विषय भेल जे आनतो विश्वस्त बुझल नहि भए सकैत अछि। परन्तु तैओ एतबा तँ स्पष्ट अछि जे उत्तम कुलसँ हिनका लोकनिकें सम्बन्ध छुटि गेल ओ तें जे कथा मनु कहैत, ई महाकुल अकुलीनताकें प्राप्त कएलक। उत्तमकुलसँ सम्बन्ध नहि रहबाक प्रधान कारण भेल विद्याक क्रमिक ह्रास। पञ्जी-प्रबन्धसँ सतावधि वर्षक उत्तरहिं एहि कुलक तीनि गोट शाखा मात्रमे विद्याक व्यवसाय रहल, शेषसँ जेना सरस्वती रुसिकें चलि गेलीह ओ हुनकहि सङ्ग जातीय उत्कर्ष सेहो जेना चल गेल। रामेश्वरक तीनि पुरुष धरि तँ विद्याक प्रकर्ष रहल परन्तु तकर पश्चात् महेश्वरक सन्तानमे रत्नधरक अपत्य जे "बहादुर"क वासी छलाह, ओ लक्ष्मीधरक सन्तानमे हलधरक अपत्य जे "जनुगाम"क वासी छलाह ओ रघुक अपत्य जे "खलवी"क वासी छलाह, बस, एही तीनू डेरामे विद्याक व्यवसाय रहल ओ एहि तीनूक उत्कर्ष कमसँ कम छओ पुरुष धरि अवश्य रहल। ई एक गोट कारण भए सकैत अछि।

दोसर कारण भेल जे रामेश्वरक तीनू बालककें ओइनिवार राजकुलसँ अत्यन्त सम्बन्ध भए गेल। ओना ओइनिवारक कुल सामान्य कुल नहि थीक; खौआल मूलक एक गोट शाखा ई मूलतः अवदात छल। परन्तु राज्यक प्राप्ति भेलाक पर एहि कुलक सामाजिक सत्ता जेना लुप्त भए गेल। एकर कारण की से कहब कठिन अछि परन्तु नव थोड़ पंच कुलकें ओइनिवारसँ, विशेषतः राज्यप्राप्ति भेलाक अव्यवहित पर, सम्बन्ध देखैत छिऐन्हि। कन्या तँ पूर्वमे प्रायः केओ नीक लोक हिनका लोकनिकें नहि देथए ; जे केओ पंच कुलक बालक एहि कुलक राजकन्यासँ विवाह करथि तनिक सन्तानसँ पंच लोक जेना हटि जाए ओ फलतः

न्यून क्रिया करैत करैत हुनकालोकनिक सन्तान नीच भए जाए । सम्भव थीक जे राज्यग्रहण ब्राह्मणक हेतु अवैध बूझि ओइनिवारक सामाजिक सत्ता न्यून भए गेल हो; भए सकैत अछि जे राज्यक मदमे हिनकालोकनिक आचार विशुद्ध नहि रहल हो; सम्भव थीक जे अपन ऐश्वर्यक दर्पमे ई लोकनि जातीय उत्कर्ष एवं अपकर्षके उपेक्षाक दृष्टिसँ देखैत होथि; भए सकैत अछि जे धनक प्राचुर्यके पाबि ई लोकनि विद्याक अभ्यास-के त्यागि देने होथि । जाहि कोनहु कारणसँ हो हरिसिंहदेवीक समाजमे ओइनिवारक सत्ता आरम्भमे बड़ न्यून छल ओ ओइनिवारसँ सम्बन्ध करब अपना कुलके नीच करब छल । ओही ओइनिवार राजकुलक कन्यामे रामेश्वरक दू गोट बालक विवाह कएल ओ सबसँ जेठ महेश्वरक जेठ बालक गदाधर ओइनिवारक दौहित्रीमे विवाह कएल । हिनकालोकनिके आओरो विवाह छल, ओइनिवारक सम्बन्धसँ बँचल रामेश्वरके अनेको पौत्र छलथिन्ह परन्तु रामेश्वरक तीनू बालक ओइनिवार राजकुलक अनायत्त सम्बन्धी ई प्रवाद समाजमे अवश्य प्रसृत भए गेल होएत । एना समस्त परिवार ओइनिवार राजकुलसँ एहि तरहें सम्बद्ध आन दोसर कोनहु कुलमे नहि भेटैत अछि ।

जे लोकनि ओइनिवारसँ सम्बद्ध नहि छलाह ताहिमे अह्लपुर ओ जनुगाम शाखा तँ बहुत दिन धरि विद्याक व्यवसायसँ अपन मर्यादा किछु किछु अवश्य राखल परन्तु तथापि जे क्रमिक ह्रास होइत गेल तकर कारण विशेष अनुसन्धानसापेक्ष अछि । परन्तु सबसँ आश्चर्य तँ ई जे खलवीमूलक जे खलवी शाखा सबसँ विशेष अपन मर्यादाक रक्षा कएल से छल म० म० लक्ष्मीधरक बालक, महाराज भवेश्वरक दौहित्र, म० म० रघुनाथ झा । ओइनिवारक दौहित्र भए ई अपन जातीय गौरवक कोनाके रक्षा कएल ई अवश्य उपदेशप्रद अछि । निश्चय ई सरस्वतीक उपासनाक फल थीक जे रघु झाक सन्तान नहि त्यागल । विद्यासँ विनय, ओ विनयसँ पात्रता प्रसिद्ध अछि ओ से पात्रता पाबि ई लोकनि जातीय अपकर्षक

अपमान सहि सहि उत्तम उत्तम कुलसँ सम्बन्ध करैत गेलाह ओ तैं पूर्वक दोष क्रमशः संपैत गेल । आन आन शाखाक लोक सब से अपमान नहि सहने होएताह ओ अपन अभिमानक वेगमे भसिआए छोट भेल गेल होएताह ।

परन्तु खलवी मूलके हमरा जनैत आधुनिक समाजमे एतेक "बदनाम" कएलक अछि एकर बँगनी शाखा । बनैली राज-वंशक प्रतिष्ठा भेलाक पर मिथिलामे एकर बड़ प्रसिद्धि प्रसृत भए गेल । परन्तु मिथिलाक आओर सब राजकुल उच्च कुलक छल । खण्डवला कुलक चर्चे नहि हो; पहसरा एवं सोहिआक राजवंश सोतिक वंश छल; राजा धिजयगोविन्द सिंह सोति छलाह, रजौरहुक राजवंश आरम्भमे सोतिक वंश थीक । केवल बनैलीक राजवंश छोट कुलक बूझल जाइत छल अछि ओ तैं साहचर्य-वशात् बँगनी शाखाक सङ्ग-सङ्ग समस्त खलवी मूलके साधारण जन अत्यन्त हेय दृष्टिसँ देखए लागल इहो एक गोट कारण भए सकैत अछि ।

परन्तु बँगनी शाखा की सत्ये एतेक छोट छल ? हम कहि आएल छी जे पञ्जीमे "बुद्धिधरक सन्तति" ओ "गदाधरसुत परभू सन्तति" बँगनीक शाखी कहल छथि । बुद्धिधरक पौत्र धरिक परिचय हमरा भेटल अछि ओ तावत् धरि हिनका सन्तानके छोट नहि कहि सकैत छी । तकर उपरान्त एहि शाखामे बुद्धिधरक केओ सन्तान छथिओ की नहि से हमरा ज्ञात नहि ओ तें ओहि प्रसङ्ग किछु कहब असम्भव । जँ केओ छथि ओ छोट भेलाह तँ बुद्धिधरक पौत्रक पश्चात् थी से जनबाक साधनो हमरा नहि अछि । परभूक तँ विवाहो नहि भेटैत अछि ओ तें ओहि प्रसङ्ग किछु कहब असम्भव । उपलब्ध अछि गदाधरक बालक हरिकरक सन्तानक परिचय, बनैली राजवंशक कारणें, ओ पञ्जीमे हिनक उल्लेख नहिओ अछि तथापि जे विद्यमान छथि तें "हरिकरक सन्ततिकें बँगनीक शाखी" मानि लेमए पड़ैत अछि ।

एतए पुनि हम दोहराएब जे बुद्धिधरक तँ कथे नहि, गदाधरहुक

विवाहमे कोनो दोष नहि छल । पूर्व जे सम्बन्धपरम्परा हम देखाए आएल छी ताहिसँ स्पष्ट अछि जे बुढ़िमर अवदात छलाह, हुनका बालक एवं पौत्र सेहो अवदात छलाह । तकर पश्चात्‌क समाचार ज्ञात नहि अछि । गदाधरक तेसर विवाह ओझिनिवारक दौहित्रीसँ छल, कलिगामएक ओहितम, तेँ छोट ओ अवश्य छल, परन्तु कोनो दोष नहि भेटल अछि जाहि कारणसँ हुनक सन्तति एना समाजमे खसि रहए । गदाधरक बालक हरिकरसँ लए परिचय तँ भेटैत अछि परन्तु मूलपञ्जीमे [illegible], अति-संक्षिप्त । यथा हरिकरक विवाह छल कलिगाम मूलक हरिक कन्यामे एतबे लेख अछि । ई हरि के छलाह, ककर बालक, ककर दौहित्र, हिनक विवाह कतए इत्यादि कथा किछु नहि भेटैत अछि । हरिकरक वृद्धप्रपौत्र भरत धरि एहिना संक्षिप्त परिचय अछि जाहि आधारपर किछु विचार करब सम्भव नहि अछि । भरतक बालक रामकृष्ण झा, नैयायिकक विवरहुक परिचय किछु विशेष अछि ओ तहिना हुनक बालक शिवेश्वरक, ओ तनिक बालक देवान देवानन्दक । छोट हिनकहु लोकनिक विवाह अछि परन्तु पूर्व पाँच पुरुषक प्रसङ्ग तँ सेहो कहब कठिन अछि । तेँ हमर अनुमान अछि जे हरिकरक विवाहमे कोनो दोष छल जाहि कारणसँ हुनक सन्तान समाजमे खसि पड़लाह, नीक लोकसँ सम्बन्ध छुटि गेलन्हि, ओ पञ्जी समेतमे हिनक उल्लेख नहि भेल । पुनि पाँच पुरुष धरि अनवरत ई लोकनि अएवारक श्रेणीमे चल गेलाह ओ ताहूमे तेना कलंकित रहथि तेना दबल रहलाह । हरिकरक प्रपौत्र पण्डित भेलाह, महोपाध्याय रामभद्र; हुनक बेटा महोपाध्याय भरत पण्डित भेलथिन्ह; पौत्र महोपाध्याय रामकृष्ण झा पण्डित भेलथिन्ह । तेँ भरतसँ आगाँ वैवाहिक सम्बन्धमे किछु उत्कर्ष दृष्ट होइत अछि ; रामकृष्णक कन्याक विवाह सत्कुलमे देखैत छी । [illegible] अनुसार रामभद्रसँ छठम हजारी परमानन्द चौधरीक विवाह हमरालोकनि नीक पञ्जी-वड़मे देखैत छी । तहि परमानन्द चौधरीक समयपर पाँजि सेहो प्रचलित

भेल । हरिकरक दोष रामभद्र झाँपब आरम्भ कएल ओ परमानन्द चौधरीक समयमे आबि ओ झाँपल भेल ।

हरिकरक विवाहमे दोष कोन जाहि कारणेँ हुनक कुल एहि रूपेँ कलंकित भए खसल से कहब असम्भव अछि । छलाह ओ धर्माधिकरणिकक बालक, मातृक छल हुनक जातिक लेखेँ छोट, बड़ छोट, "कलिगाम-मूलक भुतहरी" शाखा, परन्तु बड़ ऐश्वर्यशाली । हुनक मातामह सान्धि-विग्रहिक छलाह. एक गोट मातामहभ्राताकेँ राजाक उपाधि छल ओ दोसर पुनि सान्धिविग्रहिक छलाह । मातामहक साक्षात् पितिऔत भाए महाराज देव सिंह छलथिन्ह ओ मातामही महाराज गणेश्वरक कन्या, महाराज कीर्त्ति सिंहक वैमात्रेय बहीनि छलथिन्ह । एहि हरिकरक विवाह देखैत छी "कलिगाम" मूलमे । परिचय तँ उपलब्ध नहि अछि जाहि आधारपर कहि सकब जे हरिकरक मातृक "कलिग्राम मूलक भुतहरी शाखा" ओ हरिकरक श्वशुरक "कलिगाम मूल" मे परस्पर कोन सम्बन्ध । गोत्रपञ्जीमे दुहू भारद्वाजगोत्रमे पठित अछि । हमरा पूर्ण सन्देह अछि जे हरिकरक ई विवाह अनधिकारमे छल, कारण जे कलिगाम हिनक मातृकुल छल ओ मातृकुलमे विवाहक अधिकारमे मातृसपिण्डाक वर्जन बहुत दूर धरि अस्वाशन्धन कारण करैत छैक । कोनो आश्चर्य नहि जे अपन ऐश्वर्यक मदमे जानिकेँ अथवा अज्ञानतः हरिकर प्रायः अनधि-कारमे विवाह कए लेने होथि । परन्तु अनधिकारमे छल किवा नहि, छोट धरि ई अवश्य छल ओ हिनक मातृकुल तथा हिनक श्वशुरहुक ई कलि-गामएक कुल निम्न छल ।

परन्तु जाहि कोनहु कारणेँ हो, अलयी मूलक वंगनी शाखा दोबर-बह बुझल जाए लागल, समाजमे हेय भए गेल, नीक कुलसँ सम्बन्ध छुटि गेलैक, अत्यन्त साधारण अएवारक श्रेणीमे, सेहो तेना कलंकित रहए तेना, परिगणित होअए लागल । मुदा पुनि एकर स्थिति क्रमशः व्यवस्थित होअए लागल ओ हजारी परमानन्द चौधरीक विवाह जे पञ्जीवद्धमे

भेल रहितासँ पुनि एहि डेराक सम्बन्धक उत्कर्ष कोन कुलसँ न्यून अछि ! हजारी चौधरीक कन्याक उल्लेख नहि अछि परन्तु राजा दुलार सिंहक समयसँ लए केहन केहन महाकुलक व्यक्तिकेँ एहि वंशक राजकन्या सभ समर्पित भेलि अछि । द्वितीय वर किंवा तृतीय वर कथूक विचार नहि कए केवल जातीय गौरवक प्राधान्यँ देखहि पंथ सोतिकेँ ई लोकनि कन्या देल अछि ओ ताहि प्रसङ्ग व्यय कतेक कएल अछि ! मनु कहैत छथि जे कुलकेँ उत्कर्ष प्राप्त हो से यदि इच्छा रहए तँ उत्तम उत्तमक सङ्ग सम्बन्ध करी । विचार करु जे एहिसँ उत्तम उत्तम आओर के भए सकैत छथि जनिका सङ्ग सम्बन्ध कएल जाय । ओ ई सभ कोन उद्देश्यसँ —इएह जे जे कुलक उत्कर्ष हो । कुमार श्री कृष्णानन्द सिंह जे हालहिमे दू गोट कन्यादान कएल अछि तकर चर्चा नहि हो, श्री हरिसिंहदेवोसँ बहुत व्यापक श्रेत्रमे पड़ैत अछि, नहि तँ राजा दुलार चौधरीसँ लए आइ धरि एको गोट कुविवाह एहि कुलमे भेल अछि ? हजारी परमानन्द चौधरीसँ छठम ठाम राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुरक बालक श्री भालित सोतनि तथा कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह सबहु भाइ पड़ैत छथि । एहि दुओ पुरुषक [illegible] हिनका लौकिनिक कोन रूपक मर्यादा प्रदर्शित करैत अछि, सामाजिक व्यवस्थाक प्रति कोन रूपक अनुराग द्योतित करैत अछि, जातीय गौरवक हेतु कोन रूपक त्यागक आदर्श उपस्थित करैत अछि !

हजारी परमानन्द चौधरीसँ आरम्भ कए एहि राजकुलक सबहु व्यक्तिक कयन विवाह केहन भेल अछि ! दुओ सात गोट सोतिक कन्या छोड़ि आओर जतेक [illegible] एहि कुलमे आइलि छथि से सब पंजिक प्रतिष्ठित कुल सभसँ, [illegible] सनातन राजन्य पूर्वहु ओ परहु । एतन जे अविवाहित बालक किंवा कन्या बनैली किंवा श्रीनगरमे छथि तनिक यदि सोड़हो कुल देखल जाए तँ दंत्रिक कुलकेँ छाड़ि आओर पन्द्रहो गोट महाकुलहिक परिचय भेटत, ओ ताहिमे कए गोट तँ सोतिहिक कुल होएत । श्री भीमनाथ [illegible] कन्या किंवा बालकक सोड़हो कुलमे आधा तँ

सोतिहिक महाकुल अछि ! एहना स्थितिमे आब हजारी परमानन्द चौधरीक डेराकेँ छोट कहब, सामान्य कहब, कलंकित कहैत रहब हरिसिंहदेवीक उपेक्षा थीक, दुराग्रह थीक, मिथ्याभिमान थीक । ने एहि डेरामे "कुविवाह" अछि, ने "क्रियाक लोप" अछि, ने "विद्याक अनध्ययन" अछि, ने "ब्राह्मणक अतिक्रमण" अछि । "उत्तमसँ उत्तम सम्बन्ध" भेल अछि ओ से छओ पुरुषसँ होइत आएल अछि । याज्ञवल्क्य जातिक उत्कर्ष अधिकसँ अधिक सतमा डाप कहैत छथि । शूद्रहुक सम्पर्क रहए तँ नीक क्रिया करैत करैत सातम डाम कलंकक लोप भए जाए ओ सन्तान पूर्वक सत्तकेँ पाबि जाए । मनु कहैत छथि—

उत्तमानुत्तमान् गच्छन् हीनान्हीनांश्च वर्जयन् ।
ब्राह्मणः श्रेष्ठतामेति प्रत्यवायेन शूद्रताम् ॥ ४—२४५

अर्थात् उत्तम उत्तम सम्बन्ध करैत ओ हीन हीन सम्बन्धकेँ छोड़ैत ब्राह्मण श्रेष्ठताकेँ पबैत छथि । एकर विपरीत क्रिया कएलासँ शूद्रताकेँ प्राप्त होइत छथि ।

मानि लेल जे ई कुल शूद्रताके प्राप्त कएलेँ छल, छोट क्रिया करैत करैत अपकर्षक पराकाष्ठापर पहुँचि गेल छल परन्तु तैओ तँ याज्ञवल्क्यक वचनानुसार आब हजारी परमानन्द चौधरीक वंशधरकेँ जातिक उत्कर्ष उचित-प्राप्त छैहि । तकर प्रत्यक्ष प्रमाण परमानन्द चौधरीक नामक पांजिक सत्ता थीक जे स्वर्गीय राजर्षि मिथिलेशक निर्धारित कएल थीक । सोहिमे योग्यसँ अव्यवहित निम्न श्रेणीमे ई पांजि राखल गेल ओ ताहि प्रसङ्ग हम तँ एतेक धरि कहब जे सेहो स्थान एहि कुलक क्रिया देखि एकरा हेतु पूर्ण उपयुक्त नहि भेल । केवल दृष्टान्तक हेतु हम कहैत छी जे धौतास्त भासँ एहि पांजिक सत्ता कोन दृष्टिसँ, कोन आधारपर, कोन कारणेँ न्यून हो ?

ई तँ भेल सिद्धान्तक दृष्टिसँ । दृष्टान्त सेहो हम देखबैत छी । ताहि प्रसङ्ग हम "बलिआस" किंवा "एकहरा" मूलक चर्चा एहि छोट

प्रत्यक्षे नहि करथ; पञ्जीमे एहि दुइ मूलकेँ मध्यम श्रेणीक कहल अछि मुदा विवाहक संबन्धसँ ओ क्रियाक उत्कर्षसँ ओ सम्बन्ध-परम्पराक महिमासँ ई दुइ कुल बहुत दिन भेल बड़ उत्कृष्ट कुलक गणनामे आबि गेल। हम देखने छी "सुरगण" क । पञ्जीमे एहि कुलक गणना मध्यम श्रेणीमे अछि ओ एखनहु एहि मूलक "ओइनाम" शाखाकेँ छोड़ि —ताहूमे समर सिंहक डेरा——शेष सकरल मूल निकृष्ट कुलक आवृत अछि। परन्तु महाराज महेश ठाकुरहिक समयमे एहि कुलमे समरु राय नामक एक जन महापुरुषक प्रादुर्भाव भेल। ई छलाह "सिसौवार" अमरु रायक दौहित्र ओ अमरु रायकेँ ओइनिवार राजकुलसँ सम्बन्ध। समरु रायक पितामहक वंशावलि अछि "धिउरोत्पन्न महादेवी लखिमा" जनीह से कहि आएल छी। ई समरु राय पुर्निआक पोखरइ लए पहसरा राज्यक प्रतिष्ठा कएल जे राज्य सात पुरुष धरि हिनक वंशधरकेँ रहल। अन्तिम पहसराधीश, अथवा डा० बुकननक शब्दमे पुर्निआक राजा, भेलाह इन्द्रनारायण राय जे समरु रायक प्रपौत्रक प्रपौत्र छलाह। समरु रायकेँ दू विवाह, प्रथम पत्नीमे हिनक प्रपौत्रक प्रपौत्रक बालक राजा महेन्द्रनारायण राय ओ राजा राजेन्द्रनारायण राय सौरियाधीश छलाह जनिक वंश लुप्त भए गेल मुदा हुनके दायाद समरु रायक प्रपौत्रक प्रपौत्रक प्रपौत्र श्री लक्ष्मीनारायण राय सम्प्रति विद्यमान छथि। दोसर विवाहमे हुनका पहसराधीश लोकनि सन्तान। दोसर विवाह जाहिमे हुनक सन्तान पहसराधीश लोकनि, से छल "माण्डर" मूलक "सकुरी" शाखाक गोविन्दक कन्यामे जनिक पितामहीक मातामही "लघुदृढ़भव..." जोकेश्वर पाठकक प्रपौत्री छलीह। एहि जोकेश्वर पाठकक जाति 'दुष्ट' छल, दोषसँ युक्त छल। आश्चर्य तँ ई, अत्यन्त आश्चर्यक विषय, जे जोकेश्वरकेँ सन्तान कतेक भेल ओ कतए कतए ने पसरि गेल! परम्परया बड़ बड़ कुल हिनक सन्ततिकोटिमे पइसल अछि परन्तु कतए अग्नि-खण्ड जकाँ जेम्हर जेम्हर हिनक सम्पर्क

पइसल गेल सबकेँ ई दग्ध कएने गेलाह। कतेक अवदात कुलमे ई दाग लगओने अछि, कतेक पाँजि हिनक सम्पर्कक कारणेँ निर्वासित भेल अछि, कतेककेँ ई कलंक भेल छथि। एही जोकेश्वरसँ अधम ठाम पइसल "भड़रए" गोविन्दक कन्यामे समरु रायक बालक राजा कृष्णदेव रायकेँ हमरालोकनि सोतिमे उठाए लेल ओ बड़ बड़ जन हुनका कन्या देल! राजा कृष्णदेव रायकेँ चारि गोट विवाह, चारू पैघ ठाम। एक गोट ओ "माण्डर" मूलक "जगौर" शाखाक रुद्रुपाध्याय भवानीनाथ झाक बहिनिमे छल से हम पूर्वहिँ कहि आएल छी। ई गोटाक वंश लुप्त अछि तेँ नहि कहि जे ओ लोकनि सोति छलाह वा नहि। परन्तु हुनक तेसर विवाह छल "सोदरपुर" मूलक "हिन्वरवार" शाखाक एँठी झाक बालक लक्ष्मीपति झाक कन्यामे, "कन्होली सोदरपुर" मूलक म० म० नरहरि झाक दौहित्रीमे। एही नरहरिक प्रपौत्रक पौत्र मइरौनीक विजेश्वर झा ओ नन्दीश्वर झा सबहुँ भाइ छलाह। सुरगणकेँ कन्या दए लक्ष्मीपति झाक तत्ता समाजमे किञ्चित्मात्रो न्यून नहि भेल। हुनक एक मात्र बालक गौरीपति झा बड़का सोति छलाह, बड़ प्रतिष्ठित। हुनका दू विवाह, प्रथम "सरिसब" मूलक "शिवुरौली" शाखाक "अभिनव-सरस्वती" वटेश्वरक पौत्री म० म० राम सरस्वतीक कन्यामे ओ दोसर म० म० महाराज महेश ठाकुरक जेठ भाए, "कुसुमाञ्जलि"क "मकरन्द" नामक टीकाक कर्त्ता, म० म० मेघ ठाकुरक दौहित्र "हरिअम्बए" ठाम मिश्रक कन्यामे। प्रजापति जकाँ गौरीपति झाक सन्तान समस्त मोतिपुराक बड़का बड़का डेरा पसरल अछि ओ एही गौरीपति झाक प्रपौत्रक प्रपौत्र सरिसबमे कविशेखर श्री बदरीनाथ झा बुद्धिमान वर्तमान छथि। कृष्णदेव रायक छोट भाए रूपराय हरिदेवक विवाह "खौआल" मूलक "महुगौरा" शाखाक भवनाथक कन्यामे भेल जाहि भवनाथक अमर विवाहक कन्यामे महाराज महेश ठाकुरक बालक म० म० अच्युत ठाकुरक विवाह, जनिक दौहित्र "अभिनवसरस्वती" "श्रुतधर" रघुदेव मिश्र ओ हरिदेव मिश्र छलाह। समरु रायक बालककेँ

कन्या दए "सौंराइए" लक्ष्मीपति झा सुरगणक एहि डेराकेँ उठाए लेल ओ ओहिठामसँ सुरगणक मूलहिक नामपर पाँजि प्रचलित भेल जे आगाँ जाए ओहीं समक रायक अभिवृद्धजीव सोदिसाधीश कल्पनारायण रायक विवाहक नाहिसँ दोसर दोष आबि गेला उत्तर एक गोट छोट मूल अंश नामक "दोसर, "छोटका सुरगण", पाँजिक सृष्टि भेलाक पर "बड़का सुरगण" कहबए लागल । एखन पर्यन्त "बड़का सुरगण" पाँजिक लोक सोतिमे छथि ओ अखन तें ई बड़का पाँजि बूझल जाइत अछि । वर्त्तमान श्री लक्ष्मीनारायण राय हुनक रायसँ बसमा ग्राम पड़ैत छथि ओ एहि आठ पुरुषसँ हिनका कुलकेँ सतत सम्बन्ध बड़का सोतिक श्रोत्रिय-ठाम होइत आएल अछि । हँ, जे सोतिसँ बाहर भए अन्यत्र क्रिया कएल तेँ तें स्वयं सोतिसमाजसँ बहिर्भूत भए गेलाह । कहबाक अभिप्राय जे "लिखैवार"क दौहित्र समक राय; मूल हुनक छोट, "सुरगण"; विवाह हुनक लेहुन कन्यामे जकरा "आतिक दोष", नवम ठाम पड़ैत । परन्तु तैंओ समक रायक बालककेँ एक जन महाकुलीन श्रोत्रियपुङ्गव अपन कन्या दए हुनका सोतिमे उठाए लेल, सोतिसमाज हुनक परिग्रहण कए लेल, ओ तहिठामसँ बड़का बड़का सोति अपन कन्या एहि कुलक वंशधरकेँ देअए लागल- एहि कुलक कन्या ग्रहण करए लागल । समाजक परिग्रहणसँ सब दोष झाँपल भए गेल । ओकर स्मरण करओनिहार रहि गेल केवल सुरगण मूलहिक नामपर प्रचलित पाँजि जे ओहि कुलक सन्तानकेँ समाजमे परिचित करबैत रहल !

दोसर दृष्टान्त हम देब "कन्नावार"क । एहि मूलक प्रसङ्ग तथा एहि मूलक वंशधर महाजनलोकनिक जातिक प्रसङ्ग हम नहि किछु कहब, ताहूठाम प्रयोजन नहि छैक । महाराज महेश ठाकुरक समयसँ किछु एमहर आबि एहि कुलमे रामभद्र झा नामक एक गोट महापुरुषक प्रादुर्भाव भेल जनिक एक गोट विवाहक सन्तानकोटिमे "नन्दन झा" पाँजि पड़ैत अछि से हम पूर्वहिं कहि आएल छी । अपर विवाह ओ "संकराढ़ी" मूलक

श्रीकान्त झाक कन्यामे कएल । एहि द्वितीय पक्षक हुनक सन्तान दक्षिणामूर्त्तिक प्रसादसँ सिद्धि प्राप्त कए सरस्वतीकेँ जेना वश्या कए लेल ओ चारि पुरुष धरि, प्रायः दू सए वर्ष धरि, मिथिलामे विद्याक ज्योति जेना रामभद्र झाक सन्तानक घरमे जरैत छल हो । एहन विद्याक उत्कर्ष ओ ओहिसँ वैभव, सिद्धिक एहन चमत्कार, एमहर अन्यत्र नहि कतहु देखल अछि । परन्तु सिद्धवंशक भेओकेँ जातिमे ई लोकनि छोटे रहलाह । तकर प्रतीकारमे ई लोकनि पँच पँच कुलसँ सम्बन्ध करए लागि गेलाह । कतेक सत्कुलक बालक हिनका लोकनिक श्रोत्रियठाम बिकाए अपन गौरव ध्वस्त कएलक; कतेक पंच पंच लोकक कन्याकेँ हिनका लोकनि विवाहि विवाहि अपना श्रोत्रियठाम आनल । फलतः श्रीकान्त झाक नामपर पाँजिक सृष्टि भेल ओ हरिसिंहदेवी समाजपद्धतिमे जाहि कुलक कतहु गणना नहि छल से पञ्जीबद्धक श्रेणीमे पहुँचि गेलाह ! सोतिमे तैंओ ई पाँजि बड़ पश्चात्‌केँ परिगृहीत भेल अछि परन्तु पञ्जीकारपारक लौकिकक श्रेणी-विभाजनमे "श्रीकान्त झा"क स्थान योग्यक श्रेणीक अव्यवहित उत्तर, पञ्जीबद्धक लौकिकक माथहि पर, परमानन्द चौधरी ओ कमलनयन पाठकक श्रेणीमे परन्तु एहि सबसँ उपरहिं, निर्धारित कएल गेल ! एमहर आबिकेँ तें ओहि रामभद्र झाक पौत्र, "विद्यानिधि" म० म० पीताम्बर उपाध्यायक बालक, "तर्कपञ्चानन" म० म० गोकुलनाथ उपाध्यायक प्रपौत्रक प्रपौत्रीसँ जखन श्रीश्मन्मिथिलेश स्वयं विवाह कएल अछि तखन तें एहि मूलक न्यूनता हटि गेल, रामभद्र उपाध्यायक जातिक दोष झाँपल भए गेल, विद्यानिधि पीताम्बर उपाध्यायक विवाहक कलंक प्रक्षालित भए गेल, दक्षिणामूर्त्तिक प्रसादक फल प्रपूर्ण भए गेल, सरस्वतीक उपासना सम्पूर्ण सिद्धि देखाए देलक ! स्पर्शमणिक सदृश श्रीश्मन्मिथिलेशक चरणक स्पर्शसँ "कन्नवह" मूल हरिसिंहदेवीक सुवर्ण भए सोतिमे परिगृहीत भए गेल !

हम पूर्वहुँ कहल अछि जे अनुसरण कएल राजा दुलार सिंह एएहु नीति जे हुनक आश्रय सुरगण-राजा लोकनिक पूर्वज समक्ष राय धएलें छलाह। इहो अपन बेटाक विवाह ताकिकें एक गोट महाकुलीन ओ जाति-मान् सोतिक कन्यामे कराओल। उग्रसिंह ठाकुर अपनहि दा पैघ लोक नहि रहथि, हुनक सम्बन्धी सबटा पैघहि लोक छल। आशा तँ राजा दुलार सिंहकें इएह छल जे जेना लक्ष्मीपति झा अपन आर्थिक प्रतापसँ, अपन व्यक्तित्वक गरिमासँ, अपन सामाजिक प्रतिपत्तिक महिमासँ सुरगण राजकुमारकें अपन कन्या दए हुनका सौति बनाए लेल, ओ हुनक अनु-सरण करैत बड़का बड़का सोति सुरगणसँ सम्बन्ध करए लागि गेलाह तहिना उग्रसिंह ठाकुर सेहो कए सकताह। परन्तु सौतिक सामाजिक व्यवस्थामे एहि मध्यमे जे विराट् परिवर्तन भए गेल छल से हुनका दृष्टिमे नहि आएल, उग्रसिंहक व्यक्तित्वक परिचय हुनका नहि भेल। परि-स्थितिक प्रतिकूलतासँ राजा दुलार सिंहकें फल उनटले भेल !

जाहि समयमे सुरगणकें सौतिसमाज ग्रहण कए लेलक ताहि समयमे हरिसिंहदेवीक रूप दोसर छल। समाजक प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र छल ओ अपन मर्यादाक रक्षा स्वयं करैत छल, शासनक प्रयोजन ताहि हेतु नहि भेल छल। यदि कोनो नव क्रिया करबाक होइत छलैक तँ तदर्थ सभा होइत छल ओ सभाक निर्णयानुसारहिं से कएल जाइत छल। ताहिमे सामाजिक प्रतिपत्तिक लोक बहुमतकें मिलाए अपन मर्यादाक रक्षा करैत ग्रहणो काज कए लैत छल ओ से पचाए लैत छल। सौति, योग्य ओ पञ्जीबद्धक मध्यमे वैवाहिक प्रतिबन्धो तावत् पर्यन्त विशेष नहि भेल छल ओ जातिमे न्यूनहुकें पैघ लोक कन्या दए ओकर सत्ता उच्च कए दैत छलाह। एहना परिस्थितिमे लक्ष्मीपति झाक सदृश प्रभावशाली महाकुलीन जन जँ सुरगणकें जमाए कएल ओ से सुरगण यदि विनम्र भए सौतिक अनुरञ्जन करैत, सौतिक आचार ओ व्यवहारक यथावत् पालन करैत, सौतिआइक मर्यादाक रक्षा करैत, हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक

अनुसरण करैत, सौति-समाजमे परिगृहीत भए गेलाह तँ से कोन आश्चर्य !

परन्तु राजा दुलार सिंहक समय धरि अर्वाक् अर्वाक् तँ अनेको सौतिक, वैयक्तिक स्वतन्त्रताकें स्वच्छन्दता जानि, उटपटाङ्ग क्रियासँ समस्त सौति-समाज संक्षुब्ध भए गेल छल। विशेषतः जे लोकनि श्रीमान् छलाह तनिक उच्छृङ्खल [illegible] नियन्त्रण आवश्यक छल। तें हरिसिंह देवीक शासनसूत्र महाराज माधव सिंह बहादुरकें दए देल गेल छल। आब तँ कोनहु नव क्रियासँ पूर्व मिथिलेशक अनुमति प्राप्त कए लेब आवश्यक भए गेल छल। जनमत अनुकूल कए ई अनुमति प्राप्त करब असम्भव नहि छल परन्तु ताहि हेतु तँ सौतिक अनुरञ्जन करए पड़ैत, नम्र होअए पड़ैत। एमहर समयक प्रगतिकें पाबि सौति ओ श्रोत्रियेतर समाजक मध्यमे बड़ विकट प्रतिरोध बढ़ि गेल छल ओ सौतिसँ भिन्न व्यक्तिकें कन्या देब महापातक सदृश हेय बुझल जाए लागल छल। हरिसिंहदेवीक मूल तत्त्व जनसाधारणकें बिसरए लागल छल; पाँजिक प्राबल्यसँ मिथ्या-भिमान सेहो समाजमे प्रविष्ट होअए लागल छल। विद्याक अवनति ओ केवल जातिक प्रति पक्षपात समाजक भित्तिकें अबल बनाए रहल छल। प्राचीन मर्यादाक उपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थक हेतु पैघो लोक करए लागि गेल छलाह। एहना प्रतिकूल परिस्थितिमे ने राजा दुलार सिंह यत्न कएल जे जनमतकें संग्रह कए अपन अनुकूल बनाए ली ने उग्रसिंह ठाकुर यत्न कएल जे उचित परम्परासँ लएकें सम्बन्ध करी। राजा दुलार सिंह तँ मिथिलेशक सपिण्डक कन्या लए जाइत छलाह, सेहो महाराज महेश ठाकुरक डीह परसँ, औरसँ, श्री उपेन्द्र ठाकुर तँ राजा दुलार सिंहक सदृश प्रतापी पुरुष-सिंहकें [illegible] जे राज्य महाराज हेमाङ्गद ठाकुर त्यागने छलाह तकरहि उपार्जन करबाक मनसूबा करैत छलाह ओ मिथिलेशक प्रति-स्पर्धामे राजत्वसूचक "सिंह" उपाधि धारण कए लेल। ताहि सङ्ग सङ्ग आब बड़का बड़का सौतिक मैना सबके प्रच्छन्न रूपसँ लए जाए ओकर विवाह, फलाफार जकाँ, अपनो कन्यासँ करबए लगलाह तखन तँ समस्त

सोतिपुरामे वर्नलीक एक गोट आतङ्क पसरि गेल, सकल साधारण सोति वर्नलीक विरुद्ध भए गेलाह ।

एकर परिणाम अत्यन्त कटु भेल । राजा दुलार सिंहक ओ हुनक सन्तानक प्रसङ्ग सोतिपुरामे एक गोट विद्वेष पसरि गेल । उग्रसिंह ठाकुर सबहु भाइ सोतिसमाजसँ बहिष्कृत भए गेलाह । उग्रसिंह ठाकुरक पौत्र म०म० कृष्णसिंह ठाकुर अपन विद्या, विनय ओ नैतिकतासँ स्वर्गीय महाराजाधिराज मिथिलेशकेँ प्रसन्न कए पुनि सोति समाजकेँ अनुकूल कए अपना दुहु भाइपर अनुग्रह कराए लेल ओ तेँ जगतसिंह ठाकुरक सन्तान मात्र भौरमे सोति छथि; शेष उग्रसिंह ठाकुरक अन्यान्य बालकक सन्तान तथा उग्रसिंह ठाकुरक अन्यान्य भाइक सन्तान सबकेओ सोतिसँ बहिष्कृते छथि ओ कतोक तँ आब जयवारहुक श्रेणीकेँ सम्प्राप्त छथि । एवं कयेँ महाराज महेश ठाकुरक समयसँ उक्त विवाहक सम्पन्न जे छबो पुरुष धरि सोतिसभाक मर्यादाक सर्वतोभावेन रक्षा कएल ओ जातिक गौरव अक्षुण्ण राखल से जेना एकहि बेरि पतित भए गेलाह ओ भौरसँ सोतिक डेरा जेना उठि गेल । ओमहर वर्नलो सहिआसँ सोतिसमाजक दृष्टिमे हेय भए गेल ओ एहि हेतु सए वर्षसँ हरिसिंहदेवी समाजमे गोलेशीक बीज वपन अछि । सोतिसमाज एहि दीर्घकालमे अपन कतेक नेनाकेँ वर्नलीक सम्पर्कक कारणेँ त्यागि देलक अछि ओ ताहिसँ सोतिसमाजकेँ धार्मिक कतेक क्षति भेलैक अछि, मानसिक आधि कतेक सहए करए पड़लैक अछि, कन्यामे वैमनस्य कतेक भेलैक अछि, सामाजिक शृङ्खलाकेँ कोन तरह अभिघात भेलैक अछि !

बहुत समय बीति गेल । बीति चाहैत अछि जे "क्षणश्रणकलंकानां कालें लोपो भविष्यति ।" से काल आब सम्प्राप्त अछि । बहुत गोलेशी कएल । त्यागो हमरा लोकनि थोड़ नहि कएल । विद्वेषक कारणकेँ बिसरि हमरा लोकनिकेँ आब उचित थीक जे पूर्वापर क्रियाक पर्यालोचन कए हजारो परमानन्द चौधरीक डेराक उचित सत्ताकेँ स्वीकार कए ली ।

एही दृष्टिसँ तँ हमरा लोकनि राजा पद्मानन्द सिंहक दौहित्र श्री भीमनाथ मिश्रकेँ पूर्ण सम्मानपुरस्सर अपन कौलिक मर्यादाक अन्तर्गत लए आनल अछि कारण जे ई स्वयं महाकुलसम्भूत सोतिक बालक थिकाह ओ अपर महाकुलसम्भूत सोतिक कन्या, साहित्यसरोज राजा कमलानन्द सिंहक दौहित्री, मे विवाह क... छथि । अपनासँ विमुक्त अपन आत्मीयकेँ अपनाए हमरालोकनि एहिसँ राजा दुलार सिंहक सन्तानक दुहु शाखा, वर्नलो ओ श्रीनगर, दुहुक प्रति अपन सौहार्द प्रदर्शित कएल अछि । पूर्वक अप्रिय प्रसङ्गकेँ बिसरि, प्राचीन गोलेशीकेँ त्यागि, हमरालोकनि नव युगक सूत्रपात कएल अछि ओ हमरा तँ इएह विश्वास अछि जे मिथ्याभिमान किंवा व्यक्तिगत राग ओ द्वेष जनित हृदयकेँ संकुचित नहि कएने अछि से लोकनि एहि गोलेशीमे आब कोनो अर्थ नहि पओताह । अनेक छोट छोट सत्ताक व्यक्तिक प्रति हमरालोकनि अपन उदारता देखओने अछि । तखन केवल एही टाक प्रति अपन प्राचीन विरोध दृढ़ रखलेँ हमरा लोकनि न्यायक पथसँ दूर होइते जाएब ओ न्यायक पथ त्यागि श्रेयक आशा करब व्यर्थ; ताहिसँ सामाजिक श्रेय सम्पादन नहि भए सकैत अछि । न्याय ओ विवेक सएह देखएबाक हेतु हमर ई प्रयत्न भेल अछि ओ हमरा दृढ़ विश्वास अछि जे अपन सहज उदारता ओ हृदयक विशालताक परिचय दैत सोतिसमाज व्यक्तिगत राग-द्वेषकेँ त्यागि एहि प्रसङ्ग निष्पक्षपातरूपसँ विचार करताह । वस्तुतः योग्यकेँ कथे नहि, नीक पञ्जीबद्धहुक जातिक रक्षा सम्प्रति असम्भवे भए गेल छैक ओ हरिसिंहदेवीक रक्षक श्रीमन्मिथिलेशकेँ सबरो रक्षाक भार छैन्हिए ।

सम्प्रति जे समय उपस्थित अछि से प्राचीन जातीय मर्यादाक हेतु सङ्कटक समय अछि । कतोक व्यक्ति कहैत छथि जे ई पुरान व्यवस्था आजुक युगक हेतु अनुपयुक्त अछि ओ अधिक दिन नहि चलि सकैत अछि । मुदा हमर अन्तःकरण से नहि कहैत अछि । ओना तँ एहि नश्वर सृष्टिमे सब वस्तुक नाश एक दिन अवश्यम्भावी छैक ओ एहि नियमक अनुसार

तँ एकरो विनाश कहिओ अवश्ये होएतैक, तकरा के रोकि सकत ? परन्तु ऐतिहासिक विवेचनासँ हमरा स्पष्ट प्रतिभासित होइत अछि जे जेना ई अनादिकालसँ एक ने एक रूपमे चल आबि रहल अछि तहिना अनन्त काल पर्यन्त एकर अस्तित्व अवश्ये रहतैक, एकर सर्वथा विनाश नहि भए सकैत अछि। रूपक परिवर्त्तन तँ प्रत्येक युगमे होइतहिँ रहलैक अछि, अनेक बेरि भेलैक अछि, पुनि पुनि होइत रहतैक। से समय इएह सङ्कटक समय थीक जो समाजक नेतागणकेँ समयहुत भार उपस्थित अछि जे अपन सामाजिक भित्तिकेँ पुनः सुदृढ़ कए लैं जे आगामी विरधी बिहाड़ि मे पुरान जे अवलम्ब घर अछि से उधिआएकेँ चल ने जाए ओ हमरालोकनि निरावलम्ब ने भए जाइ। संकलन् ग्रहसँ विशेष महत्वक एहि युगमे दोसर प्रतीकारे की भए सकैत अछि ? तँहि तँ हमर बराबरि इएह प्रयत्न रहल अछि जे हमर सामाजिक जे बन्धन अछि, हरिसिंहदेवीक प्राचीन जे मर्यादा अछि, जातीय गौरवक रक्षाक जे सनातन नियम अछि, तकरा बुझैत, ओकरा मानैत, ओकर पालन करबाक सङ्कल्पसँ, जे केओ सत्कुलक छूटल वा ओझराएल व्यक्ति पुनि थरिकेँ हमर शान्त एवं सुरक्षित आश्रयमे आबए चाहथि तनिकाँ हमरालोकनि हृदयसँ लगाए अथवा सङ्ग लगाए ली।

हरिसिंह-देवी व्यवस्थाक मूल थिकैक सुशृङ्खल मर्यादा। ताहि हेतु ई अवधारण आवश्यक होइत छैक जे एतए यदि हमरा कर्त्तव्य थीक, ताहिमे अन्यो रूप नहि आएब। तात्त्विक दृष्टिसँ विचार कएला उत्तर बोध होएत जे शुद्धिक कमहु तदर मर्यादा अपेक्षित छैक, ओ तकर रक्षा प्रकृतियो करैत अछि। महाभारतमे तँ धर्महुक स्थिति मर्यादामे कहल अछि—"मर्यादायां स्थितो धर्मः"। एहि युगमे तँ "स्वतन्त्रता" क अर्थ कएल जाइत अछि "स्वच्छन्दचारिता"। ताहि सङ्ग मर्यादाक सामंजस्य कोना होएत ? परन्तु एतबा धरि निश्चय जे भारतीयताक रक्षा होएत मर्यादासँ, स्वच्छन्दचारितासँ नहि। तएह मर्यादा हमरहु समा-

जक अपन प्राचीन गौरवक रक्षा कए सकैत अछि। ताहि हेतु चाही र सामाजिक हितक हेतु वैयक्तिक त्याग। एहि त्यागक भावनाकेँ प्र कए, मर्यादाकेँ दृष्टिमे राखि, यदि हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक सनातन रू भूत जातिरक्षा, सदाचारपालन एवं विवाह व्यवस्थाकेँ मैथिल सब पुनि पूर्ववत् आदरसँ ग्रहण करए तँ निश्चय हमर [illegible] उत्कर्ष स्वत भारतकेँ पुनि चकित कए देत।

॥ इति ॥

———o———

विषय		पृष्ठ
१. मूल	—	१
२. शाखा	—	१२
३. बैगनी शाखा	—	६५
४. उपसंहार	—	१५०

कुलचित्रक सूची

चित्र संख्या		सम्मुख पृष्ठ संख्या पृष्ठ
१	[illegible]जीर्ण	१३
२	बलियासमूलक अंश	१६
३	वीरेश्वरापत्य	२०
४	रामेश्वरक [illegible]पत्य	२६
५	काले-समीकरणार्थ	२९
६	प्रहेश्वरापत्य	३०
७	लक्ष्मीधरापत्य—प्रथम, प्रतिपलिक–	४४
८	ऐ. -द्वितीय प्रतिपलिक–	५२
९	एकहरामूलक अंश	६०
१०	लक्ष्मीधरापत्य—राम सन्तति	६१
११	ऐ. -अटाधर सन्तति	६१
१२	गङ्गाधरापत्य	६३
१३	गदाधरापत्य	७०
१४	राजा कुलार सिंहापत्य-नेली शाखा–	१०४
१५	कन्होली सोदरपुरमूलक अंश	१२२